Gaekwad's Oriental Series

Published under the Authority of the Maharaja Sayajirao University of Baroda.

General Editor:
B. J. Sandesara,
M.A., Ph.D.

No. 137



तृतीयखण्डस्य द्वितीयो भागः।

VIṢŅUDHARMOTTARA-PURĀŅA THIRD KHAŅDA

Vol. II

(Introduction, Appendixes, Indexes etc.)

(A study on a Sanskrit text of Ancient Indian Arts)

- By

Dr. Priyabala Shah

M.A., Ph.D. (Bom.), D.Litt. (Paris)

Prof. & Head of the Department of Ancient Indian Culture,

H. K. Arts College, Ahmedabad



ORIENTAL INSTITUTE BARODA 1961 Printed by Ramanial J Patel Manager The Maharaja Saya rao University of Baroda Press (Sadhana Press) Near Palace Gate Palace Road Baroda and published on behalf of the Maharaja Sayaj rao University of Baroda by Dr. Bhoglal J Sandesara Director Oriental Institute Baroda. Sept. 1961



Price Rs 20 00

Can be had of

UNIVERSITY PUBLICATIONS SALES UNIT, Near Palace Gate, Palace Road, Baroda z DEDICATED

TO

THE SACRED MEMORY

OF

MY MOTHER, KALAVATI

FOREWORD

This is the Second Volume of the Visnudharmottara Purana, Khanda III, being published as GOS, no 137 The First Volume containing the text was out in 1958 as GOS, no 130

The present volume discusses critically the subject matter of this important portion of the Visnudharmottara Pur ina dealing mainly with the topics of fine arts including literary art, architecture, sculpture, painting and dancing. Dr Priyabala Shah has given a thorough study of the various chapters of the original text, and has also appended several indexes of technical terms which will be very useful for purposes of reference. We hope that these two volumes—text of Visnudharmottara, Khanda III, and its critical study—will be welcomed by all students of Ancient Indian Art and Culture

We are thankful to the University Grants Commission and the Government of Gujarat for financial assistance in publishing the volumes in the Gaekwad's Oriental Series

Oriental Institute,
Baroda
July 1, 1961,

B J SANDESARA

Director

CONTENTS

| | | | | | | | | Page |
|----|------------------------|-----------|------|-----|-----|-----|-----|------|
| | Preface | | • • | | • • | • • | | χV |
| | Abbreviations | | • • | • • | • • | • • | 2 | (VII |
| | Bibliography | •• | | • • | • • | • • | X | VIII |
| I | (1) Origin of Image | e-making | | | • • | •• | • • | 1 |
| | (2) Interdependenc | | | • • | •• | • • | . • | 2 |
| II | Varieties of Literatur | e | • • | •• | • • | •• | •• | 6 |
| | Tantragunadoșa | • • | • • | | • • | • • | | 9 |
| | Tantraśuddhi | • • | • • | • • | • • | * • | • • | 11 |
| | Literary Arts: | • • | • • | • • | | • • | • • | 13 |
| | Chandas | | •• | • • | •• | •• | • • | 13 |
| | Alamkāras | • • | • • | • • | • • | • • | • • | 14 |
| | Prahelikā | • • | · ·f | •• | | • • | | 19 |
| | Mahākāvyalakşana | • | • • | • • | • • | • • | | 24 |
| | Dvādašarūpa | • • | | • • | • • | * • | • • | 25 |
| | Sandhis | | • • | •• | | | | 29 |
| | Nāyikās | • • | •• | | •• | • • | •• | 29 |
| | Rasa . | | | • • | | | | 29 |
| | The endings of the P | roper nar | nes | | 4. | • • | • • | 30 |
| | Forms of address | •• | •• | | • • | •• | •• | 31 |
| Ш | Music | • • | | • • | •• | • • | | 32 |
| | Vocal Music | | • • | | | • • | | 32 |
| | Instrumental Music | | • • | • • | • • | • • | • • | 32 |
| IV | Nrttasūtra . | | •• | . • | • • | • • | . • | 35 |
| | Lying-down postures | · . | | • • | • • | | | 46 |
| _ | Sitting postures and | 'S | • • | • • | 47 | | | |
| • | Seats (Āsanas) | •• | • • | | | • • | | 48 |
| | Standing postures | | •• | • • | •• | • • | | 49 |
| | Gaits | | •• | • • | • • | • • | • • | 51 |
| | Gaits expressing sen | • • | • • | • • | 52 | | | |
| | Movements of Limb | | | •• | • • | | • • | 55 |
| | Movements of Head | | • • | • • | • • | • • | | 55 |
| | , Movements of Neck | | • • | • • | • • | • • | • • | 57 |
| | Movements of Mou | | | • • | • • | • • | • • | 57 |
| | Movements of Ches | | • • | •• | •• | | • • | 58 |
| | Movements of Sides | | | | | | | 58 |

VISNUDHARMOTTARA

| | | Pag |
|---|--|----------|
| | Movements of Stomach | 5! |
| | Movements of Waist | 55 |
| | Movements of Thigh | 59 |
| | Movements of Shank | 60 |
| | Movements of Foot | 60 |
| | Glances (Drstis) | 6: |
| | Rasadrstis (Glances to express sentiments) | 62 |
| | Movements of Eyelids | 6- |
| | Movements of Eyeballs | 65 |
| | Movements of Sight | 66 |
| | Movements of Eye brows | 66 |
| | Movements of Cheek | 67 |
| | Movements of Nose | 67 |
| | Movements of Teeth | 68 |
| | Movements of Lower lip | 68 |
| | Hastabhinaya | 69 |
| | Asamyuta Hastas | 69 |
| | Samyuta Hastas | 73 |
| | Nṛttahastas | 75 |
| | Mudras | 76 |
| | Rahasya Mudra | 77 |
| | Significance | 78 |
| | Samanya Mudra | 80 |
| | Samanyabhinaya | 88 |
| | Rasas and Sthayibhāvas | 92 |
| | Sancarıbhāvas | 93 94 |
| | Sattvika Bhāvas | 95 |
| | Aharyabhinaya | 98 |
| | Rasas | 98 |
| | Number of Rasas | 98 |
| | The Colours of Rasas | 98 |
| | Deities of Rasas Rasas with their Sthayins | 99 |
| | Sancar | 100 |
| | Sättvika | 101 |
| | Rasas and their Bhavas | 101 |
| | Classifications of Rasas | 102 |
| v | Citrasütra | 103 |
| | Origin of Painting | 104 |
| | Netta and Citra | 105 |

CONTENTS XI

| | | Page |
|-----|--|------------|
| | Measurements | 105 |
| | Characteristics of Great men | 108 |
| | Postures | 110 |
| | The Technique of Painting | 115 |
| | Plaster | 115 |
| | Manibhumis | 116 |
| | Instructions regarding time and ritual of Painting | 116 |
| | Chavis or colours of skin based upon Primary colours | 117 |
| | Primary Colours | 117 |
| | Mixing of Colours | 118 |
| | Making of Pigments | 118 |
| | The Classification of Painting | 119 |
| | Modes of applying Paint (Vartana) | 125 |
| | Critical analysis of Citra | 128 |
| | Objects usually depicted in Painting | 130 |
| | Citra—Rasas | 134 |
| | The place of Painting in Arts | 136 |
| | Marks of good and bad Paintings | 137 |
| 376 | Protect defense | 138 |
| VI | Pratimalakşana | |
| | Images and their Worship | 138 |
| | Trimurti | 138 |
| | Brahman | 139 |
| | Vişnu | 141 |
| | Mahadeva | 143 |
| | Agnı Vasansa | 145 |
| | Varuna Kubera | 146 |
| | Yama | 147 |
| | Grahas | 147 |
| | Äditya | 148 |
| | Soma | 149 150 |
| | Kumāra | 150 |
| | Bhadrakalı | 151 |
| | Ananta . | 151 |
| | Tumburu | 152 |
| | Mahi (The Earth goddess) | 153 |
| | Ākaša (Gagana) | 153 |
| | Vyoman | 153 |
| | Sarasvatı | 154 |
| | Laksmı | 154 |

VISNUDHARMOTTARA

| | | | | | | | | | rage |
|------|----------------------------|------------|----------|---------------|---------------|-----------------|-----------|------|------------|
| | Manu | | 4.4 | | | • • | | • • | 155 |
| | Virūpāksa | •• | • • | • • | | • • | • • | ٠. | 155 |
| | Vāyu | • • | | •• | • • | • • | | | 156 |
| | Dharma | • • | • • | • • | • • | 4.6 | •• | | 156 |
| | Vairāgya | • • | | •• | • • | | • • | | 156 |
| | Narasimha | • • | | • • | • • | • • | | 4.4 | 157 |
| | Varāha | • • | • • | 4 • | •• | | • • | | 158 |
| | Hayagrīva | • • | • • | •• | | • • | • • | •• | 158 |
| ı | Śakra | • • | • • | • • | • • | • • | • • | ٠, | 159 |
| | Padmanābha | 1 | * * | •• | • • | •• | • • | | 159 |
| | The two Na: | satyas | • • | | • • | • • | | | 160 |
| | Vişnudhvaja | • | •• | 4 = | • • | | • • | • • | 160 |
| | Vasu | | | • • | • • | | | • • | 161 |
| | Naranārāyai | | •• | •• | | •• | •• | • • | 161 |
| | Linga | • • | •• | •• | •• | •• | •• | * 1 | 161 |
| | Padma | •• | •• | | •• | • • | •• | •• | 161 |
| | Višvarūpa | | | | | •• | • • | | 162 |
| | Samkarsana | | • • | | | • • | • • | ••• | 162 |
| | Pradyumna | | • • | | | • • | •• | •• | 162 |
| | Aniruddha | | | | •• | • • | •• | •• | 162 |
| | Tārkşya | - | | | | • • | • • | * • | 163 |
| | Miscellaneon | re ande a | | 996 | | | •• | • • | 165 |
| | Aidūka | _ | _ | •• | • • | • • | •• | •• | 168 |
| | Aiquka | • • | • • | •• | • • | • • | • • | • • | 100 |
| VII | Our text an | d the ren | nains of | Ancient I | ndian Pa | ainting a | nd Sculpt | ure | 176 |
| | Painting-N | Iural Pair | iting | | | • • | •• | • • | 176 |
| | The technica | al Process | | | | • • | | •• | 177 |
| | Some details | s | • • | | • • | • • | | ••• | 177 |
| | Sculpture | • • | • • | • • | | • • | | • • | 178 |
| | Tri a Trabaga | 1 Mt. | .10 | of Plant | mark Calend | Lala | | | 182 |
| VIII | The Hetus of | | | or Signs | and Sym | 10012 | • • | | 182 |
| | Colours of t | | | * * | •• | 7.5 | • • | •• | |
| | Limbs of the | | | :- | • • | h • | •• | • • | 183 |
| | Apparel of t | | | .dia assi | | de debahatat | mages of | tha | 184 |
| | The weapon | | | | nection v | | mages or | fiic | 101 |
| | Deities Various oth | | | | Dalaine | •• | • • | •• | 184 |
| | | - | | | ie Delties | | • • | • • | 185 |
| | Varlous kin Animais and | | | | es Inisins | •• | • • | • • | 186 186 |
| | | | | | | • • | ** | 4 6 | 100 |
| tX | | ~ | of Aval | iana-Vibo | dhana, l | Induction | 1 of Delt | ies | |
| | into Images | 1.6 | 4.6 | 1.6 | 4 1 | | | | 188 |
| | | | | | | | | | |

| | CONIENIS | XIII | | | | |
|-----|---|------------|--|--|--|--|
| X | Rites and Rituals | 190 | | | | |
| | Devayatravidhi | 190 | | | | |
| | Desire and Deity | 192 | | | | |
| ΧI | Temple building | 193 | | | | |
| | Material and sites | 193 | | | | |
| | Wood | 193 | | | | |
| | Stone | 194 | | | | |
| | Brick | 195 | | | | |
| | Vajralepa | 196 | | | | |
| | Sites | 197 | | | | |
| | Varieties of Temples | 198 | | | | |
| | General characteristics of a Temple | 198 | | | | |
| | Sam inyaprasadalaksana | 198 | | | | |
| | The hundred temples | 200 | | | | |
| | Sarvatobhadra | 205 | | | | |
| | Classification | 207 | | | | |
| | Comparison with architectural remains | 208 | | | | |
| | Temples and Gods | 209 | | | | |
| | Sarvatobhadra and Gods | 212 | | | | |
| | Benefits of building a Sarvatobhadraprasada | 213 | | | | |
| XII | - | 215 | | | | |
| | Kavyarasa | 215 | | | | |
| | Natya | 215 | | | | |
| | Gita | 216 | | | | |
| | Nrtta Nrtya | 216 | | | | |
| | Concept of Rasa | 217 | | | | |
| | Appendix I | 220 | | | | |
| | Samarāngana Sutradhāra Abhilaşit irthacint imanı | 220 220 | | | | |
| | • | 222 | | | | |
| | Appendix II | | | | | |
| | Iconograph cal Material from other Puranas | | | | | |
| | Appendix III Emblems of various deities represented on their images as given | | | | | |
| | in Visnudharmottara . | 223 | | | | |
| | Appendix IV | 230 | | | | |
| | Characteristics of Hundred and one temples (as described in | | | | | |
| | Vişpudharmottara) | 230 | | | | |
| | Appendix V | 238 | | | | |
| | Lists of temples according to Purana, Bihatsamhita and Manasara | 238 | | | | |

INDEXES

| | | | | | ã |
|---|-----|-----|-----|-----|------------|
| शब्दानुक्रमणिमा (अ. १-१७) | ••• | *** | ••• | + | 9 |
| सङ्गीतप रिभाषिक्यच्दानुक्रमः (अ, ९८-१९) | *** | ••• | *** | *** | 4 |
| नृत्तपारिभाषिक्शस्यानुक्मः (अ. २०−३४) | *** | ••• | -40 | | 95 |
| चित्रपारिभाषिक्दाब्दानुक्रमः (अ. ३५-४३) | *** | ••• | *** | | 3,3 |
| प्रतिमापारिभाषिक्शब्दानुक्रमः (अ ४४८५) | ••• | ••• | ••• | | ₹.5 |
| प्रामाद्यार्मुपारिभ पिक्सच्दानुष्ठमः (अ. ८६-८८) | | • • | ••• | ••• | 3 3 |
| त्र साद्गतप्रतिमाना नामानुकनः (") | ••• | *** | ••• | *4* | 34 |
| प्रशिर्णशब्दानुकमाँगरा (अ ८९-११८) | •• | | ••• | | ३९ |
| श्होत्रानुब्रमणिया | •• | -++ | *** | ••• | ४९ |

PREFACE

I began my work on a thesis on Visnudharmottara Purāna in 1948 While reading for the M A degree in Ancient Indian Culture of the Bombay University, I got very much interested in the study of Fine Arts of Ancient India as well as the literary material pertaining to them. The search for such literary material led me to the study of the Purānas which, as is well known, contain chapters on various arts. My intention, in the beginning, was to take as the subject of my thesis 'materials for the study of fine arts in the Purānas'. But when I made a preliminary survey of the Purānas, I found that the material was too vast to be treated in a thesis. So I selected Visnudharmottara for the purpose, because comparatively speaking it contained the most exhaustive treatment of various arts and crafts practised in Ancient India. My thesis consisted of a critical edition of Adhyāyas 1 to 88 of the third khanda of the Visnudharmottara and an introduction discussing the varied material of the text in its archaeological, historical and cultural setting. I was awarded the degree of Ph D for this work in 1951 by the University of Bombay

Smt Hansaben Mehta, who was the Vice-Chancellor of the M S University of Baroda at the time, showed keen interest in this work of mine and was good enough to take the trouble of going through the thesis. She told me that she would be glad to have this work for publication in the G O Series. This was a matter of joy to me and I undertook to revise the introduction and critically edit the remaining thirty adhyāyas to complete the third khanda of Viṣnudharmottara

The work is being published in two volumes. The first containing the text and critical notes is already out. This second volume contains introduction as well as the indexes and the appendixes.

My main concern in this work being the study of arts, I have thought it proper to omit grammatical and lexical material from my discussion, so also the matter pertaining to logic. These would require a different type of study and approach

In dealing with the subject-matter of the text, I have found the order of the original useful, so I have in the main followed it—I take up each topic as presented in one or more adhyayas and give an analytical review of the same and try to correlate it with relevant archaeological, historical and literary information

I am much indebted to the previous workers in this field of research, particularly to Dr. Stella Kramrisch. I have acknowledged my debt to them in the foot-

,

XVI PRITACE

notes. But for their pioneering work, I would not have been able to do what little I have done

* * *

It is a pleasant duty to express gratitude to teachers and friends who discussed with me various topics and aspects of the subject and gave me the benefit of their valuable criticism

I pry my respects to Prof K. V. Abhyankar who was one of my guides for this thesis and express my most sincere thanks to him for helping me throughout my work

I particularly offer my homage to my teacher and guide, Prof Rasiklal C Parikh, Director of the B J Institute, Gujarat Vidya Sabha Ahmedabad He, inspite of his immense pre occupations, always finds time to guide his students in their research work. The time spent in his company at the Institute as well as at his residence has been very fruitful for my work and study. I revised this entire work under his guidance and his suggestions were very useful in improving it

Dr V S Agrawal and Dr Motichanda spared their valuable time for me for going carefully through the whole Citrasutra of the text I am thankful to them for this kindness

Dr V Raghavan has always been prompt in replying to my querries regarding various topics. I am thankful to him for this kindness

I am grateful to Prof P K Gode for giving me facilities to study the Šaradā Ms of the Vişnudharmottara lying in the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona

I am very much obliged to Muni Shri Kalyanavijayaji, who helped me in editing the chapters on Prasadalakşana and who took me round the Hathising Jain temple of Ahmedabad to explain to me various architectural terms by pointing out the various parts of the temple

I am also grateful to Muni Shri Punyavijayaji for guidance and various kinds of suggestions. I express my thinks to Prof. Bhandari. Prof. K. Shastri, Prof. Nagardas Bambhania. Dr. J. S. Jetly and Shri Ravishankar Raval for various kinds of help.

I am thankful to the University of Bombay for giving me permission to publish this work

For the publication of the first volume without much delay, I am indebted to Prof G H Bhatt the then director and to Dr U P Shah, deputy director of the Oriental Institute, Baroda

Shri A Ghosh the Director General of Archaeology in India kindly permitted me in the first volume to print the photographs of the Sarad i script manuscript lying in the Central Archaeological Library, New Delhi

Finally, I take this opportunity of recording my thanks to my friend, Dr B J Sandesara, now the Director of Oriental Institute of the M S University of Baroda and the General Editor of the Gaekwad's Oriental Series His unfailing courtesy and help are responsible for the prompt publication of this work

I cannot end this preface before once more expressing my sense of gratitude to Smt Hansaben Mehta whose keen interest in my work and kindness to me have made possible the publication of these volumes in this well known series

Ahmedabad, 25-4-1961

PRIVABALA SHAH

ABBREVIATIONS

AD - Abhinaya Darpana

EHI - Elements of Hindu Iconography-Gopinath Rao

K D - Kavyadarsh of Dandin

K.L. — KäryAnnkara of Bhamaha

KS — Kimisūtra

NS — Nipa Šistra

V D --- Visnudharmottara

VS — Vaisnavism Suvism and Minor Religious Systems—R. G. Bhardara-kara

SHM — Shree Hasta Mukifiyah

S.R. — Sang ta Ratnakara

BIBLIOGRAPHY

English

ADMINISTRATION—REPORT OF ARCHAEOLOGY, TRAVANCORE (1107 M E)

ALBERUNI S INDIA—Sachau

ARCHAEOLOGY IN INDIA-Govt of India, 1950

SIR ASUTOSH MEMORIAL VOLUME PART VI

BARHUT INSCRIPTIONS—by Baruo and Sinha

BUDDHIST HYBRID SANSKRIT DICTIONARY—by Edgerton

CAMBRIDGE HISTORY OF INDIA, VOL 1

DANCE OF INDIA-by Projesh Banerjee

DICTIONARY OF HINDU ARCHITECTURE-by P K Acharya

ELEMENTS OF HINDU ICONOGRAPHY VOL I, Pt II—by T A Gopinath
Rao

ENCYCLOPAEDIA OF RELIGION AND ETHICS VOL 11

ENCYCLOPAEDIA BRITANICA 11th edition Vol 10

FINE ART IN INDIA AND CEYLON-by V A Smith

GUPTA ART—by V S Agrawala

GUPTA EMPIRE—by Radhakamal Mookerji

HANDBOOK OF MATHURA MUSEUM-by V S Agravala

HINDU TEMPLES—by Stella Kramrısch

HISTORY OF INDIA (150 A D to 350 A D)—by Dr K P Jayaswal

HISTORY OF INDIAN AND INDONESIAN ART—by Dr A -K Coomara swamy

HISTORY OF INDIAN LITERATURE Vol 1—by Winternitz

HISTORY OF SANSKRIT POETICS-by P V Kane ,

INDIAN ARTISTIC ANATOMY-by Abanindranath Tagore

INDIAN IMAGES Vol 1-by Bhattacharya

INDIAN PAINTING—by Percy Brown

INDIAN SCULPTURE AND PAINTING—by E B Havell

JAIN CITRAKALPADRUMA—edited by Sarabhai Nawab

JAIN MINIATURE PAINTINGS FROM WESTERN INDIA—by Dr Moti Chandra

MIRROR OF GESTURES—by A K Coomarswamy

NATYASASTRA—translated by Manmohan Ghosh

PURANIC RECORDS ON HINDU RITES AND CUSTOMS—by Dr R C Hazra

THE SACRED BOOKS OF THE EAST Vol XLIV—edited by F Maxmiller THE SANSKRIT DRAMA—by A B Keith

SANSKRIT POETICS—by S. K. De

SOME CONCEPTS OF THE ALAMKĀRAŚĀSTRA—by Dr. V. Raghavan STUDIES ON INDIAN PAINTING—by N C Mehta

STUDIES IN SANSKRIT TEXTS ON TEMPLE ARCHITECTURE—by N V. Mallaya

A STUDY ON VĀSTUVIDYĀ—by Dr Tarapada Bhattacharya

TĀNDAVA LAKSAŅAM—by Dr. B V Narayanaswami Naidu

TYPES OF SANSKRIT DRAMA-by D. R Mankad

VAISNAVISM, ŚAIVISM AND MINOR RELIGIOUS SYSTEMS—by Dr. R. G. Bhandarkar

VEDIC INDEX

THE VISNUDHARMOTTARA (Part III)—by Dr Stella Kramrisch

Sanskrit

AGNI PURĀŅA—Vyankateśwara Press

ANEKÄRTHASAMGRAHA

ABHINAYA DARPANAM OF NANDIKEŚVARA—translated by Man Mohan Ghosh

ĀBHIDHĀNA CINTĀMANI—Yashovijaya Jain Granthamala

ABHILAŞITĀRTHA CINTĀMANĪ—Gaekwad's Oriental Series

AMARAKOŚA

KĀMASŪTRAM OF VĀTSYĀYANA—Kası Sanskrit Series

KĀVYA PRAKĀŚA OF MAMMAŢA—Ānandāśrama Press

KÄVYAPRAKÄŚA SANKETA OF SOMEŚVARA—edited by Prof. R. C. Parikh

KĀVYAMIMĀNSĀ OF RĀJAŚEKHARA—Gaekwad's Oriental Series

KĀVYĀDARŚA OF DAŅDIN—Gaekwad's Oriental Series

KĀVYĀNUŚĀSANA OF HEMACANDRA-edited by R. C. Parikh

KĀVYĀLAMKĀRA OF BHĀMAH—Kāsi Sanskrit Series

KÄVYÄLAMKÄRA OF RUDRAȚA

KUMĀRAVIHĀRAŚATAKA OF RĀMACANDRA

CATURVARGA CINTĀMAŅI OF HEMADRI

CHHANDASSĀRA-Kāśi Sanskrit Series

DATTILAM-Trivendrum Sanskrit Series

DAŚARUPA OF DHANANJAYA—Nirnaya Sagar Press

DIVYĀVADĀNA—A Collection of Early Buddhist Legends—E.B Cowell and R. A. Neil

NYÄYAKOŚA

NYÄYADARŚANAM-Vidyāvilāsa Press, Banaras, 1920

NITISATAKA—Bhartrhart

NĂŢYA DARPAŅAM OF RĂMACANDRA AND GUŅACANDRA— Gaekwad's Oriental Series. NĀŢYAŚĀSTRA OF BHARATA—Nirnaya Sāgar Press

-Chaukhambā Sanskrit Series

" -Gaekwad's Oriental Series

NĀRADĪYAPURĀNA—Vyankaţeswara Press

73

PRATIMĀNĀTAKA—of Bhāsa

PRĀSĀDAMANDANA—

BRHAT SAMHITĀ OF VARĀHAMIHIRA—Vizianagram Sanskrit Series

BHĀGAVATA PURĀNA—Vyankaţeśwara Press

MAHĀBHĀRATA

73

MATSYA PURĀNA—Vyankaţeśwara Press

MANASÂRA-Edited by P K Acharya

MALATI MĀDHAVA

MUDRĀVICĀRA VIDHIPRAKARANAM—by Priyabala Shah

RASAGANGADHARA OF JAGANNATH—Nirnaya Sagar Press

RGVEDA-X

VISNUSAHASRANĀMABHĀSYA OF ŠANKARĀCĀRYA—Sri Vani Vilasa Press

VEDABHĀSYABHUMIKĀSAMGRAHA—CSS, 1934, Srirangam

VEDIC KOŚA—by Hemaraja

SATAPATHABRĀHMANA

SABDAKALPADRUMA

SABDARATNĀKARA

SABDARATNAPRADIPA

ŚĀKUNTALA

SILPARATNA OF SHRIKUMĀRA—Trivendrum Sanskrit Series

ŚĀRADĀTILAKA

SAMARĀNGANA SŪTRADHĀRA OF BHOJA—Gaekwad's Oriental Series

SAÑGÎTA RATNAKARA—Ānandasrama Press

SARASVATIKANTHĀBHARANA OF BHOJA

SÄHITYA DARPANA OF VIŚVANÄTH-Nirnaya Sagara Press

HARŞACARITA—of Bana

Palı

PĀIASADDAMAHANNAVO

Prakrit

ABHIDHÄNARÄJENDRA RÄYAPASENIYASÜTTA BHAGAVATISÜTRA ANUYOGADVÄRASUTRA

Marathi

PURĀNA NIRĪKSANA—by T G Kale BHĀRATĪYA JYOTISASĀSTRA—Sankar Balkrisna Date

French

LE MAHĀVASTU—Par E Senart

Gujarati

PURĀNA VIVECANA—Durgāšankar Šāstri SANSKRIT SAHITYAMĀN VANASPATI—Bapalai Vaidya

Journals

INDIAN ANTIQUARY Vol XIX
INDIAN CULTURE Vol VI pt I, & Vol VIII 1941-42
THE INDIAN HISTORICAL QUARTERLY, Vol 9, 1933
THE JOURNAL OF AMERICAN ORIENTAL SOCIETY, No 52 1932
THE JOURNAL OF ASSAM RESEARCH SOCIETY, Vol 8, 9, 1941-42
JOURNAL OF BIHAR AND ORISSA RESEARCH SOCIETY, Vol 9, Part I, 1923

JOURNAL OF ORIENTAL INSTITUTE, BARODA, Vol I, No 3 1952 MĀRGA No 4 RUPAM No 37 and 40 THE VIŚVA-BHĀRATI QUARTERLY, Vol XVI, Part II, 1950

ORIGIN OF IMAGE-MAKING AND TEMPLE-BUILDING AND INTERDEPENDENCE OF ARTS

(i) Origin of image-making

- As said in the introduction to the Sanskrit text (Vol I), the importance of khanda III of Visnudharmottara lies in the incorporation of traditions regarding arts as they were practised in Ancient India, particularly the Gupta Age—In fact, I have called the work a treatise on arts
- It is interesting to know how the subject of fine arts is introduced as an important matter of study. It is related to the primary urge of man of seeking happiness here and hereafter.

King Vajra puts the question 'What would obtain for him great happiness in this and the other world' (Ad 1, Slo 1)? Without hesitation Mārkandeya answers the question 'anyone desiring the best of the two worlds must worship gods (Devata pūjanam)' Then he dilates upon it There are two ways of worship, one Antarvedi, the other Bahirvedi' The first is concerned with the sacrificial cult, the other with vows of abstinence, fasting etc. All those heavens which are attained by sacrificial acts (Işta) and charitable deeds (āpūrta), if desired, can be obtained by building a temple for gods' The merit of Işta and āpūrta is to be found in this single act

Markandeya then emphasizes the importance of building temples, particularly in the kali age "In the former three ages-"Krta, Treta and Dvapara

¹ Compare — हाते तु इवायतने विधान नासवत् हितो ।

पेवल तु तदा द्यासन् प्रत्यक्षेण नराधिष ॥ १ ॥

प्रत्यक्षेणापि परयन्तह्येताद्वापरयोजनाः ।

देवाना प्रतिमा कृ वा पूजयन्ति यथाविधि ॥ २ ॥

गृहे प्रतिष्ठा तनापि नेताया तु प्रनिर्तिता ।

द्वापरे चाप्यरण्येषु ऋषिमिस्तु ततः कृता ॥ ३ ॥

तेषा सम्पूजनं नित्य निद्धस्तु कियते चृप ।

प्रतिष्ठामानकरणाधिर्मता ऋषयस्तु ते ॥ ४ ॥

पर्ने प्ररुत्त सर्वोऽय प्रतिष्ठानरणे जनः ।

शानं परे कृतयुगे नेताया च तपः परम् ॥ ५ ॥

द्वापरे तु तया हैय प्रतिष्ठा तु करो युगे ॥ ६ ॥

देवतायेशमपूर्वाण नगराणि करो युगे ॥ ६ ॥

men were able to see a god directly but in the kali age men have lost that faculty, therefore they have to worship them (gods) in an image. Even in former ages when a god was visible, men used to worship him in a particular image. So a man of learning should worship a well formed (surupā) image because it is to such an image that a deity becomes proximate. Anyway he must avoid an image uncanonically made."

An image of divinity has to be installed in a temple and so temple building itself becomes a meritorious act. So Märkandeya declares

"To build a temple is mentorious, so is the making of an image of a deity Mentorious is the worship of a divine image and so is its adoration"

Thus the social motive of seeking happiness here and the religious motive of hereafter or rather the religious motive of seeking happiness here and here after become forces in the development of the arts of image making and temple-building in other words of Sculpture and Architecture. This tradition is amply corroborated by the monumental remains and history of architecture and sculpture in India. It would, however, be erroneous to assume that non religious sculpture was unknown to earlier times. The statues of a dancing girl and a nobleman found at Mohen jo daro would go to show the existence of a secular art of sculpture.

Another part of this tradition leads to some historical speculation. The statement that there was not much of image making and temple building in Krta. Dvapara and Treta ages, might suggest a belief of the Rsis like Mar kandeya that image worship did not prevail in earlier times. This would accord well as far as the earlier Vedic cult of sacrifice is concerned. In fact this is the Antirvedi worship. The reference to occasional worship of images even in the earlier times might be reminiscent of pre Vedic image worship. If this interpretation is correct one can say that this tradition preserves the memory of some historical facts. We now know that the cult of image worship was prevalent in the pre Vedic Indus Civilization and also that the Vedic cult of sacrifice requires no images. Later on with the fusion of these cultures the popular cult of Indus people became more and more influential and the post Vedic Puranic religion became characterized by image worship and temple-building

(ii) Interdependence of Arts

In adhyāya 2, Vajra in due course requests Mārkandeya to teach him such an important art which brings happiness in this as well as the other world. But Mārkandeya would not let him have the knowledge of sculpture so easily. As it turns out, the knowledge of this art makes it necessary to have the knowledge.

of other arts upon which it is dependent. In this way, we are introduced to a tradition regarding the interdependence of arts

Let us see how this interdependence is shown —

- Vajra O sinless one, How should I make the forms of gods so that the image made according to rules may always manifest (the deity)? (1)
- Mārkandeya He who does not know the canon of painting (citrasūtram) can never know the canon of image-making (Pratimā lakṣanam) (2)
- Vajra O scion of Bhrgu Race, explain to me the canon of painting because one who knows the canon of painting, knows the canon of image-making
- Markandeya It is very difficult to know the canon of painting, without the canon of dance, because O king, in both, the world is to be imitated (or represented)
- Vajra Explain to me the canon of dance and then you will speak about the canon of painting because O twice-born, one who knows the practice of the canon of dance, knows painting (5)
- Mürkandeya Dance is difficult to understand by one who is not acquianted with instrumental music (Atodya) Dance can in no way be known without it (6)
- Vajra O the knower of Law, speak about instrumental music and then you will speak about the canon of dance, because O excellent Bhargava, when the instrumental music is properly understood, one understands dance

 (7)
- Markandeya O Acyuta, without vocal music, it is not possible to know instrumental music. One who knows the practice of the canon of vocal music, knows everything according to rules (8)
- Vajra Explain to me the canon of vocal music, O the Best of the holders of Law, because one who knows the canon of vocal music, is the best of men who knows everything (9)
- Mārkaņdeya Vocal music is two-fold—Sanskṛta and Prākṛta and the third Apabhraṣṭa, however is infinite, (10), O king, on account of the variety of local dialects, its limit cannot be determined in this world. Vocal music is to be understood as subject to recitation and recitation is done in two ways, Prose and Verse (11). O knower of Law, Prose is as found in conversation while verse is as in metre. Metre is of many varieties

यस —देवतास्पनिर्माण कपपस्य समानप ।

यस्मापनिर्दिता निर्पं शास्त्रवण्यादृर्दिर्मपेट् ॥ १ ॥

मार्काटेयः —पित्रमूर्थं म जानानि यस्तु सम्मन् नरापिप ।

क्रिमाण्या सेर्मु न राक्ष्मं सेन वर्षिप् ॥ १ ॥

वित्र —चित्रम्त्रं समाचक्त्र भृगुवशविवर्धन । चित्रस्त्रविदेवाथ वैरयर्चाटक्षण यत ॥ ३॥

मार्क०---तिना तु तृत्तशाखेण चित्रस्त्रं सुदुर्विदम् । जगतोऽनुक्तिया कार्या द्वयोरपि यनो तृप ॥ ४ ॥

वज्ञ — नृत्तकाल सर्माचक्ष्य चित्रस्य विद्यास । नृत्तकाल्लियानक्ष्यित वेति यतो द्विज । ५ ॥

मार्न • — आतोय यो न जानाति तस्य दूश मुदुर्विदम् । आतोयेन विना दृत्त वियते न ऋषमन ॥ ६ ॥

वज्र ---आतीय बृहि धर्मज्ञ वृत्तगास्त्रं विद्वयसि । तिस्मन्युविद्ति वेति वृत्त भागवसत्तम् ॥ ७॥

मार्क०--न गीतेन विना शक्य ज्ञातुमातोग्रमच्युत । गीतशास्त्रविधानज्ञ सर्वे वेत्ति यथाविधि ॥ ८ ॥

यञ्ज —गीतशास्त्र समाचक्त्र सर्वधर्मसृताः वर । गीतशास्त्रविदेवाथ सर्वज्ञ पुरुषोत्तम ।। ९ ॥

मार्कः — सम्हन प्राष्ट्रत चैव गीत द्विविधसुग्यते ।
अपभ्रष्ट तृमीय तु तदनन्त नर्धिष ॥ १० ॥
देशभाषाविशेषण तस्यानतो नेह विद्यते ।
गीत पाठवशाज्हेय म च पाठो द्विषा मत ॥ १९ ॥
गय पद्य च धर्मज गय सकथया स्मृतम् ।
पद्य छन्दोविशेषेणच्छन्दक्ष बहुधा भवेत ॥ १२ ॥

The importance of the passage quoted above cannot be emphasized 100 much. It gives a tradition conscious of the relation and interdependence of various arts. From sculpture we are led step by step to painting dancing and music of instruments and singing. Singing involves literary compositions. This leads us to literary arts and the knowledge of languages current in India at that time 10 Sanskrit, Prakrit and the unequing variety of the Apaddramsa.

This interrelation of arts is corroborated by two historical facts. A comparative study of the monumental remains of sculpture and painting on one hand and sanskrit texts on dancing on the other would show that they are closely interrelated in their subject matter, so much so that these monuments serve as visual illustrations of the verbal explanations of the text. In fact, it is very difficult to understand one without the aid of the other

The other corroboration comes from the fact that in Ancient India a temple was the home of all arts. The temple itself was an embodiment of archi-

¹ Kumāravihārasataka by Ramachandra

tecture. It was decorated with sculptures and paintings. It had halls for music and dancing as well as for the recitation of the Kathā Kāvyas and the acting of dramas. In fact, all arts came there and fulfilled the needs of devotional worship and aesthetic tastes. The temples were open to all their followers and consequently served as institutions of popular artistic culture. In addition to the palaces of kings, mansions of merchant-princes, Saraswati bliavanas of cities were alike places where all these arts were to be found in company. They were presented for entertainment and examination which made their comprehensive knowledge, a necessary item of the education of a Nāgaraka. The famous verse attributed to Bhartthari—Sāhityasangita kalāvihīnah Sākṣātpāśuh Pucchaviśānahīnah ji 12 (Nitiśataka) is thus not a euphuism, but reflects the opinion of the cultured society of ancient India.

Thus this tradition of Markandeya of the interdependence of arts and the consequent educational necessity of learning them preserves what was a living trait of the ancient civilization of India

र काम्यायस्-अन्त र अ ४,४ ४० (C.S.C.) 1012.

VARIETIES OF LITERATURE

Mārkandeya's theory of the interdependance of arts led us to the vocal art of song which because it employs speech carried us to language and literary arts. From Adhyāya 2 (verse 10) to Adhyāya 17, Mārkandeya describes and discusses topics concerned with literary arts.

Ślokas 13 to 22 of Adhyaya 2 briefly describe the grammar of Sanskrit language. Adhyāya 3 is devoted to Chhando Vidhi i e metres. Adhyāya 4 which is called Vakyaparikşa, discusses the different types of sentences. While Adhyāyas 5 and 6 which are called Tantragunadoṣādhyāya and Tantraśuddhi are concerned with dialectics. Adhyāya 7, which is called Prakṛtabhāsālakṣanam treats briefly the rules of Prākṛta grammar. Adhyayas 8 to 13 are devoted to lexicography. Adhyayas 14 to 17 discuss, what may be called the art of literature proper.

In Adhyaya 2 verse 10 we are told that song according to the language in which it is composed is of three varieties viz Sanskṛta, Prakṛta and Apabhraṣṭa The last is ananta infinite because there is no end to the particular dialects of different regions. The implication is that Apabhraṣṭa will not be treated by Mārkandeya

The song is dependent upon Pāṭha—literally recitation or what we might call the text of the song. This Pāṭha is of two types. Gadya (Prose) and Padya (Verse). The point to be noted here is that the text or Pāṭha may be in Prose. This remark is of some importance in the history of singing 1.

Gadya is defined by the term Samkathā (conversation) the speech which man employs in ordinary talking. Padya is distinguished by a particular chanda which is of many varieties. The important thing however, is that both the forms Gadya and Padya are Laksanasamyutam—regulated by definitions, what we might call disciplines proper

The verse is Suvarta or Suvrtta and Atimuktaka

After this general classification of literature into Sanskrit, Prakrit and Apabhrasta as well as prose and verse, we are next taught rudiments of Sanskrit grammar as well as metres (Ads 2 and 3) Mārkandeya's idea seems to be, to give the elementary knowledge of such disciplines as are more general. Thus we are told in the last verse (22) of Adhyāya 2 that the whole speech in prose or verse is based upon Grammar. Vāngmayamakhilamanena nibaddham

I of Rayapaseniya

gadyamapı yadathapadyasametam II The subject matter of Adhyāyas 4, 5 and 6 viz Vakyaparıksā, Tantragunadosa and Tantrasuddhi can be in prose and verse both. These subjects are treated mostly in Sanskrit

Adhyaya 7 takes up Prākrit and Apabhrasţa În ten verses a very brief account of Prakrit is given and as in Sanskrit grammar (Ad 2 verse 21), so here, we are told that this is only Dinmātram In addition verse 11 advises us to learn the details from prayoga practice. To give them all, would be very lengthy. Apabhrasta is disposed off in one verse with the remark that it is not possible to define the variations of speech of different regions and is the province of those who know the different regions and should be learnt from them. This is followed by six Adhyayas on Abhidhānakosa—three of which give elementary knowledge of substantives—particularly those words which would be useful in understanding gods, goddesses, planets etc. and the remaining treat of genders

We shall treat the subject of metres in connection with literary arts. In the next chapter we take up the topics of Vākyapariksā (Ad 4) and Tantragunadośa (Ad 5) and Tantraśuddhi (Ad 6). The topics concerned with different kinds of propositions and śāstric compositions and dialectics.

Of these the short accounts of Sanskrit and Prakrit grammars as well as the small Sanskrit lexicon give the usual information

The adhyayas on Vākyaparīkṣa (Ad 4), Tantragunadosa (Ad 5) and Tantraśuddhi (Ad 6) however, give information which have some noteworthy points

In Vakyaparıkşi (Ad 4), the first 9 verses are devoted to the utterances (vakya) of different classes of super human and human beings. Thus Mārkandeya starts with the utterance of Svayambhū and then describes the utterances of Rşis, Richikas, Rşiputras. Friends, Kings, Danavas, Raksasas and Nāgas and finally the Pauruşa or human utterance. This is followed by the mention of the Mantras, which are classified as Rks, Yaguşes and Sāman's. The subject-matter of these mantrās are also mentioned.

The utterance of Svayambhū is splendid, profound, imperative and free from duplicity or doubt. The utterance regulated by cases expressing a thing directly (pratyaksābhihitam) is called the speech of Rşis. When the utterance is full of a variety of words and particles (Nipāta) but not very big or long (sumahīt), it is called the speech of Reika. That is known as the speech of the Rṣiputras in which the words are not quite clear and contain the knowledge of pīst, future and the present as well as the denunciation of unhappiness of birth (ie life). That is known as the utterance of a friend (Mitravākya), whose inner meaning directs the listener to one of the purposes of life (puruṣārtha). When the utterance has the nature of an order without the mention of

reasons, it is a speech of Rajarsis. The speech of gods is rich in meaning profuse in utterance and capable of expansion, while that of Danavas is profuse in utterance but meagre in sense. The speech of the Gandharvas is meagre in utterance as well as meaning. The speech of the Raksasas is rough and difficult to understand. In the speech of the Yaksas a syllable is kept silent (Gudhakşara) while in that of kinnaras the syllable appears as if uttered (uktavat) The speech of the Nagas is very distinct and accompanied by repetitions The speech of man is inspired by Raga and Dyesa and rational

The subject of the Vedic metres is described as consisting of Stuti (Com

1 The following Nyayasûtras and the Bhasya of Vätsyäyana on them (Ad 2 Ånhika 1)

विधिर्विधायक ॥ ६३ ॥

यद्वाक्य विधायक चोदक स विधि । विधित्तु नियोगोऽनुज्ञा वा ॥ यथा " अप्रिहोत्र जुहुबात् स्वर्गेकाम । १३ ॥ इत्यादि

स्तुतिर्निदा परकृति पुराप्तस्य इत्यर्थवाद ॥ ६४ ॥

(भा०) विधे फलवादलभणा या प्रशसा सा स्त्रति सम्प्रत्ययार्था स्त्र्यमान श्रद्धीतित । प्रवातका च, फल्थ्रवणात् प्रवर्तते 'सर्वनिता व देवा सवमत्रयम् सर्वस्याप्ये सर्वस्य निर्त्य सर्वमेवेन-नाप्नाति सर्वे जयति " इत्येवमादि ।

अनिष्टु पळवादो निन्दा वर्जनार्था निन्दित न समाचरेदिति "स एप बात प्रथमो यहो यहाना यज्ञोतिष्टोमो य एतेनानिष्ट्राऽ येन यजत गर्ते पतत्वयमेवैत जीर्यते वा प्रमीयत वा " इत्यमेवादि ।

अन्यकर्तृ कस्य ॰याहतस्य विधेवदिः परकात । हत्वा वपामवाधेऽभि गारया त अग पृषदाज्य तदुह चरकाध्वर्यव पृषदाज्यमेवाप्रे≲भिधारयति अम प्राणा ५पदाज्यस्तोमसित्येवमभिद्धति" इत्येवमादि ।

एतिद्यममाचरितो विधि पुराप्रतय इति । "तस्माद्वा एतेन ब्राग्नणा बहिन्यवमान सामम्तोमम स्तीपन योने यज्ञ प्रतनवामहे " इत्येवमादि ।

क्थ परकृतिपुराकल्पावर्धवादाविति ? स्तुतिनि दावाक्येनानिमम्ब राद्वि याश्रयम्य प्रस्यचिदर्थस्य (pp 162 163) --- स्यायदर्शनम् द्योतनादर्धवाद इति ॥ ६४ ॥

(श्रीवात्स्यायनमुनिप्रणातभाष्यसहितम् ।)

Vidya Vilas Press

Also compare the following from Sayana's Vedabhasyabhum kasamgraha -पूर्वोत्तो मन्त्रभाग एक । भागान्तराणि च कातिचित् पूर्वेहदाहर्र्तुं संगृहीतानि ।---

हेत्रनिर्वचन निदा प्रशसा स्थायो विधि । परकिया पुरावत्यो स्ववधारणक्रपना ॥

(p 36)

The Chowkhamba 5 Senes 1934

mendation), Ninda (blame), Prasamsa (praise), Ākrosa (abuse), Preșa (callor order upon the assistant priest), Prasna (question), Anujñā (consent), Ākhyana (illustrative story), Āsasti (blessings)

These refer to the nature of Vedic sentences, particularly the sentences of the Brāhmanas The meaning is that some sentences are of the nature of commendation, some censure, some order etc

In the opinion of Markandeya all learning—Sarvavidya is defined by the definition of the different kinds of utterances. Then he remarks that the definition differs in human learning, but not in non human beings who do not swerve from their nature. Amongst men, however, there may be some who may be superior in point of intelligence and therefore his intelligence is regarded superior to all

It is very difficult to discover the significance of these utterances (vakyas) of the different types of beings. The utterance of Svayambhū can be regarded as representing the original assuming the form of the Veda whose injunctions are imperative (ajñayuktam). The utterances of the Rsis and Rsiputrās might apply to the various teachings contain in the Sastras but it is difficult to make out the meaning of the word Rci(?ci)ka Reika is a Rsi descended from Bhrgu. It is also the name of a country mentioned in the Dasakumāracaritam. So the passage may be interpreted as either the utterances of the Bhārgavas or the speech of the inhabitants of Rcika country. But we cannot say, however, what is the significance of these kind of utterances. If we adopt the reading Rcika as suggested in the text, it might mean the speech of the Rsis of the Rgveda. Of the other types, we might note the human utterance. It is characterized by the feelings of likes and dislikes and it expresses reason. This is noteworthy

Tantragunadosa

After Vakyaparikşā, there comes Tantragunadosa ie merits and defects of Sastric or dialectical (Tantra) writing. Ad 5 starts with the definition of a Sutra It is short, void of doubt containing essence, capable of giving as many sense as possible (lit having many mouths) uninterrupted and faultless. This is the general definition. The Sūtras are of two types Utsarga Sūtras and Apavada Sūtras menning Sūtras giving general rules and Sūtras giving exceptions respectively. These types are to be found in Vyākarana. Mīmaṃsa and Dhurma sūtras but not in Nyāya and Vaiseşika sūtras The Sūtra has four parts (angas) Sutra proper (probably meaning the statement), Vyudasa (refutation) Udiharann (illustration) and Pratyudaharana (counter illustration). There is another way of describing these four parts namely Vakya (proposition) Våkyärtha (meaning of propostion), Pada (word) and Padartha (meaning of a word) After this five membered syllogism (Pañeavayava vakya) is described in accordance with the Nyayasutra of Gautama. These five members 12

- 4 Samvāda—harmony, resemblance e g Amātari mātrvat i e calling a mother who is not mother, Jitvarī-agreement
- 5 Kārtaka—is from Krtaka i e conventional e g Pino Devadatto divā na bhūñkte
- 6 Aupacāra—Tailapāśa is called Tulā
- 7 Sāmbandha—from connection e g Mīmānsaka is called Chhatrī,—who holds an umbrella
- 8 Samyoga—the relation of an activity
- 9 Kraiyika—one who sells is called Kraiyika Similarly Pattakrt, Lagudacchedyah, Śākatika etc
- 10 Here the tenth variety seems to be missing

 This is how the words in lexicons may be explained

When the thing to be proved is not well known it can be proved in the following way — The Pratyakşajñāna ie perception arises from the union of the object, the sense concerned, the mind and the soul as located at a particular point in a space. Just as the inference of fire is made by smoke, so the inference of the soul is made by the buddhi (intelligence). The Smrti which is approved by the learned and which is in harmony with Vedas can be a means of moving things, which are not visible. This sort of proof or Sādhana is called śāstra. When out of two similar things, the term for one is extended to the other, it is called Upamāna. Where the thing to be proved is not said but is to be guessed, it is called Arthāpatti eg, Faty Devadatta does not eat by day time. So we guess that he cats by night time. In the last verse, six ways in which things can be proved, are given. These are (1) Nipātana, (2) Yogivibhāgadarsana, (3) Gurūpadeša. (4) Anuvārtika, (5) Svatantrasiddhi, and (6) Paratantradarsana.

Tantra Suddhi.

Ad 6 describes the various kinds of arguments used in a śāstra These are Adhikarana, Yoga, Padartha, Hetvartha, Uddeśa, Nirdeśa, Upadeśa, Apadeśa, Pradeśa, Atideśa, Apavarga, Vākyaśeşa, Arthāpatti, Prasanga, Ekānta, Anekānta, Pūrvapakṣa, Nirṇaya, Vidhāna, Viparyaya, Atikrāntāvekṣana, Anāgatāvekṣaṇa, Samšaya, Ativyākhyāna, Anumata Svasamjñā Nirvacana, Dṛṣṭānta, Niyoga, Vikalpa, Samuecaya and ūhya

The rest of the adhyiya is devoted to a brief explanation of these Adhikarani—Lit a section which covers a discussion with reference to a particular subject or topic (artha)

Yoga—that by which the meaning of a sentence fits properly Padartha—that which is taken as an authentic sense Hetvartha—that argument which establishes a subject are (1) Pratifiá (proposition to be proved), (2) Hetu (the reason), (3) Dritánta (the illustration with generalisation), (4) Upasamhāra (application) and (5) Nigamana (conclusion)

The interpretation of Sūtra has six parts (1) Ārambha (beginning), (2) Sambandha (relation), (3) Sūtrārtha (the meaning of sūtra), (4) Sūtrārtha Viścṣana (further elucidation of the meaning of sūtra), (5) Codanā (objection) and (6) Parihāra (removal of objection)

If what is given in a sutra is stated at length, it troubles the mind. If stated briefly, it is not grasped. Therefore a statement in a sutra should neither be very brief, nor very long

Next come the defects of Vakya (proposition) They are known as Nigrahasthanas in Nyāyasutras These are Apārtha, Vyahata, Punarukta, Vibhinnasthāna, Vibhinna-Samsthāna Yuktihina, Kramabheda, Vibhakta, Gurusutra, Abhidhananiyatva

A sutra should be explained thus—first separate the words, then take them together (ie show the anyaya or order) and then explain the meaning A yoga ie Nyaya proposition is explained thus—(1) a meaning of the sutra (sutrārtha), (2) a meaning of each word (padartha), (3) reason (hetu), (4) order (? kramaśastatā), (5) Explanation (Nitukta), and (6) laying down the proposition (Vinyasa)

The Tantra has three Pramanas Pratykşa, Anumana and Aptavacana Here the word Tantra may refer to the sāmkhya and its allied yoga school and other. Daršanās which accept three pramānas only As against the valid Pramānas these are what might be called illusory pramanas the illustration of the illusory pratyakşa is the mirage. The illustration of the illusory inference is the inference made from Bīspa ie steam and collection of sand which creat the appearance of smoke. The illustration of the illusory apta is the statement made by one who shows himself to be an āpta but is not really so. An apta is a person who is free from likes and dishkes (raga and dveşa)

A derivation is of two kinds—one called Siddha re valid on account of grammatical rules and the other derivative ie which can be derived from rules. In Siddha meaning is fixed while in Autpattika words can be derived e.g. words like Gau, Asva, Purusa are derived (by Yāska). The secondary meaning of a word is of ten kinds—Gauna, Naimittika, Bhākta, Samvāda, Kārtaka, Aupacāra, Sāmbandha, Samyoga, Kraiyika etc.

- 1 Gauna—on account of Guna quality eg Mahat etc
- 2 Naimittika—From Nimitta causes Khandamunda etc
- 3 Bhakta-through Bhakta means division eg Nisimha

¹ See Nyāyakoša p 556

- 4 Samvāda—harmony, resemblance e g Amātari mātrvat i e calling a mother who is not mother, Jitvarī-agreement
- 5 Kārtaka—is from Krtaka i e conventional e g Pino Devadatto divā na bhūnkte
- 6 Aupacara—Tailapāśa is called Tulā
- 7 Sāmbandha—from connection e g Mīmānsaka is called Chhatrī,—who holds an umbrella
- 8 Samyoga—the relation of an activity
- 9 Kraiyika—one who sells is called Kraiyika Similarly Paţţakrt, Laguḍacchedyah, Śākaţika etc
- 10 Here the tenth variety seems to be missing

 This is how the words in lexicons may be explained

When the thing to be proved is not well known it can be proved in the following way — The Pratyakṣajñāna ie perception arises from the union of the object, the sense concerned, the mind and the soul as located at a particular point in a space. Just as the inference of fire is made by smoke, so the inference of the soul is made by the buddhi (intelligence). The Smrti which is approved by the learned and which is in harmony with Vedas can be a means of moving things which are not visible. This sort of proof or Sādhana is called śāstra. When out of two similar things, the term for one is extended to the other, it is called Upamana. Where the thing to be proved is not said but is to be guessed, it is called Arthāpatti eg, Faty Devadatta does not eat by day time. So we guess that he eats by night time. In the last verse, six ways in which things can be proved, are given. These are (1) Nipātana (2) Yogavibhāgadarśana, (3) Gurūpadeša (4) Anuvārtika (5) Svatantrasiddhi, and (6) Paratantradaršana

Tantra Suddhi

Ad 6 describes the various kinds of arguments used in a śāstra These are Adhikarana, Yoga, Padartha, Hetvartha, Uddeśa, Nirdeśa, Upadeśa, Apadeśa, Pradeśa, Atideśa, Apavarga, Vākyaśeşa, Arthāpatti, Prasanga, Ekānta, Anekānta, Pūrvapakṣa, Nirṇaya Vidhāna, Viparyaya, Atikrāntāvekṣana, Anāgatāvekṣaṇa, Samśaya, Ativyākhyāna, Anumata Svasamjñā Nirvaeana Dṛṣṭānta, Niyoga, Vikalpa, Samuecaya and ūhya

The rest of the adhy sya is devoted to a brief explanation of these Adhikarana—Lit a section which covers a discussion with reference to a particular subject or topic (artha)

Yogn—that by which the meaning of a sentence fits properly Paddrtha—that which is taken as an authentic sense. Hetvartha—that argument which establishes a subject

are (1) Pratijā (proposition to be proved), (2) Hetu (the reason), (3) Dṛṣṭānta (the illustration with generalisation), (4) Upasamhāra (application) and (5) Nigamana (conclusion)

The interpretation of Sūtra has six parts (1) Ārambha (beginning), (2) Sambandha (relation), (3) Sūtrārtha (the meaning of sūtra), (4) Sūtrārtha Višeşana (further elucidation of the meaning of sūtra), (5) Codanā (objection) and (6) Parihara (removal of objection)

If what is given in a sutra is stated at length, it troubles the mind. If stated briefly, it is not grasped. Therefore a statement in a sutra should neither be very brief, nor very long.

Next come the defects of Vakya (proposition) They are known as Nigrahasthānas in Nyayasūtras These are Apartha, Vyāhata, Punarukta, Vibhinnasthāna, Vibhinna-Samsthana, Yuktihina, Kramabheda, Vibhakta, Gurusūtra, Abhidhananiyatva

A sutra should be explained thus—first separate the words, then take them together (re show the anvaya or order) and then explain the meaning A yoga re. Nyaya proposition is explained thus—(1) a meaning of the sutra (sutrārtha), (2) a meaning of each word (padārtha), (3) reason (hetu), (4) order (? kramašastatā), (5) Explanation (Nirukta), and (6) laying down the proposition (Vinyāsa)

The Tantra has three Pramanas Pratyksa, Anumana and Aptavacana Here the word Tantra may refer to the samkhya and its allied yoga school and other. Daršanās which accept three pramanas only As against the valid Pramānas these are what might be called illusory pramānas the illustration of the illusory pratyaksa is the mirage. The illustration of the illusory inference is the inference made from Baspa i e steam and collection of sand which creat the appearance of smoke. The illustration of the illusory apta is the statement made by one who shows himself to be an apta but is not really so. An apta is a person who is free from likes and dislikes (rāga and dvesa)

A derivation is of two kinds—one called Siddha ie valid on account of grammatical rules and the other derivative ie which can be derived from rules in Siddha meaning is fixed while in Autpattika words can be derived eg words like Gau, Aśva, Puruṣa are derived (by Yāska)—The secondary meaning of a word is of ten kinds—Gauna, Naimittika, Bhakta, Samvāda, Kārtaka, Aupa cāra, Sāmbandha, Samyoga, Kraiyika etc

- 1 Gauna-on account of Guna-quality eg Mahat etc
- 2 Naimittika—From Nimitta causes Khandamunda etc
- 3 Bhākta—through Bhakta means division e.g. Nṛṣimhi.

¹ Sec Nyayakośa p 556

- 4 Samvāda—harmony, resemblance e g Amātarī mātrvat i e calling a mother who is not mother, Jitvarī-agreement
- 5 Kārtaka—is from Krtaka i e conventional e g Pino Devadatto diva na bhūnkte
- 6 Aupacāra—Tailapāsa is called Tulā
- 7 Sāmbandha—from connection e g Mīmānsaka is called Chhatrī,—who holds an umbrella
- 8 Samyoga—the relation of an activity
- 9 Kraiyika—one who sells is called Kraiyika Similarly Pattakrt, Lagud-acchedyah, Śākatika etc
- 10 Here the tenth variety seems to be missing

 This is how the words in lexicons may be explained

When the thing to be proved is not well known it can be proved in the following way —The Pratyaksajñāna ie perception arises from the union of the object, the sense concerned, the mind and the soul as located at a particular point in a space. Just as the inference of fire is made by smoke, so the inference of the soul is made by the buddhi (intelligence). The Smrti which is approved by the learned and which is in harmony with Vedas can be a means of moving things, which are not visible. This sort of proof or Sādhana is called śāstra. When out of two similar things, the term for one is extended to the other, it is called Upamāna. Where the thing to be proved is not said but is to be guessed, it is called Arthāpatti eg, Faty Devadatta does not eat by day time. So we guess that he eats by night time. In the last verse, six ways in which things can be proved, are given. These are (1) Nipātana, (2) Yogavibhāgadarśana, (3) Gurūpadeśa, (4) Anuvartika, (5) Svatantrasiddhi, and (6) Paratantradarsana.

Tantra Suddhi.

Ad 6 describes the various kinds of arguments used in a śāstra These are Adhikaraņa, Yoga, Padartha, Hetvartha, Uddesa, Nirdeša, Upadesa, Apadeša, Pradeša, Atideša, Apavarga, Vākyašeşa, Arthāpatti, Prasanga, Ekānta, Anekānta, Pūrvapakṣa, Nirṇaya Vidhāna, Viparyaya, Atikrāntāvekṣana, Anāgatāvekṣaṇa, Samšaya, Ativyākhyāna, Anumata Svasamjñā, Nirvacana, Dṛṣṭānta, Niyoga, Vikalpa, Samuccaya and ūhya

The rest of the adhyliya is devoted to a brief explanation of these Adhikarana—Lit a section which covers a discussion with reference to a particular subject or topic (artha)

Yoga—that by which the meaning of a sentence fits properly Padartha—that which is taken as an authentic sense Hetvartha—that argument which establishes a subject Uddesa-a brief stitement

Nirdesa-statement at length

Upadeša-'Evameva'-statement saying 'it is positively like this?

Apadesa-statement showing reason

Pradesa-proving the subject matter in hand by something in future

Atidesa—extension beyond the subject concerned

Apavarga—Fatching out an intended meaning

Vākyaseşa—the understood (aharya=adhvāhārya) word by which the meaning is completed

Arthapatti—the unmentioned meaning which has to be taken in order to make the sense reasonable

Prasanga—a topic which has been mentioned in the chapter but which is mentioned again in some context

Ekānta—that which is always like that

Anekanta—that which is at some place like this and at other place different

Purvapakşa—the proposition which controverts a statement

Nirnaya—the proposition which answers the objection

Vidhāna—the order of a discussion

Viparyaya—the opposite of Vidhāna

Atikrantavekşana—it has been said like that

Anagat weksana—I will say it later on

Samsaya—to show reason in both the alternatives

Ativyākhyāna—an excessive statement

Anumata-not negativating the opinion of the opposite party

Svasamjña-the word which is not accepted by the opposite party

Nirvacana—the example which is well understood by the people

Drstanta—that which illustrates the argument

Niyoga—it is positively like this

Vikalpa—it may be like this or like this

Samuccaya—it is like this and like this

Uhya-that which is not mentioned but which can be understood by argument

The Sāmvartika dharmaguna is of eight kinds (1) Prayojana (purpose), (2) Samšaya (doubt) (3) Nirnaya (definite conclusion), (4) Vyākhyāvišeşa (particular explanation), (5) Guna (secondary sense), (6) Lāghava (brief), (7) Kṛtavyudāsa (refutation) and (8) Kṛtašāsana (assertion of a rule)

Literary Arts:

Now we come to literary arts proper We will first take up chhandas (metres) because metres have a claim to be included in any discussion of arts especially literary arts. This would be followed by $Alamk\bar{a}ra$ (figures of speech) and $Prahelik\bar{a}s$ (the art of putting riddles). Then we will take up the topics of the varieties of literature particularly $K\bar{a}sja$ and $Mah\bar{a}k\bar{a}vja$. This would be followed by a discussion of the twelve types of the Drama

Chhandas:

The chapter (Ad 3) on metres is called *chhando vidhih* It is said in Ad 2 ślokas 11 to 13 that Gita is dependent upon recitation (pāṭha)

This patha is of two kinds Gadya (prose) and Padya (verse) Gadya is in the natural style of samkatha (conversation) while Padya is characterized by a chhanda (metre) It is of many kinds

The third adhyaya of our text mentions by name the following metres —

| Gāyatra | of | 6 syllables | Atyaşţı | of | 17 | syllables |
|------------|----|--------------|----------|----|----|-----------|
| Usnık | of | 7 syllables | Dhrti | of | 18 | syllables |
| Anustup | of | 8 syllables | Atidhŗti | of | 19 | syllables |
| Brhati | of | 9 syllables | Krtı | of | 20 | syllables |
| Panktı | of | 10 syllables | Prakṛtı | of | 21 | syllables |
| Trışţubh | of | 11 syllables | Āķrtı | of | 22 | syllables |
| Jagatī | of | 12 syllables | Vikṛti | of | 23 | syllables |
| Atıjagatı | of | 13 syllables | Sankṛtı | of | 24 | syllables |
| Sakvarı | of | 14 syllables | Atıkrtı | of | 25 | syllables |
| Atıśakvarı | of | 15 syllalbes | Utkrtı | of | 26 | syllables |
| Asţı | of | 16 syllables | | | | - |

Natyasastra¹ describes the same types of metres with the numbers of their syllables described above—But it gives five more types—They are as follows—

Ukta of 1 syllable
Atyukta of 2 syllables
Madhya of 3 syllables
Pratisthā of 4 syllables
Supratisthā of 5 syllables

It is difficult to say how far our text is indebted to Nāţyaśāstra. The fact that it omits five kinds of metres described by N S might suggest that it may have some older authority which may not have included these five kinds. It is,

¹ Nātyašāstra, Adhyāya 14, Ślokas 41-47 (p 224) N Sagar edition This subject matter is treated also in such works as Chhandas Šāstra, Chhandassāra of N Sagar Press

however quite possible that our text might be giving only an abridged version of N S

Some general rules of long (Guru) short (Laghu) and pluta measures and scansion are also given. The metres lacking one syllable are called Niett or Nivitta having an additional syllable are called Bhurik lacking two syllables are called Virāt and having two additional syllables called Svarāt. This can be compared with Natyasastra Ad. 14 slos. 56 58 ¹. We are told that all the Matrā metres come out of these. Here also we are warned that this treatment of metres is only suggestive. In order to get a more extensive knowledge of the subject one must use one s intelligence (Svadhiya yathāvat).

Alamkaras

The art of metres is concerned with the vowel quantities of a language. Thus it gives us various vocal rhythms. The art of Alamkaras is properly speaking the art of beautiful speech. A part of it like the metrics is concerned with the various consonantal harmonies. But the major concern of the Alamkaras is with beautiful modes of expressing the meaning (Artha)

Our text in Adhyaya 14 makes no mention about the number of Alam karis nor does it give any general definition of Alamkara as such. We find however that it treats of eighteen Alamkaras. Of these two Anuprāsa and Yamaka are what are known later on as Sabdālamkaras. The remaining sixteen Alamkaras are Rupaka Vyatireka Ślesa Utpreksa Arthantaranyasa Upanyasa Vibhāvana Atišayokti Svabhavokti Yathāsamkhya Višesokti Virodha Ninda stut. Nidaršana Upama and Ananvaya

Anuprāsa²—Repetition of a letter (consonant) is called Anuprasa by the ancients—in accordance with the meaning (Arthagitya) of the word anu prasa. On this the remark is that if it is overdone it becomes vulgar—Atyartham tatkṛtam rājan grāmyatīmupagacchati

[ा] प्रतामधेरत चैव विषम सममेव च ।

छन्दिस यस्य पाद स्यादानो वाधिक एव वा ॥ ५६ ।

यत्त निष्टिति श्राक्त गुर (रु १) वैश्विट् द्विचेतमा ।

अभराभ्या सदा द्वाभ्यामधिक हीनमेव वा ॥ ५७ ॥

तच्छादो नामतो हेय स्वराडिति विगाडिप ।

छन्दसां तु भवदेषा मेदोऽनैकवि । पृथक् ॥ ५८ ॥ (CSS)

² cf सम्पर्वणीव यासमनुषास प्रचक्षन । सध्यारहार (भागह) अ २ श्री ५ वर्णासिरमुपास पारेषु च पदेवु च । सध्यार्ट्स

Yamaka¹—When similar sounds having different meanings are repeated, it is called Yamaka It may be placed in the beginning, middle or at the end of the Pāda Two varieties of Yamaka are mentioned—Samdamṣṭaka and Samudga It may be noted that Bhāmaha gives a similar definition of Yamaka but avoids ambiguity by using the word śruti instead of sabda

Rūpaka²—Rūpaka is the first Arthālamkāra to be considered. It is defined as 'similarity of Upameya with Upamāna'

Vyatıreka³—When in the above (Rūpaka), however, there is superiority of one attribute (ekagunādhikam), it is called Vyatıreka on account of the difference or distinction based upon gunās (gunānām Vyatırekena)

In the other variety of Vyatireka, superiority is shown by attributes which are the opposites of the attributes of Upamāna

1 Compare Bhamaha-

तुल्यश्रुतीना भिन्नानामभिषेये. परस्परम् । वर्णाना य पुनर्वादो यमक तिन्नगद्यते ॥ १७ ॥ आदिमध्यान्तयमकं पादाभ्यास तथावली । समस्तपादयमकमित्येतत् पद्यधोच्यते ॥ ९ ॥ सन्दष्टक समुद्रादेरत्रवान्तर्गतिर्मता । आदौ मध्यान्तयोवी स्यादिति पत्रेव तद्यथा ॥ १० ॥

> अ, २ К L

Our text does not mention Avali Compare also Dandin—

> अव्यपेतव्यपेतात्मा या रृत्तिर्दणं सहते । यमकं तच पादानामादिमध्यान्तगोचरम् । १ ॥ एक द्वि त्रि चतुष्पाद यमकाना विकल्पनाः । आदिमध्यान्तमध्यान्तमध्यायाद्यन्त सर्वतः ॥ २ ॥ अत्यन्तबह्वस्तासा भेदाः सम्मेदयोनयः । मुकरा दुष्कराक्षेव वर्ष्यन्ते तत्र केचन ॥ ३ ॥ अ. ३

- उटा उपमानेन यत्तस्वमुपमेयस्य रूप्यते । गुणाना समता दृष्ट्वा रूपकं नाम तद्विदुः ॥ २९ ॥ अ. २ к L. उपमेव तिरोभ्तमेदा रूपकमुच्यते । ६६ अ. २ кр.
- उपमानवतोऽर्थस्य यद्विशेषिनदर्शनम् ।
 व्यितिरेकं तमिच्छन्ति विशेषापादनाद्यथा ॥ ७५ ॥ अ. २ к.८ शब्दोषाते प्रतीते वा साहदये वस्तुनोईयोः ।
 तत्र यद्वेदप्रथनं व्यितरेक स वध्यते ॥ १८० ॥ अ. २ к.ठ

Śleşa!-When a word has two or three meanings, it is called Śleşa.

- Utprekṣā²—When a thing has one nature but when it is imagined as having a different nature (anyathā), it is called Utprekṣā.
- Arthantaranyāsa³—When such a meaning is proposed as is different from the relevant (prastuta) sense but consistent with the preceding sense, it is called Arthantaranyāsa
- Upanyāsa.—When one thing is proposed and another is mentioned, it is called Upanyāsa.
- Vibhāvanā⁸—When something is produced without a cause (lit. spread—vitatā proktā), it is called Vibhāvanā
- Atisayokti⁶—When Upameya is described with attributes which have no parallel in the attributes of the Upama (or? which surpass them), it is called Atisayokti
 - उपमानेन यत्तरवसुपमेयस्य सःध्यते ।
 गुणिकयाभ्या नाम्ना च श्लिष्टं तदिभिषीयते ॥ १४ ॥ अ. ३ к.с.
 श्लिष्टमिष्टमनेकार्थभेकस्पान्वितं वचः ।
 तदिभिन्न पदं भिन्नपद्रप्रायमिति द्विष्रा ॥ ३१० ॥ अ. ३ к.р
 - अविवक्षितसामान्या किश्विचीपमया सह । अनद्भुण वियायीगाहुत्येद्यानि शयान्विता ॥ ९९ ॥ अ. २ к L अन्ययेव स्थिता शृत्तिथेतनस्येत्तरस्य वा । अन्यथोतप्रेक्ष्यते यत्र तामुत्येक्षा विदुर्यथा २२१ ॥ अ. २ к D

Our definition resembles more Dandin's definition

उपन्यसनमन्यस्य यद्धेस्योदितारते । होयः सोऽर्थान्तरन्यामः पूर्वार्थानुगतो यथा ॥ ७९ ॥ अ. २ छ छ. होयः सोऽर्थान्तरन्यामो वस्तु प्रम्तुत्य किंचना । तत्साधनसमर्थस्य न्यासो योग्यस्य वस्तुनः ॥ ९६९ ॥ अ. २ к.р.

Que definition resembles more Bhamaha

- 4 This name is not found in Bhamaha and Dandin.
- 5 कियायाः प्रतिषेधे या तरफलस्य विभावना । ह्रोया विभावनेवासी समाधी मुलमे सित ॥ ७७ ॥ अ. २ к г. प्रसिद्धहेतुब्यारस्या यस्तिन्दित कारणान्तरम् । यत्र स्वाभाविकत्वं वा विभाव्य सा विभावना ॥ १९९ ॥ अ. २ к р.
- 6 निमित्ततो वची यत्तु लोकातिकान्तगोचरम् । भन्यन्तेऽतिरायोक्ति तामलंकारतया तथा ॥ ८९ ॥ अ. २ К L. विवक्षा या विशेषस्य लोकसीमातिवर्तिनी । असावतिरायोक्तिः स्यादलंकारोक्षमा यथा ॥ २९४ ॥ अ. २ К D.

Svabhāvokti¹—When a thing is described in a natural form, it becomes Svabhāvokti.

Yathāsamkhya²—When things are stated in order, it is called Yathāsamkhya.

Visesokti3-When a particular point is emphasised, it is called Visesokti.

Virodha4—When an action gives a fruit other than the natural one, it is called Virodha.

Nindāstuti⁵—When censure is made in the form of praise, it is called Nindāstuti. The same word is used when praise is given in the form of censure.

Our definition resembles more Bhāmaha

- पृत्येदास्य विगमे या गुणान्तरसंस्थितिः । विशेषप्रथनायासा विशेषोक्तिमता यथा ॥ २३ ॥ अ. ३ к.L. गुणजातिक्यि।दीनां यत्तु वैक्त्यदर्शनम् । विशेषदर्शनाविक सा विशेषोक्तिरिष्यते ॥ ३२३ ॥ अ. २ к.D.
- 4 गुणस्य वा कियाया वा विरुद्धान्यक्रियामिषा । या विशेषाभिषानाय विरोधं तु विदुर्बुषाः ॥ २५ ॥ अ. ३ К L. विरुद्धानो पदार्थानां यत्र संसर्गदर्शनम् । विशेषदर्शनायेव स विरोधः स्पृतो यथा ॥ ३३३ ॥ अ. २ K.D.
- अधिराराद्येतस्य यस्तुनोऽन्यस्य या स्तृतिः । अप्रस्तुतप्रमंशिति सा चाँ कथ्यते यथा ॥ २९ ॥ अ. ३ к L-अप्रस्तुतप्रमंशित स्याद्यकारतेषु या स्तृतिः ॥ ३४० ॥ अ. २ к D. यदि निन्द्रित स्त्रौति स्याजस्तुतिस्तौ स्यृता ॥ ३४३ ॥ ", ", Compute also the definition of लेशा. क्लो. २६८ अ. २ к.D. द्यायेगादिस्थानेगमसङ्गरीति द्योगते । देशायेव दिद्योग्दर्श स्तृति या तैरातः समाप् ॥ २६८ ॥ अ. २ к.D.

रवमावोक्तिरलंकार इति केचित्यचक्षते । अर्थस्य तदवस्थरवं स्वभावोऽभिहितो यथा ॥ ९३ ॥ अ. २ к.L. नानावस्यं पदार्थानां रूपं साक्ष द्विशृवती । स्वभावोक्तिथ जातिथेत्याया सालंकृतिर्यया ॥ ८ ॥ अ. २ к.D.

भूयसामुपदिष्टानामर्थानामसंघर्मणाम् । कमशो योऽनुनिर्देशो यथासंख्यं तदुच्यते ॥ ८९ ॥ भ. २ к.с. छित्षानां पदार्थानामनृहेशो यथाकमम् । यथासंख्यमिति श्रोक्तं संख्यानं कम इत्यपि ॥ २०३ ॥ भ. २ к.р.

Nidarsanam¹—When the comparision is made in a matter of fact, it is called Nidarsana

Upamā²—When, however, the comparision is made without any basis in reality, it is called Upama

Ananyaya When a thing is compared with itself and nothing else, it is called Ananyaya

The question of the number of recognised alamkaras is an important problem in the history of Alamkarasastra, so are the varying definitions of Alamkaras of the same name

N S mentions only four alamkaras—Upama Dipaka, Rupaka and Yamaka Bhamaha refers to an old tradition which recognises five uz Anu prasa Yamaka, Rupaka, Dipaka and Upama He, himself, however describes about thirtynine Alamkaras A number of varieties of Upama is given which later on become independent alamkaras. In addition to this N S mentions and describes thirty six blaksanas. Most of which are in later literature in corporated in the alamkaras. Bhamaha and Dandin whose priority to each other is still a matter of controversy give respectively 39 and 35 alamkaras. Bhatti in his poem uses 38 alamkaras.

Thus we find that our text gives the minimum number of alamkaras, if we regard the 36 lakşanas of N S as kinds of alamkaras. While discussing the

विययेव विशिष्टस्य तदधस्य पदर्शनात् । श्रेया निदर्शना नाम यथेवेवतिभिर्विना ।। ११ ॥ अ १ К L अर्था तरप्रवृत्तेन विचित् तत्सदश पलम् । सदसद्वा निदर्श्वत यदि तत् स्यान्निदर्शनम् ॥ १४८ ॥ अ २ К D

विरद्धेनोपमानेन देशकालिक्यादिभिः। उपमेयस्य यत्साम्य गुणलेशोन सोपमा ॥ ३० ॥ अ २ к ८ यथाकथित् सादर- यत्रोदभूत प्रतीयते । उपमा नाम सा तस्या प्रपद्योय प्रदश्यते ॥ १४ ॥ अ २ к р

³ यत्र तेनैव तस्य स्यादुपमानोपमेयता । अस्याद्वर्याचेष्यद्वरतिमधाहुरनन्वयम् ॥ ४५ ॥ अ ३ K L

Our definition resembles more Bhamaha

Dandin does not mention Ananyaya but we find the same substance in his definition of Asadhāranopamā

आत्मनेवाभवनुल्यमिल्साधारणोपमा ॥ ३७ ॥ अ. २ K D

⁴ Adhyaya 16 sloka 43

⁵ Dr V Raghavan in his work some concepts of the alamkārašastra, has ably discussed the relation of laksana and alamkāras in his essay. The history of alamkāra

definitions of various alamkāras given in our text, I have in the foot-note quoted from Bhamaha and Dandin the corresponding definitions. A comparision of these definitions with those given in our text reveals two points. One is that in the case of many alamkāras the definitions are more or less identical, sometimes having the same words. Another point is that there are also important variations. The place given to Upamā and its definition in our text deserve consideration. In almost all the works dealing with alamkaras, Upamā is generally mentioned first and has always a basic importance, but it is not so in our text. It is not even properly defined but is only contrasted with Nidarsana. The distinction is, as we have seen, that in the case of Nidarsana the comparision is a matter of fact one, while in the case of Upama it is not so i.e. imaginary.

The above considerations lead us to think that our text does not derive its material directly either from Bhamaha or Dandin but it has before it a tradition, which must have distinctive features represented in our text. The words Puratanaih Samkhyatam in the case of anuprāsa and Puratanaih Kathitah in the case of Utprekṣā confirm the above view

Prahelika

Adhyāya 16 is devoted to the description of twenty-four kinds of Prahelikās

Of the Prahehkas¹ some are to be made out of the Kāvya Dosas while others are independent

A general instruction is given that a Prahelikā should be expressed through either one or two Verses but not many

The following Prahelikas are mentioned — Samātratā, Vandīta or Vancīta, Vikrāntagopītā, Musītā, Parihāsikā, Samanarupa, Paruşa, Samkhyata, Kalpīta, Nāmāntarītā, Nibhrtā, Samāna Šabdī, Vyāmudha, Gūdhā, Ekachannā, Ubhayachanna, Sankirna, Arthakarī, Vyabhīcarīni, Nastārtha, Nastākṣara, Anyārthata, Arthadā and Lešā

Samātratā²—The meaning is concealed on account of a Mātrā—Dandin calls it Samāhitā and says that the meaning becomes obscure on account of the Padasandhi

Vanditā or Vañcitā³—The meaning is concealed by means of synonymous words (Paryāyavacanā)

This is similar to what Dandin has said in his Kavyadarsa. He says that there are fourteen Duşta Prahelikas but as there are innumerable Doşas. It is no use in describing this and therefore he describes the only good ones.

² kāvyādarša, Adhyaya 3, Śloka 98 AB Illustration śloka No 108

³ kāvyādarsa Adhyāya 3, sloka 98 CD Illustration sloka No 109

Nidarsanam¹—When the comparision is made in a matter of fact, it is called Nidarsana

Upamā²—When, however, the comparision is made without any basis in reality, it is called Upamā

Ananvaya When a thing is compared with itself and nothing else, it is called Ananvaya

The question of the number of recognised alamkāras is an important problem in the history of Alamkārasastra, so are the varying definitions of Alamkāras of the same name

N S mentions only four alamkāras—Upamā, Dipaka, Rupaka and Yamaka Bhamaha refers to an old tradition which recognises five uz Anuprāsa, Yamaka, Rupaka, Dipaka and Upamā He, himself, however describes about thirtynine Alamkāras. A number of varieties of Upamā is given which later on become independent alamkaras. In addition to this N S mentions and describes thirty six laksanas. Most of which are in later literature in corporated in the alamkaras. Bhamaha and Dandin whose priority to each other is still a matter of controversy give respectively 39 and 35 alamkaras. Bhatti, in his poem uses 38 alamkaras.

Thus we find that our text gives the minimum number of alamkaras, if we regard the 36 lakşanas of N S as kinds of alamkaras. While discussing the

<sup>किय्यैव विशिष्टस्य तदर्थस्य पदर्शनात् ।

हिया निदर्शना नाम यधेवेवतिभिर्विना ॥ ३३ ॥ अ ३ к к.
अर्थान्तरप्रवृत्तेन विचित् तत्सद्दश पलम् ।

सदसद्दा निदर्श्वत यदि तत् स्यानिदर्शनम् ॥ ३४८ ॥ अ २ к р.</sup>

विरद्धेनोपमानेन देशकालिक्यादिभिः। उपमेयस्य यत्साम्य गुणलेशोन सोपमा ॥ ३० ॥ अ २ к. к. यथाकथित सादस्य यहोदभूत प्रतीयति । उपमा नाम सा तस्याः प्रपथीय प्रदश्यते ॥ १४ ॥ अ २ к. р.

³ यन तेनैव तस्य स्यादुवमानोपमेयता ।
असादश्यविद्धातस्तमिलाहुरनन्वयम् ॥ ४५ ॥ अ ३ k L
Our definition resembles more Bhāmaha
Dandin does not mention Ananvaya but we find the same substance in his definition of Asādhāranopama
वारमनेवाभवगुल्यमिलासाधारणोपमा ॥ ३७ ॥ अ, २ k D

⁴ Adhyāya 16 šloka 43

⁵ Dr V Raghavan in his work—some concepts of the alamkārašāstra', has ably discussed the relation of lakṣaṇa and alamkāras in his essay, The lustory of alamkāra'.

definitions of various alamkāras given in our text, I have in the foot-note quoted from Bhamaha and Dandin the corresponding definitions. A comparision of these definitions with those given in our text reveals two points. One is that in the case of many alamkāras the definitions are more or less identical, sometimes having the same words. Another point is that there are also important variations. The place given to Upamā and its definition in our text deserve consideration. In almost all the works dealing with alamkāras, Upamā is generally mentioned first and has always a basic importance, but it is not so in our text. It is not even properly defined but is only contrasted with Nidarśana. The distinction is, as we have seen, that in the case of Nidarśana the comparision is a matter of fact one, while in the case of Upamā it is not so i.e. imaginary.

The above considerations lead us to think that our text does not derive its material directly either from Bhāmaha or Danqin but it has before it a tradition, which must have distinctive features represented in our text. The words Purātanaih Samkhyātam in the case of anuprāsa and Purātanaih Kathitah in the case of Utpreksā confirm the above view.

Prahelika

Adhyāya 16 is devoted to the description of twenty-four kinds of Prahelikās

Of the Prahelikās² some are to be made out of the Kāvya Doşas while others are independent

A general instruction is given that a Prahelika should be expressed through either one or two Verses but not many

The following Prahelikās are mentioned —

Samātratī, Vandītā or Vañcīta, Vikrāntagopītā, Muşītā, Parīhāsikā, Samānarupā, Paruşī, Samkhyātā, Kalpītā, Nāmīntarītā, Nibhrtā, Samāna Šabdā, Vyāmūdha Gūdhā, Ekachannā, Ubhayachannā, Sankirnā, Arthakārī, Vyabhicārīnī, Nasţārthī, Nasţāksarā, Anyārthatā, Arthadā and Lešā

Samītratā²—The meaning is concealed on account of a Mātrā—Dandin calls it Samāhitā and says that the meaning becomes obscure on account of the Padasandhi

Vanditā or Vañcitā³—The meaning is concealed by means of synonymous words (Paryāyavacanā)

¹ This is similar to what Dandin has said in his Kāvyādarsa. He says that there are fourteen Duşţa Prahelikās but as there are innumerable Doṣās. It is no use in describing this and therefore he describes the only good ones.

² kāvyādarša, Adhyāya 3, Šloka 98 AB Illustration šloka No. 108

³ Kavadarka Adhyava 3, sloka 98 CD libration floka No. 109

Vikrāntagopitā¹—The meaning is concealed by intermediary words. Dandin calls it Vyutkrāntā

Muşită*—The meaning is concealed by means of obsolete synonyms. Dandin ealls it Pramuşită

Parihasika The meaning is constructed out of the hidden meaning

Dandin does not mention this variety but mentions as a thirteenth variety, Parihārikā which is defined as consisting of a series of words which give meaning to the sentence, when taken in the root sense. It is difficult to say whether Parihāsikā and Parihārikā are the same

Samānarūpā!—The meaning is hidden by different words having the same meaning

According to Dandin in Samanarupa the Prahelika is made by words whose secondary meaning yield the sense of the words

Paruşā⁵—The meaning is hidden on account of the construction of harsh syllables Samkhyātā⁶—The meaning is hidden on account of using the words denoting Samkhyā

Dandin explains this by saying that enumeration is the cause of concealing the meaning and illustrates it by means of a śloka where Kāñcī and Pallavās are indicated by Caturvarnya and Aşţavarna respectively

Kalpita7—The meaning is hidden by the apparent meaning

Dandın calls it Prakalpitā

Namantarita The meaning is hidden by misunderstanding a Samja (proper name)

```
J Kavyādarša Adhyaya 3, šloka 99 AB
Illustration šloka No 110
```

Illustration šloka No 114 —

नासिक्यमध्यापरितथातुर्वेर्ण्यविभूपिता ।

अस्ति काचिन् पुरी यस्यामप्टवणीवया नृपा ॥ १९४॥

Illustration sloka No 116 -

आदी राजे यधीराक्षि पार्थित नोऽपि गीयते । सनातमध नेवासी राजा नापि सनातन ॥

² Kāvyadarša Ad 3, šloka 99 CD

Illustration šloka No 111 3 Kāvyadarša Adhyaya 3, šloka 104

Illustration sloka No 120

⁴ Kāvyādarsa Adhyaya 3, šloka 100 AB Illustration šloka No 112

⁵ Kāvyadarša Adbyāya 3, šloka 100

Illustration šloka No 113 6 Kāvyadarša Adhyaya 3, šloka 101

⁷ Kāsyadarša Adhyāya 3 šloka 101 Illustration šloka No 115

⁸ Kāvyādarša Adhyaya 3 šloka 102 AB

Nibhrtā¹—The meaning is hidden by the misunderstanding of words Samāna sabda²—The meaning is hidden by identical words

Vyāmudha³—The meaning becomes difficult to understand on account of the concordance of the meaning

Dandin calls it Samūdhā and he illustrates it by a sloka where the concordance of the word tathaira misleads

Gudhā4—The meaning is hidden on account of various Bandhas in the Vrtta (metre) The meaning of this is not clear from the text

Dandin does not mention this variety.

Ekachhannā⁵— \ — The real meaning is concealed by not mentioning one Ubhayachhanna⁶ \ or both The wording in our text is obscure

Dandin, however, makes the meaning clear In Ekachhannā the āsrīta is expressed while the āsraya is concealed. In Ubhayachhannā both are concealed.

Sankirna?—is defined as Sambhavopeta The meaning is concealed on account of many possibilities but if we interpret the word Sambhava as the meaning Samkala, it agrees with the definition given by Dandin

Arthakāri—The meaning leads to a different meaning. The sense seems to be that the obvious meaning is supposed to lead some other meaning and thereby conceals the intended purport

Vyablucarını-When same effect is achieved through a word

Naştīrthā—The meaning in our text is not quite clear in its wording. The meaning seems to be that the meaning becomes clear by putting the missing. Matrā in the metre.

Naștăksară—The meaning is concealed for want of one Akşara Anyarthata—The meaning becomes different because a Varna is missing

शानीये परावृत्व शयिनौ कामिनौ रपा ।

तथेव शिवनी रागान् स्वरं मुलमञुम्बताम् ॥ ११९

Kävyadarša Adhyaya 3, štoka 102 CD Illustration šloka No. 117

² Kāvyādarša Adhyāya 3, šloka 103 AB Illustration šloka No 118

³ kāryādarša Adhyāya 3, šioka 103 CD Illustration šloka No. 119 —

⁴ Rüdraft refers to Güdha Prabelikās but it is not clear whether it is the same as our text mentions

⁵ Kāryādarša Adhyāya 3 Boka 104 CD Illustration Bloka No. 121

⁶ Käivädaria Adhyāya 3 fioka 105 AB Illustration floka No. 122.

⁷ Kawadaria Adwaya 3 Boka No. 105 CD. Postration Boka No. 123

Arthada—The meaning becomes clear by interpretation according to different tenses

(The text however, is not clear to me)

Lesa—Only the seed of the meaning is suggested

Our text emphatically enjoins that in the above Prahelikas no obscene meaning should ever be suggested. This injuction seems to be significant as suggesting that sometimes obscene meanings were suggested through Prahelikas

In some vernacular riddles poems and songs one meets with such Prahelikas which must have their prototypes in earlier folk literature

It may be interesting to note that the Prerana¹ variety of Geyapre ksakavya full of humour consists of Prahelika. This may be compared to some of the Sannadas sung at popular fairs by men and women which are full of humour and erotic suggestions.

We have seen that out of the 24 Prahelikas fifteen are practically the same as are described by Dandin in his Kavyadarsa. This might lead us to draw the conclusion that our text has taken its material from Dandin's Kavyadarsa. But the few variations in the definitions and the additional Prahelikas go against this view. It may be that there might be a common source from which both have taken their material to suit their purpose

It is rather strange that our text should devote a whole adhyaya to the Prahelikas when it cursorily deals with more important topics. This suggests that at the times when our text might have been composed. Prahelikas must have been regarded so important as to deserve a special adhyaya. It would be therefore interesting to consider the place of Prahelika in our literary culture.

Amarakośa² mentions Pravahlika and Prahelika together. So does Hema candra in Abhidhana Cintamani ³ Hemacandra explains Pravahlika as Pralivalate Pradl any am bl ajate and Prahelika as Prahelayati abhiprayan sucayati and gives two varieties sabdi and Arthi

Prahelika or Pravahlika seems to be a literary diversion of the learned people from very ancient times. We find Pravahlika mentioned in the Brahmanas of the Rgveda such as Aitareya Kausitaki etc. The reference is about certain laconic verses of the Atharvaveda. Thus Pravahlika is used in the sense of a riddle in these works.

¹ हास्यनाय प्रेरण तु स्यात्प्रहेलिकयानितम्।

Kavyānukisana Adl yaya 8 sutra 4 page 446 ed ted by R C. Parikh

² Kānda i Varga 6 šloka 6

³ Kānda 2 Šloka 173

⁴ Ved c Index Vol 2 page 40

Another type of riddle namely theological is also referred to under the name of Brahmodya¹ in the Brāhmanas

The attraction of this type of literary activity seems to have been considerable and we find it mentioned as one of the 64 kalās in the Kāmasūtra² of Vātsyāyana and is referred to by Jayamangala in his commentary on it as Lokapratitā means well known in society. He gives two varieties of it 112 Krīdarthā and Vādārthā i e one for diversion and the other for discussion

Our earliest works on poetics mention Prahelikā Bhāmaha³ describes Prahelikā as employing Yamaka and as having recondite meaning on account of the variety of root meanings. He further adds that such a literary type can only be understood like the sāstras only with the help of commentaries and that it is a source of pleasure to the sharp-witted but humiliation to the dullards

We have already seen at what great length Dandin discusses his sixteen varieties of Prahelikās

Later writers on poetics, however, do not give it much importance Mammata for example does not mention it. In Adhyaya 9 Kārika 85 (p. 529) edited by Zalakikar) he discusses citrakāvyas introducing this subject in its vrtti, he says Kaştam Kāvyametadıtı Dınmāţram Pradarśyante, and then gives examples of Khadgabandha murajabandha etc but does not mention Prahelikā He says (p 534), at the end Sambhavno'py any e prabhedah Saktimātraprakāšakāh na tu Kāvi arūpatām dadhatiti na pradarši ante Only Somesvara. one of his earliest commentators in his Samketa refers to Prahelikā while commenting on the word anye prabhedah Hemacandra⁵ refers to it as a Specimen of Kastakāvya and regards it merely as a thing of play (Krida) but of no poetic value. Bhoja in his Sarasvatikanthābharana⁶ describes six varieties of it Rudraja in his Kāvyalamkāra⁷ also briefly discusses it While Viswanātha in his Sahityadarpana8 emphatically says that as Prahelikā is unfavourable to Rasa, it is not included in Alamkaras. It is only a mode of expression (Ukti Vaicitry amātram) He refers to three such varieties, viz Cyūtākṣarā, Dattāksarā, and Cyūtadattāksarā

¹ Vedic Index Vol 2, page 80

² Adhikarana 1, Adhyāya 3, Sūtra 16, page 32, C. S Series

³ Bhamaha Alamkara Adhyaya 2, śloka 9 10, page 10 C. S S

⁴ See Kavyaprakasasamketa (p. 251) edited by Prof R. C. Pankh

⁵ Kavyanusasana Adhyaya 5, sūtra 4, page 323, edited by R. C. Parikh

⁶ Adhyāya 2, page 299 N. Sagara edition.

⁷ Adhyāya 5, śloka 24

⁸ Adhyāya 10, šloka 13.

Thus we find that Prahelika was an important item of literary diversion in ancient times but later on with the growth of poetic understanding it was relegated to a low position

Mahakavyalaksanam

Varieties of literature are described in the introductory verses of Adhyāya 15 and 17. In adhyaya 17 Vajra by way of preface to his question describes Mantra, Brahmana and Purana. Mantras i.e. Vedic Mantras are to be taken with Brāhmanas because a Brāhmana is supposed to give the meaning of the Mantras. This is in confirmity with the traditional meaning of the word Veda viz. Mantrabrahmanay or vedanamadhe) an (Āpastambha 31). The Kalpa means Kalpa i.e. a Vedanga prescribing in ritual sacrifice. These three namely Mantra, Brahmana and Kalpa are supposed to be arşa, i.e. work of Rşis, then comes Purāna. It has four feet (Catuṣpāda). Its first foot is Prakriyā, the second Kathavastupangraha, the third Upodghāta and Anusanga and the fourth Samhara or Upasamhara. Purana is said to possess five characteristics, that is, it treats five topics viz sarga, Pratisarga, Vamsa, Manvantara and Vaṃśanucarita. But what is interesting to note is that in addition to the above a Purana contains all knowledge¹, especially, science of music, dance, Naṭaka and Ākhyana.

Adhyāya 15 distinguishes Kāvya from Sastra and Itihāsa Sāstra is defined as preaching the principal purposes of life 112 Dharma Artha, Kama and Mokşa While Itihasa is that which narrates the actions of the good persons of the former ages accomplishing Dharma, Kāma and Artha and with suggestion about Mokşa

This adhyaya further describes Kavya and Mahakavya Kavya is distinguished from Itihasa, by the absence of the didactic element (Upadesa Vinakitam). It is further characterized as narrative of deeds of one person

Mahakāvya contains the narration of two characters Nayaka hero and Pratinayaka opponent. It also describes the march of armies sending off war messengers, fighting and the ninmate victory of the hero (Nāyaka). The other items described are regions, city, kings, seasons, mountains, rivers and women. The hero and his opponents are to be properly described. The hero follows the virtuous path, and his victory is based upon dharma (Dharmavijayi) in contrast with the Pratinayaka, who is a Lokavijayi or if we take the reading Lobhavijayi as one getting his success through greed. The destruction of the opponent can be described but not that of the hero. However, the hero can be described as going to heaven with his own body.

¹ This description seems to signify that Visquidharmottara is really a Purana, which in addition to possess the four padas and panca laksanas, devotes considerable space to the discussion of Gita, Nrtya Natya etc.

Without metres, the mahakavya would be in prose (Gadya) The following defects (रोपड) should be avoided—Usages contrary to grammar, words whose syllabus are difficult to pronounce, sentences suggestive of obscenity as well as sentences whose meaning is difficult to guess and which contain uncommon words. It should also be free from punarukti-repetitions. Repetition, however is allowed in such emotions as wonder, jealousy, fear, sorrow, hurry, joy and where repetitions are desired. The use of the word Punar in an utterance of a messenger, in an utterance in a dream and in an utterance to a person who has come for some work is also not to be regarded as Punarukta fault

The speeches in a Mahakavya should be positive in statement and free from doubts, contradictions and what is forbidden in the society

It should exhibit the nine rasas—Śrngara, Hasya, Karuna Vira, Raudra, Bhayānaka, Bibhatsa, Adbhūta and Śānta and proficiency in art as well as proper ideas about Dharma and Artha

The above description of Mahakāvya may be compared with those given in Bhamaha's Alamkāra, Dandin's kavyadarsa and Agnipurana. As far as the items of the descriptions are concerned, there is practically no difference. There is, however, one point of difference to be noted. All the works on Poetics agree that the death of a hero should not be mentioned in a poem. Our text, however, says that the hero can be described as going to the heaven with his own body. Another point to be noted is that a Gadya variety is simply characterised by the absence of metres. Its types, kathā and Ākhyayika are not mentioned. The most important point, however, is the relation shown between Kavya and Mahākāvya. This to my knowledge is not shown in anywhere else. Its importance hies in the fact that it shows an earlier stage in the development of mahākāvya form.

It may be further remarked that our text only incidentally mentions a few Doşas, while it makes no reference to Gunās. Thus out of the various topics of Sanskrit Poetics, the author of our text regards alamkāras, prahelikās, kāvya and mahākāvya to be important and worth noting

If any inference is permissible from the above divergences, one may say that our text represents a tradition of poetics older than those embodied in Bhi-maha's Alamkara, Dandin's Kavyadarsa and Agnipurana

Dyadasaruna

Adhy iya 17 is called Dyādasarūpa — It treats of 12 Rupakās and true to its name, it discusses the twelve Rūpas or Rūpakas — It may, however, be noted that the word Rupa is not used in our text in sense of a dramatic form nor do we find any sloka enumerating all the forms together as is generally the practice.

^{1.} I have suggested A instead of A because the context requires it

Ślokas 7 to 28 describe these twelve forms They are Naţaka, Naţikā, Prakarana, Prakarani, Utsīstakānka, Bhāna, Samavakāra, Ihāmrga, Vyāyoga, Vithī, Dima and Prahasana

Of these twelve the N S (Adhyaya 18 śloka 27 N Sagara) recognises only ten of these above mentioned varieties, omitting Nāṭikā and Prakaranī N S however, in ślokas 111 and 112 describes Naṭika but says that it is to be included in Nāṭaka and Prakarani in Prakarana and therefore only ten Rupās are recognised¹

The question of the number of recognised Rūpakās is of some imporatnce in the history of Sanskrit dramatic traditions. Bharata² recognises only ten While according to Hemachandra Kohala recognises many more

There are also twelve Geya Preksas such as Dombikā, Bhana, Prasthāna, Śingaka, Bhānikā, Preranā, Ramakrida, Hallisaka, Rāsaka, Gosthi, Śrigadi, Raga, Kavya etc

Nataka³—The plot of a Nataka is derived from Itihāsa, Purana or from the deeds of gods. It might depict the deeds of a Nayaka alone or of a Nayaka and Pratinayaka—his rival. This is similar to the distinction made between Kavya and Mahakavya in the preceding Adhyaya.

I have not been able to find this distinction in Natyasastra, Dasarupaka or Natyadarpana

All the Vittis and all the Rasas find their place in Nataka proper—Its acts vary from 5 to 10—One act is to represent the activity of one day only (Ekadamasikam Vittam)—This may be compared with a Greek tragedy in which only the incidents of a day are represented—At the end of each act all the actors retire—The incidents not to be shown in an Ańka that is in an act are death, dethronement, seige of a city and fight—They should be narrated in a Praveśaka—A Praveśaka should always have two characters and these two characters should be of the servant-class (Paryane) but, not the

¹ नायक्द्ती चापि देवीसबन्धी नाटिका हैया ॥ १११ ॥ अन्तर्भावगता होपा भाषयोहमयोदिष । अध दरेनानि रूपाणि इत्युदितानि तु ॥ ११२ ॥ ना. शा स १८ -See—Types of Sanskiit Drama—Chapter 3 pages 39 to 44 for Number of species—D R.

² It is not clear however to whom the tradition of twelve Rüpakäs belong and which are the two additional Rupakäs. Hemacandra himself recognises twelve. Two additional being Nāţikā and Saţţaka. His pupils Rāmacandra and Gunacandra in their Nāţyadarpaņa recognise the twleve varieties exactly as our text does.

³ N S Adhyāya 18, śloka 11

Compare also Bhagavadajjukiya Page 3 and Kavyānušāsana of Hemachandra Adhyāya 8, Pages 432 and 445 to 449 (edited by Sri R C Parikh)

leading characters (Nāyaka lit hero), when two characters are different (not servants?), it is called Viskambhaka 1

The stage should be made empty (Rangaśūnyata) only at the end of Pravesaka and Viskambhaka and not on any other occasion

The Pravesaka can narrate or exhibit the activity of many days but the narration should be brief and not lengthy. The killing of the renowned Nayaka should not be brought into Pravesaka but it may be suggested in the act by some device. The rise of the hero along with many Nāyikās should be shown at the end of the Nātaka.

The remark about the indirect suggestion of the killing of the hero in the Anka itself is unusual. According to Bharata, it may be suggested in a Pravesaka but not in the act

Nāţika—Nāţika is like a Nātaka with this difference that it consists of four acts and its Rasa is predominently Śṛngāra

Prakarana²—is also like a Naţaka with the difference that its plot is not derived from any other source but created by the poet himself. Its heroes are either Brahmanas or merchants

Prakarani—15 like prakarana with the difference that it consists of four acts

Utsrstakankah³—Its plot is either derived from Itihäsa or is imaginary. Its Vṛṭṭi⁴ is Bhārati and Rasa is Karuna and the hero must not be a god

Bhīna⁵—Its plot is derived from Itihāsa and it represents the activity of one day. It consists of one act and it is full of fights (Yuddha)

The whole action is done by one actor by means of talking through the device of (speeches in the air) Akasakathana

In the above description the attribute Yuddhabahula6 is unusual

¹ The word Bhinnam in our text does not clearly, indicate the difference between the types of characters of Pravesaka and those of a Viskambhaka. According to N. S. Madhyama that is middle type of characters have to be used to Viskambhaka, while Nica and Madhyama that is low and middle for samkirna Viskambaka. (See N. S. Ad. 20, sloka 37 to 39 Ad. 21 sloka 110-114 C. S. S.)

² N S Adhy3ya 18, śloka 95

³ N S Adhyaya 18 sloka 145

⁴ What the words Austiani Samanantarani mean in this context is not clear. The reading in N.S. is Nigitayuddhoddhataprahūraica. Obviously the reading in our text is corrupt

⁵ N S Adhyāya šloka 159

⁶ The definition of Bhana from Dalartipa and Natyadarpana may be compared

Samavakāra¹—The heroes in this variety are twelve in number. They may be gods or demons. It has three Sīngāras and three Kapatas

Three Srng was are explained by Bharata²—Srngāra in Dharma, Artha and Kāma and three Kapatas are explained as due to fate, enemy and happiness or misery

Ihāmṛga³—consists of many acts. It has a Gandharva as a hero. Its predominent Rasa is Śṛṇgara. In this variety the rasa arises by various causes of dissatisfaction which are not described in our text but according to Bharata it may be the forcible abduction of a woman.

Vyayoga⁴—It represents the activity of a day It has one hero and its Rasa is Dipta or better Dipta according to N S ie Vira, Raudra etc ie without Singara and Hasya

Vithi5—It has 13 items but no hero

Dima⁶—Its Rasa is as above (i.e. Dipta Rasas) but specially Raudra Rasa. Its hero is a god and its subject matter is something well known

Prahasana?—Hero is Udatta It represents courtezans and Vitas

Thus comparing the above description of the 12 forms of drama with the ten of N S we find that they generally agree. Though description in our text is a sort of summarized version even then there are some important differences in details which I have noted before

```
1 N S Adhyaya 18 sloka 114
2 यस्तु गतिक्मविद्वितो दैववशाद्वा परशयुक्तो ना !
  मुखदु सोस्पतिकृतिव्रिविध कपराधयो हेय ॥ १२३ ॥
  निवियथान विधित्ते पृथक्षृथकार्ययोगविदितार्थ ।
  श्रद्वार वर्तव्यो धर्मे चार्थे च कामे च ॥ १२४ ॥ अ १८
                                                   N Sagara edition
3 सगददलभ्या नायिमा नायकोऽम्मिन्नीहते इतीहासूग ।
                                        -दशम्यवम् (तृतीय प्रकारा )
   N S sloka 129 Adhyaya 18
4 N S sloka 141 Adhyaya 18
5 N S Adhyaya 18 sloka 163
 6 उद्घालकावितना (स्मिता) वस्यितनात्पसत्प्रलाय ।
   बक्कि यथ प्रपन्नी मृदवाधिवले छत्रतिगते ॥ १६६ ॥
   व्याहारी गण्डध त्रयो (शाहा-युशहता यस्या । १६७ ॥ ना. शा अ १८
                                                             N Sagar ed tion
 7 N S Adhyāya 18 šloka 135
 8 N S Adhyāya 18 stoka 153
```

Sandhis¹

Mukha—the sowing of the seed (bijasamutpatti) capable of giving the variety of rasas

Pratimukha—Sprouting of the seed sown in the Mukha

Garbha—the possibility of getting the results as well as its opposite

Vimarsa—When the purpose of the bija opens up and yet is accompanied with difficulties and adversities, it becomes vimarsa

Nirvahana—Carrying to the completion of things started in Mukha etc

All the above mentioned five Sandhis should be observed in Nāṭaka and Prakarana Vimarsa is to be omitted in Dima and Samavakara Garbha is to be omitted in Vyāyoga and Ihāmrga and Pratimukha to be omitted in Utsrṣṭakāñka, Prahasana, Vithi and Bhānaka

Hero (Nayaka) should never give up his generosity, good behaviour, and valour and he should ultimately be victorious over his rival

Nayıkas²—eight Nāyikās

Vāsasajjā—one who remains in one's won apartment on account of one's own fault

Virahotkantlută—one whose lover has not come

Svadhinabhartrka—one who bosses over her husband

Kalahantariti—one who is separated from the lover on account of quarrel

Khandita—one whose lover comes in the early morning with the signs of nails etc (of other women)

Vipralabdhā—one whose lover has not kept the appointment

Prositabhartikā—one whose lover has gone on travel

Though eight Nāyikās are indicated in śloka 8, only seven are described Abhisārikā is not mentioned

All the twelve varieties of the drama should exhibit the graces of these different types of Nāyikās

Rasas

Verse 61 says that Śingīra, Hūsya, Karuna, Vira, Raudra, Bhayanaka, Bibhatsa, Adbhuta and Śinta are nine natyarasas. This should be compared with the following verse of N.S.—

श्वन्नारहास्यक्रणारीदवीरभयातकः । बीमसाद्भुतसन्नी चेग्यदी नाश्ये रसाः स्वताः ॥ १६ ॥ Adhyaya 6

¹ Compare N. S. Ad. 19, floka 17 (N. Sagar edition)

² N S Ad 22, I'okas 203, 204 (N Sagar edition)

At the end of Adhyāya 6 (N S) in verse¹ 84 it is again said that thus the above eight Rasas are defined. But some Mss of the N S describe Sānta rasa also and say —

एव नवरसा दृष्टा नाट्यईर्जक्षणान्विताः ।

The composition in all these twelve varieties should keep Rasa in view because the principal thing in Nātya is Rasa

रसप्रधानमेवैतत् सर्वनाट्य नराधिय॥ वि. ध. अ १७ श्लो. ६२।

Abhinavagupta while commenting on this portion says

ये पुनर्नेवरसा पठन्ति तन्मते शान्त्स्वह्पमिधीयते ।

N S Vol I, Page 333, GOS

This clearly indicates that there were two traditions about the number of Rasas. Our text follows the tradition of the nine Rasas and of twelve Rūpakās. It is difficult to say what was the original tradition of Bharata. But if we accept the theory that Bharata recognises only eight Rasas and ten Rūpakās and that the ninth Rasa and other Rūpakās were added later on, we may say that our text represents that later tradition. It would be, however, safer to say that our text represents a different tradition and not to give any opinion about the priority of the one over the other.

In the description of 12 types of drama given above, we find that most of it agrees with what is given in the Natyasastra. The question of the number of rasas, however require some consideration. Our text, as we saw, gives nine rasas

The rest of the adhyaya is devoted to the many incidental items connected with the production of a play

The drama starts with the speech of the Sütradhara who suggests the whole plot, which gradually becomes manifest

Speech The hero speaks Sanskrit So do the Sanyāsis, Scotriyas, Kings, Dvijatis (Brahmanas, Kşatriyas and Vaisyas) gods, demons, Gandharvas and Nāgas The Nāyikā speaks Prakrita So do heavenly damsels, Sanyāsinis, Pretenders and Viduşakas

Apabhrasta is spoken by children, women, low people, eunuchs and those not mentioned already

The endings of the proper names-

The names of Brahmins should end in Sarman, of Kşatriyas in Varman and of Vaisyās in Dhana Some names end in Dasa also The names of kings and their ministers should end in Vikrama

The names of women should be such as can be easily uttered, not harsh, and of Nāyikās sweet

र एवपेते रसा होवास्त्यष्टी सक्षमलक्षिताः । ८४ ॥

The names of the attendants of queens should mention Kala and Kausala and those of the kings ending with Vijayā The names of the astrologers should be characterized by Māngalya and of Purohitas by Santi

The names of ministers generally end in Sūra while those of physicians in Āyusya The names of Vitas end in Bhūsana and of Dāsas in Kañsum or their names may be the names of the ornaments or flowers. The Kañcuki and the Vidūsaka must bear the names of their Risi or Gotra respectively. The names of courtesans should end in Dattā, Mitra or Sena and the names of the office-bearers should be according to their office.

Forms of address-

The king is addressed by a Servant and subjects as Deva, by Brahmins as Rājan and by Risis as if he were their child. Those who are equal in rank call him Vayasya. Vidusaka is addressed as Vayasya by the heroes. The one who sits in the chariot may be called by the charioteer Ayusmân.

Risis, teachers and gods are addressed as Bhagavan The student is to be addressed either as Putra, Vatsa or by his family name (Namagotratah)

The husband is addressed by his wife as Āryaputra and a wife by her name but a queen is addressed as Devi Father is addressed as Tata while the mother's father as Āryaka Yuvaraja is addressed as Kumāra while a respectable person is addressed as Bhāva

A woman of equal rank is addressed as Halā. A woman addresses her maid servant as Hanjā or Handā. The sister should be called Svasa while a Sanyasını should be addressed as Vratini

A brahmin lady should be addressed as Āryā and the rest according to the gender

Varşavara is a person who moves in the female apartments and is incapable of enjoying a woman. The head of the Varşavaras is called Kañcukin He is generally a Brahmin and respected by the queen

Vidüşaka is a Brahmin and a keeper of the secrets of the hero Sutradhāra is the principal actor or Naţa

A dramatist should be at pains to make the whole composition of a drama perceive Rasas because Rasa is a soul of Nätya—rasapradhana menaitat sarianāli ani—All these twelve varieties should exhibit Kalākausala proficiency of arts, Social customs and manners—lokaudhana, should teach dharma, artha and Kāma and should be for the good of the people

MUSIC

Two adhyayas 18 and 19 are devoted to Music. The 18th is called Glta-laksann and the 19th Atodyavidhih ie the former deals with vocal and the latter instrumental music. Both of these are in Sutra style and mostly in prose. At the end of the eighteenth six verses are introduced by the words bhavanti catra slokab, similarly at the end of the ninteenth, three verses

The subject-matter discussed here finds a parallel in the works of Bharata and Dattila, though here and there, there are some important variations also In Bharata Nātyašāstra instrumental music—Ātodya is treated first and vocal music—Gita follows it Vişnudharmottara, however, discusses vocal music first and then the instrumental

Vocal Music

In the Gita section the following topics are touched. The three sthanas—organs of utterance, the three Gramas-scales, the seven Svaras-notes, the twenty-one Mürchhanas intonation and the forty-nine Tanas—key notes, three Vittis, nine rasas, ten Jatis, four Alamkaras, different types of musical compositions, practice of singing (ala) and finally the religious merit of knowing the art of music. Gita is regarded as four-fold on account of Svara, Pada, Laya and Avadhana. Different notes are to be used for different rasas.

The Atodya section describes the four types of instruments three Vittis, different types of Layas and Talas and how they are connected with different rasas and finally the sitting arrangement of singers and instrument players on the stage

The discussion in both the adhyāyas is very sketchy

Visnudharmottara differs from Bharata in the number of Gramas Bharata gives Şadja and Madhyama Dattila¹ also gives two but mentions the third namely Gāndhāra adding that it is not found in this world. Sangita Ratnākara, which is comparatively a very late work, also mentions şadja and madhyama as current but describes in detail the Gandhāra grama. This indicates that this Gāndhāra grāma, which might have existed in ancient times and therefore preserved in tradition, must not have been current in the time of Dattila and Bharata Vişnudharmottara, however, preserves the old tradition.

¹ वेचिद् गान्धारमायाहु स (तु) नेहोपरभ्यते ॥ ११ ॥ Page 2 TSS

MUSIC 33

Three sthānas—organs of utterance are Urah—chest, Kanthah—throat and Sirah-head They give rise to three tones Mandra—low or base, Madhya-middle and Tāra-high Seven notes are sadja, madhyama, gāndhāra, Rsabha, Pañcam, Dhaivata and Nisāda The twenty-one Mūrchanās dependent upon three grāmas are as under—Sauvīrī, Harināsvā, Kalopanatā, Šuddhamadhyamā, mārgī, Pauravī, R(Hr)syakā, [Uttaramandrā, Rajanī], Uttarāyatā, Šuddhasadjā, Matsarīkrtā, Aśvakrāntā, Udgatā, [Ālapā], Kuntimā, Šuddhā, Uttarā, Sadjā, Pañcāyatā and Udgatā

We may note here that Bharata gives only 14 Mürchanās because he accepts only two Grāmas Forty-nine Tānas also dependent upon three Grāmas according to Visnudharmottara are mentioned as follows —

अधैकोनपञ्चाशत्तानाः---

'अग्निष्टोमिकः, 'अत्यित्रष्टोमिकः, 'वाजपेयिकः, 'पौण्डरीकः, 'आश्वमेधिकः, 'राजस्थिकः, 'अहुमुवणिक, 'गोसिवकः, 'महाबितकः, 'श्वहातान, 'राजापत्यः, 'राजापत्यः, 'राजाप्रयः, 'राजाप्रय

Bharata only gives 35 Tānas-21 of Sadjagrāma and 14 of Madhyama grāma omitting the Gāndhāragrāma, while S R gives 49 Tānas divided into two grāmas—clearly showing that it had no knowledge of Tānas of Gāndhāragrāmas

The four items to be noted in the practice of singing are Svara-note, Padanote, Laya-note and Avadhāna—note Three types of Svaras are Vādi, Samvadt and Anuvādi Vittis are given as three but they are not mentioned by name in this Adhyāya They are, however, mentioned in the 19th Adhyāya as follows—Citrā, Vītti and Dakṣninā

The relation of the musical notes with Rasas are as follows — मध्यम and पद्मम in हास्य and द्युहार, पड्ज and ऋषभ in बीर, रीद and अद्भुन, निपाद and गांधार in बरुग, धैवत in बीभत्स and भयानक, and मध्यम in शानरम

Ten Laksanas of the Jati are given

महारास्तारमन्द्रे च न्यासो(सा)पन्यास एव च । अन्पत्वं च बहुत्वं च पाडवाँडविते तथा ॥ एवमेव वुधैर्सेया जातयो दशलक्षणाः ।

Four Alamkaras are mentioned-

प्रमन्नादिः, प्रमन्नान्त प्रमन्नाचन्तः and प्रमन्नमध्य Then different types of musical compositions such as अपरान्तक, उद्योष्य महक्तप्रवर्ग, वैणव, रोबिंद, अन्याथा, पाणिका, दशविदिना and अद्योतिका are mentioned by name v 5

It is said in the last verse that master of music, if he does not reach the sumum bonum would become a servant of a god and would enjoy bliss in his company

Instrumental Music

In the 19th Adhyāya four types of musical instruments are mentioned according to tradition. They are Tata, Susira, Ghana and Avanaddha restringed instrument, wind instrument, metalic instrument, stretched instrument (e.g. Drum) respectively

The musical notes are the same as in the Vocal music. The difference is indicated by saying that in singing the notes rise from below while in stringed instruments or in wind instruments, the order is reversed. Then the Talas, Matr is and Vittis are described. Three Layas namely Druta, Madhyama and Vilambita are mentioned. It is said that Tala must have Laya. The Prakarana' is said to be two fold, Kulaka and Chedyaka. The different syllables to be expressed on the drums are described.

It may be noted that even here Rasas find their place as follows—the Addita in Singara and Hasya, Vitasta in Vira, Raudra and Adbhuta, Alipta in Karuna and Santa, Gomukhi in Bibhatsa and Bhayanaka

It is said that the Dardura (flute) and Paņava (small drum) must follow the Mīdanga

The arrangement for sitting of the musicians is as follows—The Musicians have to sit just near the door of the dressing room and in such a way that they would be properly visible. The Murjās would be behind them and so also Mārjanika. On its left side dardura and panava should be placed. From the right the singer should sit facing to the north, to his left gairika? and to the right the players of flute. The female singers should be seated facing the main singer.

¹ As the word Prakarana is not explained it is difficult to say what it means in this connection of instrumental music. Its ordinary meaning is a chapter and here it may mean a series of sort

² Gainka-this word might mean the reciter

NRTTASUTRA

This section may be called Nrttasūtra in accordance with the colophon of the 34th adhyaya

According to the ancient tradition Gita (Vocal music), Ātodya (instrumental music) and Nrtta (including Nrtya) together constitute samgīta. This tradition is at least as old as the Kauśitaki Brāhmana (xxix 5) where it is called Silpa (Vedic Index p 381) So after dealing the first two constituents of Samgita we come to the third constituent Nrtya.

This Nrttasūtra consists of 15 adhyāyas ie from Adhyāya 20 to 34

Adhyaya 20 is Samānyādhyāyah which consists of 62 ślokas which deals with many miscellaneous things in the first twenty ślokas, while the ślokas from

'In the Visnudharmottara (Ed Venkatesvari Press Bombay 1912, Part III, Ch 2 slo 4) it has been said that the canons of painting are difficult to be understood without an acquait ance with the canons of dancing. This remark is not intelligible to one who is not aware of the fact that dancing includes abhina; a, and was to a great extent responsible for its origin, although in later times it came to be associated more or less exclusively with the performance of nations. An acquaintance with abhinaia, in fact, gives the student of painting a more or less definite idea about the postures of men according to changes (physical mental and spiri tual) to which they are subjected by the different objects surrounding them. The value of a treatise on abhinaya lies in the fact that it presents to us a more or less systematic and elaborate study of the possible artistic gestures which, when reproduced on the stage by natas may evoke rasa in the spectators. Any one who has some idea about the technique of printing will understand how the descriptions of varying gestures by head hands, eyes, lips and feet etc would help a student of painting to acquire skill in depicting the human form in its endless variety of poses. In fact the canons of painting such as are given in the Visnudharmottara and the Abhilasitarthacintamani, give nothing but the anatomy of the human form considered in its motionless condition while the canons of dancing (which includes abhina; a) consider the human form in its rhythmic movement for the purpose of evoking some rasa, and can thus verify the knowledge of that anatomy by revealing its artistic possibilities '

Abhinaya-darpanam-pp xxx xxxi-edited by Manomohan Ghosh, Calcutta, 1934

2 According to Sidney Colvin (Encyclopaedia Britanica, Eleventh Edition, Vol 10), the art of dancing is a space time art which occupies an intermediary place between the time arts, poetry and music (which are also called speaking arts) on one side and space arts painting, sculpture and architecture (which are called shaping space arts) on the other. In this connection it will be interesting to note that the author of this part of Visnudharmottara follows the same order by putting Nṛtya between Kāvya, Gita and Ātodya on one side and Citra, Pratimā and Prāsāda on the other

¹ As Dr Mano Mohan Ghosh says -

21 to 35 are devoted to what might be called the poses and movements of the dance. Slokas 55 to 57 are devoted to four Vittis. Slokas 58 and 59 refer to the four Pravitis. The two types of Dharmidharmas and the two types of Siddhis are mentioned in ślokas 60 and 61. The last śloka describes the Nitta, which is praised.

In Adhyāya 21 six Sayyasthanani are described Types of Āsanas are discussed in Adhyaya 22 After discussing these āsanas, the postures and various movements of the body depending principally on feet of men and women, are given in Adhyāya 23

Thirteen movements of head (sira), seven movements of Neck (Grīvā), five movements of mouth (āsya), five movements of chest (Urah), five movements of sides (Parŝva), three movements of stomach (Udara), five movements of waist (Kati), five movements of thighs (Urū), five movements of calf (Jañghā) and five movements of feet are given. Thus this adhyāya 24 describes the āngikābhinayas or angakarmas

Adhyāya 25 treats the thirty-six Rasadṛstis (emotional expressions of the eye), nine movements of eye hds (Puṭayoh karma), five movements of eye pupils (Taraka karma), six movements of the sight (Drsti karma), five movements of eye brows (Bhrukuṭi karma) six movements of the nose, then the movements of cheek (Ganda), teeth (Danta) and lower-lip (adhara). In this way all the Upanga karmās are discussed in this adhyaya

In Adhyaya 26 sixty four handposes are given Hand poses are classified as single, combined and Nrtta hand poses

Significance of different colours with reference to these poses is given in ślokas 42 & 43. Occasions are shown when the acting should not be done. At the end, it is made clear that hand poses should be acted according to the place, time, production and meaning. There must be beauty in the dance—hands (Nittahastās)

Adhyāya 27 describes the Aharyābhinaya 12 the make up of the actors Costume is a very essential feature of dance. So care should be taken in describing the costumes for every character taking part in the performance. The movements of the body should be performed as if showing some life in it (Sajjiva) Five primary colours are mentioned in śloka 8. Ślokas 3, 4, 8 occur again in Citrasūtra portion also, and the different varieties of these five primary colours begin from ślokas 10 to 26.

Sāmānyābhinaya is treated in Adhyāya 28. In this adhyāya, the acting for various bhūvas including sthāyibhāvas occurring in different rasas are described. The acting to show different seasons is given

Gatipracara of men and women are distinctly classified in Adhyaya 29 and Gati according to different rasas are shown. Gati representing different animals like horse, goat etc. for the actors are shown.

NRTTASUTRA 37

In Adhyāyas 30 and 31 different rasas and bhāvas with their appropriate colours and deities attached to different rasas are mentioned

Adhyāya 32 is Rahasyamudrā and Adhyāya 33 is called Nrttaśāstramudiā These two adhyāyas give much new information. These mudrās can be classified in two ways—mudrās attributed to deities and mudras used by devotees in order to worship the deities.

The last adhyāya 34 is called Nrttasūtra In this adhyāya the mythical origin of the Nrtta is shown Dancing was used to please the gods in temples

Nātya has been defined in the Nrttasūtra as Parasyānukrtih ie imitation of something other than oneself and Nrtta has been described as that which beautifies Nātya

In the Nātyasāstra of Bharata in the first adhyāya mainly and several times later on, the word anukrti is used to describe nātya. So also in the same work, a question is raised as to the relation between Abhinaya and Nrtta and the answer is given that Nrtta is not imitation like Abhinaya, but has its place as a beautifying art because it lends charm.

Nrtta has been divided into two types—Natya and Lāsya Here I have substituted the word, Tāndya taken from the Natyasāstra of Bharata for the word nīţya, regarding nīţya as a scribe's error

Tandya (according to the text Natya) and I asya have been further divided into ābhyantara and bāhya. Ābhyantara is one which follows precise rules (lakṣanavat) while Bāhya is one which is not regulated by any precise rules (lakṣanavarjitam). This distinction of ābhyantara and bahya is the same as the distinction of Mārgya and Desya known to later tradition.

The abhyantara Nrtta is regarded as auspicious

Lāsya can be performed either under a pavilion (Mandape) or outside, while Tāndya (Natya according to the text) should be performed under a pavilion

1

सृष्टा भगवता दत्तारतण्डवे मुनये तदा ।
तेनापि हि ततः सम्यगानभाण्डसमिन्वतः । २६७॥
नृतप्रयोगः सृष्टो यः स ताण्डव इति स्मृतः ।
यदा प्राप्त्यर्थमर्थोना तज्ज्ञेरभिनयः इतः ॥ २६८॥
तस्माजृतं कृत होतकं स्वभावमपेश्चते ।
न गीतगर्थमम्बद्ध न चाप्यर्थस्य भावमम् ॥ २६९॥
सस्माजृत्तं कृतं होतद्दीतेष्वासारितेषु च ।
अशोच्यते न राल्वर्थं कंचिजृत्तमपेश्चते ॥ २००॥
किं तु शोभां जनयतीःयतो नृत्तं प्रवर्तितम् ।
प्रायेण सर्यतोकस्य चृत्तमिष्टं स्यभावतः ॥ २०९॥ (अ. ४)

Pavilion is of two types Ayata (oblong) and Caturasra (square) The measurement of the square pavilion is thirty-two hastas, while that of the ayata is double of this. The pavilion should not be smaller or larger than this because if it is smaller, there will be congestion (Sammarda) and if it is larger, there will not be proper manifestation (Vyakti)

This may be compared with the three types of Natya Veśmas described in adhyaya 2 of Nātyaśastra. Here it is noted that the Nātyavešmans are of three types, viz Vikrsta (oblong), Caturasra (square) and Tryasra (triangular). The oblong type measures 64 × 32 hand lengths. It was considered the most suitable one for all practical purposes

The mythical origin of dancing¹ is described as follows in Adhyaya 34 Visnu was fighting with the demons² Madhu and Kaijabha Laksmi noticed the graceful movements of her lord. She wanted to know what was indicated by these movements. Lord Visnu told her that they constituted the art of dancing. This art represents the three worlds. Then Vişnu disclosed its secret to Brahmā Brahma imparted it to Rudra, enabling him thereby to acquire the title of Nitte-swara.

anyad bhavasryam nṛtyam nṛttam talalayaśrayam II 2 II adyam padarthabhinayo margo deśi tatha param II 9 II madhuroddhatabhedena tad dvayam dvividham purah I lasyatandavarupena naṭakādyupakarakam II 10 II

(Pariccheda 1)

and Adhinaya Darpana draws a clear distinction between the two Nitta and Nitya as -

भाव सिनयहीन तु नृत्तमित्यभिधीयते ॥ रसभापन्यजनादियुक्त मृत्यमितीर्यते । एतन्त्रत्य महाराच सभाया कल्पयेन् सदा ॥ १६ ॥

According to this definition Nrtta would be a non imitative art based upon the principle of Tala and Laya. Nrtya which expresses Bhāva is an imitative art and therefore can be equated with angikabhinaya though it would still be guided by the principle of Tala and Laya. When Angika works in co-operation with Sattvika, Ahārya and Vācika abhinayas it expresses rasa and in that way becomes Nāṭya.

This view of Dhananjaya is more or less to be found in the Nationalists of Bharata Though very often the two words Nitya and Nitia are used loosely. In many cases one can see this confusion as a result of a copyist serior and sometimes due to a lack of precision in the usage of the two words. But the general trend is quite clear

We also find a similar confusion about the usage of words Nrtta Nrtya and Nitya in this section too and it has to be explained on similar grounds namely copyists error and a lack of precision on the part of the writer

¹ This art which uses human body as its medium of expression develops in our ancient tradition three varieties —Nrtta Nrtya and Nitya Dhananjaya the author of Dasarupa has defined these terms distinctly as follows —

² Similar origin of Vitus is given in N S Adhyaya 20 of N mayasagara edition

NRTTASUTRA 39

According to the above myth, it was Visnu who originated Nrtta and not Siva as is the general tradition to be found in works like NS, AD, SR etc

In a way, however, this general tradition is confirmed by this account where Rudra is described as getting the title of Nrtteswara by pleasing Visnu by his dance. This, secondary position given to Siva, can be easily understood in a Vaisnava Purana. But the traditional attribution of Nrtta to Mahādeva is corroborated in Adhyaya 85 where, after enunciating the general principle that the different branches of learning should be represented in sculpture by their originators, it is enjoined that Nrtta should be represented by Maheswara

Dancing should be performed at the time of auspicious occasions. It should not be performed when one is engrossed in anxieties. (Adhyaya 20, Śloka 21, Adhyāya 26, Śloka 93)

It was considered as a part of religious ritual because the gods were pleased more by the dancing than by the flowers and oblations (Puspa and Naivedya) Thus dancing was used to please the gods in temples and shrines But the dancing should not be used as a source of one's own livelihood (Adhyaya 24, Ślokas 27, 28) The purpose of dancing according to N Ś is only to give pleasure to people and to give them instructions (Adhyāya 1, Ślokas 115 120)

It is well-known to students of anthropology that dance was used as a part of a magic ritual to ward off evil and to bring about auspicious circumstances. In India, dance was used also as a part of religious ritual to propitiate gods. In Vedic ritual music formed an important part of ceremony. When the practice of worshipping images in temples became prevalent, music and dance were used as a form of worship also. In fact, in every temple we find a Rangamandapa where music and dance were performed before the images.

In Nationality, Nation is called Mangalya is something which brings about happy circumstances (Ad 20, Sloka 3). It is to be performed on occasions of joy, but should be completely avoided on occasions of sorrow

In N S (Adhyaya 4, Slokas 270 271) also Nrtta is called Mangalya It is performed on such occasions as marriage, birth and also occasions of joy and prosperity, because, it is a source of merriment. We see here clearly that a magic use of dance is to ward off evil and to create a happy atmosphere. Its artistic appeal, however, is not missed.

In Adhyāya 34 of Nṛttasūtra we see the religious use of Nṛtta as a form of worship. It is said that the offerings of a dance performance is superior to the offerings of flowers and eatables. Keśava or Visnu is pleased particularly by a person who worships him by dancing before him. One who offers music and dance to Viṣnu, gets the fruit of a sacrifice capable of yielding all desires. Not only one's desires are satisfied by offering this dance form of worship, but one is able

to get the means to salvation also. The didactic aspect of Nfita is also mentioned and finally, what we might call for want of a better word its magical effect iveness is also given by regarding it as "santikam", Pauştikam' and Kāmyam

It is interesting to note, however that it is enjoined that a person earning one s own livelihood by means of dance is to be avoided, so also a person who so to say sells dance (Nrtta Vikrayakāraka) through professional dancers. From these remarks we can infer two thines about the place of dance in our ancient Society. One—the professional dancers were held in contempt and the other dance itself was regarded as sacred art to be known and practised by religious people.

The major portion of the Nrttasutra of V D is devoted to what we might call in ordinary language different aspects and items of dance proper

The subject matter treated here is much the same as the subject matter discussed in Adhyayas 4 8 9 10 11, 12 & 13 of N S

The first item that is mentioned is the Recaka of four kinds. These four kinds are Kaţirecaka Padarecaka Kararecaka and Grivarecaka according to NS. The reading in our text is Katipadamghrikaśrajam where Anghri is redundant. The two other words should be kara and Griva or their synonyms. I would therefore read the line as Caturdharecakam griva kati pada karaśrjam. (V. D. Adhyaya 20 śloka 21 N. S. Adhyaya 4 ślokas 249 to 255)

What is Recaka? It is no doubt a movement of the limbs mentioned above It should mean the outward or forward movements of these limbs just as the word Recaka in Pranayama means the outward movement of the breath

This word is explained by Mr Naidu in the following way—Recita of the various limbs consists in whirling or moving them about Recaka also consists in I fting up and moving about (Recita and Recaka are synonymous¹)

Rahula defines Recita thus The several and independent whirling actions of the neck the two hands the waist and the two legs consitute Recita

After Recaka comes Cari It is of two kinds—Cari and Mahacari The reading in the lines preceding Mahacari is Catakanya which does not yield any relevant sense. The correct reading may be Recakanya. The meaning then would be that Cart and Mahacari are different from Recakas.

Cari (Ad 20) is defined as the delicate (Sukumara) movements of limbs and speech. It becomes Mahacari when the movements are vigorous or violent According to Bharata Cari is associated with the exposition of Stingara while Mahacari with Raudra (N. S. Adhyaya 5 śloka 28 N. Sagara). In another context (śloka 53 Adhyaya 5 N. Sagara ed tion) it is said that Uma is pleased by the employment of Cari and the Bhutaganas by Mahacāri.

¹ Tandava Laksanam (Page 77) by Dr B V Narayana Swam Naidu

NRTTASUTRA 41

These references make it clear that the distinction between Cāri and Mahācāri is similar to the one between Lāsya and Tāndya It will be convenient here to treat of another Cāri mentioned in Adhyāya 24 ślokas 63 of our text. There it is defined as the movement of one foot This definition is the same as given in N S Adhyāya 10, (verse 3, N Sagara)

A more detailed description of Cari is to be found in verse¹ 1 of the 11th Adhyaya of Caukhamba edition of N S According to this "Cari is a movement resulting out of the co-ordination (Samanakaranat) of the foot, shank, thigh and waist".

Thus it appears that the word Cāri is used in two senses—one describing a movement of the foot or the co-ordinated movement and the other showing the quality of the movements—delicate (Cāri) or vigorous (Mahācāri)

It may be noted here that N S attaches very great importance to Cari. It is said therein 'whatever is relevant in Natya is to be taken as included in Caris. No part of Natya can operate without Cari'.

Next comes the Mandala 2 A Mandala is created out of the combination of Cāris There are two types—Ākāśagāmi (aerial) and Bhauma (earthly) The Bhauma refers to the movements on the ground while the Ākāsagāmi refers to those above the ground There are ten varieties of each of these. The Ākāśa varieties are Atikrānta, Vicitra, Lalitasañcāra, Sūcīviddha, Danḍapāda Vikṛta, Ālāta, Vāma Baddha, Salalita, and Krānta, while Bhauma varieties are Bhramara, Āskandīta, Mārdava, Samāsarīta, Edkākrīḍīta, Adḍīta, Śaktakhyam, Ardha, Piśṭakubja and Cāsa Gata

These ten Ākāšamandalas and ten Bhauma Mandalas mentioned in N S. (Adhyāya 11 and Adhyāya 12 N Sagar and Gaekwad series) are Atikrānta, Vicitra, Lalita Salicāra, Sūcīviddha, Danda pāda, Vikṛta, Alātaka, Vāma viddha, Salalita and Krānta The ten Bhauma Mandalas are Bhramara, Āskandita, Āvarta, Samāsarīta, Edkakrīdita, Addīta, Sakatāsya, Adhyardha, Pisttkutta and Cāsa Gati It will be noted here that there are some variations in the names.

After mentioning the Mandalas our Nittasütra mentions 36 Angahāras³. It may be noted here that N S mentions only 32 From the following table, it will be clear that most of these Angahāras are common even though there are some slight variations in their names and also in the order of mentioning them.

1. Sthirahasta

4 Aparānta

2 Aksiptaka

5 Mattakrida

3 Uddhājita

6 Viskambha

¹ The wree is put in a rectangular bracket in the Nirnayasigara and Gackwad editions of N.S. 2 in 3 devotes one whole adhyaya to this topic of Mandala

 $[\]frac{3}{8}$ S. R. (Ad 7, sloka 600 primards) agrees with the names of Angahāras given in N. S. V. 6.

| 7 | Svastikarecita | 22 | Balāhaka |
|----|-------------------|----|----------------|
| 8 | Vršeikāpasīta | 23 | Sambhranta |
| 9 | Talamandā | 24 | Āngika |
| 10 | Avasarpita | 25 | Ratikrida |
| 11 | Mattallisskhalita | 26 | Alātaka |
| 12 | Bhramara | 27 | Vidyudbhrānta |
| 13 | Pāršya Svastika | 28 | Parāvrta |
| 14 | Madavilasita | 29 | Parśvaccheda |
| 15 | Vikşipta | 30 | Ākšipta Recita |
| 16 | Gatimandala | 31 | Saumya |
| 17 | Vaišakharecita | 32 | Karita |
| 18 | Parivittakarecita | 33 | Sucividdha |
| 19 | Udvartaka | 34 | Apaviddha |
| 20 | Paricchinna | 35 | Vilapa |
| 21 | Recaka | 36 | Ardhanikuffita |
| | | | |

The Karanas and Angaharas constitute the main subject matter of Adhyaya 4 of N S which enumerates its 108 varieties But V D gives only 90 names

| 1 | Tala Puspa | 24 | Urchvajanu |
|----|------------------|-----------|----------------------|
| 2 | Apaviddha | 25 | Nikuncita |
| 3 | Lina | 26 | Mattalli |
| 4 | Svastikarecita | 27 | Ardhamattalli |
| 5 | Mandala Svastika | 28 | Recaka Nikuttaka |
| 6 | Uruvṛtta | 29 | Padaviddha |
| 7 | Nikuttaka | 30 | Tadidbhranta |
| 8 | Sucividdha | 31 | Valita |
| 9 | Karicchhinna | 32 | Ghūrnīta |
| 10 | Ardharecita | 33 | Lalita |
| 11 | Vaksah Svastika | 34 | Dandapaksa |
| 12 | Unmattam | 35 | Bhujangatrastarecita |
| 13 | Svastikam | 36 | Nupura |
| 14 | Prstha Svastika | 37 | Recita |
| 15 | Diksvastika | 38 | Bhramara |
| 16 | Alata | <i>39</i> | Catura |
| 17 | Ardhasuci | 40 | Bhujangancita |
| 18 | Kaţisama | 41 | Chhinna |
| 19 | Ākṣiptarecita | 42 | Vršcikarecita |
| 20 | Kşipram | 43 | Lata Vršcika |
| 21 | Ardhasvastika | 44 | Vršcika |
| 22 | Sancitam | 45 | Vyamsita |
| 23 | Bhujangatrasita | 46 | Sucividdhaka |
| | | | |

NRTTASUTRA 43

| 47 | Lalāţatılaka | 69. | Gandasūcī |
|-----|---------------|-----|----------------|
| 48 | Kuñcita | 70 | Pariksipta |
| 49 | Cakramaņdala | 71 | Pārsvajanuka |
| 50 | Uro Mandala | 72 | Grddhāvalınaka |
| 51. | Âksıptam | 73 | Lina |
| 52 | Lalalasita | 74 | Vışnukrānta |
| 53 | Ārgala | 75 | Ajapluta |
| 54 | Viksipta | 76 | Ākrānta |
| 55 | Bhramita | 77 | Mandita |
| 56 | Vīlāsa | 78 | Mayūralalıta |
| 57 | Vanarapluta | 79 | Natam |
| 58 | Parivrta | 80 | Sarpita |
| 59 | Nivṛtta | 81 | Dolāpāda |
| 60 | Pārsvakrānta | 82 | Harmapluta |
| 61 | Nikuñcita | 83 | Prenkholita |
| 62 | Atikrānta | 84 | Nitamba |
| 63 | Avakrānta | 85 | Skhalita |
| 64 | Dolāpāda | 86 | Karihastaka |
| 65 | Vivartita | 87 | Prasarpitatala |
| 66 | Nāgaprakīdīta | 88 | Sımhavıkrıdıta |
| 67 | Vipluta | 89 | Vrşabhakrīdıta |
| 68 | Garudapluta | 90 | Gangavatarana |
| | | | |

The 108 Karanas and 36 Angahāras (32 according to N S) form the essential subject-matter of Nṛttaśastra. The Angaharas depend upon Karanas, because they are the results of the complex combinations of Karanas. It will be, therefore, proper to make an attempt to understand first what is a Karana. It is defined in our text and N S as Hastapādasamāyogah (Śloka 37 Ad 20) which would literally mean a co-ordination of hand and foot

The explanation of Abhinavaguptapadacarya on the comment on the word Karana is noteworthy

किया करण, करय त्रिया नृत्तस्य गात्राणां इस्तपादममायोग इस्तोपलक्षितस्य विलामक्षेपस्य देयोपादेयविषय-वियादिभ्यो व्यतिरित्तायास्त्रतिकायाः वरणमित्यवं । प्रतावदेवाधित्र मीन्द्रयानुप्रवेदीन मतिलामस्य नाम ॥

NS Pages 92-93 GOS

Two important ideas emerge from the above comments. Any movement of hand or foot for utilitarian purposes cannot be included in the term Karana. Only that movement in which beauty enters (Saundaryanupravesena) can be properly called a Karana. Another point to be noted is that the movement must be complete and not broken (Atrujutationa). The words Hasta and Pada are not to be taken merely to mean hand and foot but should be taken to include respectively the parts of the body above the waist and below the waist.

Karanas, therefore, can be called basic dance movements. A combination of two such dance movements constitutes a Nitta Mātīkā. This may be taken to mean that Nitta proper arises when there is at least a combination of two movements and not otherwise.

A combination of three such movements of three Karanas is called Kalāpaka, of four a Khandaka, and of five a Samghātaka Combinations of six, seven, eight or nine Karanas constitute the Angaharas Thus, one may say that an Angahara is a combination of more than five dance movements

Abhinavaguptapadacarya says that by a sort of mathematical permutation and combination, one can have innumerable Karanas and Angaharas but that only thirty two Angaharas are mentioned by Bharata because these are the only ones which are beautiful—and we may add because they were the only ones which were probably practised

The Angahara¹ has been explained by Abhinavaguptapadacarya in two ways—

- (1) अज्ञाना देशान्तरे समुचिते प्रापणप्रकारोऽज्ञहार । Which would literally mean a mode of carrying the limbs to another proper position
 - (2) हरस्य चार्य हार , प्रयोग अज्ञनिर्वेत्याँ हारी अज्ञहार ।
- ie a performance of Hara (Siva) accomplished by the movement of the limbs

These two explanations show that probably the original meaning of the word Angahāra was forgotten. It was a word used for a complex dance movements and one was not sure whether the name is associated with Hara, the mythical originator of dance or it merely meant movement of limbs.

In the first volume of the NS published in GOS the illustrations of Karanas have been published. "In the compartments of the East and West Gopuras of the Nataraja temple at Cidambaram in South India, these Karanas were cut on rocks, with appropriate verses from NS underneath each of these postures but unhappily only 93 of the postures are recovered and the remaining 15 were either damaged or the compartments altered during the repairs. These postures

¹ So we find explaining Angahāra as Angaviksepah So does Hemacandra Hemacandra gives three derivations

⁽१) अज्ञाना हरण स्थानात् स्थानान्तरत्यन अप्तहार ।

⁽²⁾ शज्ञानी हार इव शीमाजनकत्वात् ।

⁽³⁾ अथवा हरस्य अय हार । हरेण अभिनीतः वात् अहप्रधानो हार अवहार । स्थिर-हस्तादिद्वीतिमद्भेषः ।

⁽Abhidhāna Cintāmani 2 296 Page 118 Yasovijaya Jaina Granthamālā)

NRTTASUTRA 45

are found in Bharata's order for about 60 numbers and then owing to mason's or supervisor's ignorance or on account of some subsequent alternations in the construction, the remaining 48 are not in the order followed by Bharata":

The authors of Tandava Lakşanam have made a praiseworthy attempt to explain and illustrate the Karanas and the Angahāras. As the text in Bharata as well as in our work is obscure and laconic, one cannot explain satisfactorily these dance items so as to enable one to reproduce them in practice. I, therefore, do not think it worthwhile to go into details in this matter.

After finishing what might be called the essential items of the art of dancing, the author of Nrttasastra mentions varieties and styles of dancing

Two types of Nrtta are mentioned Sukumāra and Viddha The Viddha is the Uddhata or violent form of dance, mainly performed by men

We find this distinction of Sukumīra and Viddha in verse 53 of Adhyāya 13 of N S

This distinction is similar to that of Lasya and Tandya

This is followed by the mention of Pindi which is described as having the 'shape given in accordance with the symbol of a deity' Bharata (Adhyāya 4, sloka 260 onwards) mentions several such Pindis based upon the symbols of several deities, eg, the Pindi of Visnu would be Tarkṣya, of Brahmā lotus, of Indra Airāvata, of Manmath Jasa etc

Abhinavaguptapādacārya regards the Pindibanddhas as the original element of Angaharas and Recaka² (Page 166 G O S)

After Pindi, comes the four well-known Vrttis—Bharati, Sattvati Kaisiki and Ārabhati Speech predominates in Bhārati The Sattvati mainly exhibits Vira rasa, Ārabhaţi Raudra, and Kaisiki Śrngara and Hāsya

NS frequently refers to these Vrttis The whole Adhyāya 20 of N Sagara edition is devoted to this topic of Vrttis. It describes the mythical origin of Vrttis, gives the varieties of different Vrttis, their characteristics and the rasas which they express We might supplement the information about the rasas of our text from NS (Adhyaya 22, slokas 65 66, Caukhamba) According to it, Bliārati expresses Karuna and Adbhuta, Sāttvati Vira, Raudra and Adbhuta, Ārabhati Bhayanaka, Bibhatsa and Raudra, and Kaisiki Šrngara and Hisya

. These Vittis are followed by Pravittis. A Pravitti is defined as the imitation of the dress, speech and conduct of a particular region or people. They are

¹ N S Vol 1 Preface Page 11 and 12, G O S

तडेतुकान् पिण्डीबन्द्वान्दश्च नन्दी तथा भद्रमुद्धवीरभद्रप्रमृतयो नन्दिभद्रदेवतागणस्तध्यमुद्धाः पिष्टीबन्धाः
 नाम चृक्तः । आकारसाद्द्येऽय च पिण्डी तद्वन्ध प्रयोग चक्तुः ।

four in number Avanti, Dakşinātyā, Māgadhi and Pañcālī referring to the four well known divisions of our country

The 14th Adhyāya of NS (Nirnaya sāgara edition) discusses the subject of Pravritis giving the geography of India as well as the customs and manners of the different parts of the country with special reference to music, dance and drama

Two types of actions (Dharmidharm's) of the stage and of the world are mentioned. These two types of dharmas are frequently referred to in NS¹ Adhyaya 14 (of C S Series), śloka 69 onwards describes these two types of actions—that which is natural and void of any artifice is Laukika. In Natyadharmi there is always an exaggeration, emphasis and a number of artifices

Finally, come two types of Siddhis or accomplishments—human and divine The human is achieved by exercise (Vyayama) while the divine is due to the favour of a deity. This topic is described in detail in Adhyaya 27 of NS

The ideal Nrtta is one which is expressive of Rasa and Bhava and in accordance with the Rasa of a poem and following the Tala and the Gita

Lying-down postures

Adhyāya 21 describes the six modes of Sayyasthanas ie six postures in the bed These are Sama, Ākuñcitaka, Prasarita, Vivartita, Udvahita and Nata All these are mentioned in NS 2 Adhyaya 13, Verse 219 of (C S Series)

The sama posture—Lying down with the face upwards—is one in which one sleeps with mouth upwards, hands free and loose

In Akuñcita posture—Lying down with limbs narrowed down all the limbs are curved and the knees are contracted in the bed. This posture would show the feeling of cold

[स १४ ना शा]

१ स्वभावभागोपगत शुद्ध त्वविकृत तथा।
लोकवार्ताकियोपेतमहलीलाविवर्षितम् ॥ ७० ॥
स्वभावभिनगोपेत नाताबीपुरुपाथयम्।
यदीद्य भवेताव्य लोकपमी तु सा स्मृता ॥ ७३ ॥
अतिसत्त्वक्रियोपेतमित्वातिभाषितम् ।
लीलाह्याराभिनयं नाट्यलभणलक्षितम् ॥ ७२ ॥
स्वरालद्वारसपुत्तमस्वर्भूपुरुपाथ्ययम् ।
यदीद्य भवेताव्य नाट्यवयाँ तु सा स्मृता ॥ ७३ ॥

² In N Sagara edition after Udvåhitam the reading is Tathå while in the Caukhambå edition we have the reading Samam repeated. With the help of our text we can correct the reading of N S into natam.

NRTTASUTRA 47

Prasarita—Lying down with stretched position—is the posture of one sleeping at ease in which one hand is used as a pillow and the knees are stretched

In Vivartita—Lying down with the face downwards—the face is downwards. This posture is used for the persons wounded, the dead, the drunk and thrown down

In Udvahita—Lying down with the head resting on the hand—the head lies on the shoulder and the elbow is tossed This posture indicates the playful mood

In Nata—Lying down with the legs slightly stretched—the shanks (Jangha) are stretched and the hands are loose. This posture is to be used to indicate sloth, fatigue and exertion

*Sitting postures and seats for different characters

Adhyaya 22 describes the nine *Upavesasthanam¹ i e* postures of sitting and then discusses the types of seats to be given to different persons

A different textual version of the 12th Adhyaya based upon bha and ma Mss is given in the 2nd volume of NS in GOS. In this version we do find the methodical enumeration as well as the orderly description of the Upavesasthanas. This clearly proves that our text and that of SR have followed the version of NS of bha and ma Mss. It is difficult to say however, whether the bha ma tradition is earlier or later.

(1) In the Svastha posture of sitting the legs are held² apart The chest is somewhat raised and the two hands are lying at ease on waist and thigh ³

This posture is to be used when one is sitting at ease

(2) In Mandalasa one leg is stretched and one is on the seat while the side⁴ is bent

^{*} We find this subject discussed in Adhyaya 13 verses 193 to 203 of NS (Caukhamba Sanskrit Series) in Adhyaya 12 verses 157 to 165 (N Sagara ed tion) and Adhyaya 12 verses 203 to 212 (of GO series)

¹ In the edition of GSS and NS and the main text of GOS we do not find the method cal enumeration of Upavesanasthanas as we find in our text and in SR. In the case of Sayyas thanani such enumeration is to be found in the NS texts mentioned above

² विष्कम्मेन वैशासस्थानकोचितेन विस्तारेणाद्यितौ विस्तीर्णान्तरौ सु दरौ पादौ । (N S Abhinavagupta Page 169 Vol 2 G O S)

³ Instead of the word Vakşah we find Tr kah in N S the word Trikah means here the part between the shoulder blades SR substitutes Vistārita for Vişkambhita probably taking the word from the commentary of Abhinavaguptapadacarya

⁴ In the place of Parsyam Natam Bharata puts sirah parsi agata n i e the head is bent sideways. The correct reading of the line seems to be sirah parsi anatani karj am. (Sloka 196)

This posture of sitting is used when one is thoughful, anxious, depressed, dejected or love-lorn

(3) In Klantamanasa posture, the two hands are lying on the chin while the head lies on the top of the arms and the eyes are full of tears

This posture is to be used when one is seized by a strong person, or bitten by an enemy or depressed on account of sorrow

(4) In Srastalasa posture, the two hands are hanging down, the body is inactive and the eyes are tired and dull

This posture is to be used in fatigue, lassitude, intoxication, in fainting, painfulness, swoon and peril of death

(5) In Viskambhita posture, the legs, the thighs and the hands are all curved up and the eyes ere closed

This posture is to be used in meditation and in reflection with the eye turned towards one's own chest

- (6) In Utkataka posture, one sits evenly with both the feet in the same level and not touching the ground. This posture is a natural one and is to be used when persons sit as members of an assembly. It is also used in performing Staddhas, sacrifices, meditation, muttering the Mantras and sipping water from the hands
- (7) When one knee of a person sitting in the above position touches the ground, it is called Muktajānu

This posture is to be used in conciliating the beloved, when offended Is also used in cleansing floor and in covering the ground with dung

(8) In Janugata posture, both the knees are placed on the ground. It is to be used in supplication before kings and worship of gods.

According to Bharata, Jānugata position is used in addition to the above, for sorrow, crying, seeing the dead, frightening bad animals and begging

(9) In Vimukta posture, one falls down on the ground

Tims posture is to be used in staking, in excitement and in lamentation.

The description of sitting postures is followed by the suggestion regarding the different types of seats to be offered to different kinds of persons

This really is no form of bodily gestures in e. Angikabhinaya and, therefore, has its proper place in Aharyabhinaya

Seats (Asanas)

Bhadrāsana (Splendid Seat) is used for the gods, Simhāsana (the honseat) for kings Rupyasana (silver-seat) is for Sāmvatsara (astrologers) and Purodhas (domestic Chaplain) Vetrāsana (Cane seat) for Amūtya (minister) and Mantri (Secretary), Mandāsana (made of Manda Herb) for the Senānī

(Commander of the army) and Yuvarāja (the prince), Vrsi (a roll of twisted grass or pad) for Muni (sage), Dvija (Brāhmin), Brahmacāri (ascetic) and others who observe vows Pithika (a stool or a chair) is to be given to the important persons of the place, the prominent citizens, the prominent merchants and the local persons Masūraka is meant for courtesans, princes and servants and Bhumyasana for the rest

In one's own house, one may use a seat which one likes, excepting the Simhasana (hon seat)

One cannot have a common seat with one's own teacher, either on elephant, on a chariot, on a slab of stone or on a large plank (Ślokas 17 to 22)

In N S the suggestions are more detailed and specific. The Āsanas described in N S Adhyāya 12 śloka 167 onwards as—Bhadrasana should be given to gods and kings, Vetrāsana to Purodhas and Amātyas, Muñjāsana to Senāni and Yuvarāja, Kasthāsana to Brāhmins, Kuthāsana to Kumaras. In this way the Āsanas should be given in Rajasabha

The Āsanas for women are described from śloka 170 onwards Simhāsana should be given to the queens, Mandalāsana to the goddesses, Vetrasana to the wives of Purodhasa and Amatyas, Kuthasana, or Vastrāsana or Carmāsana to Bhogini and Bhūyasana to other women

Paţtasana should be given to Brāhmani and Yatī, Mayūraka to Vaisyas This type of Āsanavidhi is called Bāhya On one's own house, one may use any Āsana which one likes

Standing posture

In Adhyaya 23, we come to the topic of standing postures—sthanaka of men and women with their usages

Six sthānakas (Standing Postures) of men are Vaiṣṇava, Samapāda, Vaiśākha, Mandala, Pratyāliḍha and Āliḍha

(1) In Vaisnava sthanaka, one foot is in the natural position and the other in tryasra ie obliquely placed sideways with the shank somewhat bent

This posture should be used when one is talking at ease

Our text does not give the distance between the two feet N.S (Ad 10) gives it as two and half talas

(2) In Samapada sthanaka, the feet are evenly placed at a distance of a tala ¹ It must have the beauty of naturalness Rudra, Brahma and other gods are the deities of this sthanaka. The meaning probably is that this is the natural position of these gods. This is also the posture of a group of Brahmins but if

I Tala = 12 angulas.

we adopt the reading मन्त्र, it would mean that the Brahmins should pronounce their स्वरितमङ्कल in this posture

This sthanaka may also be used to indicate jumping of the birds, the performance of the marriage ceremony and the position of persons seated in chariots and Vimanas. It is also the posture of the ascetics and the persons practising penance.

(3) In Vaisakha¹ the feet are placed two and a half talas apart The things are bent and the feet are sideways

Its deity is skanda

This posture is to be used to indicate the carriage drawn by horses, it is also to be used for exercise and for the entrance and exit of the bow

According to the NS, the distance between the two legs is three and half talas, while the distance in Vaişņava posture is two and half talas as mentioned above

(4) In Mandala, the two legs are at a distance of three talas from each other. The waist and the knees are in a line and the feet are sideways

This posture is used to suggest the attack with the bow and the thunderbolt (Vajra). It also indicates the carriage by elephants and lifting up something in dance.

NS calls this posture Aindramandala and gives the distance between the two feet as four talas. There are other variations also in the description

(5) Ālidha—when the right leg is stretched at a distance of five talas, this very (Mandala) posture becomes Ālidha Rudra Kali is its deity (to be distinguished from Bhadrakali)

This posture is used everywhere to indicate the action of raising up something. It is also used in Raudra movement and to indicate fighting. It can be used to imitate the gestures of a lion as also to suggest in contacting the enemy. It is used to suggest hand to hand fights, sword fights, and circular movements. It is also used when angry words are exchanged so also in the clash of athletes (Mallas) and generally attack and throwing of weapons.

त हास्रीनर्धतालाश्च निषण्योत् प्रसन्पर्यत् । इयस्री नक्ष स्थिती चैव तम पादी प्रयोगयेत् ॥ ६० ॥

¹ N S gives a somewhat different description of Va Sakha Sihanaka. According to it Uru should be N sanna irreaning probably depressed while the legs, according to one reading should be raised upto chest but according to another reading sideways as in our text

,- (6) - Pratyālīdha—Pratyālīdha is the reverse of Ālīdha posture In Pratyālidha, the right leg is curved and the left leg is stretched 38120

The danavas are the presiding deities of Pratyalidha

The weapons raised in Alidha posture should be released in Pratyālidha posture

Now we proceed to the sthanas of women They are three-Ayata, Avahittha and Hayakranta

(1) Ayata¹—In Ayata posture, one leg is in natural position, while the other is placed at a distance of one Tala obliquely side ways. The face should look as if pleased, the chest should be evenly elevated with the two hands in Latā pose lying on the buttocks

This posture is to be used when one enters the stage (Rangāvatarana) for the first time and in offering flowers

(2) Avahittha²—In Avahittaha posture one leg is obliquely placed, while the other, which is removed from it by a distance of one tala should be in even position and Trika (the part between the shoulder blades) should be slightly raised

This posture is used to express erotic gestures, to show beauty and when one is looking towards the road of a lover

(3) Asvakranta or Hayakrānta—In this posture, one leg is evenly placed and the other curved like a balance The distance between the two legs is not fixed

This Asvakrānta posture is of two types—Sūci Viddha and Aviddha

This posture is to be used when one is holding a branch (of a tree) or gathering a bunch of flowers. It also indicates intoxicated eyes or when one is talking from a seat or conversing in a natural way

Gaits

It will be convenient to discuss in this section the Gati also, though it forms the subject matter of Adhyaya 29

¹ The description of this Ayata pose in N S is different. According to one reading the right foot should be even while, according to the other, it is the left. In this connection, our reading seems to be more appropriate

There is no mention of face and Urah in the three texts of N S Kati is said to be elevated In the foot notes of N Sagara edition, however, two verses are given which, though very corrupt, resemble our text

The reading given in bha and ma mss of GOS of N S are very similar to those of our

Many more usages of this posture are given in N S

² This posture is different from N S

The topic of Gatis (gaits) has been treated in NS Adhyāya 12, verse 11 onwards (N Sagara and GOS) and Adhyāya 13, verses 12 onwards (CS Senes)

Two types of Gaits are indicated,—the natural one (Svabhavena), and the marshal (Yuddhacari) one

- (1) In the natural gait, the knee is raised up to the waist
- (2) In the marshal gait, the knee is raised upto the chest

Then again the gaits are classified as Sthirā (steady) and Sighrā (quick)

The gaits are also classified according to Rasas, gait in the Erotic sentiment etc

The movements are also classified according to three tempos—Layas—Druta (quick), Madhya (medium) and Vilambita (slow)

The Sthira (steady) gait is to be used when one is afflicted by fever, exhausted by penance, suffering from pain, in wonder, in avahittha (dissimulation), in eagerness and in going as one pleases. It is used in love—Śrngara and Sorrow—śoka.

The Sighra (quick) gait is to be used when one is uneasy, trembling in fear, in terror, in flurry, in joy, in the actions to be done quickly, in hearing unpleasant news, in moving to and fro, in looking at wonderful things, in urgent actions, in searching the enemy, in pursuing the guilty, and in hunting the beasts of prey-

Gaits expressing sentiments (Rasagatis)

Gait in the Erotic sentiment (SrngJrini gati)—In Svasthakamita ie love which is not secret, love at ease to be distinguished from secret— $q = \pi i e$ open love, one adopts the Srngarini gait. One is dressed in a handsome style and walks with rhythmic steps and the movements of the arms are in accordance with the legs. The way is shown by the female messenger (duti)

In Pracchannakamita (secret love) when one is going to meet the lover, one puts black garments, walks with slow steps is suspicious and susceptible to any sound, has a trembling body and falters repeatedly and looks around in fear

Gait in the terrible (Raudra) sentiment—The terrible sentiment is of three kinds, viz terrible in limbs (anga), terrible by nature (Svabbava) and terrible in make-up (Nepathya)

Terrible in limbs (anga)—In the anga raudra there are many faces many mouths, a multiplicity of arms fat limbs, deformity and tallness

Terrible by nature—One is rough and cruel and speaks ferocious

Terrible in make up—The body is wet with blood and carries parts of intestines in the form of lotus. It also carries many arms.

In these different forms of terrible (Raudra), the stress in the gait is given on the steps four talas wide.¹

Gait in the Odious sentiment (bībhatsikā gati)—This is characterised by feet close together or wide apart The ground on which one walks is unpleasant—either a cemetary or a battle-field.

The gait in the heroic sentiment (Vira)—is characterised by swift footsteps. In the mood of wonder and joy one's footsteps are also of the above type.

The gait in the Pathetic sentiment (Karuna)—the step is steady, there should be no attempt in suggesting beauty and rhythm.

In unenergetic or feeble gait (of weakness),—one walks with stiffness and the body is rolling. When one is severely wounded, one walks as if the whole body is contracted.

In the sentiment of terror (Bhayānaka), the gait becomes quick and stiff according to the purpose. When one sees a deformed creature one walks with eyes wide opened.

For ascetics, the gait is slow, the ascetic looking at a distance of a Yuga.

The movement in darkness should be slow on account of the hands touching at various objects.

The gait of one sitting in a chariot should be shown by slow steps. The movement of the chariot should be shown by Samapāda Sthāna (posture), in one hand he holds the bow and in the other the pole of the chariot. His charioteer should be shown as if holding the whip

The gait of one seated in a celestial car (Vimāna) should be like that of one riding a chariot. Going up and coming down should be indicated by the movements upward look and downward look respectively. Going through the sky should be shown by turning circularly.

The descent from the sky should be indicated by straight and raised feet. Ascent to a high place should be shown by apakranta steps appropriate for going away.

¹ Abhinavagupta explains it as a type of motion in which the foot takes less time in falling than it has taken in lifting (yavatākālena utkķepah tato nyūnena patanam) N S part II, page 143 (GOS)

It is characterised as Asanna and Vikṛṣṭā which would mean near and far off. This, by itself, makes no sense. Comparing this with N S Ad 13, verse 54, (CSS), we find that the author of our text has taken these two words asannapatitath and vikṛṣṭapatitath of N S. Thus, the sense would be taking short jumps and long jumps. The N. S gives further details: the feet should fall upon one another like the gambolling of a sheep (Edaka). The hands should be in accordance with this movement, but according to Ma Ms the gout-like movements are to be used in bhitagatib.

The descent should be shown by steps away from one another as if one is The movement in water should be shown by upward movement of the Climbing on the trees should be shown by the upward movements of the steps hands. The movement of an elephant should be shown by steps moving sidea ways and away from one another in the form Sucividdha and by holding the goad-The same movement with holding the bit of a bridle and the movement of other such draught animals should be shown by holding the reins. The movement of horse ridding should be shown by Vaisikha Sthanaka The movement of the serpents should be shown by the feet in Svastika form Gait of a Vita should be shown by graceful steps and that of Kañcuki should be shown by unsteady and stumbling gait In the gait of lean and weak person the movement of the breath should be obstructed. The gait of a person seized with disease or of one tired after penance should also be similarly shown. The gait of one who has walked a long way should be shown by slow and weak steps. The gait of a drunken person should be shown by stumbling on both the sides. The gait of a mad person should be shown by irregular steps. He would be talking irrelevantly and would be dirty and hairy (shaggy)

The gait of crippled person should be shown in accordance with his defects and purpose. The gait of a fat man should be shown as if dragging the body. The gait of a Viduşaka should be such as to cause laughter and in his hand there should be a stick naturally bent. In the gait of the menials the eyes would be bent thinking of something. The gaits of persons of different countries should be shown according to their natural peculiarities. Similarly also of beasts of prey and other animals.

[8 13] (CSS)

तिविधा तु गति कार्या स्वरुपहुरुदामने ॥ १२९॥
विक्लाइप्रयागेण पुरुकाभिनय प्रात ।
एक राज्जानी नित्य स्तन्थो वै चरणो भवेन् ॥ १३०॥
तथा दितीय वार्यस्तु पादोऽप्रतारस्थर ।
स्तन्धेनोत्थापन वार्यमहस्य चरणेन तु ॥ १३९॥
गमर्नेन विपण्ण स्याद्यों न चरणेन तु ॥ १३९॥
इतरेण निपादेच कमेणानेन वै मजेन् ॥ १३२॥
एषा स्वर्ज्जगति कार्यो तालस्व्यक्षतपु च ।
पादनामतलस्थेन अधितेन मजेत्या ॥ १३९॥
निपण्णदेहा पद्गोस्तु नतजङ्गा तथेव च ।
सर्वसङ्चिताहा च वामने गतिरिव्यते ॥ १३४॥
न सस्य विष्ठम कार्यो विक्षेपधरणस्य वा ।
सोद्वाहिता चूर्णपदा सा कार्यो प्रदेशात्मका ॥ १३५॥

The postures of the remaining should be made in accordance with the meaning to be expressed

The gait of the persons of the highest class should be slow (firm), of the middle class middling and of the low class quick and frequent. The rhythm (laya) of the three should be according to their nature ie of the highest class Vilambita, of the middle class Drutavilambita and of the low class Druta. In making movements of steps on the stage one should see the area and the form of the stage and made them accordingly ¹

The gait of women should be with graceful steps, of men, steady or proud The gaits should be exhibited in accordance with meaning

In short, the dress should be in accordance with age, the gait in accordance with dress and the recitation of speech according to the gait and acting in accordance with recitation

After describing the lying-down, sitting and standing postures of men and women, the text proceeds to describe the Angakarmas in Adhyaya 24. In other words, it describes the Angikābhinayas. This topic is treated in great detail in Adhyayas 8 and 9 of N S.

Movements of lumbs

Generally speaking, the descriptions of the different Āngikabhinayas are similar in both the works. Though there are at certain places important variations.

Movements² of head

There are thirteen movements of the head They are as follows —

ऋनुस्यभावसस्थान प्राष्ट्रत तु स्वगावजम् ।

महत्याध्ययनध्यानस्यमात्र जयक्रमें सु ॥ ३८ ॥ [अ ८ N S G O S]

Names of the movements of the head according to AD are—Sama Udvahita Adhomukha, Alohta Dhuta, Kampita, Paravitta Utksipta and Parivahita (3loka 49 to 65)

S. R.—Dhuta, Vidhuta, Adhuta. Avadhuta, Kampita, Akmapita, Udvahita. Parivahita, Aficita, Nihaficita, Paravitta, Utksipta Adhomukha and Lolita (Ad. 7 sloka 51 to 75).

See for pictorial representations of the head and the reck movements, Jain Citrakalpa-druma (Pages 63 to 69 Plates 119 to 142)

¹ The verse as it stands in the text does not make much sense. If we emend the reading vikita to vikits and adopt the reading of c padagatipracarah karyah it would give the above sense.

² In GOS edition of NS, an additional sireskarma named Praktin is mentioned. The verse is put into the rectangular bracket. Praktia is not mentioned by the Caukhamba and N Sagara editions. It is defined as the easy natural holding of the head and it is used for auspicious occasions, study, meditation, natural actions and in saying Jaya.

Akampita, Kampita, Dhuta, Vidhuta, Parivāhita, Udvāhita, Ayadhuta, Añcita, Nikuñcita Parāvṛtta, Utkṣipta, Adhogata and Parilolita

- (1) Ākampita³—(definition)—Raising the head in a natural (Svabhāvāt) and straight (fju) way
 Usage—Making signs, sermonizing, questioning and soliloquy and natural talk
- (2) Kampita—The above movements when done frequently, become Kampita
 Usage—Anger, threatening, speculating and taking yows
- (3) Dhuta—Whirling the head slowly Usage—Distress, amazement and forbidding
- (4) Vidhuta²—Shaking the head from one side to the another
 Usage—Overpowered by cold, suffering from old age, intoxication and feverishness
- (5) Parivahita³—Moving the head in a circular movement Usage—Accomplishment, amazement, joy and sportiveness
- (6) Udvahita—Carrying the head upwards for once Usage—Height, pride and looking upwards
- (7) Avadhuta—throwing down the head suddenly
 Usage—Message conversation, signs and invokation
- (8) Ancita—Bending the neck slightly on one side
 Usage—Swooning, painfulness, anxiety and unhappiness
- (9) Nikuñcita⁵—Elevating the shoulder and curving the neck Usage—Pride and amorous diversion
- (10) Paravitta—Turning the head backwards
 Usage—Looking backwards or sideways
- (11) Utkşipta—Keeping the head upwards
 Usage—catching at a lofty object and heavenly object (NS दिन्यास instead of दिन्यार्थ)
- (12) Adhogata—Casting down the head
 Usage—Bashfulness bowing and unhappiness

¹ N S describes it in a different way. The head is slowly moved upwards and downwards.

² According to N S Vidhuta is the quick movement of Dhuta.

³ N S uses the word Paryaya instead of Mandala

⁴ According to N S , when the Adhuta head is made once oblique, it becomes Udvāhita.

⁵ According to N S the Nikuñcita is to be used by women to indicate amorous movement and feelings

(3) Nirbhugna—Face downwards and somewhat turned upward so as to look away

Usage—Seriousness

(4) Bhugna—Somewhat downcast face ¹
Usage—Shame, and natural pose of ascettes

(5) Vivṛtta—Turning back the face
Usage—Laughing, grief and fear etc

²(6) Rju—The normal position Usage—Natural position

Movements of Chest (Urah)-

Next come five movements of Urahkarma ie chest movements They are Abhugna, Nirbhugna, Prakampita, Udvāhita and Sama

Abhugna—Chest slightly bent 3

Usage-Wounded with weapons, act of killing and heart disease

Nirbhugna-Chest stiff and back lowered

Usage—Stupification (or stiffness), astonishment, pride and rejection

Prakampita—Sudden throwing up of the chest

Usage-Laughter, weeping fatigue, disease and fear

Udvahita-High chest

Usage-Breathing and yawning

Sama—(lit) equal on all sides te flat or even Usage—Indicating well being

Movements of the sides (Parsva karma)-

We come to the description of the five kinds of the movements of the Sides. They are samunata, Nata, Prasarita, Vivartita and Apasta

Samunnata-Waist sides and shoulders are raised

Usage-Retreat

Nata-Waist and sides bent

Usage-Approach

¹ N S has a reading Kiñcidayatam which I think should be Kiñe danatam

² N S gives also six movements of asya

N S (Ad 8 Slo 157 onwards) gives Vidhuta instead of Viruddha and instead of Rju, N S gives Udvāhi movement S R agrees with N S Instead of Nirabhugna S R gives Vyabhugna

³ According to N S the chest is lowered while the back is raised and the shoulder slightly bent and at times loose. Usage—for denoting the confusion of mind rejection swoon, sorrow, fear, disease arrow in heart and also the touch of cold rain and bashfulness.

Prasarita—Spreading out the sides in both ways

Usage--Joy

Vivartita—Circular movement of Trika (a part between the shoulder blades)

NRTTASUTRA

Usage—Circular movement

Apasrta-Moving away the Trika

Usage-Terror

Movements1 of Stomach (Udara)-

Movements of the stomach are three They are Kṣāma, Nımna and Pūrņa

Ksāma—Slim

Usage—Laughter and Yawning

Nımna—Sunken

Usage—Disease, penance, fatigue and hunger

Pūrna—Full

Usage—Breathing out, health and voluptuousness

Movements of the Waist (Kaţı)-

These are five They are Prakampita, Vicchina, Nivṛtta, Recita and Ud-yāhita

Prakampita—Quick and Oblique movement *ie* to and fro of the waist Usage—The gaits of shorts, dwarfs and hump-backed

Vicehinnā—Undulating in the middle

Usage—Physical exercise, looking over the shoulders and arrival of somebody

Nivitta—Facing one who has turned the back

Usage—Turning round

Recită-Moving all round

Usage—Whirling movement

Udvahitā—Raising up of the buttocks

Usage—The sportive movements of women

Movements3 of the thigh (Uru)-

They are five Their names are Kampana, Valana, Stambhana, Udvartana and Vivartana

Kampana—Bending downwards and upwards of the heels and standing on the fore part of the foot

Usage—the gait of low characters

¹ According to S R kṣāma, Khulla, Pūrņa and Riktapūrņa N S gives khalva instead of Nimna

² S R gives the names of these movements in their past participles such as Kampita, Valita, Stabdha Udvartita and Nivartita

Valana—The knee slowly moves inward
Usage—Movements of women at ease

Stambhana¹—Full of inverted actions
Usage—Bashfulness,² perturbation and rejection

Udvartana—Circular and swinging or whirling movement
Usage—Physical exercise and Tandava dance

Vivariana—The heel goes inward

Usage—Turning round hurriedly, flurry or excitement

Movements3 of Shank (Jangha)-

The movement of the shank are five They are Avartita, Nata, Kşipta, Udvahita and Parivitta

Āvartita—Movements of the right and left shanks in inverted order Usage—Movements of the Vidūşaka.

Nata—Contraction of the knees
Usage—Standing, sitting and moving postures

Kşipta—Tossing or moving to and fro the shanks
Usage—Physical exercise and Tandava

Udvāhīta—To move the shank in such a way as to lift up the thigh (Uru)
Usage—Crooked or swinging movements

Parivitta—Moving in the opposite direction Usage—Tandava dance etc

Movements' of the foot (Padakarma)-

There are five movements of the foot They are Udghatita, Sama, Recita, Añcita and Kuñcita

¹ If we adopt the reading Apaviddha of N S (GOS) it would mean swinging motion, practically same meaning

² The reading in Ms C is bhimordhasavisadesu. The reading in the three editions of NS is sadhvase ca visade ca but in ma Ms of GOS edition the reading is hrisadhvasavisadesu—which is undoubtedly the original reading of our text. I have therefore adopted the same. It would be noted that the readings in the Nrtiasutra section of V D agree more with waiting and with Mss of N S of GOS.

³ S R gives ten movements of calf First five movements agree with V D and also with N S. Five additional movements are Nisrta Paravitta Tirascitā Bahirgata and Kampila

⁴ S R gives thirteen movements of the foot. The first six movements are common with NS., the seven additional movements are Traitia Ghatitotsedha Ghatitia Mardita Agraga, Parsinga and Parsinga.

*Udghāţita—Standing on the forepart of the foot and moving down the heel on the ground

Usage—Making some one attached and graceful movements

Sama—Two feet are in a natural position on the ground with even placing.

Usage—Natural gestures

Recita-The foot moves on the forepart and the heel is raised

Usage—Nikṣipta, Recita, Bhranta, Tādita, Pracāra, Lalita and Udvartita, (ie throwing away, whirling, rolling beating, manifesting, sporting and elevating)

Añcita—The forepart of the foot is raised This means that the movement is on the heel in e the opposite of Recita

Usage—Various types of Bhramarakas, probably meaning bee-like circular movements, i.e. circular movements

Kuñcita—middle part of the foot is contracted

Usage—In Atikranta and Abhigamana—that is crossing and going towards (Atikranta would mean crossing something and Abhigamana mere approach. Another meaning of Abhigamana is the act of cleansing and smearing with cowdung, the way leading to the image of a deity. This is one of the five parts of the Upāsana with Rāmanujas 1)

The movement of one foot is called carr, with two karana and a combination of karana is called khanda, and a combination of two or three or four khandas are called mandala (Compare N S Ad 11 Slo 3, 4, C S Series) The text does not give the list of the upingas or subordinate limbs. But they are mostly the same as are given in the N S excepting the text substitutes the Danta for the chibuka. N S gives Netrabhrunāsa dharakanalacibukām

Glances (Drstis)

Ad 25 (stot as 1 to 32) starts with the lists of thirty-six Drstis (glances) followed by their descriptions. These thirty six Drstis are classified in three groups. The names of the first two groups are given as Rasa Drstis and Sthayi-bhava Drstis respectively but no name is given to the third group.

The definition of N S is more or less identical but the usage is different. There the udghaffita pada is to be used while practising udghaffita karana for imitation. The reading in the text seems to be doubtful. It is likely that in Arurakta crarge rake seems to be interpolated. The original reading might have been karyo nukarane rake see. If we adopt the reading of A anurakta carage the meaning vould be this p da should be used for reddening the feet.

¹ M W's Sanskrit Eng. Dictionary and also Sarvadarianasangraha

² N S in verse 61 of Adhyāja 8, calls them Sancāriņi Drijus.

- (I) Rasadıştıs (The Glances to express the sentiments) are—
- (1) Kāntā, (2) Bhayānakā, (3) Hāsyā, (4) Karuṇā, (5) Adbhutā, (6) (6) Raudrā, (7) Vīrā, and (8) Bibhatsā The ninth Śāntā Dṛṣṭi is not mentioned in verse 1, but it is mentioned in verse 9. It is also necessary to make the number thirty-six. So, I have amended the text into Śāntā Ca Rasa Dṛṣṭayah in place of Vijñeyā, though, I should say that the latter is also the reading of NS (II) Sthāyi Dṛṣṭis are—
- (10) Snigdhā, (11) Hṛṣṭā, (12) Jihmā, (13) Kruddhā, (14) Bhītā, (15) Lajjitā (16) Dṛptā, (17) Vismitā and (18) Saumyā
- (III) The remaining (eighteen) Dṛṣṭis (Sañcāri-Dṛṣṭis) are—
- (19) Malina, (20) Ākekara, (21) Śrantā, (22) Abhitaptā, (23) Viplutā, (24) Vişannā, (25) Śankita, (26) Trasta, (27) Kośā, (28) Nimīlitā, (29) Vibhrāntā, (30) Kuñeita, (31) Śūnyā, (32) Mukulā, (33) Vitarkitā, (34) Madira, (35) Lalitā and (36) Glan i

Different expressions of the eyes — Rasa-Drstis—

- (1) Kanta²—Movement of the brow and side-glances inspired by eros Usage—Throwing a side glance (kataksa) at a lover (verse 23)
- (2) Bhayanakā—eyelids and tips of the eyelashes turned upwards and eyeballs moving
 Usage—Killing *
- (3) Hasyā—eyelids are somewhat contracted and eyeballs agitated Usage—Hāsya rasa—comic
- (4) Karunā—Eyelids are falling and rising, and full of tears and cyeballs disappearing
 Usage—Karuna rasa-sorrow
- (5) Adbhutā—Tips of the eyelashes are somewhat contracted and eyeballs somewhat expanded, even and fully opened Usage—Adbhuta rasa marvellous

¹ N S gives eight Rasadrstis excluding Santā and eight sthäyibhāva Drstis excluding Saumyā and substituting Jugupsitā and Dinā for Jihmā and Lag tā. It makes the number thirty six by giving twenty Drstis in the third group. With these few variations, the subject matter of Drstis in the text and in N S is almost the same.

The N S of the G O S in the rectangular bracket and the N S of the N Sāgara edition in

The N S of the G O S in the rectangular practed and the N S of the N Sagara edition in the text itself describe Santa Drst; after Bibhatså. The description is practically idetical with that in our text. In N S we find the mention of these two traditions of including as well as excluding Santa as one of the Rasas.

² According to N S in Sphgara rasa

³ According to N S in Bhayanaka rasa

- (6) Raudrā—Eyebrows upturned, curved and contracted suggesting a frown Usage—Raudra Rasa-fury
- (7) Vırā—Mıddle part is puffed up and the eyeballs even Usage—Vira Rasa Heroic
- (8) Bibhatsa—Eyeballs drawn at the end of the eyes Usage—Jugupsita 1e Bibhatsa Rasa-disgust
- (9) Santa—Steady on account of meditation and looking downwards
 Usage—Santa Rasa-tranquility
 Sthayibhava Drstis are—
- (10) Snigdha—Opened in the middle, sweet and showing mirth Usage—Looking lovingly
- (11) Hrsta—Middle part is puffed up and tremulous and looking at the end of the eye
 Usage—Joy
- (12) Jihma—Looking with eyeballs downwards and slyly sunken Usage—Jealousy
- (13) Kruddhā—Eyebrows crooked and eyeballs motionless Usage—Anger
- (14) Bhitā—Crooked eyelids and eyeballs motionless Usage—Fear
- (15) Lajjita—Eyebrows somewhat contracted and eyeballs averted Usage—Shame or bashfulness
- (16) Dipta—Blooming eyes expressing spiritedness
 Usage—Utsaha ie in showing resolution to achieve something
- (17) Vismita—Eyesight even with the end of the eye fully opened Usage—Astonishment
- (18) Saumyā—Even eye sight with even eyeballs
 Usage—Looking placidly
 Sañcāri Dīstis—
- (19) Malina—Eyelids are throbbing Usage—Separation
- (20) Äkekarä—Having eyelids somewhat contracted Usage—Union sambhoga
- (22) Abhitaptā—Having dull cychalls and cyclids. Usage—Dejection

- (1) Rasadystis (The Glances to express the sentiments) are—
- (1) Kāntā, (2) Bhayānakā, (3) Hāsyā, (4) Karuṇā, (5) Adbhutā, (6) (6) Raudrā, (7) Vīrā, and (8) Bībhatsā The ninth Sāntā Dṛṣṭi is not mentioned in verse 1, but it is mentioned in verse 9. It is also necessary to make the number thirty six. So, I have amended the text into Sāntā Ca Rasa Dṛṣṭayah in place of Vijñeyā, though, I should say that the latter is also the reading of NS (II) Sthāyi Dṛṣṭis are—
- (10) Snigdhā, (11) Hṛṣṭā, (12) Jihmā, (13) Kruddhā, (14) Bhitā, (15) Lajjita, (16) Dṛptā, (17) Vismita and (18) Saumyā
- (III) The remaining (eighteen) Dṛṣṭis (Sañeāri-Dṛṣṭis) are-
- (19) Malinā, (20) Ākekarā, (21) Šranta, (22) Abhitaptā, (23) Vipluta, (24) Vişannā, (25) Šankīta, (26) Trastā, (27) Kośā, (28) Nimīlītā, (29) Vibhrāntā, (30) Kuñcītā, (31) Šunyā, (32) Mukulā, (33) Vitarkītā, (34) Madīrā, (35) Lalita and (36) Glānā

Different expressions of the eyes — Rasa-Dṛṣṭis—

- (1) Kanta²—Movement of the brow and side glances inspired by eros Usage—Throwing a side glance (kataksa) at a lover (verse 23)
- (2) Bhayanakā—eyelids and tips of the eyelashes turned upwards and eyeballs moving
 Usage—Killing *
- (3) Hāsyā—eyelids are somewhat contracted and eyeballs agitated Usage—Hasya rasa—comic
- (4) Karuṇa—Eyelids are falling and rising, and full of tears and eyeballs disappearing
 Usage—Karuna rasa sorrow
- (5) Adbhuta—Tips of the eyelashes are somewhat contracted and eyeballs somewhat expanded, even and fully opened
 Usage—Adbhuta rasa marvellous

N S gives eight Rasadistis excluding Santa and eight sthayibhava Distis excluding Saumya and substituting Jugupsita and Dina for Jihma and Lauita. It makes the number thirty six by giving twenty Distis in the third group. With these few variations the subject matter of Distis in the text and in N S is almost the same. The N S of the G O S in the rectangular bracket and the N S of the N Sagara edition in

The N S of the G O S in the rectangular bracket and the N S of the N Sagara edition in the text itself describe Santa Disti after Bibhatsa. The description is practically identical with that in our text. In N S we find the mention of these two traditions of including as well as excluding Santa as one of the Rasas

² According to N S in Sphgara rasa

³ According to N S in Bhayanaka rasa

- (6) Raudrā—Eyebrows upturned, curved and contracted suggesting a frown
 - Usage—Raudra Rasa-fury
- (7) Vira—Middle part is puffed up and the eyeballs even Usage—Vira Rasa-Heroic
- (8) Bibhatsā—Eyeballs drawn at the end of the eyes Usage—Jugupsita 1 e Bibhatsa Rasa-disgust
- (9) Śāntā—Steady on account of meditation and looking downwards
 Usage—Śānta Rasa-tranquility
 Sthāyibhāva Drṣṭis are—
- (10) Snigdhā—Opened in the middle, sweet and showing mirth Usage—Looking lovingly
- (11) Hṛṣṭā—Middle part is puffed up and tremulous and looking at the end of the eye
 Usage—Joy
- (12) Jihmā—Looking with eyebalis downwards and slyly sunken Usage—Jealousy
- (13) Kruddhā—Eyebrows crooked and eyeballs motionless Usage—Anger
- (14) Bhitā—Crooked eyelids and eyeballs motionless Usage—Fear
- (15) Lajjitā—Eyebrows somewhat contracted and eyebalis averted.

 Usage—Shame or bashfulness
- (16) Dṛpta—Blooming eyes expressing spiritedness
 Usage—Utsāha ie in showing resolution to achieve something
- (17) Vismita—Eyesight even with the end of the eye fully opened Usage—Astonishment
- (18) Saumyā—Even eye-sight with even eyeballs
 Usage—Looking placidly
 Sañcāri Dīstis—
- (19) Malinā—Eyelids are throbbing Usage—Separation
- (20) Äkekarā—Having eyelids somewhat contracted Usage—Union-sanibhoga.
- (21) Śrūnti-Slightly raised cyclids.
 Usage-Fatigue
- (22) Abhitapti-Having dull cychalls and cyclids.
 Usage-Dejection

- (23) Viplutā—Agitated, trembling and frightened.
 Usage—Miserable state
- (24) Vışannä—Somewhat stupified eyeballs Usage—Dejection
- (25) Sankitā—Unsettled eyeballs
 Usage—Doubt
- (26) Trastā—Dry with eyeballs fluttering and inspired by fear Usage—Terror
- (27) Kośa¹ i e Vikośa—Eyes opening like buds Usage—State of knowledge
- (28) Nimīlitā—With closed eyelids Usage—Touch
- (29) Vibhranta—Unsteady and rolling eyebalis
 Usage—State of confusion
- (30) Kuñcitā—Contracted eyesights with curved eyeballs "Usage—Looking minutely
- (31) Sunya—Looking evenly with steady eyeballs and eyelids and yet indicating disturbance of mind

 Usage—Anxiety
- (32) Mukula—tips of eyelashes throbbing and closed Usage—Smelling
- (33) Vitarkita—Agitated eyelashes, and eyelids and eyeballs steady Usage—Speculation
- (34) Madira—With full bloomed and whirling eyeballs Usage—Drunkenness
- (35) Lalita—With the ends of the eyes blooming smiling and graceful Usage—Amorous expressions of women
- (36) Glana—Having closed watery eyes and eyelashes as if out off Usage—Depressed condition of mind and in languor

Movements of eyelids (Putayoh karma)-

These are of nine kinds They are Nimeşa, Unmeşa, Pras irita, Vivartita, Akuñcita, Sama Sphurita, Pilita and Tadita

In the list of Dṛṣṭis all our Mss give the reading Sokā In the definition—verse 19—the reading is Višokā but in the verse 30 the reading of A Ms is Vikoša. This is the reading of the N S editions also. I have therefore adopted the reading Vikoša emending Soka into Koša. The reading Višokā however, is not inapporpriate to the usage which is knowledge. If Višokā is the correct reading it may be compared with Višoka and Jyotismati in Yogasutra Adhyāya. I Sūtra 36

Nimesa—Bringing together the eyelids

Usage—Closing the eyes

Unmesa-Opening the eyelids

Usage—Opening the eyes

Prasīrīta—This movement is not defined in the text. It is defined in NS as Āyāma i e lengthening or stretching the eyelids

Usage—Surprise i e in Adbhuta rasa and in Vira rasa

Vivartita¹—Stretching both the eyelids

Usage-Anger

Ākuñcita—Contracting the eyelids

Usage—Smell, touch and unpleasant appearance

Sama—Natural position

Usage-Śrngāra rasa

Sphurita—Quivering of the eyelids

Usage—Love anger of women

Pihita—With covered eyelids

Usage-Cold, wind, hot and rain

Tādita2—Edges of the eye-lids drooping

Usage-Beating

Movements of the eyeballs (Tāraka-karma)—

The Movements of the eyeballs are nine They are Valana, Bhramana, Calana, Sampravesana, Vivartana, Pitana, Niskrama, Udvarta and Prākrta

Valana—Oblique movement

Usage-Hisya rasa

Bhramana—Moving the eyeballs round and round in the eyelids
Usage—Intoxication

Calana—Quivering eyeballs

Usage--Vira Rasa

Sampravesana—Drawing the eyeballs inside

Usage—Bibliatsa rasa

Vivariana-Moving the cychalls to the end of the eye

Usage—Singira Rasa

Patana-Loosening the cyeballs

Usage-Karuna Rasa

¹ N S defines it as Samudyritam Le turned up 2 N S defines it as Abata Le Essened or fixed

Niskarma-Outward movement

Usage—Bhayanaka Rasa

Udvarta-Backward movement

Usage—Vira Rasa

Prākṛta-Natural look

Usage—The remaining moods that is in moods not mentioned above Movements¹ of the sight (Disti-karma)—

Names of six kinds of Dṛṣṭikarmas are given in the beginning but in the definitions two more karmas are mentioned. Thus the Dṛṣṭikarmas become eight in number. NS, SR and AD give the same number. The names given in the text are Sama, Sācikṛta, Anuvṛṭta, Ālokita, Ullokita, Lokita, Vilokita and Avalokita.

- (1) Sama—Eyeballs even and placid
- (2) Sācikṛta—Looking through the eyelashes
- (3) Anuvitta—Looking for (lit and accomplishing) a form ie identifying a form
- (4) Ālokīta—Sudden look
- (5) Ullokita—Looking upwards
- (6) Lokita-Looking on all sides
- (7) Vilokita—Looking on two sides
- (8) Avalokita—Looking backwards

Movements of the Eye-brows (Bhruvoh karma)-

A general instruction is given to co-ordinate the movements of the brows and the eyes. The brows should be in accordance with the movements of the eyes expressing various Bhāvas (moods) and rasas (sentiments)

Movements of the eyebrows are seven They are Utkşepa, Patana, Bhrukuți, Catura, Nikuficita, Recita and Svabhāvika

Utksepa-Raising the cyebrows upwards

Usage-Amorous movement

Patana-Lowering the eyebrows

Usage—Tenderness

Bhrukuti—Casting upwards the two brows from the roots
Usage—Anger

I In the enumeration of Dṛṣṭikarmas, śloka 48 mentions only Ālokita, Ullokita and Avalokita, while in the definitions two more Lokita and Vilokita are given. Though, it is difficult to include all in one line, yet I have tried to put them together in a line of eighteen syllables.

Catura—Just heaving up a little and sweetly one brow lengthwise Usage—Śrngāra rasa

Nikuñcita¹—Softly breaking one or two eyebrows

Usage—Several erotic gestures like Moţtāyıta etc

Recita—Graceful lifting up of one of the eyebrows

Usage—Dancing

Svābhāvika—Natural pose of the brows

Usage—Normal moods

Movements of the cheek (Ganda) region-

The movements of the cheek are Six They are Kṣāma, Phulla, Pūrna, Kampita, Kuncitaka and Prākṛta 2

Kṣāma—Depressed according to NS Avanata ie dropping

Usage—Unhappiness

Phulla—Blown

Usage-Joy

Pūrna—Full

Usage—Satisfaction

Kampita—Quivering

Usage—Anger

Kuñcitaka³—Contracted (lit) broken at the corner, also accompanied with thrilled hair (Romañca)

Usage—Laughter, touch accompanied by hornpilation

Prākṛta—Natural condition

Usage—According to the purpose

Movements of the Nose-

Six movements of the Nose are described in slokas 62 to 66. They are Nata, Manda, Vikṛṣṭā, Socchvāsā, Vikunitā and Svābhāvikī

Nati-With somewhat bent nostrils

Usage—Agreeable state

Manda-With lowered nostrils

Usage-Sorrow

Vikṛṣṭ'i—With contracted nostrils

Usage—Pungent smell

¹ All the Mss of our text omit the verse giving the usages of Nikuñeita, Recita and Svábhávíka.

The verse in the text is incorporated from N. S. Ad. 8, Sloka 124

² N S and S R mention sama instead of Prakrta

³ According to N. S. Sukuficitakam, Le confracted.

Niskarma-Outward movement

Usage—Bhayanaka Rasa

Udvarta-Backward movement

Usage—Vīra Rasa

Prākṛta—Natural look

Usage—The remaining moods that is in moods not mentioned above Movements' of the sight (Desti karma)-

Names of six kinds of Distikarmas are given in the beginning but in the definitions two more karmas are mentioned. Thus the Dṛṣṭikarmas become eight in number NS, SR and AD give the same number. The names given ın the text are Sama, Sacıkıta, Anuvitta, Alokita, Ullokita, Lokita, Vilokita and Avafokita

- (1) Sama-Eyeballs even and placid
- (2) Sācıkṛta-Looking through the eyelashes
- (3) Anuvita-Looking for (lit and accomplishing) a form ie iden-, tifying a form
- (4) Alokita-Sudden look
- (5) Ullokita-Looking upwards
- (6) Lokita-Looking on all sides
- (7) Vilokita-Looking on two sides
- (8) Avalokita—Looking backwards

Movements of the Eje-brows (Bhruvoh karma)-

A general instruction is given to co ordinate the movements of the brows and the eyes The brows should be in accordance with the movements of the eyes expressing various Bhavas (moods) and rasas (sentiments)

Movements of the eyebrows are seven They are Utkşepa, Patana, Bhrukuti, Catura, Nikuñcita, Recita and Svābhavika

Utksepa—Raising the eyebrows upwards

Usage-Amorous movement

Patana-Lowering the eyebrows

Usage—Tenderness

Bhrukuti-Casting upwards the two brows from the roots Usage-Anger

¹ In the enumeration of Drstikarmas sloka 48 mentions only Alokita Ullokita and Avalokits while in the definitions two more Lokita and Vilokita are given. Though, it is difficult to include all in one line yet I have tried to put them together in a line of eighteen syllables.

Catura—Just heaving up a little and sweetly one brow lengthwise

Usage—Śrngāra rasa

Nikuñcita¹—Softly breaking one or two eyebrows

Usage-Several erotic gestures like Moțtāyita etc

Recita-Graceful lifting up of one of the eyebrows

Usage—Dancing

Svābhāvika—Natural pose of the brows

Usage—Normal moods

Movements of the cheek (Ganda) region-

The movements of the cheek are Six They are Kṣāma, Phulla, Pūrna, Kampita, Kuñcitaka and Prākrta 2

Ksāma—Depressed according to NS Avanata i e dropping

Usage—Unhappiness

Phulla-Blown

Usage--Joy

Pūrna—Full

Usage—Satisfaction

Kampita—Quivering

Usage-Anger

Kuñcitaka3—Contracted (ht) broken at the corner, also accompanied with thrilled hair (Romāñca)

Usage-Laughter, touch accompanied by hornpilation

Prākrta-Natural condition

Usage—According to the purpose

Movements of the Nose-

Six movements of the Nose are described in ślokas 62 to 66 They are Natā, Mandā, Vikṛṣṭā, Socchvāsā, Vikunitā and Svābhāviki.

Natā-With somewhat bent nostrils

Usage—Agreeable state

Manda-With lowered nostrils

Usage-Sorrow

Vikīstā—With contracted nostrils

Usage—Pungent smell

All the Mss of our text omit the verse giving the usages of Nikubeita, Recita and Svabhlivika.

The verse in the text is incorporated from N S Ad 8, Sloka 124

² N S and S R mention sama instead of Praktia

³ According to N S Sukufeitakam, le contracted

Socchavāsā-Tilled with breath.

Usage—Agreeable smell

Vikunită—Drawing together the nose

Usage—In Jugupsita i e disgust

Svābhāvikī—In natural pose

Usage—In the remaining states

Movements of the Danta (Teeth)-

After the movements of the nose, come the five movements of the teeth. These five are Kuţţana, Khandana, Chinna, Cukkita and Samatā

In Dantakarma, the tongue and the lower lip should be rubbed together According to NS these are the Cibuka-karmas. But if we adopt the reading Dantakarmāni instead of Dantakarmani, these five would then be so many Dantakarmas.

NS defines the Cibuka Kriyā as the combined action of teeth, lips and the tongue

Dantosthajihvanam karanācchibuka krijā ii 149, Ad 8

Kuttana1-Biting with force

Usage—Disease

Khandana—Pressing together the teeth

Usage—Firmness

Chinna—Knocking the lower against the upper row of teeth

Usage-Anger

Cukkita²—Opening wide

Usage—Hāsya

Samatā³—Even

Usage—In other states

Movements of the lower lip (Adhara)-

Six movements of the lower lip are mentioned (NS and SR agree with our text) They are Vivartana, Kampa, Visarga, Viguhana, Samdasja and Samudga

Vivartana-Curving the teeth at the end of the mouth

Usage—Jealousy

Kampa-Making the lower-lip quivering

Usage-Anger

¹ According to N S Sangharyana i e gnashing the teeth

² According to N S in yawning

³ After Samata N S adds two more-Lehana and Dasta.

Visarga—Protruding the lower lip

Usage—Fear.

Viguhana—Taking in the end of the lower-lip.

Usage—Dragging and in forms of mental derangement.

Samdasta—biting the lip with the teeth.

Usage—Vira and Raudra rasa

Samudga—First rolled and then raised

Usage—Compassion

Svabhāvaja—The natural movement should be used in the remaining states.

One should exhert in the matter of the upangakarmas because Nrtta depends upon them

Hastabhanaya-

A comparatively long adhyāya of 97 verses is devoted to the treatment of Hastābhinaya, which shows the importance attached to this topic

First thirteen verses are devoted to the mention of the three kinds of Hastas Asamyuta (22), Samyuta (13) and Nrttakara (29 though not mentioned)

The subject matter of this adhyāya is described in Adhyāya 9 of N S. The total number mentioned in N S is Catuhşastikara ie sixty-four hands. With a few variations, the substance is practically the same

The following table gives the comparative lists of the different kinds of Hastas described in our text, in N S, in A D, in S R and in Śri-Hastamuktā-vali

| | VD | NS | AD | SR | SHM |
|-------------|----|----|-----|----|-----|
| Asamvuta | 22 | 24 | 28 | 24 | 30 |
| Samyuta | 13 | 13 | 23 | 13 | 14 |
| Nṛtta Hasta | 29 | 27 | 13 | 30 | 27 |
| | 64 | 64 | 6-1 | 67 | 71 |

Asamyuta Hastas-

Now let us narrate the usages and meanings of the different hand-poses. Twenty-two single hands—The names of the twenty two single hands are Patāka, Tripatāla, Kartarimukha, Ardhacandra, Arāla, Sukatunda, Musti, Sikhara, Kapittha, Khatakāmukha, Sūcyāsya, Padmakosa Uraga (śirsa) Mīgasirsa, Lāngūla, Kolapadma, Catura, Bhramara, Hamsāsya, Hamsapiksa, Sindanisa, and Mukula

¹ N.S.A.D. S.R., and Sri Hastam iktāvali have not only enumerated the names of the different hand poses but have defined the ways of their manipulations and have referred to their proper applications or uses

Patāka—The hand in which the thumb is bent and all the fingers are simultaneously extended is called Patāka

Usage—Beating obstructing, throwing down When the fingers are moving it shows wind and rain. When these go upwards, it shows energy, and when moved downwards, it shows umbrellacte. When giving Tāla on Puşkara drum, the hand is even and the fingers are moving. When raised on a side, it is used for Recitaka (whirling) movement and when raised straight, it is used for holding or supporting something.

Tripatāka—In the Patāka hand, when the anāmikā (ring finger) is bent, it is called Tripataka

Usage—It is used to address a person, to denote a crown When fingers are moved, it indicates small birds. With anamika the tears are wiped, it is also used in auspicious baths, (but if we take the reading Sparsanam, it would mean touching) for resting the head for covering the ears, the same is turned downwards for showing the acting of the movements of serpents and Bhramaras (Bees)

Kartari Mukha-When the tarjani (fore finger) of Tripataka hand looks at the back! (of Madhyamā), it becomes Kartarimukha Usage-Walking on road, cutting and falling

Ardhacandra^s—When anāmikā (the ring finger) touches the thumb, it becomes Ardhacandra

Usage—Denoting young moon children, tala trees, girdle, jaghana (hips) and ear rings

Arala—When the Pradesim (fore-finger) is bent like a bow and the thumb is bent and the remaining fingers are separated, raised and then curved, it becomes Arala

Usage—Showing profundity, spiritedness, heroism, gathering the hair and in wiping the perspiration and anger

^{2 &#}x27;Whose back?' is not mentioned in our text but N S mentions madhyamāyāḥ

³ According to AD—If the thumb of the Patāka hand is stretched out the hand becomes Ardhacandra

According to S H M—If the (four) fingers from the forefinger to the little finger, are bent together and the thumb is also bent the hand looking like a bow it is Ardhacandra Or, when the middle finger, the ring finger and the little finger form a first and the fore finger and the thumb are held out apart the hand is called Ardhacandra

⁽ Of these two that which is exceedingly proper in a particular abhinaya should be used).

- Śukatunda—When in arāla hand anāmikā (the ring finger) is bent, it becomes Sukatunda
 - Usage—Saying "I am not you" and in the beginning (atha) and in the end (iti)
- Musti—When the fingers are bent into the palm and the thumb is set on them, it is called Musti
 - Usage—Beating, physical exercise, pressing hard the breast, holding the sword and the stick and in seizing a spear and a staff
- Sikhara—When in the above hand, the thumb is raised, it becomes Sikhara.

 Usage—Holding the reins, bow and a goad
- Kapittha—When the thumb is inside the Musti hand, it is called Kapittha Usage—Suggesting the holding of a disc or an arrow
- Khatakāmukha—When in the same hand, the anamika and the little finger are raised and bent, it becomes Khatakamukha
 - Usage—Sacrifice, holding an umbrella, dragging and fanning, and holding a garland
- Sūcīmukha—When in the above liasta the tariani (threatening finger) is stretched, it is called Sucimukha
 - Usage—Showing night and day and the eyes of Indra and Mahesa
- Padmakośa—When in the Sucimukha hand, the fingers are kept apart and curved with the thumb and raised upward like the nails of a swan, it becomes Padmakosa
 - Usage—The line giving the usage is not given in our text but in N S its usage is given as denoting the Bilva and Kapittha fruits and the breasts of women
- Ahisiras—When in the Pataka hand the thumb is clinging and the middle part is hollow, it becomes Ahisira
 - Usage—Offering water and sucana The meaning of ATT here is not clear
- Mfgasirşa—When all the fingers are bent down together and the little finger and the thumb erect, the hand becomes Mfgasirsa
 - Usage—Piercing with a needle, making a hole, and in brandishing the "Sakti" weapon
- Kingulai—When the middle finger is between tarjanl and the thumb kept wide like tretign! (three sacrificial fires Ahavanlya etc. according to

I In enumeration the reading in our Mss. is Langula but in the description (Sloka 19), the reading is Kangula. So I have adopted the reading Kangula. The word Kangula's explained by Abhanavaguptapaddalaya in his commentary as follows—

Ablunavaguptapādicārya) and anāmikā is bent and the Kaniyasī (little finger) is erect, the hand becomes Kangūla Usage—Denoting fruits

Kolapadma¹—When the fingers are moved and separated and made to move in order in the palm, the hand is called Kolapadma. It is also called Alapadma and also Alapaliava in NS

Usage-Denying saying 'No' and denoting void

Catura—When three fingers are stretched out, the Kaniyasī is erect and the thumb resting upon it, the hand is called Catura

Usage—Explaining the practical actions of speech, and recitation and also denoting the colours, when raised it shows white, when it is semicircle it suggests red, when in circle, it shows yellow and when compressed, it shows blue and when in normal position, it shows black and all the remaining colours

Bhramara—When the middle finger and thumb are in Samdamsa position re compressed so as to form pincers and the fore finger is curved and the remaining fingers are separated and raised the hand is called Bhramara Usage—Holding the lotus and ear rings

Hamsavaktra—When the tarjani madhyama and the thumb without any interspace between them are placed distinctly like tretagni (three sacrificial fires) and the remaining fingers are outspread, the hand is called Hamsavaktra

Usage—Slimness lightness, fragility and softness

Hamsapaksa—When the little finger is raised obliquely and made into the round shape and the thumb is bent, the hand is Hamsapaksa Usage—Resting of the cheeks, dinner, acceptance of gift touching

anointing and shampooing

Samdamša—When in Arala hand, the fore finger and the thumb are pressed together in a way to form pincers and the middle of the palm is bent it is called Samdamša

Samdaniśa is of three types-Agraja, Mukhaja and Parsvakrta

कहु प्रियह ता राति इति तम्य।यमर्थ । वहुचयने की(इ) इश करो भवति । साहुत विकित के विक् । NS (GOS) Vol 2, Page 47

N S gives Kängula and our Mss give Kängula. It is difficult to say which is correct

¹ According to S H M—When all the fingers being spread out and separated turn towards turn towards the side of the body the hand is called Alapadma

According to A D —When fingers beginning with the I tile finger are bent and separated from one another the hand is called Alapadma

Usage—Agraja Samdamsa is for holding, and extracting thorns etc

Mukhaja Samdamśa—the śloka giving the usage is missing in our text. The corresponding śloka from N S gives the usage thus—in plucking a flower from its stalk, filling in the receptacle with chips for annointing the eye

Pārśvastha Samdamśa is used in colouring a drawing, in yajñopavita, in pressing the breast and in showing the head

Mukula—When in Padmakośa hand tips of all the fingers are joined together, the hand is called Mukula

Usage—Worshipping deities and offering oblations and denoting the lotus

Samyuta Hands-

The names of thirteen combined hands are-

Añjalı, Kapota, Karkaţa, Svastıka, Khaţakāvardhamāna, Utsanga, Nışadha, Dola, Puşpapuţa, Makara, Gajadanta, Avahittha and Vardhamāna

Añjali-When two Pataka hands are folded together, the hand becomes Añjali

Usage—Saluting gods, teachers and paternal ancestors

Kapotaka—When the sides of each other meet together, the hand becomes Kapotaka

Usage-Denoting cold, danger, and showing modesty

Karkaţa¹—When the fingers of one hand pass through the fingers of the other, the hand becomes Karkaţa

Usage-Yawning

Svastika²—When two Arāla hands are stretched, palms upwards and lying on bent sides and placed on the wrists in the Vardhamāna way, the hand is called Svastika

Usage—To denote everything that is widely spread, seasons, sky, cloud, sea and earth

Khatakāvardhamānaka—When one Khataka (the half-closed hand) is placed upon another, the hand is Khatakāvardhamānaka

Usage—For love-making and bowing.

¹ S.H M—'When the fingers of one hand pass through the openings between the fingers of the other hand, the whole thing looking like a bower of creepers, the hand is Karkata."

² According to AD — When two Pataka hands are put across each other at their wrist, they form the Svastika hand.

^{1 10}

Utsanga—When two Arāla hands are stretched, the palm upwards in reverse position and in the Vardhamāna way, the hand becomes Utsanga Usage—Indicating the touch of somebody else

Nişadha—When the Mukula hand covers the kapittha hand, it becomes Nişadha

Usage—all sorts of compressing

Dolā'—When two Pataka hands are hanging downwards, it becomes Dolā

Usage-meditation, charity and showing catables

²Puspaputa—When the fingers of the Sarpa or Ahisiras hand are closed together and the ³other hand is joined to its side, the hand is Puspaputa,

Usage—The line giving the usage seems to be corrupt—It might mean—all the former things should be acted by this hand

According to N S the usage would be suggesting the plucking of flowers and the carrying of water etc.

Makara—When two Patāka hands are placed one over the other (on the head) and facing downwards, the hand becomes Makara

Usage-showing the actions of lion, tiger, deer etc

Gajadanta⁴—When the elbows and shoulders in the Sarpasirşa hands are bent towards each other, it is called Gajadanta

Usage-carrying the mountain

Avalutha—When two Sukatunda hands are placed on the chest and bent in the forepart and slowly bent downwards, the hand becomes Avalutha

Usage-weakness, high breathing, and showing the limbs

Vardhamāna—When two Hamsapaksa hands are in opposite directions.

it becomes Vardhamana

Usage-denoting ventilations windows etc

All these different hands indicate different types of rasas

¹ AD - When the Pataka hands are placed on the thigh the Dola hand is formed !

² A D — When two Sarpaś rşa hands meet on one side they form the Puspapuja hand' SHM — If two Sarpaśirşa hands meet on the s des of the little fingers and are made to appear like a winnowing fan it is said to be Puspapuja

³ The other hand according to Ahhinavagupta is Sarpadirea.

⁴ SHM—"If two Sarpasirsa hands are held forward the elbows, having been contracted, it is said by Subhamkara to be Gajadanta

Nrttahastas

The names of Dance-hands are-Caturasra, Udvrtta, Laghumukha, Arāla khatakāmukha, Âviddha, Sucīmukha, Recita, Ardharecita, Avahittha, Pallava, Nitamba, Kešabadha, Latā, Kari, Paksāñcitaka, Paksodyota, Garuḍapakṣa, Danḍapakṣa, Urdhvamandala, Parsvamandala, Pārśvārdhamanḍala, Uromandala, Muṣṭi, Svastika, Padmakosa, Alapallava, Ulvana, Lalita, and Valita

Caturasra—Two Khatakāmukha hands are at a distance of eight fingers from the chest and with their elbows and shoulders in the same level and facing forward

Udvrtta or Tālavrntaka—The two Hamsapaksa hands are turned like a palm-leaf fan

Laghumukha—Two Caturasra hands are given the shape of Hamsapakşa hands and turned obliquely with palms upwards

Arāla Khatakamukha—The two Arāla hands are loosened on the wrists.

Aviddha—Two hands with the ends of the elbows curved and the palms of the hands bent downwards

Sūcīmukha—Two Sarpasiras hands in the Svastika form with their fronts spread obliquely

Recita—The movements originating from the Hamsapakşa hands and the palms spread upwards

Ardharecita-The left hand is Caturasra and the right is Recita

Avahittha—Two Tripatakā hands are bent at the elbow and made slightly oblique

Pallava—Two hands are loosened from the wrists

Nitamba—Two hands come out from the tops of the arms (to the hip).

Kesabandha-Hands raising from the sides and acting on the shoulders.

Lata—Lying on the side and extended obliquely

Karı—One latā hand is raised and moved from side to side and the other is Khaṭakā hand

Pakṣāñeitaka—The fore-parts of the Tripatākā hands are placed on the top of the waist

Pakşodyota—The same in the reverse order

Garudapakşa-Two palms are downwards and slightly bent

Dandapaksa—Two arms are stretched

Urdhvamandala—The same being raised high and moved round

Parivamandala-The same placed on the sides

Părsvardhamandala—According to NS the Arala Pallava hand crosses half of the chest and half of the sides

Uromandala—Two hands are covered by one another (and according to NS moved over the chest)

Musti-Two hands are on the wrists contracted and bent

Svastika—The same in the shape of Svastika and placed on the wrists

Padmakośa—Two hands are in the Padmakośa form

Alapallava—The fore-parts of both the hands are enclosed

Ulvana-Raised and extended and curved

Lalita-Pallava hands on the head

Valita—Lalita hands placed on the elbow in the form of swastika

Nittahastas are to be distinguished from the Abhinayahastas in as much as they do not convey any sense like the Abhinayahastas. Abhinayagupta has discussed this point in his commentary on verse 183, Page 70 of NS Vol II GOS

The acting of the hand is not to be practised when one is sick, old, practising some vow, overpowered by fear, in drunken state and in anxiety 1

There are four ways of moving the Nittahastas They are Udevsta, Samavesta, Vivestita and Vivartita

An important general remark is made at this place in our text. It is beauty which differentiates Nrita from other movements. Therefore in Nritahastas the movement should be graceful

(Lähtyameva vijñeyam nṛttasya pratibodhanam—95)

The different hands of men and women are to be acted according to the place, time, production and meaning

This finishes the description of three types of the hands itz (1) Asamyuta, (2) Samyuta and (3) Nṛttahastas Though generally our text and NS agree in the subject matter of this topic, there are important variations in names, numbers and usages

Mudras

Our text in Adhyaya 32, 33 describes what are known as Hastamudrās. It will be convenient to take up that subject here

Adhyaya 32 deals with Rahasyamudras ie those hand poses which have a secret or mystic meaning and Adhyaya 33 discusses Nrttahastamudras ie hand poses used in dancing. The subject matter of Mudras is not treated in NS. We can, however, identify some of the hastas described in NS, with some of the Mudras of our text. A D describes a few Mudras—

I Vyadhigraste etc The Saptami might also suggest that the conditions व्यापिमान etc are not to be shown by hand actions.

The Mudrās form an important topic in works of Tantrasastra. I have consulted Saradā Tilaka, Vāmakesvara Tantra, Jñānārnava Tantra and the extracts of Tantrasāra and Kalikā Purāna given in Sabdakalpadruma. I may say here at the outset that only a few Mudrās mentioned in our text are similar to those mentioned in other works. It is, therefore, difficult to trace the source from which the subject-matter of mudrās is adopted in our text.

The word Mudrā is explained by William Monier in his Sanskrit English Dictionary as —

'Name of particular positions or interwinings of the fingers (24 in number, commonly practised in religious worship, and supposed to possess an occult meaning and magical efficacy)'

It has been explained in Tantrasāra (quoted in Sabdakalpadruma) as follows—

मोदनात् सर्वदेवाना दावणात् पापसन्तते । तस्मान्सुद्रेति सा ख्याता सर्वेमामार्थसाधनी ॥

Me R K Poduval¹—gives a good definition of Mudras which I quote below—

'The term Mudrā is borrowed from Hindu religious vocabulary, and signifies its technical acceptance and connotation the poses that are given to the hands during the exposition of an idea. These Mudras are not similar to, hieroglyphics, and are more expressive and powerful in effect than the spoken language.'

According to him there are three classes of Mudras—Vaidic, Tantrika and Laukika In Laukika he includes, Mudras of art which may be compared to our Nṛttahasta Mudras

Rahasya Mudra—(Adhyaya 32)

Omakāra (33417) Mudrā—The Tarjanī finger is arched on the lest thumb which is extended

Mudrās—All the fingers beginning with the thumb are curved one by one, in the Middle of the hand ie palm

The above fingers are extended

અં---

Mukula hasta

¹ In Administration Report of the department of Archaeology (1107 M.E.) Travancere

² If would be interesting to investigate if there is any relation between the shapes of these finger poses and some form of ancient Indian Script

81 ---

Particular type of Mukula hasta

क वर्ग —

The Tarjant of one hand touches the root of the thumb of the others स वर्ग ----

The Tarjani on the lowest line (Rekha) of the thumb

प वग with श, य etc

On the line (of the thumb) above | Beginning with Tarjani, it is प अर्थ

Fingers after that is श वर्ग

ह and ध---

Middle finger touches the nail

Signific race

81----

The Rahasya or mystic significance of अ is Vāsudeva

3!!---

Sankarsana

37----

-Pradyumna

अ —

-Aniruddha

Anjalı Puruşa mudra—It is difficult to make out what is Anjalı Puruşa The reading may be অঙ্গলি পুত

Tarksya Mudra—The backs of the two hands touch each other in such a way that Kaniyasi meets Kaniyasi, Tarjani Tarjani and Angustha Angustha

Tāla—The tips in the Pataka hand are curved

Makara—The thumb is spread obliquely

Ardhacandra—The finger is curved

Sankha—In the Sikhara hands the tips of the fingers are joined with Kaniyasi and the thumb is attached

Padma—When two a my hands are attached to each other in such a way that the fingers touch one another

Laksmi-The thumb is curved

Seşa-In Makara hand fingers are spread

Bhogasayana—The Sikhara hand is above the Makara

Garuda-In अ कार hand the middle finger is stretched

Garudavāhana—In the same hand, the middle finger is held by the Sikhara.

Cakra—The tips of two Madhyamā fingers and two thumbs are joined with one another

Gadā—One Kapittha hand on another Kapittha, and Cibuka (Chin) resting on them

Hala—Bent Madhyamikā in Kapittha Hasta

Musala—The Karkataha hand

Carma—Middle finger falling down from the middle of the Kapittha hand

Khadga-Make Kapittha hand, and let the finger touch the back of the palm

Dhanus—Make the sikhara hand and let the middle finger hang down

Sara—Separating the joined Tarjani, Madhyamikā and the thumb

Kaustubha-Make the Mukula hand and let the Kaninikā curve

Vanamālā—Make two Sikhara hands apart from each other

Nssimha-Join two separate अ कार hands

Varaha-Make the Sikhara hand and stretch the little finger downwards

Hayasıras—z Mudrā

Vāmana—新 Mudrā

Trivikrama—The span from the end of the little finger to the end of the thumb

Matsya-Ardhacandra Mudrī

Kūrma—Turn downwards the curved Patākā hand

Hamsa-Make Sikhara hand and turn the little finger and spread the thumb.

Dattatreya—Curve the pataka in the middle of the hand

Parasurāma—Kapittha

Dasarathi-Join two Sikhara hands

Kṛṣṇa—Patāka

Baladeva-Tripatāka

Visnu-Sikliara.

Pfthivi-Pataka lying on the back.

Toyn (water)-Curve the Patata and stretch the Angustha

Agm (fire)—Put the finger on the tip of the thumb to indicate the nail

Vayu-Moving Patāka

Artanksa-Make the Musti oblique with the stretched Trijari

Arka (Sun)—Join two Vitastis (a long span between the extended thumband little finger) and give round thape

Candra (Moon)—Curve the half of Anamika

Naranārayana—Form the Mukula shape with fingers and stretch Madhyamikā and Tarjanī

Brahmā Vişnu Mahesvara—In the above hand, the Anāmikā is stretched, it indicates three Gunas sattva, rajas and tamas, as also Brahmā Vişnu and Mahesvara

Kapila—Extend the thumb of the left hand and put above it, similarly the thumb of the right hand

Vedas—Spread the four fingers! and curve the thumb at their roots

Rgveda-Stretch the Kanisthika

Yajurveda—Stretch the Anamika in the above

Samaveda—Stretch the four fingers with the Angustha

Gayatri—Join all the fingers together and turn them round in the middle of the palm

Siksa-Make the Samaveda Mudra with the fingers downwards

Kalpa—When the above faces the south

Vyakarana—Bring together the Tarjani and the thumb

Nirukta—Make the thumb of the Sikhara touch the middle of the Tarjuni Jyotişa—Two Khatakamukhas

Chandoviciti—The above downwards

The descriptions of the Mudras clearly bring out the significance of the term Rahasya Mudra because they signify gods with their insignia, the syllables, the Vedas and the Vedangas

The whole of this adhyaya is in prose excepting the last verse which introduces the next adhyaya as describing Samanya Mudrāhastas. This title for the next adhyāya is more accurate than the one given in the colophon as Nitta kastra Mudras because it contains, in addition, many other kinds of mudras.

Samanya Mudra (Adhyaya 33)-

Bhasma Mudra—The hand is lying on the back, the four fingers are bent and the thumb is joined to the side

Langa Mudra-In the above hand the thumb is obliquely raised

Jata Mudra—Three fingers are contracted and placed upon the thumb and the Tarjani is stretched

The significance of Catura in this definition is not clear but if we take the reading catvaro vedah then this Mudra indicates four vedas. The Toya Mudra is already described. Therefore there is no point in repeating it.

- Netra Mudra-In the above hand the Tarjani is brought near the end of the eye
- Sasanka—The above Mudra put over the head lying on the back with the thumb stretched
- Govrsam—All the fingers above the head are stretched and rounded like horns
- Paryasta—The above hand is made oblique with all the fingers bent and covering the thumb with the middle finger
- Patti—The small finger is contracted and placed upon the thumb and then three fingers are stretched
- Dikşa—The thumb is between Kanisthikā and the Anāmikā
- Ananta—Both the hands lying on the back with their fingers intertwined and the thumb at the end of the small finger
- Dharma—On the back of the left hand the right hand is placed in such a way that the nails of the two hands come in contact
- Jñāna—The above hand in reverse
- Vairāgya—Two Kanisthikas and thumbs of both the hands are formed into a pair and stretched
- Aisvarya—Backs of both the hands are joined in such a way that the little finger and the thumb are joined
- Padma—Backs of both the hands are joined in such a way that Kanisthä and Tarjani are joined together and the remaining four raised
- Sakala—In the above hand the stalk of the lotus is formed by bringing the two thumbs on one side (Ekatah)
- Niskalarūpinī—Three middle fingers are curved, the small finger and the thumb move on the edge, and the right thumb lying on the back is wrapped by the lest thumb. The lest thumb is wrapped by the fingers of the right hand and the fingers of the right hand are wrapped by the fingers of the lest and the Tarjanīs are curved
- Devi-The back of one hand is joined to the back of the other with the thumb and the fingers curved in the middle of the hand in such a way that the nails are hidden, the thumbs are placed evenly and the shape of a garland is given
- Saktyākāra—One thumb is joined to the other and the small finger to the small and the six fingers joined and also contracted in the middle of the palm
- Skanda—Hand downwards and three fingers contracted
- Vighnaraja—In the above Mudra the middle finger is slightly bent and the thumb is placed on the Tarjant so as to give it a shape of a tooth

Sakra Mudrā—The two hands are stretched lying on the back and the left Tarjani and Angustha are joined

Hutasana—In both the hands the nails are bent in the middle and the thumb is to be stretched so as to be flat and the thumb raised upwards and the middle stretched

Virupākşa—The hand is lying on the back and the fingers are stretched

VarunI-In the raised hands the fingers are stretched

Mārūtī-The above hand made oblique

Kuberl-All fingers are contracted (in the above hand)

Isani—In the above hand the three middle fingers are stretched

Brahman-Padma Mudră

Anantabhoga—the hood of the serpent

Vajra—In the description of this Mudra the reading in the first line seems to be corrupt. From the remaining two lines, we can gather the meaning as follows—

The six fingers other than two Tarjanis are to be contracted and each Tarjani to be placed on its own thumb with the tips of these two Tarjanis clasping the tips of some two things mentioned in the first line

Danda—The two arms and the hands to be stretched

Khadga—Two thumbs are bent so as to be in the middle of the two small fingers and two ring-fingers. The four fingers are spread in such a way as to make a pair

Patākā Prasītā karā—Give the left Tarjani a circular shape, place it on the thumb and then in the cavity (lit mouth) so formed, place the right Tarjani then make it curve and stretch the three left fingers, then make a fist of the left hand and raise the thumb and clasp it with the other thumb

Gadā Mudrā—Make the hand oblique, bend the four fingers and stretch the thumb

Súla Mudrã—The two hands are joined to each other so that the Kanişinikā and the thumb are joined, and then the pair is stretched

Dravyarūpā—The hand should be stretched and given the shape of Svasti ic blessing or a Svastika shape. The tips of the two stretched fingers

¹ From Slokas 32 to 36, it is not clear whether two Mudras namely Patika Prasta kara and Gada Mudra are described or whether all the flokas describe only Gada Mudra

NRTTASUTRA 83

- of each hand should be placed in the middle. The two tarjanls should be contracted and placed on the back of the two Madhyamās
- This should be used to indicate the soul
- Vaişnavi—The two hands lying on the back and the six fingers mentioned in the above Mudrā joined properly in an even way
- Ghrta Mudrā—The two tarjanīs contracted and placed on the back of the Madhyama and the two thumbs placed on the Kanişthikā
- Gandha Mudrā—The left hand lying on the back and the right hand downwards and the curved Madhyamā and Anāmikā placed on the thumbs and two Madhyamās covering the Tarjanī and Kaniyakā
- Puspa Mudra—This is the second Dravya Mudrā The four fingers to be placed contracted, the two Madhyamās to be stretched and the two Tarjanis to be placed on the two thumbs
- Dhūpa Mudrā—Two hands lying on the back and the six fingers contracted and the Tarjani stretched with their tips touching each other, the thumbs touching the roots of Tarjani
- Dipa Mudrā—The four fingers—the Tarjani with the Tarjani, Kaniyasi with Kaniyasi—raised so as to touch the backs of one another, with the thumbs raised
- Naivedya Mudrā—The fingers of both the hands are raised in such a way that their backs touch one another and all join at the tip of the thumbs
- Puspa Mudra-All the fingers are closely set and then curved
- Mahā Mudra—The two thumbs are brought together on one side, so also the Anāmikā and the Kanīyasī, and two Madhyamās are contracted and placed on the back of the Anāmikā, and the Tarjanī is invested on the Madhyamī
- Ampti—The Animikā and the Madhyamā fingers are intertwined with each other and then the tips of the middle and the two tarjanis are joined and the tip of the Kanistinkā is joined to the tip of Anamikā and two thumbs are half raised
- Candisa—In anjali the tarjant is bent
- Astra Mudrā-Compact fingers in the Padma hand
- Sadyojān—The right hand should be formed into a fist and the thumb should be raised and placed on the left thumb and the fist of the right hand should be wrapped by the fincers of the left
- Varadera—The above in the reverse position

- Aghora—Folding the hands, the left Anamika is taken to the right and the middle is contracted then the thumbs are contracted and the whole is given the form of a Sula and then it is turned round over the chest
- Vajra—The two hands lying on the back and two Anamikas curved, and on them are placed two thumbs and two curved tarjanis and then Madhya. Anama and Kanistha together are placed on one side
- Išāna—Kanisthā and Anāmika should be intertwined together and curved inside and the remaining should be extended
- Vyoman—Curve the two tarjanis and place the Kaniyasi in the middle of the hand in such a way that its nails touch it, (this should be done in the case of both the hands), then the four fingers of the two hands should be raised on the back of these and the thumbs should be arranged on one side so as to make the shape of a Nala
- Sarvātmanah—Forming the fist of the left hand, the tarjani should be extended and should be held by the right fist
- Siva—In the left fist, the right thumb should be inserted and the fingers should be placed on the back
- Sikha—All the fingers should be rounded and hidden in the paim as if lying inside and the middle one should be stretched
- Pingala or according to A-B Mss Mangala—Three fingers of the left hand should be made oblique and Kaniyasi should be placed on them and all the four fingers should hang downwards and the right thumb should be placed on them

Asra-Anāmikā in the above pose

Gāyatrī—The two hands lying on the back at one place and so also the fingers

Sakti—In the fist of the one hand the fingers are extended one by one, ie, beginning with the Kanisthā and ending with the Tarjanī

Namaskāra-Anjalı is placed on the chest

Dhvaja—The tarjani from the Kapittha hand should be grasped by the Sikhara hand

Sasakarni—Two wrists pressing each other with the hands lying on the back and the fingers moving with the two Tarjanis joined to the thumb

Mukula—Folding the two hands in a hemispherical form with slightly bent fingers

Pankaja—The above stretched

Avahini-The two hands lying on the back and moving and the bent thumbs put in the middle of the hands Nisthura—The two thumbs curved and wrapped with their own fingers and two hands facing each other

Linga Mudrā—The raised right thumb should be wrapped with the left thumb and the fingers of the right should wrap the left

Visarjana—The Aiśvarya Mudrā with the thumb moving circularly

Bhaga Mudrā—Joining the two vitastis

Linga Mudrā—The bhagamudrā rubbed by muşţi is Lingamudrā 1

Jirna Mudrā—After Sandasta pose is made, the two lips should rub to it

Kairini Mudrā—First the Karapallava pose should be formed by stretching the two arms curving their foreparts and the tips should be half bent. Then the tarjani should be bent and placed on the thumb. The two arms should be separately made Nikubja² 1 e. contracted. Its presiding deity is Sūrya.

Visva Mudrā—Two Padma hands should be so brought together that their middle fingers become clasped, and then the whole should be held by a finger

(The interpretation of the last line is not satisfactory)

Vyoma—The two hands should face each other and then their fingers should clasp one another in such a way that the Kanisthā—and the two tarjanīs should hold the Madhyamā Then this pose may be placed over the chest or over the head or over the Sikhābandha (a tust of hair)

Astra—A fist (Muştı) pose should be raised and one should beat the middle of the hand with tarjani so as to make a sound

Netrapradarsitā—The Madhyama and the Tarjani of the left hand should be raised and Kanisthā, Anāmikā and the thumb should be made crooked. This Mudrā indicates the coming of the cows and the bulls

Sarvasaktı—(Nine Śaktis)—Dipta, Sukşmā, Jayā Bhadrā, Vibhuti, Vimalā, Amoghā, Vidyutā and Sarvatomukhi

The two hands should lie on the back and all the fingers should be curved and the thumb should be placed on them and moved again and again

Namaskāra—The hands facing and clinging each other and extended Ravi—The Sandansa form with Animikā

¹ The reading mustih pramārjitā is emended into mustipramārjitā

The reading Nikubja, however, is not quite satisfactory. If we can emend the reading of Ms. C. Trikusthau into Trikusau, it will agree with the verb Badhnivat then the meaning would be the two arms should be separated so as to give rise to three elevations.

Soma-The Sandansa form with Madhyama

Bhauma—The Sandausa form with Anamika (7)

Budha-The Sandansa form with Kaniyasi

Jiva-At the root of Kaniyasi

Sukra-At the root of Anamika

Sani-Thumb at the root of Madhyamā

Rāhu-The thumb at the root of TarjanI

Ketu-by moving the Tarjani in the above Mudra

Krodha-Sikhara form with the left hand

Varaha—The two hands should be given a hemispherical form and the left hand should be raised

Bhairavi—The two hands are wrapped in such a way that the right is wrapped by the left

Pātālabhañjim—The two hands turned downwards and so also the evesight

Stambham-Kapittha form with long (ie extended) Anamika

Krodhini—The description is missing (The description in the following Mudras is not quite clear. The meaning of the different words in them do not seem to have any significance as such. I, therefore, separate the words into syllables and regard them as suggesting the syllable mudras described in the beginning of the Adhyāya 32, Rahasya Mudra, but I am not sure, if I am correct. Therefore, I give the following account with great hesitation.)

The sense may be The Mudras of Ka and Ra should be repeated with the mudras of letters Eva placed between them

Bija Mudra—Take the mudras of Sa and Ha and divide it by Kha and Ta and join it with Eva

Bhairavi—The above joined with Eva

Stambhani-Kşa and Tra Mudra should be joined with the middle of I and Ra and to be covered by Eva

Vārahi—La and Sa mudras repeated with Ca E, Ka and joined to Eva

Pitilablianjani-Ja and Na mudrās repeated with E and Sa (or Va)

Sankha-On the back of the hand, Tariani Madhyamā and Anamikā meet the middle joints at their backs

Cakra-All the fingers are extended and meet at the back

Susira-The Musti pose to be placed on the waist

NPITASUTRA 87

- Gadā Mudra—The same as above
- Kaustubha—The hands facing each other and the fingers wrapping one another with the thumbs
- Vanamalā—Vahni Mudrā of the left hand and the Sikhara mudra of the right hand touch each other
- Nārasimhi—The first two lines describing this Mudra are not clear. The meaning probably is that the two hands form into Dravya pose and part of the Mudra is placed upon the thigh (Janghi) and a part of it on the Cibuka (chin) and the mouth opened with the shining tongue as if licking
- Hrn Mudrā—The thumb should be grasped by the fist
- Sikṣā Mudra—forming a fist make the tip of the thumb oblique The Tarjani touching the Musti
- Kavaca—Two fists joined at the end of Tarjanis
- Gada—Two hands forming fists and joined at the fingers (of both the hands)
- Netra Mudrā—Tarjani and the Angusthā should meet at the end and the remaining fingers should be extended
- Asvasiras—The Anāmikā should be curved and should be placed on the level with Tarjanis and the two Madhyamās should be raised and the two thumbs joined together
- Pramada—The Anjali pose placed over the chest moving quickly from one side to the other in the right direction used in salutation. The meaning is conjectural
- Vāsudeva—The left fist with the thumb raised and the right fist with the thumb tightening it and then bringing the two thumbs into contact and then raised
- Sankarşana—In both the hands, the small finger and the thumb hidden and the other fingers joined and extended
- Pridyumna—The tarjan's are raised and joined and the thumbs in their even positions joined
- Aniruddha—The fingers should be curved and given the shape of a Sūrpa and then the two thumbs below envirap it

Thus the second line of the verse 123 tells us that the 126 Mudrāhastas are mentioned by name. Those desiring the highest siddhi should show these Mudrās in accordance with the Mantra, the Deva and the Vidhi. The meaning seems to be that the Mudrās should have relations to a deity, the spell and the ceremony. The same idea is made clear in the next verse. The gods are related to the

spells (Mantras) therefore the various Mudras described above should be practised after knowing the mantra or the spell

The last verse of this Adhyāya states that all that is described so far constitutes the Nrttasastra and that it is described briefly. When described in detail it will have great meaning and will be most important thing in the world. Samanyabhinaya

Adhyaya 28 gives instructions about acting in general In fact, this Adhyaya repeats some of the things described before and also gives some new matter of a general and miscellaneous character.

The first four verses give instructions about the acting for the five qualities of senses namely, Sound, touch, form taste and smell. The general instruction is that these qualities are to be acted by their Anubhavas or natural expressions

The sound (Sabda)—The eye should be turned aside and head should be slightly bent and the tarjani should be placed on the ear

The smell (Gandha)—The eyes should be slightly contracted and the nostrils should be blown and a single breath should be taken?

These qualities are either pleasant unpleasant or neutral

Pleasure should be shown by joyous movements of the limbs, by the brist ling of the hair and profuse tears

In unpleasant quality the head is turned away so also the eye and both the eye and the nose are contracted

In Neutral quality actions are neutral

What refers to one's own experience is called Atmastha and what describes other people's actions is called Parastha

This refers to modes of speech according to NS which gives seven such modes (NS, (CSS) Adhyaya 24, Ślokas 57, 58, Adhyaya 22 Śloka 57 in NSāgara)

The subject matter that follows according to N S is known as Citrā bhinaya. Citrabhinaya is angābhinaya but with some speciality it is not described in angabhinaya section.

अनुक्त उच्यते चित्र सं चित्राभिनय स्मृत ॥ १ अ २ 4 (ना, चा ---निर्णयसागर)

¹ The subject matter of this Adhyaya is to be found in Adhyayas 24 and 26 of NS (CSS) and Adhyayas 22 and 25 of NS (N Sagara)

² Other senses are not described. They are discussed in N. S. Adhyāya 22 of N. Sagara edition floka 75 onwards.

It may be that the verses describing these might have been dropped in our Mss

³ अङ्गास्त्रीनयस्यैन यो विशेष क्रचित्कचित्।

NRTTASUTRA 89

The hands are lying on the back (Uttana) and given a Svastika form remaining at the sides. The head is raised up and eyes looking up. This pose would indicate morning, sky, night, evening, day, seasons, deep darkness, and wide water reservoirs, directions, planets with constellations and whatever refers to the sky. In acting all these, one must use appropriate eye gestures. With the above hands and corresponding chest and head postures and by looking down one should show objects lying down

The moon, the moonlight, happiness and the wind should be acted by touch gesture (Sparsabhinaya)

The sun, the dust, the smoke and the fire should be suggested by covering the face

The heat and the burning of feet on account of hot ground should be indicated by the seeking of the shade. The mid-day sun should be indicated by the raising of the head and oblique look. The sunrise and the sunset should be shown by an astonished look. The moon and the stars also should be indicated by the same look.

Happiness should be indicated by touching the limbs but should not indicate Romañca Unhappiness should be indicated by distress and wrinkles of the face

Serious, high and excellent things should be indicated by proud, arrogant or fine movement of the limbs 1

The Aralahasta should be used to indicate the part of the chest covered by Yajnopavita. The same should be used to indicate a necklace or a garland or any other string

The idea that the everything or the whole is understood can be indicated by revolving the Pradesini finger and also the eye-sight and by pressing the Alapadma pose.

The objects to be heard should be indicated by contacting the ear and the object to be seen by appropriate looks. This might refer to oneself to others or to something which does not belong to anybody

Lightening, the falling of meteors, thunder and flames should be indicated by drooping limbs and by the winking of the eyes

The keeping off a bee, etc., should be indicated by covering the fact. The hands in the Svastika and the Padmakośa forms should hang down to indicate a lion, a bear, a monkey etc.

The second line here of \$10, 18 is missing. So it is taken from \$5. without which, the meaning would not be complete.
\$\forall 12\$

The Svastika and Tripatākā hands should be used in bowing at the feet of elders

The Khatakā and the Svastika forms should be used in indicating a whip The numbers one to ten should be indicated by fingers, beyond that, the numbers ten, hundred and other places of ten should be indicated by Patakā Hasta or can be indicated by words

An umbrella, a flag and a banner should be indicated by holding of the staff Various sorts of weapons should be indicated by the modes of holding them

Concentration of mind should be shown by looking down and slightly bending the head

The left hand in Sandansa pose should be used to indicate smile, meditation or guessing

In indicating a child, make the head udvāhita keeping Hamsapakşa to the right and stand erect

The Arala hand pose moved towards left and brought near the head This should be used when one is going away, returning, disappearing, tired or hearing some sentence

The autumn (Sarad) can be shown by different kinds of flowers by self possession and cheerful expressions

The persons of low and middle class should indicate Hemanta by the trembling of limbs and by seeking fire

The persons of low class should indicate cold by shivering of heads, teeth and lips and by the contraction of the limbs as well as by uttering Sit

The Sisira should be shown by the acting of cold (sita) on the part of higher and middle class people who have become poor

The acting of spring can be done by the showing of the different kinds of flowers, by the efforts to please the beloved and eagerness for enjoyment

The summer season can be shown by wiping off the sweat stumbling on the ground, by fanning and by the gesture of touch of hot wind

The Pravisabhinaya can be shown by the gesture of listening some deep sound

The happy condition and the unhappy condition in the different seasons (i.e. in the company of or separation from the beloved) can be shown by words

In showing one's own natural position men should adopt the Vaisnava sthana, while women should adopt Ayata and Avahittha sthanas

The behaviour of men should be expressed through Angahāras of firm character, while that of women through angahāras of delicate character

The embrace should be accompanied with a smile and the bristling of hair. The bristling of hair indicates joy. Anger would be suggested by upturned eyes. Anger due to jealousy should be shown by the throwing away of ornaments and garlands and also by the shaking of the head and by heart breaking gestures.

A man would indicate unhappiness by sighing and looking down and by the striking the ground and the hands, and women by crying

Rudita (crying) would be both due to joy and pain. It can be shown by a happy or unhappy face

Fear in case of men should be indicated by confusion and agitation, and in case of women by searching for a protector, loud crying and embracing a man

One can indicate by moving the fingers of the Tripatākā hands, small birds like parrots and Sarikas and big birds like peacocks, cranes, swans etc by the two kinds of Paksāngahāras

Bhūtas Pisācas Yakşas, Dānavas and Rāksasas should be shown by appropriate angahāras and those who are not visible should be acted, as if they are visible, by agitation and wonder. The presence of Gods should be indicated by bowing while absence by their symbols and beautiful imitations

Raising the left hand in Arāla pose and making it touch the head indicates bowing to men, while Kapota hand indicates bowing to women. One should indicate eminent men, friends, vitas, and Dhurtas by Parimandala Hasta Mountains and tall trees should be indicated by stretched and raised hands as if trying to reach a high object.

A multitude of men and big army should be shown by the raised Patāka hands

Touching the forehead Saurya (valour), Dhairya (gravity), Darpa (Pride), arrogance (Garva), generosity (Audarya) and lostiness (ucchrāya) can be shown by the Arāla hand

Two Migasirsa hands should be turned away from the region of the chest and quickly stretched and thrown up to indicate an enclosed object. One hand should be somewhat stretched in such a way that the palm is downwards to indicate darkness, entry into a hole or a house or a cave

Persons suffering from love, fever, or those whose minds are overpowered by some curse should be indicated by high breathing and shivering

A swing should be visibly indicated by oscillation

Akasayacana—Addressing somebody who is not present on the stage Janantika—Words not heard by others

Apavāntaka—Words whispered in the ears,

Janantika and Apavantaka should be shown by interposing the Tripataka hand

In dream speech, the words should be indistinct

In the speech of the aged, the syllables should be uttered falteringly and indistinctly

The speech of children should be uttered with a charming voice in which the syllables are incompletely uttered

The words of a sick person should be uttered in a feeble tone and accompanied by protracted breaths

The moment of death should be indicated by protracted breathing

Death should be shown by the motionlessness of limbs

Rasas and Sthayibhayas

The acting of the various Rasas and Bhavas by appropriate gestures is described in Adhyāyas 30, 31. It will be convenient to discuss the same in this section in order to complete the treatment of the subject, postponing the consideration of rasas as such to a subsequent chapter. I take up first the gestures of the rasas and their sthayibhāvas.

Śrngara--Śrngāra is of two types--Sambhoga and Vipralambha

Rati is to be shown by sweet and beautiful speech and gestures (Adhyaya 31 śloka 3)

Vipralambha is to be shown by exhibiting gestures appropriate to Nirveda It principally consists in heaving sighs

Hāsya—Is of two types—(1) Laughing oneself (Atmastha) or (11) making other people laugh (Parastha)

The characteristics of laughter depend also upon the character of persons (1) Persons of Uttama (superior) type laugh with fine glances in such a way that their cheeks move slightly but without the exhibition of teeth. It is known as Smita or smile (2) In the case of madhya (middle) type of people, teeth are exhibited while (3) in the case adhama (low) type of people, the laughter would be accompanied by tears and noise

Laughter is created by the behaviour of others and it is acted with smita, Hāsa and Atihasita

Vīrai—It is to be acted through gestures appropriate to a man of energy and resolution especially free from negligence

¹ The part of the text dealing with Vira is missing in our Mss. The verses put in our text are from N S (Adhyāya 6 śloka 68 69 of N Sagara echtion)

Raudra—Is indicated by red eyes, frown, angry words, fighting and use of weapons

Karuna—Is acted by drooping limbs, sighs, weeping, crying, paleness of face and dryness of mouth

Adbhūta—Is to be shown by the throbbing of eyes, the bristling of hair and the whirling of fingers and perspiration

When one has accomplished some superior thing, it is indicated by a smile

Bibhatsa—Is shown by contracting the nostrils and agitation of mind Bhayanaka—The portion of the text describing Bhayanaka Rasa is missing in our text

¹Bhayānaka is indicated by agitation, trembling of limbs, face and eyes, by the stupefacation of the thighs, by the drying up of the mouth, by the throbbing of the heart and by horripilation

Santa—Is to be indicated by the adoption of the insignia of ascetics and compassion on all beings and meditation

Sancaribhavas

Nirveda-Indicated by sighs

Glāni-Indicated by slow movement, trembling and leanness

Sanka—By hiding and looking about

Asūya—By belittling the merits of others

Mada—the intoxication of the superior people is indicated by the whirling of eye only, of middle type people by incoherent talk and of low type people by falling down and walking disjointedly

Śrama—By massaging the limbs, high breath and yawning

Älasya—By lying on beds and seats

Dainya—The line describing the Abhinaya of Dainya is missing in our text *

Cinta—The line describing Cinta is missing in our text but its gesture is described by exhibiting doubts of heart

Moha-To be indicated by the stupefaction of all the senses

Smrti-To be indicated by raising of an eyebrow

Dhrti—To be indicated by enjoying what one has and not caring for what one does not possess

I The description given here is from N S Adhyāya 6 sloka 70 71 N Sagara edition

² According to N S (C S S) it is to be acted by the absence of cleanliness of all kinds.

Kridā—Is to be shown by krīdana le playing

Vrida—To be shown by looking down and by scratching the ground

Capalata-To be indicated by actions unaccompanied by thoughts

Harşa—To be indicated by cheerfulness of expression the bristling of hair and perspiration

Avega-To be indicated by the interjection Ah

Jadatā and Garva—The descriptions of Jadatā and Garva—which should be described here according to traditional order are missing in our text

Jadata-Is indicated by silence and stupefied look

Garva—Should be indicated by contempt and insult of others and harsh speech

Visada-To be indicated by pretended sleep and sighs

Autsukya—Should be indicated by sloth heaviness of limbs and falling in reflection

Nidra—To be indicated by rubbing the eyes yawning and heaviness of limbs

Apasmara—To be indicated by stupefaction of consciousness

Supta-To be indicated by sleeping

Bodha or Vibodha-to be indicated by yawning at the end of sleep

Amarşa-By the shaking of the head

Avahittha-By conceal ng all the limbs

Ugrata-By rebuking violently

Mati-By teaching

Vyadht-By the gestures of Glani

Unmida-(debrium)-by improper behaviour and talk

Marana-By stupefaction of senses

Trasa-By the contraction and trembling of limbs etc

Sandeha-ie Vitarka to be indicated by the movement of the brows

The anger due to offence should be indicated by the gestures appropriate to Krodha Similarly the fear due to Aparadha (offence) should be shown by gestures appropriate to Bhaya (fear)

Sattyika Bhavas

Romañon-Is not defined (in the text) but its usage is given as under-

NRTTASUTRA 95

It is used to indicate joy due to accomplishment of one's desire and also cold, anger, fatigue and fear

Svarabheda—is used for fear, harshness

Aśru-is used to indicate joy, sorrow and weeping

Vaivarnya—to be indicated by change of colour It is said to be difficult to act and therefore should be accomplished with effort

In Adhyāya 20 śloka 19—the following five Sāttvikabhavas are mentioned 312 Asruprapāta, Romāñca, Sveda, Spandana and Varnavinyasa

Here it mentions only four 1

The tradition about the fourfold acting is followed in our text also. Of the four, the Angikābhinaya and the Sāttvikābhinaya have been discussed in the previous paragraphs

The Vācika is referred to only in half a line as one which is accomplished through speech

Aharyabhinaya

A whole of 27 adhyāya is devoted to Āhāryābhinaya ² One may say that this Adhyāya is a sort of transition adhyaya from Nrtta and Nātya to Citra because in dance and drama, the actors have to personify characters, and so they have to present themselves in the colour and garb of the imaginary characters (I have relegated the discussion about colours to the corresponding chapter of Citrasūtra)

Four kinds of Ähāryābhinaya are mentioned—Pusta, Alamkāra, Angaracana and Sañjiva

N S defines the Ähāryābhinaya as nepathyo vidhih ie 'dressing up the actor for his character role' It describes and classifies them into four kinds as above

Pusta—Imitative forms made with clay, wood, cloth, leather and iron are called Pusta The masks (Pratisirsa) of gods, demons, Yakşas, elephants, horses, deer and birds are made by Pusta technique

Alamkāra—consists of garlands, ornaments and graments

Angaracanā—It is the dressing up of the different parts of the body in accordance with the caste, position, superiority and the country of the character to be presented

¹ This means that the portion of the text describing the remaining Sattvikabhavas is missing

² The corresponding subject matter is to be found in N S Adhyaya 21 of N Sagara and Adhyaya 23 of C S S

Krida—Is to be shown by kridana ie playing

Vrida-To be shown by looking down and by scratching the ground

Capalata—To be indicated by actions unaccompanied by thoughts

Harşa—To be indicated by cheerfulness of expression the bristling of hair and perspiration

Avega-To be indicated by the interjection Ah

Jadata and Garva—The descriptions of Jadata and Garva—which should be described here according to traditional order are missing in our text

Jadata-Is indicated by silence and stupefied look

Garva—Should be indicated by contempt and insult of others and harsh speech

Visada—To be indicated by pretended sleep and sighs

Autsukya—Should be indicated by sloth heaviness of limbs and falling in reflection

Nidra—To be indicated by rubbing the eyes yawning and heaviness of limbs

Apasmara—To be indicated by stupefaction of consciousness

Supta-To be indicated by sleeping

Bodha or Vibodha—to be indicated by yawning at the end of sleep

Amarsa-By the shaking of the head

Avahittha—By concealing all the limbs

Ugrata-By rebuking violently

Mati-By teaching

Vyadhi-By the gestures of Glani

Unmada—(delirium)—by improper behaviour and talk

Marana---By stupefaction of senses

Trasa-By the contraction and trembling of limbs etc

Sandeha-1e Vitarka to be indicated by the movement of the brows

The anger due to offence should be indicated by the gestures appropriate to Krodha Similarly the fear due to Aparadha (offence) should be shown by gestures appropriate to Bhaya (fear)

Sattvika Bharas

Romañca-Is not defined (in the text) but its usage is given as under-

95 NRTTASUTRA

It is used to indicate joy due to accomplishment of one's desire and also cold, anger, fatigue and fear

Svarabheda—is used for fear, harshness

Asru—is used to indicate joy, sorrow and weeping

Vaivarnya—to be indicated by change of colour. It is said to be difficult to act and therefore should be accomplished with effort

In Adhyāya 20 śloka 19—the following five Sāttvikabhāvas are mentioned viz Asruprapāta, Romāñca, Sveda, Spandana and Varnavinyāsa

Here it mentions only four 1

The tradition about the fourfold acting is followed in our text also the four, the Angikabhinaya and the Sattvikabhinaya have been discussed in the previous paragraphs

The Vācika is referred to only in half a line as one which is accomplished through speech

Aharyabhinaya

A whole of 27 adhyaya is devoted to Aharyabhinaya 2 One may say that this Adhyāya is a sort of transition adhyāya from Nrtta and Natya to Citra because in dance and drama, the actors have to personify characters, and so they have to present themselves in the colour and garb of the imaginary characters (I have relegated the discussion about colours to the corresponding chapter of Citrasutra)

Four kinds of Ahāryābhinaya are mentioned—Pusta, Alamkāra, Angaracana and Sanjiva

N S defines the Ahāryābhinaya as nepathyo vidhih te 'dressing up the actor for his character role. It describes and classifies them into four kinds as above

Pusta-Imitative forms made with clay, wood, cloth leather and iron are called Pusta The masks (Pratisirșa) of gods, demons, Yaksas, elephants, horses, deer and birds are made by Pusta technique

Alamkara—consists of garlands, ornaments and graments

Angaracana-It is the dressing up of the different parts of the body in accordance with the caste, position, superiority and the country of the character to be presented

¹ This means that the portion of the text describing the remaining Sattvikabhavas is missing

² The corresponding subject matter is to be found in N S Adhyaya 21 of N Sagara and Adhyaya 23 of C S S

Angaracana consists in painting the body with different colours. After describing colours, their mixtures, and various colours to be given to the skins. Our text proceeds to describe the colours of various gods and types of men

In the case of gods it is said that when no particular colour is indicated, it should be given Gaura colour. Vasuki should be given Syama colour while the other serpents should be given Gaura colour. The Daityas, Dānavas, Rāksasas and the followers of Kubera and Piś icas should have the colour of water. Men in the six Dvipas should have the colour of gold but in the case of Bhārata Varsa they must have the colour of the country of their birth. Thus Pulindas and Dakṣinatyas (Southerners) are generally Asita (dark). Yavanās, Palhavas, Bālhikās and people living in Uttarapatha (region north to the Vindhyas) should be generally of Gaura colour. Pañcālās, Surasenās, Magadhās, Angās. Vangās and Kalingas have generally Asita colour.

Brahmins should have the colour of the moon, while Kşatriyas the colour of the lotus The Varsyās should be whitish (Āpānḍu) and the Śudras (dark) syāma

The Gandharvas and Apsarases have various colours

Kings and happy people should have the colour of lotus

Men of evil actions, persons overpowered by bad planetary influences, sickly people and those practising penance and blacksmiths and persons belong ing to the Kulas (of different professions) should be of Asita colour. The colour of a person seen in presence should be according to his own natural colour. There should be no moustaches and beards in the case of Devas, Gandhavas, Siddhas and those who have taken a certain vow should have no hair on their face (Smasru)

The divine beings Vidyadharas, lovers and kings should have a fine moustache and beard

The Smasru (beard) of ascetics, ministers, purohitas, judges and persons under some vow should have suddha smasru meaning probably white or un coloured

The Smisru of those, whose vows are not fulfilled and of unhappy people, of Tapasvis and sages should be long

The dress of persons engaged in religious activity should be pure i e white So also of merchants, Kañeukis and Brahmins

The dress of kings should be of variegated colours so also of courtesans. The dress of others should be according to the sex and as current in society

See Adhy lya 43 of Curasiira

Mukuţa—Three types of head-gears (Mukuţa) are given Gods and kings should vear Kiriţakas i e crowns. The crowns of gods should have seven crests, of kings five, of principal queen and crown prince three, and of the commander-in-chief one

Daityas and Danavas, Yaksas, Pannagas and Rākṣasas should cover their heads with turbans of one Paṭṭa, while the turbans of Vidyādharas, Siddhas and Vanaras should have knots

Devas, Dānavas and Gandharvās should have black pakṣas¹ (?flaps)

The Smasru and the hair of Daityās, Dānavās, Yaksās, Pisācās, Nāgās and Rāl sasās should be green and their eyes should be tawny. The hair of the Kañcukis should be white

The masks of Ministers, Kañcukis and superior purohitas should be turbaned

The heads of Pisācas, lunatics, ascetics, and those who have not fulfilled their vow should have long hair

The heads of children should be adorned with Sikhandakas—tufts of hair Munis should have Jatas (matted locks of hair) on their heads. The Cetas should have three tufts of hair on their heads and Vidusaka should have bald head or only Kakapada. Others should wear hair according to their castes.

Sanjiva—The entrance of animals on the stage is called Sanjiva Men should wear masks of various animals so also, the symbols of gods carrying various weapons should be represented by masks

In short, one should make various accessories useful for drama by one's own intelligence according to the customs current in a society

One should not discharge weapons on the stage

The subject matter of Natiasatta is discussed at length in our work presumably for its own importance as well as for its importance in the subject-matter of citrasutra

Before we end this section, it may be noted that the treatment of the art of dancing including acting comes between poetry and music on one side and painting, sculpture and architecture on the other. This agrees very well with the modern division² of arts into time arts, space arts and space-time arts. The first including poetry and music, the second painting, sculpture and architecture and the third dancing. Thus dancing being a space-time art is appropriately placed by V. D. between time arts and space arts.

¹ The reading Krspapaksah is doubtful

² See Encyclopaedia Britanicca—11th edition No 10 pp 355 to 374

RASAS

After having considered Kāvya, Nāţya and Nṛṭya it will now be appropriate to discuss Rasas and Bhāvas as also their relation to these arts

Adhyayas 30 and 31 are respectively called Rasadhyayas and Bhavadhyayas Number of Rasas—

As we have seen in the preceding sections much of the material pertaining to Rasas and Bhāvas is similar to what is found in N S Adhyayas 6 and 7. In N S we find two traditions about the number of recognised rasas. According to one there are only eight Nityarasas, while according to the other there are nine, the controversy being about the recognition of Sānta as a Rasa.

Our text throughout recognises nine rasas -

These are Hāsya Ṣīngara, Karuna, Vira, Raudra Bhayanaka Bibhatsa, Adbhuta and Śīnta Our text says that Ṣanta is an independent and a separate Rasa (santo rasah svatantro tra pṛthageva vyavsthitah) while Hasya results from Ṣīngara, Karuna from Raudra, Adbhuta from Vira and Bhayanaka from Bībhatsa. The meaning seems to be that Ṣīngara, Raudra, Vira and Bībhatsa are independent Rasas and the other four are dependent upon them. Thus according to our text there are five independent Rasas and four dependent rasas.

The colours2 of these rasas are also mentioned

The colours of Rasas

The colour of the Santa is the natural colour (Svabhava Vatna) of Srngara Syama of Raudra Rakta (red) of Hasya Sita (white) Bhayanaka Krşna (black) and Vira Gaura (reddish white). Adbhuta pita (yellow) and Karuna Kāpota (colour of a pigeon) and Bibhatsa Nila (Indigo colour)

It might seem a little queer that rasas should have their respective colours. The explanation is to be found in the fact that Rasas were to be indicated in painting and also in the make up of characters on the stage. Therefore a convention about the relation of Varnas and rasas had to be established

Deities of Rasas

The rasas have their presiding deities also Pramatha is the deity of Hasya, Vișnu of Singāra, Rudra of Raudra, Yama of Karuna, Mahakala of

¹ Compare NS Ad VI Slo 40 (N Sāgara)

² Colours—agree with N S

³ Deities-agree with NS

RASAS 99

Bibhatsa, Kāla of Bhayānaka, Mahendra of Vīra, Brahmā of Adbhuta and Parah purusah-supreme soul—the deity of Śānta 1

Rasas with their sthayins-

After this our text proceeds to describe how the different rasas are produced (samutpattih) —

Santa—is produced out of Vairagya ie renunciation. Renunciation is indicated by the dress of a particular religious order (Lingagrahanāt), and by mercy towards all creatures, meditation, the preaching of the path of salvation and unconcern for happiness and misery, absence of hatred and pride, and equanimity towards all creatures (samah sarvesu bhūtesu)

Hasya—is produced by inappropriate or incongruent talk and dress Its sthayibhava Hasa is described as resulting from the imitation of the behaviour of others (paracestanukaranam)

Śrngāra—is of two types—

(1) one—the result of Sambhoga—union and (2) the other the result of Viraha-separation

The second variety is called Vipralambha In this the feeling of Nirveda is predominently expressed. The ten Kāmāvasthās² or stages of love also form part of Vipralambha. These are (1) pleasure at seeing each other (Caksuh prītih), (2) attachment of mind (Manasasca Sangah), (3) constant remembering (Smaranam Nirantaram), (4) loss of sleep (Nidrābhedah), (5) leanness of the body (Tanutā), (6) turning away from sense pleasures (Vyāvrttir viṣayebhyah), (7) disappearance of bashfulness (Lajjāpranāśah), (8) Insanity (Unmādah), (9) swooning (Mūrchā) and (10) death (Maranam)

The Sambhoga Śrngāra results from the union of lovers adorned with garlands and fragrant anointment—lepana

Rati the sthayibhava of Srngara results from the satisfaction due to the acquisition of the desired object

Karuna—results from sorrow (śoka) Soka, the sthiyibhava of Karuna results from the separation of a beloved person or the loss of wealth

Raudra—results from anger (Krodha) Krodha, the sthlyibhlvajo
Raudra is a result of offence Offence is four-fold (Adhyaya 31

¹ No deity is given for Santa Rasa in N S .

² NS Adhyāya XXII ślokas 161-63 (N Sāgar)

Kāmasūtra of Vātsyāyana—Adhikaraņa 5, Ad 1, Sūtras 4, 5 (Chaukhamba S Series) ⁴

sloka 40) and dependent upon four causes 112 (1) enemy (Ripuja), (2) elders (Guruja), (3) servant (Bhṛṭyaja) and (4) love (Prana yodbhava)

Bhayanaka—results from fear (Bhaya) Bhaya, the sthayabhava of Bhayanaka results from an offence committed by oreself, (Ad-31 Slo 9)

Bībhatsa—results from disgust (Jugupsā) Jugupsā, the sthāyibhāva of Bībhatsa results from the sight of ugly things

Adbhuta—results from wonder (Ascarya) Vismaya, the sthayibhava of Adbhuta results from joy at the accomplishment of an extraordinary deed

Viral—Utsaha, the sthayibh wa of Vira results from the resolution of will and clear perception

So far we have considered the nine rasas with their sthayibhavas

Our text does not define the sthayibhava as such but it qualifies the word rasa as sthayi (Rasah sthāyi) and defines it as one 'whose form is a resultant of many Bhāvas cohering together (bahūnām samavetānam rupam 3asyā bhavetbahu Sa mantavyo rasah sthāyi) The remaining Bhavas are called Sañcarins (Seṣhāh Sañcarinah smrtāh Adhyāya 31, slokas 53, 54)

Sancari

Now we consider what are known as Sañcāri bhāvas -

Nirveda-results from poverty or the loss of a desired object

Glani-results from vomitting fatigue austerity or asceticism (Vairagya)

Sanka-results when one is caught by thieves and the like

Asuya2-results from the offence of others

Mada-results from too much drinking

Śrama—is due to exhertion or a long journey

Alasya—is due to pregnancy, exhaustion, or attachment, or is a natural quality

Dainya-is the affliction of mind on account of a bad state of affairs

Cintā-results from loss of power, wealth etc

Moha-results when one cannot find a remedy in difficulties and troubles

Smrti-results from remembering former action

Dhrti-results from the knowledge of the world

Krida-is a joyful, light hearted play

¹ Our text omits the description of Vira

² According to NS Asūyā results from seeing the good fortune power intelligence and prosperity etc. of others as well as on account of the offencee ommutted by others (NS Ad 7 \$10 36 N Sāgar)

RASAS 101

Vrida—results from disobedience of the orders of the elders and by not being able to do what has to be done

Capalata—is the trait of men acting thoughtlessly

Harşa—is a result of the fulfilment of one's desire

Āvega—is the result of confusion

Jadatā-results from hearing good or bad news, disease etc

Garva-results from asuya etc

Vışāda—results from frustration (Karyanasa)

Autsukya—results from anxiety

Nidrā—results from keeping late hours at night, idleness or intoxication

Apasmīra—15 due to the anger of gods

Suptatva—results from sleep

Bodha or Vibodha—results from waking up from sleep

Amarsa—11s the result of superior learning, bravery, wealth or power

Avahittha—is due to audacity (Dhārṣṭya) and rougishness

Ugrata—is what is shown in such actions as robbery etc

Mati—is a result of proficiency in Sastras

Vyadhi—results from the disturbance of the three Dhatus

Unmada—results from derangement of Dhatu of the body called Vayu or from separation

Marana—results from disease or wounds

Trasa—results from terrific noises etc.

Sandeha—results from thinking

Sattvika

Now we come to some of the Sattyikabhayas -

Romāñea—is due to cold, anger fatigue and fear (Sitakrodhaśrama-bhayaih)

Syrabheda-(Change of voice) due to fear

Asru-results from sorrow or joy

Rasas and their Bhayas

After treating in the above fashion the various Sthayi, Sañcari and Sattvika Bhavas, our author proceeds with the discussion of the association of particular Bhavas with particular Rasas 2—

Hāsya—the following Bhāvas can be associated with Hāsya —

According to NS Amarsa results from being challenged in an assembly by persons who possess superior learning power and strength and is accompanied by resolution of will (NS Ad 7 Slo 48 N sugar)

² NS Ad VII Verses 108 onwards N Sigar

- Glani, Sanka, Abhyasüya, Srama, Capalata, Romañea, Harşa, Nidra, Unmadn, Mada, Sveda and Avahittha
- Sṛngāra—Excepting Alasya, Augrya and Jugupsā, all the 46 Bhāvas have their place in this Rasa
- Karuna—Nirveda, Cintā, Dainya, Glāni, Aśru, Jadatā, Maraņa and Vyādhi have their place in Karuņa
- Raudra—Asammoha, Utsāha, Āvega, Mada, Krodha, Capalatā, Harşa and Ugratā are found in this rasa
- Bibliatsa—Apasmāra, Unmāda, Vişāda, Mada, Mṛtyu, Vyādhi and Bhaya have their place in this Rasa
- Adbhuta—Stambha, Sveda, Moha, Romañea, Vismaya, Avega, Jadatā, Harşa and Asūyā are associated with this Rasa
- Vira—Sveda, Vepathu, Romāñea, Mati, Ugratva, Amarşa, Mada, Svarabheda, Krodha, Asūya, Dhṛti, Garva and Vitarka have their place in this Rasa

Classifications of Rasas

Some of the Rasas are classified according to the instruments of their expression. Singara is said to be of three types, expressed through speech (Vāg), get-up (Nepathya), and action (Kriya). Similarly Hasyn and Raudra are said to be of to types as expressed through limbs (bodily gestures) and get-up. In Adhyāya 29 Raudra is said to be of three types, as expressed through Anga, Svabhāva and Nepathya (Ślokas 11 to 14).

Karuna is said to be of three types resulting from the loss of religion (Dharma), worldly good (Artha) or relatives. Vira is supposed to be of three types as expressed through fight (yuddha), mercy (Dayā) and Dāna (liberal donation). Bhayanaka is also of three types—(1) feigned fear (vyaja), (2) Trāsana (fear due to terror) and (3) Offence (Aparādha).

CITRASUTRA

In the very first verse of Ad 35 Mārkandeya says, "I will now speak to you on Citrasūtra" So the section comprising adhyāyas 35 to 43 is appropriately known as Citrasūtra

It gives, as will be seen from what follows a comprehensive and systematic account of Citra, not available elsewhere

The topics discussed in the Citrasutra are as under —

Adhyāya 35, which is called avamocchrayamana deals with the origin of painting, the connection between Nrtta and Citra, five types of men based on measurement standard of measurement and a brief account of the measurement of Hamsa type

Adhyaya 36 is called *Pramanadhyaya* It deals in general with the measurements and proportions of the different parts of the body. This part of the text is in prose but at the end six verses are introduced with the words *bhavanti Caira*. These verses describe the colours and other peculiarities of the five types of men

Adhyāya 37, which is called Samanva mana, gives in the first four verses the proportions of women who are also divided into five types. Then follows the general physical characteristics of Cakravartins. This is followed by the description of six types of hair, five types of eye forms and their measurements. The adhyāya ends with information regarding different types of eyes. Here, however, there is no specific reference to the five types of men

Adhyāya 38 is called *Pratimalakşanam*—It is difficult to explain why this Adhyāya is so called, unless we understand the word Pratimā to refer to images in painting and sculpture both—This adhyāya gives mainly instructions about making the images of gods in particular

Adhyāya 39 which is called kṣayairddhi treats of nine sthīnis three types of Citra based upon Pramāna and Guna ie measurements and qualities and kṣayairddhi which is said to be of thirteen types including nine sthānas to which four more are added. This is followed by an account of the different Mandalas, Vaišākha etc. In verse 50, a hint is given about painting a form of a woman in an anormous condition.

Adhydya 40 which is called Rangarvatikara treats of various paints and how to mix them

Adhyāya 411 which is called Rangavartanā, discusses the four types of painting three kinds of brushes, faults to be avoided and four elements to be observed in painting and the suggestions as to what constitutes an excellent picture

Adhyāya 42 is called Rupanirmanam as it deals with the various objects which become the subjects of painting such as persons of different castes and classes—Kings, Sages Gandharvas, Daitayas, Women of various types, seasons mountains, forests, temples etc. It may be noted that this Adhyaya gives us the human form of a river, a lotus, a conch, an ocean etc.

In the last verses, hints are given as to how different Rasas Bhavas and modes of dancing are to be expressed in painting

This is followed by a hint about the classification of painting into Uttama Madhyama and Adhama

Adhyaya 43 is called Singaradibhavajuktjadi. It starts with the discussion of nine Citrarasas and how they are to be expressed through painting. Rules are given as to what paintings of different Rasas are to be expressed in houses royal palaces, temples etc. This is followed by similar instructions about the objects to be painted at different places, the defects to be avoided and the merits to be achieved. Verses 31 to 35 refer to the images, that are to be made in gold, silver copper, stone, wood and iron. This is included under Citra because it follows more or less the same technique. Pustakarma re modelling in various materials is also to be called Citra. The same applies to figures on cloth. Then a general suggestion is made that whatever is not described here is to be learnt from the adhyayas on Nitta and applied to painting. In the last verse Citra is extolled as the Supreme Art

As must have been seen from the contents the word Citra here is not used in its usual sense of painting only. It seems to cover sculpture also. This means that the whole art of 'imagery' is brought under the term namely Citra. This is an important point to note in the study of ancient arts of India. It is a point of view which comprehends the whole of representative shaping arts. This point of view characterises the treatment of the subject in this section.

Origin of Painting

The myth about the origin of Citrasūtra (ad 35) is as follows -

It was the sage Narayana who made it for the good of the people. The great sage in order to confuse the heavenly damsels (who had come to tempt him) drew a beautiful woman on the ground with the juice of mango. Out of

¹ Dr A k. Coomaraswany published a translation of Adhyāya 41 with a commentary and notes in the year 1931 32 (Journal of Ariencan Oriental Society, Vols 51 52)

CITRASUTRA 105

this picture was created the beautiful apsaras. She was Urvasī Looking at her the heavenly damsels were ashamed and went away. Thus was created the perfect Citra by the great sage. Then he made Achyuta Visvakarma learn the art.

This mythical account is significant in two points. One is that the code of painting is based upon an actual painting and secondly that it was taught to Viśvakarmā, the divine architect. This indicates that the art of painting was practised by persons who were also builders. It shows the connection of painting and sculpture with architecture in earlier times and confirms the view of Herbert Spencer² on the evolution of these space arts. He says that in the earlier stages of human culture the arts of architecture, sculpture and painting were practised together and it was only later on that they got differentiated

Nrtta and Citra

The account of origin is followed by the relation of painting and sculpture with dancing. We are told that both Nrtta and Citra are imitative or representative of the objects of three worlds (Trailokyānukrii) Naturally, therefore, Drştis (eye sights), Bhāvas (moods), gestures and handposes described in Nrtya would hold good in Citra also. The difference, however, between Nrtya and Citra is indicated by saying that the pramānas (measurements and proportions) were not described in Nrtta adhyāyas but being necessary for Citra are discussed here in Citrasūtra. The question of measurement and proportion is of specific importance in the 'shaping arts' of space—painting and sculpture, just as rhythm (Tāla & laya) in time arts of music and dancing

Measurements

By way of introduction, the discussion of bodily proportions the text first mentions five kinds of male bodies. These are Hamsa Bhadra, Mālavya, Rucaka and Sasaka. Their height is equal to their breadth. As explained by Dr. Kramrisch the height has to be equal to the length 'across the chest along the outstretched arms from the tip of the right middle finger to that of the left."

The measurement of these five types is given in terms of angula. The phrase Syenatia angulaminena would mean the measurement according to one's own angula. If this interpretation is true, then the measurements of each one

¹ Unasi is referred to as drawn on ground—Unvam and not on Uta (on thigh)

² See Encyclopaedia Bri annica Eleventh Edition Vol. 10 (Page 370)

¹ Dr Stella Kramrisch understands this passage as follows -

Hence I am going to speak about that by which measurement in duncing was said (to be regulated). (See Visquidharmottara by Stella Kramrisch 1928 (P. 35). This obviously is wrong. The question of bod by proportions has no place in duncing.

⁴ Assaudharmottara—Stella Kriminch 1928 (P. 1617)

^{1 14}

of these types would be relative to their respective angulas. This means that no standard measure of angula irrespective of the measure of individual angulas was fixed. With this provise the measurements of these five types are as follows—Hamsa having 108 angulas, Bhadra—106 angulas, Malavya—104 angulas. Rucaka—100 angulas, and Śaśaka—90 angulas.

The proportions of the different parts and limbs of the body are given in the terms of Tala. Tala is said to be 12 angulas in extant. The height of the foot upto the ankle is one fourth of the Tala ie three angulas. The Jangha (shank) is equal to two talas re 24 angulas. While the Janu (knees) is equal to one pada 1e 3 angulas. The urus (thigh) are equal to Jangha 1e two Talas The navel is one tala above the Penis (Medhra) The heart is one tala above navel and the throat (kantha) is one tala above the heart. The throat is one third of a tala and the face is one tala The head above the forehead is one sixth of a tala. The penis should be in the middle. This is the measurement of the length. The hand is one tala while the arms (above the clow) 17 angulas each and the fore arms (prabahu) also of the same length Half of the chest is eight angulas. This is the measurement of Hamsa according to breadth. The measurements of other types should be in accordance with this (i.e. in this proportion). All the types are equal in their length, breadth and circumference

This is followed by the measurement of each limb. This topic is treated in adhyaya 36 The circumference of head is 32 angulas. The forehead is 4 angulas in height and eight angulas broad. The temples measure 4 angulas and 2 angulas in height. The cheeks measure 5 angulas. The chin measures 4 angulas. The ears measure 2 angulas and 4 angulas in height. The cavity of the ear is one angula. There is no rule of the measurement of Pali, which is explained as the lobe of the ear. The nose measures 4 angulas. At the tip it is 2 angulas in height and it is 3 angulas in breadth. The extent of the nostril is one angula and the width double. The portion between the nose and the lip measures half an angula. The lip is one angula. The mouth is four angulas in breadth. The lower lip is one angula. The chin measures two angulas. The teeth are 24 and tusks (Damstra) 8 in number. The teeth are half an angula in height. The tusk is 1, th of an angula. The eyes are one angula in extent and 3 angulas in width The black orb is ard of the eye and the pupil is ath. The eye brows are half an angula in width and 3 angulas in length. The distance2 between the two eye brows is two angulas. The distance between the end of the eyes and the ear holes is four angulas. The length of the neck is 10 angulas and circumference

¹ Something is said about the hole in the reading tadrandhramudakām or mudakam whose meaning is not clear

² The read ng in the text is not clear. It may be tayordvyangulamantaram

CITRASUTRA 107

21 angulas The distance between the pupples is 16 angulas and six angulas between the clavicles The circumference of the arm round the shoulder (lit the root of the arm) is 16 angulas and at the end 12 angulas. The palm of the hand is 7 angulas (long) and 5 angulas broad The middle finger measures 5 angulas and the forefinger is shorter by one joint than that of the middle one and the ring finger is equal in measure to the forefinger. The little finger is short by the front most part than the ring one The joints of the fingers are equal and one third (of the finger) The nails measure half the joints The thumb measures three angulas and has two joints. The abdomen measures one angula according to the physicians and measurements. The hip is 18 angulas in length and its girth 18 44 angulas The scrotums are 4 angulas wide. The circumference of the penis is as much ie 4 angulas and 6 angulas in length, the thighs are 4 angulas from its The width of the knees is its double² ie 8 angulas Its circumference is triple i e 12 angulas. The forepart of the shanks is 5 angulas in length and 14 angulas in circumference The (soles of the) feet are 12 angulas long, and 6 angulas broad The toes are three angulas long The toe next to the large one is equal in size of the large toe and the others are small by one eighth. The nail of the large toe is less by a fourth part of a toe. The nail of the next toe is half of that and the nails of the remaining are one eighth. The whole foot measures an angula in thickness (?) and its height 8 angulas The lieel measures three angulas (in thickness?) and its height 4 angulas

This is the measurement of a Hamsa It is the standard measure in relation to which the measurements of other types to be worked out. The measurements are followed by other characteristics of the five male types

A Hamsa has a beautiful face, nice waist, a gait like that of a swan and is strong, has arms like the king of serpents ie sees, moon-white complexion and eyes having the colour of honey. A Bhadra has lotus-coloured complexion, strong round arms, great intelligence, a gait like that of an elephant and hairy cheeks. A Malavya has a dark complexion like the kidney-bean, a slender waist, slim figure, arms reaching up to the knees, thick shoulders nose like that of an elephant (ie prominent) and large jaws. A Rucaka has autumn-white complexion, a conch like neck, great intelligence, is truthful, of good taste and

I I have adopted the reading of A and B

The reading in the text is amended into tad dyigunangula vipule junum tat triguna parinahe. Intrusion of parinaha between dyiguna and angula seems to be a scribe's mistake.

³ Dr Stella Kramrisch seems to take tattrigunaparināhe with janghägram but parināhe is in dual and therefore should be taken with jānunī

⁴ In the text the word is parthivendranam meaning of the kings of kings. This probably suggests that images were generally made of kings.

⁵ Dr Stella Kramrisch translates the word 'Kapola as forehead

strong A sasaka is reddish dark, somewhat spotted, clever, has full cheeks and eyes having the colour of honey

This adhydya is followed by a discussion on five types of women. As there are five types of men, according to the measurements of the limbs and parts, so are there five types of women. But it may be noted that the names of the types are not given. Unless we take the feminine forms of the names of five male types as denoting the five types of women.

A woman should be placed near her man so as to reach the shoulder of the man. The waist of a woman should be made thinner by two angulas than that of a man and the hip should be made bigger by 4 angulas. The breasts should be made attractive according to the measure of the chest.

characteristics of great men

After giving general instructions of making images of women, we are given similar general instructions about making the images of kings and Cakravartins. The king should possess the physical characteristics of great men. The hands and the feet of a Cakravartin (sovereign ruler) should be shown with jala or web. The urns or tuft of hair should be shown as an auspicious mark between their eye-brows. Three lines should be shown in the hands of kings. They should be charming red like the blood of hare and slenderly curved. The hair should be made thin, wary, shiny with natural glossiness and like the dark blue sapphire.

Here we are informed about six types of hair namely kuntala (locks), Daksin varta (curls turning from the left to the right), Taranga (waves), Simha kesara (the manes of a lion), Vardhara (broom or brush like) and Jujajasara (matted hair)

This is followed by the five forms of eyes. They are as under—bow (capa), abdomen of a fish (Matsyodara), a petal of a blue lotus (utpalapatrabha), a petal of a white lotus (padmapatrambha), and an arrow (sarākṛti) t

An eye of the form of a bow measures three yavas. An eye having the shape of an abdomen of a fish measures 4 yavas and an eye like a petal of the blue lotus six yavas and like the petal of the white lotus 9 yavas. An eye having the shape of an arrow measures 10 yavas. We are incidentally told that an yava measure, here, is related to the measure of one's own angula.

These five forms of eyes indicate different characters and their moods A cipākāra eye is to be found in looking at the ground in meditation. For women and lovers the shape of matsyodara is recommended. For a person free from passion the utpala eye is advised and for a frightened and crying person the Padma-

¹ The other readings are Sana Sara Sasa and Cara ing Sana and interprets as a shape of a grind stone Sarakfil in the majority of the mss used by me

CITRASUTRA 109

patra eye The eye of an angry person and one suffering from acute pain will have a sarakara

After these we are told in a general way that the sages, manes, & gods should be adorned with their own haloes. With this knowledge an artist has to work out other things with his own intelligence. The picture must be graceful, free from crooked lines, with sthanas having many beam like lines and with steady bhūmilambhas.

Adhyāya 38 describes how the eyes of gods as well as the faces are to be made. The utpalapatra¹ eye of god, should be red at the corners, have black pupil and long eye-lash. It should be serene and pleasing. Such an eye of god is for the welfare of the people. But if one wants wealth and happiness, one should make padmapatra eye ² It should have the colour of cow's milk, placid, even, wide, serene and pleasant to look at. It should have eye-lash sloping at the end and black pupil

The principal face should not be triangular and oblique. It should be square and full. It should be serene and have good auspicious marks. Long. circular, oblique and triangular shapes should be avoided for the welfare of people In the case of gods hair should be shown in eye-lashes and eye-brows. The remaining limbs should be free from hair. Their forms should represent youthful figures of persons 16 years of age We are also told that their measure should be that of Hamsa They should have always serene face and smiling eyes 3 They should be adorned with diadems, ear-rings, necklace, armlet, bracelet and auspicious garland of flowers with big girdles ornaments on feet, sacred thread and with ornaments (either on head or ear) They should be represented with beautiful (sobhina) loin-cloth reaching below the knee. This should be on the left Their right knee should be manifested. Their (upper) cloth should be beautiful. Their halo should be done proportionate to the head and circle of halo should resemble the god. An upward, sideward and oblique look should be avoided, so also too small, wide, depressed, angry and harsh look. The reasons for avoiding these looks are not aesthetic but based upon considerations of magic An upward look causes death, downward sorrow and oblique as well as small loss of wealth. The wide look causes death, depressed sorrow harsh loss of wealth and angry look causes fear

I The translation of Dr Stella Kramrisch is somewhat different. She has not taken Utpalapaira and Padmapatra as the specific varieties mentioned in the adhyaya 37. (See p. 40)

² The mention of hand (P 41) in Dr S Kramrisch's translation is due to the reading Kara* of Venkateiwara edition

³ Gods are supposed to have eyes which do not wink of केन्य मानिसीई एम्पोर्डि स्था विद्यासीय दें. (Vikramorensiyam Act 3) If we take the reading in the text taths stimuta divinish which is not unlikely, it would be more consistent with the tradition

This is followed by the directions about the shapes of an abdomen

The image of the deity should not have a depressed abdomen or bulging. There should be no wounds on it. Its proportions should not be more or less than require. It should not have harsh or dreary colours. Its mouth should not be made wide open. It should not be made drooping with disproportionate limbs. If the abdomen is thin, it causes starvation and fear, if big or with wound death, and if it is small, it causes loss of wealth, if more causes sorrow and if harsh in colour, gives fear. If the face is wide open, it destroys the family. If the halo is eastward, it causes loss of wealth and southward, death, if westward, destruction of sons and if northward, it increases dangers. If it is less than the proportion, it leads to destruction, if it exceeds, it ruins the country. The rough image causes death and angry destroys the beauty. The deities, even, invoked by the best of brahmins do not enter an image, which lacks proportion and conformity with the rules of image-making, on the contrary, Pisācas, Daityas and Danavas possess them. Therefore, every care should be taken to avoide making a disproportionate image.

Therefore, an image made according to rules should be regarded excellent. It also tends to long life, fame and increase of riches. An image not observing the rules destroys riches. Gods should always be represented in beautiful images.

Their gaits should be similar to that of a lion, a bull, an elephant or a swan Citra or an image made according to rules is looked upon as blessing for the maker, country and the king. Therefore no effort should be spared in making it salaksana. The emphasis put upon laksanam in making an image should be noted. This, in itself, is an aesthetic imperative. In the ancient tradition of India beauty has always been associated with health, wealth and prosperity in short, it is mangala

Postures

Adhyāya 39 describes the important topic of sthānās in painting. Unfortunately, the readings of this chapter are very unsatisfactory and so it is not possible to get a clear understanding of this important topic of painting. The subject of the nine sthānas has also been discussed in later works on architecture and of general knowledge such as Bhoja's Samarāngana Sūtradhāra (11th cent AD), Abhūlasitartha Cintamam of Somešvara (12th cent AD) and Šilpa ratna of Šrikum ira (16th cent AD). The text of Samar inganasutradhāra² is,

The nouns qualified by chatodari etc are not mentioned in the text. The context would require us to take it with Dfsti but in that case the meaning becomes rather obscure. So following Dr. Stella Kramrisch. I have taken the adjectives to qualify some such words as Pratima or Devata.

² In addition to 9 sthanns, it refers to 9 Vrtus also. The total number of basic and mixed athanakas is 29

CITRASUTRA 111

however, very corrupt and so we do not get much information from its adhyāya 79, dealing with painting. The texts of Abhilasitārtha Cintamani (ad 3) and Silparatna (ad 64) on the subject of chitra are almost identical. They describe the 9 Sthānakas¹ on the measurement based upon the Brahmasutra and Pakṣasūtras. The description of the 9 sthānakas in our text, however, does not mention the Brahmasūtra or the Pakṣasūtras, though one might guess that these modes of differentiating sthanas were taken for granted. Any way this is an important point of difference between the description of the 9 sthanakas of the Viṣnudharmottara and those of the Abhilasitārthacintāmani and Silparatna.

Mārkandeya says there are nine sthānas—basic positions of postures or forms having *beautiful shapes and their modifications—painted in a variety of colours

The nine 'sthānas are (1) Rjvāgata, (2) anrju, (3) sacikrtasarīra, (4) ardhavilocana, (5) pārsvāgata, (6) parāvrtta, (7) prsthagata, (8) parivrtta and (9) samānata These 9 sthānas are practically the same as are given by Samarāngana Sūtradhāra and Abhi Chi The Anrju of V D is their Ardharju

The word vikāra can be taken in two senses (1) transformation or change and sentiment or passion. So the compound can be interpreted in two ways. (1) sthānās having ordinary forms and their modifications or (11) sthānās having forms and emotions 1 e. sthānās representing forms as well as emotions. (3) The compound can also be dissolved as

आसारिकारस्य विवास = आकारिकास (त पु) and शुभा आसारिकासः येपा तानि। In this case the compound would mean sthanas representing transformations or modifications of forms in natural condition

¹ See appendix 1

The reading in all the Mss and in the venkatesvara text is subhakara viharani. This has been translated by Dr. Stella Kramrisch as 'auspicious forms and gestures. As I have pointed out in the critical notes (Vol. 1), the correct reading seems to be subhakaravikarani in the light of the verse 33 of this adhyaya. I have interpreted the text with this amended reading. The compound word subhakaravikarani can be analysed as follows.—

⁽¹⁾ आकाराश्च विकासश्च = आकारविकास (इन्द्र समाम)

⁽²⁾ द्युभा आकारविकारा येपा तानि (स्थानानि) (व ब्री मनाम)

With amendments in the readines of the first four verses of the adhyāva 79 of Samarāngana sūtradhāra of Bhoja, we can get the following 9 Sthānakās (1) Rjuāgata, (2) ardharjuāgata, (3) sācikṭta, (4) ardhyardhākṣa. These four are called ūrdhuāgata. When they become parāuṭtta, they give four more positions namely (1) Rjuārataparāuṭtta, (2) ardharjuāgata parāuṭtta, (3) sācikṭta parāuṭtta, and (4) ardhyardhākṣa parāuṭtta. The ninth Sthāna is pārāuāgata. It is always painted on a wall (bhitika uigraham lit having its body on the wall. The Abhilasitārtha cintāmaṇi (Ad. 3) and Silparatna (Ad. 64) enu merate the sthānas as follows—Rju, Ardharju, Sāci, Dyardhālṣi, and Pārāugata u hich is wrongly called Bhaktika by Abhi Cīntā but correctly called Bhitika by filparatna. These five are regarded as principal sthānas of both the texts. By making the first four parāuṭtta, we get the following four positions name'y Rjuparāuṭtta, Ardharjuparāuṭtta, Sāciparāuṭtta and Duardhālṣi parāuṭtta.

Sācikṛtakarīra is the same as Sāci. The Ardhavilocana seems to be identical with dyardhākṣī. The pārśvāgaṭa is common. The readings in our text is purāvṛttam (Sio 3a) and parāvṛttām (Sio 3b). These should be corrected as parāvṛtta and parivṛtta respectively in the light of verses 23 (gaṇḍaparāvṛttam) and 29 (parivṛttaṃ). Another enumeration is given in our text based upon the principle of kṣayavṛddhi (ie fore shortening). They are: (1) pṛṣṭhāgaṭa (7 dṛṣṭngnṭa). (2) avarjugaṭa which is miswriting for ardharjugaṭa. (3) madhṣārdhārdha, (4) ardhārdha, (5) sācikṛṭamukha, (6) naṭa, (7) gaṇḍaparāvṛṭṭa, (8) pṛṣṭhāgaṭa, (9) pāṣrvagnṭa, (10) ullepa, (11) calita, (12) uṭṭāna and (13) valita.

Now let us see if we can visualize in some way the 9 sthanas and 13 sams-thanas

- (1) The Rivagata sthana is frontal (Abhimukham) The quality of its measurement (managuna) is distinct (The figure in it is complete). Its limbs are beautifully drawn. The brush (vartaka) in it is soft (slakşana) and spotless ((amala). This sthana is very pure, sweet and adorned with clear lines and embellishments. The limbs in it are undiminished.
- (2) In the anrju sthana the frontal position has undiminished chest and abdomen and the portions from waist to shanks and shoulders are diminished. The nose-wing and the lower lip should be shown one fourth. The three fourth of the limbs is diminished. This is an excellent beautiful sthana accomplished by sthanalambal i.e. by proper perpendicular position. In this sthana many karanas (dance postures) can be shown
- (3) In the sacikṛtaśarıra the bhumilamba—perpendicular reaching the ground level is sideways. It is diminished by caturbhāga i.e. one quarter. The eyebrows and the forehead are shown one and a half. Similarly the high bridged nose. The remaining half is diminished by a bhāga i.e. 4 angulas. The eye is diminished by a kala i.e. 2 angulas. The eye brow should be drawn with a soit line and should be thimmished by a kala i.e. 2 angulas. On account of its being subject to modification (vaikārikatvīt), it is averted (sācikṛta). It should be pleasing to the eye. It should show good brush work and should be delicate. It is suvartana. The black part of the eye should not be shaded

¹ The reading of A sthånalamba is adopted here and the bhumilambha of verse 10 is accordingly amended into bhūmilamba

² According to Abhi Cinta and Silpa ratna a bhaga is equal to 4 angulas. If we accept this measurement caturbhaga here means 'diminished by one angula but Abhi Ci. and Silparatna show the bhumilamba diminished by 2 angulas.

³ Bisecting by Brahmasutra there will be two parts of a forehead containing one cycbrow So one and a half would mean here one complete half and the half of the remaining half

CITRASUTRA 113

(chāyāgata),1 nor should be straight (Rju), nor should it be as in anger (kopa nam)

- (4) The ardhavilocana position is as follows—In the face half eye is shown and the other half is not shown (lit dropped), so also the eye brows. The contraction of the forehead or better the contracted forehead should be of one matra. The conspicuous part should be shown half or adopting the reading siral only essential part, what is to be shown, should be exhibited slightly. The check should measure one half of an angula and the other half is diminished. The line of the throat should have half an angula and the chin should be exhibited one yava $i e \frac{1}{8}$ of an angula. The mouth (front part) of the chest should be shown half and the half should be dropped. Similarly, from the mouth of the navel one angula remains (i e only one angula of the figure remains from the mouth of the navel. The waist should be shown half and whatever else is to be shown should be shown half. Thus adhyardhaksa is recognised by its very shape (akarena). This is otherwise called chayagatam.
- (5) The parsy gata is as follows—In it either the right side only or the left side is shown. The rest of the limbs vanishes or diminishes. Similarly also the movement of the limb. Like one lower lip a nose and a forehead, an eye and an eyebrow are also shown one, singly. One ear half of the chin and part of the forehead where hair touched should be shown. It should exhibit complete portion (measure) beauty and sweetness. This is also called bhittika ie wall painting.
- (6) The parartta position is as follows—(Here the reading apakruddhe is amended into apakrste (?)) The averted face (?) is diminished by one kala, similarly the region of the throat, so also shoulder, cheek and forehead are diminished by one kala. The arm, chest waist and the private part may be diminished by 2 kalas each. Its proportion should be in accordance with the above. Its limbs should not be very much diminished.
- (7) The prsthagata is described thus—The configuration of the body should be beautifully shown from the back. The eye brow and the joints of all the shimbs should be curved. The corner of the eye should be shown slightly. On the cheek should be shown slightly the corner of the eye and the stomach should be shown only on one side. It is firm (susthira) and pleasing to the eye

^{1 (1)} Dr Stella Kramnsch translates the word chayagata as coming out of the shade.* Chayaya agata (2) Chayam gatam—gone to the shadow or shade ie not even in silhouette. It should not be shown (?)

² The phrase intended seems to be labitabhango matraica. It is changed as bhadgo latatamatrasca possibly for the sake of metre matra = 1 angula

³ सोश has been amended into सनीह

It should have the qualities of complete proportion, beauty and sweetness. The proportion is practised in the book-pictures.

- (8) The precents (turned back position is described thus—Its upper part should fall by (diminish) one bhaga is 4 angulas. On account of partition turning back, the upper part is evenly placed with the diminishing part eventhough the half of the limb is frontally placed. The two halves should be shown up and below as if they are somewhat in chayigata style (silhouette). The similarity in the two halves is vulgar and without interest and therefore the middle portion should be properly diminished as to please the eye.
- (9) The samanata sthana is as follows—The whole eye is turned towards the region of the buttocks. The sole (of the foot) is seen. The upper half of the sight is diminished while the remaining sight of the region of the waist is suggested. The foot and the fingers (toes) are dropped. While the two soles are completely seen. It is four sided, and complete. The bhayanaka rasa is not seen in it. The half of the arm is shown. While the face and the neck (kandhara) are not seen and shank (jangha) of one side is dropped.

These nine positions should be understood in order of their laksitas (characterizations). Their many variations should be imagined by superior understanding. The background should be divided properly and then the different portions. These should be done by each portion of the ground i.e. background and according to rules. On the background first proper measurement should be achieved and then these 9 sthanas should be drawn in accordance with the qualities of measurement etc. These 9 positions can depict all the bhavas. Keeping in view the whole world consisting of moveable and immoveable objects it can be said that there is no other sthana in addition to these i.e. these 9 sthanas can depict all moveable and immoveable objects of the world.

There are three types of pramana we citra, vicitra and trividha (? uvidha) with reference to the quality of pramana in uttama, madhyama and adhama I have already spoken about kşaya and ujddhi as a whole

Now I shall speak about the rules of ksaya and viddhi. The knowers of painting should know it in brief or at length. These ksaya and viddhi being derived from limbs and parts are of thirteen types on account of the many ways in which the sthanas are composed. These thirteen sthanas or better samsthanas are named as follows—(1) Distagata (2) angugata, (3) madhyardhardha, (4) ardhardha, (5) sācikītamukha, (6) nata, (7) gandaparāvītia, (8) pīsthagata, (9) parsvagata, (10) ullepa, (11) calita, (12) utiana and

I The correct reading seems to be नित्रविदिस्समदेव

² The reading of C is adopted here

CITRASUTRA 115

(13) valita All these are to be done according to samsthana (the various compositions)

Here the mandalas are to be shown by the order of movements in Vaiśākha and Pratyālidha The Padas (feet) are even (sama) and half-even (asama) The steps are steady (susthita) or moving (cala)

The sthānaka derived from sama and asamapada is of two kinds. In the ²Rjvāgata, sthānaka (standing posture) is samapada and the remaining sthana (standing posture) is of mandala type. In standing postures one foot would be even and the other would be shown beautifully moving (asama)

The archers are to be depicted in vaisākha, ilidha and pratyālidha poses. The bearers of sword and shield should have viṣamapada in the gomutraka pose ie zigzagging or jumping. The bearers of śakti, tomara paṣana, bhindipāla etc should be shown in the calita posture showing unsteadiness and one foot in ālidha position. The bearers of cakra, śūla, gadā and kunapa should be shown in a valgita (jumping or galloping) posture.

The form of a woman should be drawn thus—one foot in sam? (even) pose and the other langual (vihvala) and the body engaged in game should be shown with leanings and somewhat running. The buttocks should be broad and rolling with the graceful sport. The placing of the foot should be steady.

On this earth men are mostly void of proportion on account of the power of time and condition (state), therefore, understanding this a wise man should in relation to ksaya and viddhi create proportion by his own genius. The Technique of Painting

Ad 40 describes some important aspects of the technique of painting such as (1) how the surface of the wall should be prepared for painting including the instructions as to how the loam to be used as plaster should be made (2) How the ground baving jewel like lusters can be prepared (3) The auspicious time and the ceremony which the painter has to observe before starting his work (4) The drawing and the colouring of the picture, (5) Different kinds of colours of skin (chavis)³ based upon the division of primary colours, and (6) preparation of pigments

Plaster -

The preparation of the loam to be applied as plaster on wall to make a proper base for painting is as follows —First crush the bricks into powder

I The reading in verse 42 is sthanam to trayodasa. These sthans however are to be distinguished from the 9 basic sthanas described in verses 1 to 32. In verse 40 we find the reading sthanam bahusamsthatvad and in verse 43 we find the reading karmanyetam sarvan namesamsthanato Nepa. So it appears that the correct reading in verse 42 might have been samsthanam trayodasa.

² The reading Ryvayata is amended here

³ स्वक् छचे ॥ ३-२९४ अनिधाननिन्तामणि ।

These bricks according to one reading are of three kinds (triprakāra) We are, however, not told what these three kinds are! According to another reading, (cītrakāresṭaka) they are painter's bricks. What are these painter's bricks? Are we to take them as tabloids or what are called goṭī in Gujarati?

In this powder of bricks, one has to add to it clay-powder in proportion of one to three the brick powder. Then one has to put in it in equal proportion guggula-(gum), madhucchişta (bees' wax), kundaruka, guda, (molasses), kusumbha with oil. Mix with this powder of lime burnt in fire in the proportion of one to three (tribbuga) Add to this, the pulp of bilia in two parts and put in it the black powder of touch stone. Add to this, sand as much as require. Fill this with water of the bark of picchila. Keep this loam for a month's time. After it has become pliant (in the course of a month), take it out carefully, rub the wall and smear it with the loam and allow it to dry. The plaster (leps) should be glossy (ślaksana), well fixed, even (sama) and should not be depressed or elevated The plaster should neither be too thick nor too thin. When the wall thus plastered becomes dry and is unpolished it should be polished or smoothened with chy adding juice of sarp in it and a proportion of oil (according to Ms. C without oil) Then one should again polish it with black collyrium. Then sprinkle milk repeatedly on it and rub it carefully. In this way the wall becomes dry. Such a wall (or rather the plaster on the wall) would not pensh for hundred years

Manibhumis -

The various manibhumis (lit surfaces having the cristal like brightness) should be prepared in this way with two variakas ie two types of smear (as described above). If we, however, take the meaning of variakas as merely pigments, there should be two kinds of pigments on the wall on which the paintings are to be drawn. Manibhūmis are called citravapusā. If we take the word citravapusā as nominative plural, it would mean having wonderfully beautiful. If we take it as instrumental singular, it would mean the manibhūmis should be accompanied by proper background for pictures.

Instructions regarding time and ritual of painting -

Some instructions as to where and how a painter should start his work are also given. He has to start his work in the Citri Nakşatra. He should practise abstinence before starting his work. He should wear a white dress, pay respect to the Brahmins and get their blessings. Then he should get the blessings of the teachers who are masters in the art according to precedence then facing the east and meditating on the deity, he should start his painting. He should draw the picture with white, derk yellow or reddish brown (kadrava) and with black brushes in due order. Then he should place it on a proportionate position or background or frame (sthanaka). Then he should apply colour in accordance

with the sthana. The colour of the skin would be either dark or white. We are told here that this subject has been discussed previously in detail. This seems to refer to adhyaya 27 of aharyabhinaya.

Chavis or colours of skin based upon primary colours .—

While discussing the subject of āhāryābhinaya (ad 27) I reserved the topic of angaracanā in order to give a connected account I will, therefore, take up the Ślokas 8 to 16 of adhyāya 27 along with the Ślokas 17 to 24 of this adhyāya Primary Colours —

According to verse 8 of adhyāya 27, the primary colours are śveta-white, Rakta-red, Pita-yellow, Krsna-black and Harita-green. While according to verse 16 of this adhyāya (ad 40) white, yellow, vilomatah (produced from viloma (? mī) ie emblic (myrobalan āmalaki), black, and blue are primary colours. In this, sveta, pita and krsna are common. Rakta and Harita of the former are replaced in the latter by colours produced from Viloma and Nīla. Thus here is some discrepancy or rather a difference in the tradition of primary colours.

The number of ruxed colours by mixing one, two or three would be countless or according to verse 16 of Adhyāya 40 would be hundreds and hundreds

Colour of the skin -

The word chavī is to be taken to mean the colour of the skin or of a surface in the case of paintings. In the case of āharyābhinaya, it is, of course, the colour on the slin of the actor

The two principal colours for painting the skin are dark (syāma) or white (gaura), according to this, the skin colour (chavi) is of two kinds—dark and white—The white colour on the skin would be of five kinds and the black of twelve kinds

The five types of white are gold like white (Rukma), ivory like white (Dantagauri), white like the split sandal (sphutacandanagauri), autumn cloud like white (saradghana), and autumn moon like white (candraka gauri). The twelve varieties of dark are reddish dark (raktasyāma), dark like the Mudga pulse (Mudgasyāma), dark like the dūrvā grass (durvānkurasyama), pale dark (pāndusyāma), greenish dark (Haritasyāmā), yellowish dark (pitasyamā), dark like priyangu creeper (priyangusyāmā), dark like a monkey's face (kapisyamā), dark like a blue lotus (Nīlotpalasyāmā), dark like the casa bird (casa syāmā), dark like red lotus (Raktotpalasyāmā) and dark like cloud (ghanasyāmā)

They should be manifested by pigments appropriate to the material (Dravya) The mixture of colour enhances the beauty (verses 8 to 16, Ad 27)

Mixing of colours -

The mixing of colours with reference to some of the above mentioned chavis is given in this adhyaya (40, verses 17 to 24)

The mixture of Nila and Pita gives Palasa Palasa would be either suddhapure, when white predominates or one in which Nila would predominate Nila bhyadhika

According to the desired colour of the skin, one of the colours would predominate. Thus the mixing would be of three types. One in which white predominates, second in which it is subordinated and third in which it is in equal proportion. It would be thus variegated by making one of them a binding substance. With it one can have the following colours of the skin. Dūrvān kurapita, kapithaharita, and Mudgasyama. Similarly by making Nīla the astringent with pāndura the subsidiary in either equal, smaller or greater proportion, one can have the colour of the skin having the hue of Nīlotpala, Māsa (? Cisa) etc. By proper mixture of other colours, one can have beautiful colour of the skin. By combining white lac with a coating of lac and resin one would get Raktotpalasyama colour of the skin. This can also be variegated in many hues.

Making of Pigments -

The Rangadravyas or substances from which pigments are made, are gold (kanaka) Silver (Rajata), Copper (Tamra), Mica (Abhraka), Ultramarine lapis (Rijavarta), Red lead (Sindura), Lead (Trapu) Yellow orpiment (Hatitāla), Lime (Sudhā) Lac (Lākṣa) Vermilion (Hingulaka) Indigo (Nīla) and many others

In every country, there are many such substances They should be manufactured with an astringent (stambhanayutah) The irons or metals should be either thinned into leaves (patraviny isa) or they should be made liquid (Rasakriya) (chemical treatment)

The iron and mica can be turned into liquids by putting them in a narrow vessel. Thus the iron or metals become fit for painting. The mica can be turned into liquid bitumen and bellium. The decoction of hide can be made by making an is ringent of the resin of Bakula. In all colours the juice of sindura plant is desired or necessary.

A picture astringed with b g tail (? brush) or hair (of tail) fastened on a tablet dipped in the resin of Matanga and durva cannot be destroyed eventhough

I have amended the reading of the text thus loham samkata vinyastamabhrakam e avanam bhivet

CITRASUTRA 119

washed with water It would stand for many years (Or a picture astringed with the long stalks of 'udāra (a kind of corn with long stalks) and dipped in the resin of Mātanga and dūrvā cannot be destroyed eventhough washed with water It would stand for many years)

The classification of Painting

In this section are described topics which have not only a historical value but are of general interest in the domain of art

The first topic treated in Adhyāya 41 is the classification of different types of Citra. This topic owing to its unusual importance, has in addition to Dr Stella Kramrisch attracted the attention of other scholars also. Dr. Coomaraswamy has translated the whole of this Adhyāya in the Journal of American Oriental Society, Vols. 51-52, years 1931-32. In his article on Nagara painting in Rupam (nos. 37 & 40) he has again treated the problem of classification of Painting. Dr. K. P. Jayaswal has also discussed this topic in his article on 'A Hindu text on Painting' in the Journal of Bihar and Orissa Research Society, Vol. IX, (1923) Part I, pages 30 to 39. Dr. V. Raghavan in his article on 'some Sanskrit texts on Painting' in Indian Historical Quarterly Vol. IX (1933.) Page 898 has tried to refute the interpretations of Dr. Coomaraswamy. It is therefore necessary to consider here the views of these eminent scholars and see how far they help us in understanding this very interesting problem.

The first four verses² of this Adhyāya describe four types of painting These are Satya, Vainika, Nagara and Misra

We have to find out in which lexicon the word udara is used in the sense of corn as mentioned by willam Moniers in Sanskrit English Dictionary. There is however, a word uddala or uddalaka means Gundo or Gundi. It also means a wild corn called Jangali Fodro and in latin cordia mixo no-Boraginaceae. (see Sanskrit Sahityaman Vanaspati p 81 by Bapalal Vaidya.

Dr Stella kramrisch and †Dr A K. Coomaraswamy translate these verses as follows —
 Whatever painting bears a resemblance to this earth, with proper proportion tall in height, with a nice body, round and beautiful is called true to life

That is called Vainika which is rich in the display of postures maintaining strict proportions, placed in an exactly square field, not phlegmatic, not very long and well finished. That painting should be known as Nagara, which is round, with firm and well developed limbs with scartly garlands and ornaments. The misra derives its name from being composed of the three categories " p 41

t" Painting that represents any of the worlds (Kiñcidlokasadrsyam) that is elongated and has ideal proportion (pramāna) that is delicate (Sukumara) and has a goodly background (Subhūmika) is called pure or sacred (Satya)

Painting that fully fills a squares field, not elongated, without superfluities of form (Nolvanakti) and rich in ideal proportion and in poses (Pramana sthanalambhādhya) is called Lyrical (Vannaka)

Painting that closely covers every part of a circular field (drdhopacitasarvangavariulam), without exaggeration of and having but little of garlands or jewels, is known as Urban or secular (Nagara)

Painting is called Mixed (Misra), when there is a combination of these kinds "

The verses may be translated as follows —

"Citra is said to be of four types Satya, Vainika, Nagara and Misra These are described thus —

Whatever (yatkincid) painting depicts semblance of the world (lokasadrsyam Citram) is called Satya. It is elongated (dirghangam), well proportioned (Sapramanam), delicate (Sul-umram), and has a proper background (Subhumikam)

That is to be called Vainika which is four sided (Chaturasram), well finished (Susampurnam), not long (nadirghängam), and not having excess vely bright figures (nolvanakrtim) and having proper measurements (pramanam) and rich in the attainment of postures (sthanalambhādhyam)

That Citra is to be known as Nāgara, all parts of which are firmly set (drdhopacitasarvāngam), circular (vartulam), not thickly bright (na ghanolvanam) and showing just a few (svalpa) garlands and ornaments

The Miśra is so called because it is a mixture of all these three (styles)"

About the exact meaning of the three types, there is a great difference of opinion and so also about the interpretation of the verses translated above. As Dr. Coomaraswamy says 'The explanation given in the text is regretably brief and in part obscure.' He tries to improve upon the translation of Dr. Stella kramrisch, which he regards as unsatisfactory with the aid from 'the root meanings of the terms and other associations and from our knowledge of actual painting.' This is undoubtedly the proper method of interpreting this ancient text. However, 'Dr. V. Raghvan finds fault with the interpretation of Dr. Coomaraswamy and says.' None of the first three kinds has been correctly or adequately explained by Dr. Coomaraswamy.' His criticism, however is negative. He is not able to suggest any better interpretation and satisfies himself with the remark that 'My impress on on reading the V. D. is that even to its author the exact import of these names was not clear.'

It is comparatively easy to interpret the word, 'Satya' as true to life as given by Dr Stella Kramrisch Dr Coomaraswamy, however, translates it as pure or sacred and calls it Sattvika or Spiritual. It is not possible to follow Dr Coomaraswamy in this interpretation as V Raghavan says 'Satya cannot be interpreted as a sattvika picture. One can as well derive it from sat and say it is the picture of the Upanisadic Brahman'

The term Vainika is interpreted both by Dr. Stella Kramrisch and Dr. Coomaraswamy as connected with Vina or 'lyre' and both of them call it lyrical

The word Nagara is translated literally by Dr Kramrisch 'as of the city' ie 'of common men' Dr Coomaraswamy renders it as Urban or secular

probably differentiating it from sacred, his interpretaion of Satya. This distinction of sacred and secular however seems for ancient India rather anachronistic

Dr Coomaraswamv connects this word Nagara with the word Nagaraka mentioned in the Kāmasutra of Vatsyāyana and the reference to painting in the same work. He regards the Nagara Citra as the work of amateurs on panels to be distinguished from the wall paintings of the professionals. It is difficult to say how far this interpretation is historically correct. V. Raghavan, however, rejects it, he even refuses to take any suggestion from the word Nāgara as used for a particular style of architecture. This, however, as we shall see is not justified.

Now I propose to submit my interpretation of these four varieties or rather of two. The Satya variety requires no explanation. In fact, it is a sort of general type because it has been repeatedly emphasised in V. D. that the main business of painting is to produce Sādrsya i.e. semblance. The Misra variety also requires no explanation. The real difficulty is about Vainika and Nagara varieties. I suggest that these names indicate a geographical connection. It is welknown that different styles in poetry and drampare known by geographical terms. Dandin, for example, refers to Vaidarbha, and Gaudiya as styles of speech (giram mārgah lit the pathways of speech). These are the two principal Kāvya Ritis. Later on, we find six styles of poetry (kāvya Ritis) mentioned in works on poetics. These are Vidarbhi, Gaudi, Pañcāli, Āvantika Lātiya and Magadhi.

Rajasekhara³ also explains Vrttis, Pravrttis and Ritis by reference to different parts of India. The Natyasāstra refers to the five Pravrttis namely avanti, dāksinatya, ''audhramagadhi', Pañcāli and Magadhi. These are, also geographical names. The names of the 4 vrttis given in NS are Bharati sattvati kaisiki and ārabhati. These names seem to be more or less racial (Ad 6 Slo 26 and 24 C S S.). This is sufficient to show that poetic styles bore geographical names, though they are distinguished by literary characteristics. These literary features might have originated in the particular parts of the country and in course of time they were differentiated throughout the country by their literary characteristics though con timuing to bear the names of their original places. They were just used by writers of the whole of India having respective inclinations towards particular styles. The same can be said to hold good about the styles of architecture viz. Dravida, s

अस्त्यनेको गिरा मार्ग स्क्ष्मभेद परस्परम् । क्रिनको विदर्भगौडीयौ वर्ष्यते प्रस्कुटान्तरी ॥ ४० ॥अ० १ K D

वैदर्भी साथ पाञ्चाली गोडीय।वन्तिमा तथा । लाडीया गागधी चती पोढा रीतिर्मिगयते ॥ २२९ सरस्वतीक्ष्ठाभरण ।

³ v 16 वारुगमीमासा अ॰ ३ pp 8-10 GOS 3rd edition 1934

Nagara and Vesara ¹ Though these are geographical names yet as in the case of poetry so in this case the styles were followed throughout the country according to the inclinations of the builders. This is the reason why the attempts of scholars to locate the different styles of architecture in geographical areas indicated by their names fail

In my opinion the same thing holds good about our two styles of painting Nagara and Vannika

The word Nagara is much discussed by writers on architecture because it is mentioned as a particular type in works on Vastu and Silpa. The geographical area that is alloted to Nagara is roughly speaking northern India. The word Nagara is grammatically to be derived from the word Nagara, the meaning being pertaining to a Nagara or characterised by an urban way. In Indian tradition seven such Nagaras are known. One of these is Mathura. I am therefore inclined to think that the term Nagara as applied to Silpa is connected with Mathura. A student of Indian art does not require to be told about the importance of Mathura as a great centre of Indian plastic art

| 1 Nāgara Drav | da and Vesara by K R | P sharot | |
|---------------|------------------------------------|---------------------------------------|---------------------------------|
| Text | Nagara | Vesara | Drav da |
| Kāmikagama | From the Himalayas to the Vindhyas | From the Vindhyas to the Kṛṣṇā | From the Kṛṣṇa to the cape |
| Paddhat | | From the Agastyas to the Vindhyas | Dravida country |
| Vivarana | | From the Vindhyas to the Agastyas | From the Agastyas to the cape |
| Silpa ratna | | dio rigatifas | an capt |
| I | | Between the Agastyas and the Vindhyas | Drāvida country |
| П | | From the Kṛṣṇā to the cape. | From the Vindhyas to the Krsnä |
| Kāšyapošilpa | | From the Kṛṣṇā to the cape. | Fromé the Vandhyas to the Kṛṣṇā |
| 5. 7.3 0 | Salama Val W7 Dart I | | |

See Ind an Culture Vol VI Part I

सामते स्यादयोध्याया कोसलान दिनीति च ॥ ५ द्वारका तु द्वारवती मधुरा तु मधुपिना । मधुरा च मधुपना कौरो तु स्याप्तत्रास्थली ॥ ६ चाराणसी शिवउरी चारणास्यपि काशिका । मिथित्र पूर्विदेहेषु च यात्रको महोदय ॥ ७ दक्तिनी द्वारितनपुरं नागास द्वारितनपुरम् ।

पुराध्याय

p 159 वैज्ञाती of यादवशकाश edited by G Oppert 1893

3 See Dr A K Coomaraswamy s—H story of Indian and Indones an Art Pages 57 to 68 etc.
Dr V S Agrawala s—Gupta Art P 1 etc.

Vincent Sm th s—"A History of fine Art in India and Ceylon 1930 Pages 39 to 46 etc.

Modern scholars are inclined to connect the word Nagara with the Naga race. The Nagas were well known as architects and sculptors in ancient Indian tradition. Rājašekhara mentions Nāgadvīpa as one of the nine Dvīpas of Bhāratavarsa. This2 Nāgadvīpa is placed in the western part of India. This location would agree very well with the region round about Mathura. In the opinion of Dr. Smith, Dr. Coomaraswamy and Sir John Marshall it was the art of Mathura spread not only throughout India but even to the far east. Naturally with the spread of style its name also would circulate on the analogy of literary arts. It is, however, difficult at this stage to know definitely the artistic characteristics of the Nagara variety. If we accept the view of those scholars who think that the styles of architecture are more to be distinguished by the shape of the' Sikharas than anything else, we may say that the Sikharas of Nagara architecture are curvilinear3 or approximating circular as distinguished from the rectilinear of the Dravida type. One of the characteristics of Nagara Citra given in our text is that it is Vartula or circular. I am, therefore inclined to connect this Nagara Citra with Nagara architecture in this particular aspect Broadly speaking, it is the northern variety that is characterized by circular forms

Vainika is a little more difficult to explain. It can be grammatically explained as follows:—Venāyām bhavah Vainikah i bhāvārthe thak thasyekah i It would mean born in or coming from Venā

Now what is Venā? Following the geographical line of inquiry we find that Venā is a name of river in Dakṣiṇāpatha⁴ and Venātaṭa⁵ is the name of a city in Ābhīra Deśa, which is also in Dakṣiṇāpatha On the strength of this identification we can explain Vainika as a style of painting current in the regions round about Venā or in the city of Venātaṭa and consequently equate it with the Drāviḍa style.

I See Kāvyamimānsā, Page 92 (G.O.S.)

² See Kāvyamımānsā, Page 95 (GOS)

³ Indian Culture-Vol. VIII Years 1941-42 Page 186.

⁴ Rājasekhara, in his Kāvyamimāmsā mentions Veņā as one of the rivers of Dakşināpatha (Pages 93, 94, GOS)

It is a tributary of the river Kṛṣṇā, which is called Kṛṣṇavenā after the confluence. (See Appendix 1 to K M Pages 309, 287 G O S) See also for the identification of Varnā with Kṛṣṇa or Venā Page 307 of the same)

Anuyogadyara, a Jain canonical work mentions Bennāyada (e Venātata as a city in Ābhīra country lying about the banks of the river Venā Ābhīra is always referred to as a region of Dakṣiṇāpatha in Jain Literature

⁽See Anuyogadvāra Sūtra Page 149). Āgamodaya Samiti edition Compare

आमीरदेशोऽचलपुरासने कन्नावैन्नानयोर्भध्ये बहाद्वीपे पद्यशती तापसानामभृत् । (Page 513) The Commentary सुबोधिका on कन्पेन्त्र by विनयविजय उपाध्याय.

This equation receives corroboration from a stylistic feature common both to Drāvida Prāsādas and Vainika Citra. It is well known that the Šikharas of Drāvida architecture are rectilinear or square in shape! while according to our text Vainika Citra is Caturasra.

Thus on the strength of geographical identification—as well as on that of similarity of shape, I propose the theory that Nāgara Citra and Vainika Citra are varieties of painting similar to the Nāgara and the Drāvida varieties of Architecture

Thus Satya Citra should mean realistic painting emphasising semblance with reality, Nagara indicating its relation with—Nagara most probably Mathura and prevalent in—Uttarapatha—should mean painting in a circular form and Vainika indicating its relation with the city of Venatata or the region round about that river and prevalent in Daksinapatha should mean painting in rectangular form

In addition to the classification discussed above, there is another classification of painting² into Uttama Madhyama and Adhama. This is based upon

गुत्रमाण तथा विद्यमविद्य भावचित्रसम् । रसधूलिगत श्रीच मानसोहामपुरतकः ॥ ९०४ अ १ दिशति ३ मानसोहास Vol II G O S

The meaning of Rasadhuligatam probably is that these three types should be drawn either with liquid colours or with powdered colours. He mentions Dhulicitra also separately and defines it as a painting with very high colours.

The other three varieties which seem to refer to style are more interesting. After saying that the innumerable creatures cannot be described and advising that they should be printed according to their respective Rupa—

तत्तद्यानुसारेण लेखनीयानि चित्रकः। ९००

he defines yiddha as a picture in which the semblance is painted as if it were an image reflected in a mirror

सादृश्य लिट्यत यमु दर्गणे प्रतिविम्बवन् ॥ ९०० अ १ विंशति ३ तिक्षित्रं विद्धानित्याहुर्विश्वममीदयो युषा । ९०१

Aviddha is defined thus—a mere sketch drawn with the words. I am drawing easually and which is painted without a set purpose is known as Aviddha—

आकरिमकालस्वामीति यदनुद्दियं लिख्यतः ॥ ९०१ व १ विशति ३ आकारमात्रसम्पन्ने सद्यिद्धमिति स्मृतग् । ९०२

I Indian Culture Vol VIII Page 188 Year 1941-42
See also--A study on Vastuvidya—Tarapada Bhattacharya Page 160

² The subject of classification of Citra is to be found in other works dealing with Citra Somesvara in his Manasoliasa known also as Abhilasstarthaeintamani divides Citra into Viddha Aviddha and Bhavaeitra

CITRASUTRA 125

two principles. One is referred to in verse 37 of Ad. 39 and is based upon the principle of pramānaguna which might mean either the quality of proportion or proportion and technical qualities of Citra (Citraguna).

In adhyāya 42, verse 82 it is based upon vartanā. The one depicting ārdra is called Uttama, Suska as Madhyama and Suskārdra as adhama.

Dr. Kramrisch interprets the three Vartanās as three methods of producing light and shade. The word Patrā is explained by her as crossing lines. In place of Hairika Dr. Kramrisch takes the reading Airika and translates it as stumping Bindujā is explained as created out of dots

Modes of applying Paint (Vartana)

Ad. 41 is called Rangavartanā. Vartanā is said to be of three kinds: (1) Patrajā, (2) Hairikajā or āhairikajā or according to Mss. B.C.V āhaivikajā and (3) Bindujā.

Patravartanā is made with lines having the shape of Patra. Hairikavartanā is said to be very minute (sūksma) and Binduvartanā is formed with a styptic (stambhana).

Bhâvacitra is defined as that type of painting where Rasa such as Singâra etc. is revealed to a person by mere observation, and which creates wonder in his mind,

शृद्धारादिरसो यत्र दर्शनादेव गम्यते ॥ ९०२ भावचित्र तदाख्यातं चित्तकोतुककारकम् । ९०३

Stikumāra in Adhyāya 46 of his Silparatna while discussing Citralakşana defines Citra as follows—'Whatever moveable and immoveable things are in this world, when represented according to their respective nature are to be called Citra—Stikumāra gives also two types of classifications of Citra—In one he gives citra, ardhacitra and citrābhāsa—This classification is based on the material which is used for representation—Citra and Ardha Citra are to be made of either clay, Stucco wood, stone, metals or bricks and Citrābhāsa is to be drawn on walls polished with Cürnam (stucco) with proper colours—So following Dr. Coomaraswami we can translate these three varieties as sculpture, relief and painting—The other classification given at the end of the Adhyāya divides citra into Rasa—Citra, Dhūli Citra and Citra

Dhūli Citra is described as one made with powdered colours and to be drawn on the ground as a temporary picture

Citra is described as one where the representation is like an image reflected in a mirror and not merely a sketch

The text defining Rasa Citra is incomplete. From the second line of Sloka 146, we learn 'where Rasa such as Spigara etc can be revealed by mere observation.' The remaining part of the text must surely be mentioning the word Rasa Citra. Dr. V. Raghvan, however, takes Rasa Citra to mean a painting done with liquid colours. A companson of viddha, aviddha, bhāvacitra and dhūlicitra mentioned by Somesvara with this classification makes the meaning clear. Dhūlicitra is identical in both; while viddha can be equated with Citra and aviddha can be taken as suggested by saying that mere sketching is not enough for Citra. While bhāvacitra is to be equated with Rasacitra.

Here we have to consider first what is the meaning of variana and secondly what do the words Patra, Hairika and Bladd mean.

The word Vartanā has been taken by Dr. Stella Kramrisch to mean 'light and shade' and by Dr. A. K. Coomaraswamy to mean 'shading'. These scholars have not explained how the word Vartanā comes to mean 'light and shade' or 'Shading'. It is therefore necessary to discuss the meaning of the word Vartanā in this context:

The word vartikā is more familiar to the students of Sanskrit literature. For example, it is used by Kălidāsa in Sākuntala¹ (Act VI after verse 15, page 210) vartikām tāvad ānaya, also by Bhavabhūti in Mālatimādhava (Act I) tadupanaya, citraphalakam citravartikāsca. It is also used in this sense in our text (Ad. 40, verse 13).

The word vartikā is given in Amarakośa as a synonym of a particular kind of bird probably a quail. Hemacandra in his Abhidhāna Cintāmaņi (Kā. 4 ślo. 116) takes vartaka to mean a kind of metal. In his Anekārtha satūgraha, however, he gives two meanings of the word vartaka. (1) a hoof of a horse and (2) a kind of a bird. Medini also mentions vartaka and vartaki in these senses. The old lexicographers do not seem to mention the word vartikā in the sense of a paint brush. Their word for it is tūlikā; so also Medini.

It must be for this reason that Monier Williams, Macdonell and other modern lexicographers regard vartikā as probably a wrong reading for varnikā, also because Jagamangalā on K. S mentions varnikā as one of the six limbs of painting (Adı I Adh 3-5-16, p. 33 C. S. S.). Rāghavabhaṭṭa, however, accepts the reading vartikā and explains it as citrapate lepavišeṣah and quotes Ajaya as follows—paṭalepe pakṣibhede tūlikāyām ca vartikā.

It is however, not necessary to take vartikā as a wrong reading for varnikā; because it can be explained either as a quill or a brush made of a feather of vartikā—a quail, or better as equivalent to varti, which means lepa to be applied by natura (compare Amarakośa—gātrānulepanī varti (16-133), Hemacandra remarks vartate vartih—natādau prasīddhāh gātrānulepanī (kā 3, ślo. 303)

The word vartanā as such, however, is not given in the lexicons. Monier Williams regards vartanā as feminine of vartana (n.)=the act of turning or rolling on or moving forward about (trans. and intrans). This meaning turning or rolling on or moving forward the brush seems to be the meaning in our

^{1 8}th edition, N. S S 1929

² Tülikā tūla šayyā syādālekhyasya calekhani Anekārtha samgraha का. ३. हो. ८९.

³ Tolikā kūrcīkāyām ca sayyopakaraņe'pi ca šioka 102 P. 9 (cf. Abhilasitārtha cintāmani Vartim krīvā tayā ickhyam vartikā nāma sā bhavet P. 196, verse 153, Mysore 1926

٠,

text: The word vartanā therefore in our text bears in the words of Rāghavabhaṭṭa the meaning of lepaviśeṣaḥ, what Ajaya calls paṭalepaḥ. It seems to me that in earlier terminology the word vartanā was confined to lepaviśeṣaḥ and vartikā to a brush or anything with which the paint was applied and when Vartanā went out of use both the meanings were given to Vartikā. This meaning of 'Lepa' agrees well also with the colophon of Ad 41 which is called Rangavartanā.

Taking the meaning of the word Vartanā as smearing or applying paint (Rangavartanā) let us now consider the meaning of the words Patrajā, Hairikajā and Bindujā. Dr. Stella Kramrisch explains these three varieties of Vartanā as follows:—

'Methods of producing light and shade are said to be three:—(1) crossing lines (lit. lines in the form of leaves—patrajā, (2) by stumping (airika)¹ and (3) by dots (bindujā). The first method (of shading) is called (patraja) on account of lines in the shape of leaves. The airika method is called so because it is said to be very fine. The binduja method is called so from the restrained (i.e. not flowing) handling of the brush.

Dr. A K. Coomaraswamy explains the three varieties as follows:—
'The leaf shading (Patrā-vartanā) is done with lines (rekhā) like those on a leaf; that which is very faint (sūkṣma) is āhairikā—vartanā while that done with an upright (stambḥānā yukfā) brush is dot—shading (Bindu-Vartanā)'.

From the description of the three kinds of Vartanā in verses 5, 6, 7 (Ad. 41) it becomes clear that the words Patrā, Hairika and Bindu suggest the different ways of applying colour. The word Patra ordinarily means a leaf. But leaf of which tree? This is not clear. When the word Patra alone is used, it means the Tamāla tree. So we may take here the word Patra to mean a leaf of a Tamāla tree. Still there remains a difficulty. Whether the lines of a paint are to be taken leafy in shape or whether they are like lines on the leaf as Dr. A. K. Coomaraswamy takes it. Whichever meaning we take the purport seems to be that when the paint is applied in wavy lines, it was called Patravartanā.

Now let us take the second variety. The reading in our text is Patrahairika which would give ahairika as a second variety. Mss. B.C.V. give the reading ahaivika. Dr. Stella Kramrisch, however, seems to amend the reading Hairika into airika. But this amendation makes the line of a verse short by one syllable. I have amended the reading as Patrahairika. I derive the word hairika from

¹ Dr. Kramrisch takes the reading airika in place of Hairika. This, however, makes one syllable less in the metre.

Hira (m)¹ or Hirā meaning a band, a strip or a fillet or a vein or artery. So hairikavartanā would mean applying paint with thin bands

The word Bindu ordinarily would mean a dot But that meaning cannot be taken here because in verse 7 (Ad 41) Bindurekhatva i e dotty lines are regarded as defects in painting. Therefore, the word Bindu should be taken in accordance, with the other two words as the name of a tree. Hemacandra in his Nighantu-sesa gives the word Bindu in the synonym of Ingudi. Its leaves have the shape of an egg. Its oil is famous for stickiness (compare Sakuntala etc. and Sanskita sahityaman vanaspati by Bāpālal Vaidya). So Binduja vartinā would mean applying paint with lines in the form of the leaves of Ingudi. This identification of Bindu with Ingudi has an additional justification because its oil is well known for its stickiness and therefore would serve as an astringent (stambhanāyukta). It is likely that in this variety of Vartanā the oil of Ingudi might have been used

Critical analysis of Citra-

Another important contribution of Citrasūtra is its treatment of Gunas, Doşas, Bhusanas and Rasas of Citra. This may be on the analogy of Kāvya-sāstra whose main topics are the Gunas, Doşas, Alamkāras and Rasas. Verses 7 and 8 (Ad 41) and verses 17, 18 (Ad 43) mention the main defects or Doşas to be avoided in a Citra.

Verses 7 and 8 (Ad 41) mention the following —(1) Daurbalya-feebleness, (2) Bindurekhatva dotty lines, (3) avibhaktatva lack of distinctness, (4) Brhadgandatva-large cheeks, (5) Brhadosthatva-large lips, (6) Brhannetratvalarge eyes, (7) Samviruddhatva-contrariness to facts and (8) manavakarata, mere a human form Verses 17 and 18 (Ad 43) mention (1) Daurbalya, (2) Sthülarekhatva-coarse or thickish line, (3) Avibhaktatva, (4) Brhadgandatva, (5) Brhadosthatva, (6) Brhannetratva, (7) Vakrarekhatva crooked line and (8) varnanām samkara mixture of colours (1e confusion of colours) We find here, in this list, Sthularekhatva is substituted for Bindurekhatva meaning being probably the same Vakrarekhatva is in place of Samviruddhatva and Varnasamkara in place of mānavakāratā, probably varnasamkara and samviruddhatva are identical and vakrarekhatva and mānavakāratā may ultimately convey the same meaning. The meaning of manavakāratā is not quite clear Why should a human form be regarded as a defect?

Dr Stella Kramrisch and Dr A K Coomarswamy translate the lines as follows -

'Indistinct, uneven and inarticulate delineation, representation of the human figure with lips (too) thick, eyes and testicles (too) hig and unrestrained

¹ If we, however, take Hira or Hira = gmelina Arborea the meaning would be lines in the shape of leaves of gmelina Arborea

CITRASU1RA 129

(in its movements and actions)—such are the defects of chitra (pictorial art) (Page 52, Viṣnudharmottara) Weakness of dots or lines, absence of clear definition (avibhaktatva), the representation of human figures (mānavākāratā), with testicles, lips or eyes too large or anything exaggerated are said to be the faults (doṣa) of painting' (Journal of the American Oriental Society, No 52, 1932 P 14 A K COOMARASWAMY)

In order to accept this interpretation, we will have to change the reading mānavākāratā ceti into mānavākāratāyām ca

If we, however, take the clue from vakrarekhatva, the meaning might be that merely drawing a curve line in the form of a human figure is no art. This is supported by the words ākaramātrakam sattve in the description of aviddha variety of painting in Manasollāsa Ad. 1, Vimsatih 3, verse 902 (GOS) and nālamākāramātrakam in Silparatna Ad. 46, verse 146. The point emphasized in both the works is that merely drawing a form is no art. Our text adds the word mānava which would mean that merely drawing a human figure with a zigzag line is really a defect. Mānasollasa gives two kinds of painting—one called viddha and the other aviddha. The viddha is one where the sādrsya or semblance is like a reflection in a mirror. This is the approved type. When a painter without any purpose just draws something without any clear notion as to what he wants to do and just draws a mere form of being is called aviddha which is not approved type. This idea is more clearly stated in Śilparatna, where it is said that that is a citra or painting in which semblance is like a reflection in a mirror, mere form is not enough

Coming to the topic of Gunas or merits of painting, verse 9 (Ad 41) gives the following —

Sthāna-position, pramāna-proportionate measurement, bhulamba-perpendicular reaching to the ground, Madhuratva, sweetness, vibhaktatā-distinctness, sādrŝva-semblance, ksaya-diminution and vṛddhi-augmentation. The same list is given more correctly in verse 19 (Ad 43)

Verse 10 (Ad 41) analyses the four elements of painting namely rekhā, vartanā, bhūsana and varna Rekhā² may be interpreted as line or better the harmony of lines in a figure Vartanā according to what is said above would mean smearing or application of colour. It implies probably proficiency in depicting emotions through brush work. Varna means, of course, colour. It might imply proficiency in harmonizing the colour. How bhūsana should be

I Nalamakaramatrakam

² अभिनयदर्गण-जव स्थिरत्व रेखा च भ्रमरीदृष्टिरश्रम ॥ २७ संगीतरत्नाकर शिरोनेश्वकरारीनामद्वानां मेलने सति। वायरिथतिर्मनोलेश्वहारी रेगा प्रमीतिना॥ अ ७. १२२२ १ 17

interpreted is not clear, literally, it means decoration. Line 2 of verse 10 (Ad 41) according to the reading adopted in the text means one should know what is bhusana in citrakarma ie acts of printing. If we, however, adopt the reading of MSS A and F citrakarmaiva bhūsanā, it would mean that the act of painting is itself a decoration. This however, gives no definite meaning because we cannot say, what is implied by decoration. Does it mean ornaments worn by male and female figures in a picture or does it refer to the decorative parts of a picture such as beautiful borders found in old paintings? These two meanings would be inappropriate here because ordinarily we would have the reading bhusanam and not bhusanam and secondly because in this analysis of general elements reference to particular items in painting such as ornaments worn by human figures or decorative borders would be very clumsy. I therefore, prefer to take the word bhusana in the sense of sobha or saundaryal ie beauty in general. With this meaning citrakarmaiva bhusanā would mean that the act of painting itself is the act of creating beauty.

We learn from verse 11 (Ad 41) as to how these different elements are appreciated by different classes of persons. The teachers or preceptors admire rekha harmony of lines in a figure and the experts variana delineation of emotion (bhava) through brush work. Women want bhuşana decoration or beauty in picture while the ordinary people look for rich colours. Therefore, in painting efforts should be made to include all these elements so that it would be appreciated by all (sarvasya cittagrahanam verse 12)

Objects usually depicted in painting

In painting kings should be drawn like gods. The bodily hair of the kings should be drawn one by one. The sages gandharvas daity as with danavas ministers, brahmins samvatsara, and the family priest should have the measure of the Bhadra type. The sages should have the matted locks of hair and the black antelope skin as upper garment. They should be emaciated but full of

```
अलहारेश्विधेव बहुमिर्यदलङ्कतम् ।
भूपणिरिव विन्यस्तेस्तद्भपणमिनि स्मृतम् ॥ ५ पृ २९९
अलहारेश्विधव बहुमिर्समलदकृतम् ।
भूपगैरिव चित्रार्थेस्तद्भूपणमिति समृतम् ॥ ६ पृ. ३५० Vol II (GOS)
```

¹ The words alamkāra and bhuṣaṇa of bhūṣaṇaṃ syāt alam kriyā—(Amarakośa—kā ? śloka 101 and alaṃkārastu bhūṣaṇah—(Abhidhānacintāmaṇi Ka 3 śloka 313) have more or less an identical meaning. It may be interesting to note the meaning given to the word alamkāra by Vamana with reference to poetry. He says Kāvyaṃ grāhyaṃ alamkarāt Saundaryamalankārah (Kāvyalankārasūtra—Adhi 1 ad 1 sutra 12) Nāṭyaśāstra (Ad 16) refers to bhuṣaṇa or Vibhuṣaṇa as one of the 36 lakṣaṇas. It is defined in two ways as follows.—

CITRASUTRA 131

The gods and the gandharva should be done without crowns but with lustre The brahmins full of brahma lustre should wear white clothes. The crests ministers, sāmyatsara and purohita should be shown with all kinds of ornaments but not with gaudy decorations. They should be done without crowns but with turbans Daityas and Danavas have frowning looks, round eyes and terrific faces Their dress should be arrogant. The vidyadharas should have the measurement of the Bhadra type They should be shown with their wives should wear ornaments and garlands. They should hold swords in the hands They should be shown either on the earth or in the sky. The Kinnaras, snakes and Rāksasas should be of the Mālavya measurement, yaksas of the Rucaka and the chief amongst men of the śaśaka measure. In the representation of the piśācas, dwarfs, hump-backed and pramathas enjoying the earth, there are no rules of measure and form The measurements of the women of all these should be in accordance with their male counter parts Kinnaras are of two types-one having human-faces and equine-bodies and others with human-bodies and equine-Those with equine-faces should be lustrous and wear all types of orna-They should be engaged in singing and playing upon musical instruments Raksasas should be frightening with their hair erect and eyes deformed Nagas should have the form of gods but with snake-hoods. All Yaksas have been described as bearing ornaments The pramathas amongst gods are devoid of any proportionate measurement and so also the pisacas Ganas of the gods should have the faces of different animals and should wear various kinds of dresses and bear various kinds of weapons. They should be engaged in various kinds of sports and activities But the ganas of Vișnu should have identical forms, amongst them they are of four types The ganas of Vasudeva should be sımılar to Vāsudeva, of Samkarsana to Samkarsana, of Pradyumna to Pradyumna and of Aniruddha to Aniruddha They have the dignity of the respective deities and carry their respective arms. They should be respectively dark like the petals of the blue lotus, white as the moon, green like emerald and red like vermillion The courtesans should have the measure of Rucaka Their dress should be glittering and appropriate to Srngara Modest women of noble family should be of the size of Malavya. They should wear ornaments but should not have very showy dress The wives of Daityas, Dānavas, Yaksas and Raksasas should be shown beautiful. Their mothers should be shown in their own forms wives of Pisacas should have the forms of Pisacas Widows should be shown with white hair and white dress and without any kind of ornaments. Kubia-Hunch backed Vamanika dwarfish, and old woman should not be shown beauti-Old Kañcuki should be shown in the retinue of the royal harem

¹ I have adopted the reading of Ms F mananiyamatah karya rupaniyamatastatha verse 17

The vaisya should be of Rucaka size and Sūdra of the sasaka size. They should have their dresses appropriate to their caste. The wives of Daityas etc. should be accompanied with attendant women.

The commander of an army should be shown strong, proud, tall, with strong shoulders, hands and neck, with big head, strong chest, prominent nose and broad chin, with a forehead having three wavy lines and hawk like eyes and with firm hips. Soldiers generally should be painted with frowns on their faces. The foot-soldiers should be done going forth bearing or using weapons. Their dress should be shown somewhat tucked up and their appearance arrogant. The soldiers carrying swords and armours' should have the bodies of Karnijaka type. The good archers and bowmen should have uncovered thighs. Their dress should not be very showy and they should wear shoes.

Elephants, horses etc should be shown according to their descriptions. The elephant-riders should have swarthy complexions. Their hair should be tied in matted locks and they should wear ornaments. The dress of the horse-riders and charioteer should be of the northern type and the dress of the bards should be showy. Their veins should be shown on their throats and eyes should be looking upwards. The town criers should be tawny in colour and with squint-eyed. The staff bearers should be tall and somewhat like the Danavas. In the battle, one should not represent the fighting pairs as tawny or squint-eyed. Their dress should be neither very showy nor very mild. The door-keeper should have the sword hanging on the left and staff (in the hand).

Merchants should wear turbans on their heads. The singers and dancers should be shown in showy dress and engaged in tuning the musical instruments. Respectable persons of towns and villages should have nearly grey hair ie should be shown approaching old age. They should wear white dress and good ornaments. They should have naturally pleasant looks and be courteous and of easy movements. An artisan should be represented as engrossed in his own crafts. Wrestlers should be drawn tall with lofty strong limbs neck and head, with hair hanging downwards and excited.

Bulls, lions and such other animals should be shown as sitted in their proper surroundings

The forms of invisible entities have been described on the analogy of things found in the world. The representations of observable should be made as complete as possible because in painting exact likeness is most important. Men of different country should be shown after knowing their form, dress and colour

I There is no need of amending the reading in verse 34

² If we amend the reading varma into carma, then the meaning would be shield

CITRASUTRA 133

or caste (varna) The seat, the bed, conveyance and dress should be drawn after knowing carefully the country, employment, position and occupation

Rivers should be shown in human form with full pitchers in their hands and their knees should be bent. Their vehicles should also be shown. The beautiful globe of the earth should be shown in a hand of islands. Mountains should be shown with peaks in their hands. Oceans should be shown with vessels containing jewels in the hands. In the halo of seas, water should be shown, The symbols of weapons should be slightly shown on the heads. A pitcher should be shown as a general symbol of (nine) nidhis—treasures, of these Sankha should be shown by a conch and padma by a lotus and of the remaining nidhis each one ic to be executed should be shown distinct and with proper body Rosary (Aksamulā) and a (book) Pustaka should be shown as sign of celestial things.

Now the author takes up the different natural objects such as sky, earth, mountains etc

The sky should be shown colourless and full of birds and the celestial dome should be shown with stars. Earth should be shown with forest-regions and watery regions with their distinguishing traits. A mountain should be shown with assemblages of rocks, peaks, minerals, trees, cataracts and snakes. Forest is to be shown with different kinds of trees birds and beasts of prey. Water is to be represented with innumerable fish and tortoises, with lotus-eyed acquaric animals and with other qualities natural to water.

A city is to be shown with beautiful temples palaces markets, houses and with beautiful boulevards. A village should be shown by a collection of residences with gardens. Fortresses may be shown as placed on good ground with ramparts, watch towers and mounds. Market-places should be shown with articles of merchandise. Places for drinking should be shown with beverages and drinking cups and bustling with people. Gamblers should be shown without the upper garments, the winners amongst them full of joy and the loosers full of grief. Battle-field is to be shown with an army consisting of four parts (elephants, chariots cavalry and infantry) with men engaged in fighting and as covered with blood and the limbs of the dead. A cremation ground should be shown with funeral piles and dead bodies. A road is to be shown with a caravan accompanied by camels and other animals carrying loads.

Night may be represented with moon planets and stars, with people asleep or doing the usual nocturnal things. Thieves also may be shown approaching Earlier part of the night may be indicated by an abhis irik? going to her lover

¹ Verse 56 is obscure I have connected the first line with the second line of verse 55 and taken the following order of words—šesāņam (nidhīnam) kāryasya nidheh avyayah anurupatah sadṛšāḥ sadehaḥ pṛthak karya The second line also about Akṣamalā and Pustaka is not clear It may be that verse 56 pertains also to the nine nidhis

Early morning may be shown with reddish dawn, with a dimming lamp and a crying cock. People should be shown ready for work so also a monkey. The evening can be shown by its red glow and with brahmins engaged in their daily religious practices. Darkness may be indicated with men moving with the touch of the hands. The moon light may be represented with the moon and the blooming of kumuda (lotus) flowers. A step-well should be shown with full of flower dust and covered with heaps of leaves.

Rain should be shown pouring and a man well covered. Shining sun may be shown by creatures suffering from heat. Spring can be shown by the delighted men and women, with blooming vernal trees and bees and cuckoos in abundance. Summer is to be shown by men tired, the creatures gone under the shade, the buffaloes lying in mud and with the ponds dried up. Rainy season is to be shown with tigers and lions gone into the caves, birds lying in trees, clouds hanging down with water and shining with rainbows and flashes of lightenings. Sarad can be shown with the earth covered with ripe corns, trees with fruits and waters with full of lotuses and swans. Hemanta can be shown with vapoury water places, with harvested earth and the ends of horizon full of fog. Sisira should be shown with the horizon covered with snow, with men shivering with cold and with rejoiced crows and elephants.

After observing the world, one should indicate seasons by means of flowers and fruits of trees and by means of ruts of animals

Sentiments (Rasa) and expressions should be depicted as explained before Dance poses discussed before should be appropriately used for depiction

The theme or subject matter (vastu) of painting becomes uttama ie best done when the application of paint is wet (ārdra) of the middle (madhyama) type, when it is dry (šuska) but it is worst (adhama) when it is somewhat wet and somewhat dry. Here the meaning seems to be that the theme or subject matter (vastu) of painting should be painted, when it is all moist or when it is all dry. Best results are achieved in the first mode while tolerable in the second. The third mode does not yield good.

A painting appropriately done in accordance with time country and age is lucky otherwise bad. Thus a painting drawn with Karanas—execution, Kinti—beauty, Vilusa elegance and Rasa sentiments executed by the genius of the well versed artists becomes the real (new) eye (sight) for seeing and fulfils all desire

Citrarasas

While describing the various aspects of painting our text makes reference to rasas several times. Ad 43 discusses this very important topic of Rasa. It

¹ I have adopted the reading of Mss A B and V in slo 82

CITRASUTRA 135

starts with the enumeration of the well-known nine Rasas 112, Šīngāra, Hāsya, Karuna, Vīra, Raudra, Bhayānaka, Bībhatsa, Adbhuta and Śānta These are called Citrarasās probably to distinguish them from Nātyarasas and Kāvyarasas The text proceeds to describe how each of these rasas is expressed in painting

The depiction of that which is beautiful on account of the sweetness of lovely colour, charm and figure expresses Srngara Rasa So also the depiction of dress and the ornaments of man of taste

The depiction of that which is dwarf-like, hunch-backed or somewhat deformed in appearance with a hand contracted without purpose expresses Hāsya Rasa

The delineation of pitiableness seen in begging, separation, desertion, sale, Calamity expresses Karuna rasa

The depiction of harshness, passion, anger, poisoning food for killing expresses Raudra rasa so also the depiction of glamourous weapons and ornaments

The depiction of noble style in such things as bravery accompained by affirmativeness expresses Vira rasa. So also the wonderful look with pride and frown

The depiction of that which is wicked, unpleasing to look at, furious, violent, murderous etc expresses Bhayānaka Rasa

The depiction of cremation ground, forbidding scene and place of execution expresses Bibhatsa Rasa

The depiction of people showing one another, something with subdued horripilation expresses 'Adbhuta Rasa

The depiction of a calm figure, meditation, concentration, yogic posture and a great number of ascetics expresses Santa Rasa

Incidental to the treatment of Rasa there are interesting references as to where particular rasas should be depicted and where not. These remarks seem to embody a tradition which must have a considerable basis in actual practice

Srngāra, Hasya and Sānta should be represented in homes, while the others are prohibited. All the rasas, however, can be depicted in a temple of gods and a temple of kings. In the residential houses of the royal guarters (veṣma) all rasas cannot be painted, but in the assembly halls of the royal quarters, all rasas may be depicted. Barring the royal assembly hall and the temple of gods in no houses should be painted scenes of battle, cremation grounds, pathetic scenes, dead bodies and suffering of misery and ugly and unauspicious things. All those

¹ The meaning of the first line of verse 9 is not at all clear

The word is Nipālaya (lit) It means a place where Kings live. I have taken this word here to refer to the temples in the memory of past kings of Pratimā nājaka. Act III

The place of painting in arts

things which are regarded as auspicious by people such as bulls with Nidhi horns, elephants with Nidhi trunk, (nine) Nidhis, Vidyadharas, sages, Garuda and Hanuman should be generally shown in them

In one's own house the work of painting should not be done by oneself. This seems to be an advice given to the artist

Verses 31 to 35 (Ad 43) refer to other arts of representation which are not included in the art of painting. But our text extends the meaning of the word Citra to include carving and sculpture and we are told that the rules which apply in painting also hold good about these arts. The first is called khātapurva and this is done in Gold Silver and Copper. The word khatapurva (lit.) means that in which digging is done first. The second is called Pratimakarana. This is done in stone, wood and metals. After these two, Pustakarma which is to be done in a similar way is shortly described. This word may be interpreted as modelling.

Modelling is of two types. Ghana and Susira ie solid and hollow. The solid can be made with metals, stones wood and clay. While the hollow can be made with leather, wood and metal. In the leather modelling clay has to be firmly applied. In the same way a picture can be woven in the threads of a cloth. This meaning becomes quite clear if we adopt the reading of Mss. BC & F. Sutre? Vanavidhanena. It may be noted that Vana is one of 64 arts.

Each art is more or less extolled in the course of its treatment but it is only in the case of Citra that we find the statement that Citra excels all arts (verse 38, Ad 43). This may not be taken merely as a conventional glorification but may be regarded as expressing the opinion of the author of this third khanda of V D whoever he or she may be

A fine picture is described in the following words—"The surface is as if glistening and embracing as if coming out to meet the spectator, the sweetness is as if smiling, it looks as if endowed with life." As if to emphasise the same point again, the author says in the next line that is (beautiful) painting, which looks as if breathing (Slo 21, 22, Ad 43)

It is stated that whatever is said in Citrasutra is just mentioning the subject (i.e. very brief account). It would be impossible to discuss this subject at length

¹ Dr Stella Kramrisch translates vastra by canvas But I think, however that this refers to the weaving of figures with the coloured threads of cloth. This process seems to be similar with which is employed by Pajola makers who weave the figures of elephants etc.

² Sücivānakarmani Kāmasutra adhi 1 adhyā 3 sutra 16 The commentary Javamangal3 refers to pustakarma as one of the kalās P 31

³ of The Gujarati idiom băzine vajagavu. This idiom is used when some sight is very effective

CITRASUTRA 137

even in many hundreds of years. Whatever has not been said here, should be taken from the section on dancing and whatever is not said in dancing, is to be taken from Citra. This shows the intimate relationship that existed between Nrtta and Citra in Ancient India. Painting is extolled as the best of all arts' something like Sumeru among mountains. Garuda amongst birds and king amongst people. It is supposed to be very auspicious if installed in a home. It fulfils the main four purposes of human life viz. Dharma, Artha, Kama and Mokşa (verses 36 to 29, Ad. 43)

Marks of good and bad paintings

The ground surface for painting should have well polished space, should be free from gnats and fleas, be bright, pure and well projected

A painting becomes very beautiful, when an expert draws it with glossy, clear, and unoblique³ lines. The dress should be according to the particular country. It should not suffer from want of proportionate measurement and beauty (Sooha)

A painting becomes liable to censure if it suffers from want of proper position and sentiment (rasa) and has an empty look in the eyes of the figure depicted It thus becomes yord of life Those who desire auspiciousness should avoid pictures depicting a figure with defective limbs, strained dispirited and incidence by persons overcome with fear and disease and with dishevelled hair. An intelligent artist should draw what is well understood by him. He should never draw anything which he does not know. A painting done by the experts, well versed in Sastras brings prosperity and removes adversity. A painting purifies and removes anxiety and brings forth prosperity and causes unequalled and pure delight. kills the bad dreams and pleases the house-deity. The place where Citra is placed, does not look empty. He who paints waves, flames, smoke and the banner according to the movement of the wind is a great painter. He verily knows painting who can depict a sleeping person with life movement and dead person void of it (ie who can show a clear distinction between a sleeping and dead which ap parently seems similar), and who can show distinctly the heights and depths The harmony in the different parts of a painting is worthy of praise but one should avoid placing one figure in front of another

I This view is echoed by Bhoja in his Samaringana Sütradhira—rf (?) (ci) ram hi sarva filplinam mukham lokasya ca priyam—(ad. 71, slo 1, p. 232 GOS) when he says that Citra re-painting is the principle of all s lpas (arts) and loved by prop

² I have adopted the reading of St St, (Verses 14 15 Ad 41)

³ of Sikuntala Ammonnata pradesesu nibhrtanid su. The commentary of Righata Bha a Act. VI P. 258 Vani Vilasapress.

things which are regarded as auspicious by people such as bulls with Nidhi horns, elephants with Nidhi trunk, (nine) Nidhis, Vidyādharās, sages, Garuda and Hanuman should be generally shown in them

In one's own house the work of painting should not be done by oneself. This seems to be an advice given to the artist

Verses 31 to 35 (Ad 43) refer to other arts of representation which are not included in the art of painting. But our text extends the meaning of the word Citra to include carving and sculpture and we are told that the rules which apply in painting also hold good about these arts. The first is called khātapurva and this is done in Gold, Silver and Copper. The word khātapūrva (lit.) means that in which digging is done first. The second is called Pratimakarana. This is done in stone, wood and metals. After these two, Pustakarma which is to be done in a similar way is shortly described. This word may be interpreted as modelling.

Modelling is of two types Ghana and Susira ie solid and hollow. The solid can be made with metals, stones wood and clay. While the hollow can be made with leather, wood and metal. In the leather modelling, clay has to be firmly applied. In the same way a picture can be woven in the threads of a cloth. This meaning becomes quite clear if we adopt the reading of Mss. B.C. & F. Sutre! Vanavidhānena. It may be noted that Vāna is one of 64 arts. The place of painting in arts.

Each art is more or less extolled in the course of its treatment but it is only in the case of Citra that we find the statement that Citra excels all arts (verse 38, Ad 43). This may not be taken merely as a conventional glorification but may be regarded as expressing the opinion of the author of this third khanda of V. D. whoever he or she may be

A fine picture is described in the following words—"The surface is as if glistening and embracing" as if coming out to meet the spectator, the sweetness is as if smiling, it looks as if endowed with life." As if to emphasise the same point again, the author says in the next line "that is (beautiful) painting, which looks as if breathing (Slo 21, 22, Ad 43)

It is stated that whatever is said in Citrasutra is just mentioning the subject (ie very brief account). It would be impossible to discuss this subject at length

I Dr Stella Kramusch translates vastra by canvas But I think, however that this refers to the weaving of figures with the coloured threads of cloth. This process seems to be similar with which is employed by Pajola makers who weave the figures of elephants etc.

² Sucivanakarmani kamasutra-adhi I, adhya 3 sutra 16 The commentary Jayamangala refers to pustakarma as one of the kalas P 31

³ of The Guyarati idiom bazine vafagavu. This idiom is used when some sight is very effective

CITRASUTRA 137

even in many hundreds of years. Whatever has not been said here, should be taken from the section on dancing and whatever is not said in dancing, is to be taken from Citra. This shows the intimate relationship that existed between Nitta and Citra in Ancient India. Painting is extolled as the best of all arts something like Sumeru among mountains. Garuda amongst birds and king amongst people. It is supposed to be very auspicious if installed in a home. It fulfils the main four purposes of human life viz. Dharma, Artha, Kāma and Mokṣa (verses 36 to 29, Ad. 43)

Marks of good and bad paintings

The ground surface for painting should have well polished space, should be free from gnats and fleas, be bright, pure and well projected

A painting becomes very beautiful, when an expert draws it with glossy, clear, and unoblique² lines. The dress should be according to the particular country. It should not suffer from want of proportionate measurement and beauty (Sobhā)

A painting becomes liable to censure, if it suffers from want of proper position and sentiment (rasa) and has an empty look in the eyes of the figure depicted It thus becomes void of life. Those who desire auspiciousness should avoid Pictures depicting a figure with defective limbs, stained, dispirited and incidence by persons overcome with fear and disease and with dishevelled hair. An intellisent artist should draw what is well understood by him. He should never draw anything which he does not know. A painting done by the experts, well versed in sastras brings prosperity and removes adversity. A painting purifies and removes anxiety and brings forth prosperity and causes unequalled and pure delight, kills the bad dreams and pleases the house-delty. The place where Citra is placed, does not look empty. He who paints waves, flames, smoke and the banner according to the movement of the wind is a great painter. He verily I nows painting who can depict a sleeping person with life-movement and dead person void of it (le who can show a clear distinction between a sleeping and dead which apparently seems similar), and who can show distinctly the heights and depths The harmony in the different parts of a painting is worthy of praise but one should avoid placing one figure in front of another

I This tien is echoed by Bhola in his Samailletana Satradhles—ri (*) (a) am hi sanaklednam mukham lokasya ca priyam—(ad. 71, to 1, p. 252 GOS) when he says that Citra i.e. painting is the principle of all filess (arts) and loved by peop.

² I have adopted the reading of St St, (News 14-15 Ad-41).

I of Siluminia Neumoninia praciding mathematics... The committee any of Righman Rappa Act. 11 P. 255 Nami Vilumpiers.

PRATIMALAKSANA

Images and their worship

After Citrasutra our text in adhyāyas 44 to 85 gives what it calls Pratimā lakṣana. The word Pratimalakṣana literally means a work giving an accurate description of Pratima. Just as Citrasutra is a compendium of painting so Pratima lakṣana would be a compendium of sculpture. But there is one important difference. Citrasutra gives instructions about the art of making pictures or paintings. Pratimalakṣana, however, does no such thing. It may be that whatever, has been said in Citrasutra about the technique, is to be taken holding good with regard to Pratima making, of course with necessary modifications. In fact verses 31, 32 of Ad ² 43 in clear words tell us that forming representation of objects by chiselling stone or by hollowing metal, wood etc. is like Citra.

This however, does not lessen the importance of Pratimalakşana because it describes iconographic features of divine beings and what is more important the significance of the various emblems (Hetus) in terms of religion and philosophy. It provides us with important clues for interpreting and understanding religious sculptures of ancient India.

The Pratimalakşana attempts to describe the icons of major and minor Hindu deities with Vişnu, of course as the central figure

Trimurti

Adhyāya 44 starts with a description of the divine trinity. Here, however, Vishu is the supreme god because Vishudharmottara like the Vishu purāņa is a work, which worships the supreme divinity under the name of Vishu. The three Murtis or forms of Vishu are called Brahmi, Vaishavi and Raudri. The Brahmi form is the result of Rajas, the Vaishavi of Suttva and the Raudri of Tamas. The three Gunas respectively represent the three functions of creation, preservation and destruction.

Before we proceed with the description of the images of the trinity, it will be proper to discuss here the question put by Vajra to Mārkandeya regarding the justification of worshipping the supreme deity through images in Adhyāya 46

यथा चित्र तथैवोक खातपूर्व नगशिप । गुर्गहप्यत घादि तथ लावेषु दर्शयेषु ॥ ३९ शिलादारपु लोहेषु प्रतिमावरणं भवेत् । सन्तेव विधानने यथा चित्रसदाहतम् ॥ ३२

Vajra says:

ह्पगन्धरसैहीनः शद्वस्पर्शविवर्जितः । पुरुषस्तु स्वया प्रोक्तस्य हुपमिदं कथम् ॥

Puruşa, the supreme soul is described by you as void of all qualities of sense such as Rūpa, Gandha, Rasa, Śabda and Sparśa. So how can He have any image?' Mārkandeya explains:

प्रकृतिर्विकृतिस्तस्य द्वे रूपे परमात्मनः ।
अलक्ष्यं तस्य त्रमुपं प्रकृतिः सा प्रकीतिना॥
साकारा विकृतिर्श्वेया तस्य सर्वे जगत्मृतम् ।
पूजाध्यानादिकं कर्तुं साकारस्यैव शक्यते ॥
स्वतस्तु देवः साकारः पूजनीयो यथाविधि ।
अव्यक्ता हि गतिर्दुः खं देहमृद्धिरवाप्यने ॥
अतो भगवत नेन स्वेच्छ्या यत्प्रदर्शितम् ।
प्रादुर्भावेष्वयाकारं तदचीन्त दिनोकसः ॥
एनस्मात्कारणात्पूजा साकारस्य विधीयते ।
हेतुमच तदाकारं तन्मे निगदतः श्रृणु ॥

'Prakṛti and Vikṛti t.e. the noumenal state and the phenomenal state are two natures of the supreme soul. That nature of His which is invisible is called Prakṛti, while that which has a form is to be called Vikṛti. The whole world consists of such a Puruṣa. Worship and meditation of the supreme being are possible only when He is endowed with a form and therefore He has to be worshipped in a particular form. The invisible mode is cognisable with great strain only. It is for this reason that the supreme deity of His own free will has manifested Himself through different forms. Even gods worship His manifested form. It is for this reason that, only Sākāra (manifest in forms) is worshipped.' The form has a reason (Hetu). Listen to the explanation that I give.

The above passage provides a sort of religio-philosophical basis for the representation of the Supreme divinity through material forms.

Thus in the explanations of the Hetus given throughout the different adhyayas of Pratimalaksana we have keys to unlock the meaning of the various forms and symbols found in Hindu Sculpture. Herein lies the great importance of this section as said above.

Brahma. Now let us come to the description of the images of the Vaişnava's trinity. First comes the description of Brahma murti i.e. the image of Brahman (Ad. 46).

Brahman is represented as having four faces, four arms and matted hair (Jata) on his head and wearing the skin of a black antelope as a garment. He

sits in the 'Padmasana pose in a chariot drawn by seven swans. Each of His right arms is put in the palm of each of the left hand? One right hand carries rosary and the other Kamandalu. He wears all kinds of ornaments. He possesses all auspicious marks and has a tranquil form. He looks saumya and Tosya ie happy and worthy of propitiation. This god should be made in an image or a painting or in modelling? as having the aura of the tip of a lotus petal? and eyes closed in meditation. This is the form of the matchless one of which the world is constituted. With this sort of body, he bears the whole body

Ad 63, which consists of three verses gives again the brief description of the form of Brahman. The following are the additional points. In adhyaya 44 he is described as sitting in Padmasana posture. Here he is described as sitting on a petal of a lotus. The second noteworthy point is the mention of Savitri. She is placed on his left lap. She has the colour of the sun and carries a rosary in her hand.

The explanation of the 'Hetu' underlying the image of Brahman is described in Ad 46. Brahman is described as having the aura of the tip of a lotus petal because Brahman is the rajasimurti of Visnu and the colour of rajas is red

The four faces of Brahman represent the four Vedas the eastern Rgveda the southern Yajurveda the western Sāmaveda and the northern Atharvaveda His four arms represent four directions. The whole universe comes out of waters therefore Brahma has a Kamandalu in his hand which carries the waters. The rosary which he is counting represents time. The Yajia is performed by two types of ceremonies. Sukla and asukla or kṛṣṇa. This is represented by the antelope skin which Brahman wears. The seven lokas are symbolised by the seven swans dragging the chariot of Brahman. The lotus arising out of the navel of Viṣnu represents Mahi, the earth. Its perfeare is the Meru, mountain. The mountain represents steadiness. Sitting on it with earthly (Parthiva) Padmā sana Brahma becomes absorbed in meditation. He thinks of his highest state which is formless. He sits with his eyes closed in meditation for visualising the worlds.

¹ Padmisana—Dr Stella Kramr sch translates it as on a lotus seat. Here the lotus seat is not intended for two reasons one the compound Baddhapadmisana is more satisfactorily explained as one sitting in a padmisana posture baddham padmisanam yena. Another reason is that he is represented as sitting in a chariot drawn by seven swans.

^{2 6}CD and 7 g ve rather an unusual representation of Brahman nam ly putting each right arm in the palm of each left hand. Thus two left hands do not require any other emblems to be placed in the arms. If this is correct interpretation what I have said in the notes. Vol. 1 P. 398 is not necessary.

³ cf Ctrasūtra adhyāya 43 slokas 31 32.

⁴ cf Ad 46 floka 7 Padmägrasannibhah.

The herbs maintain the world These are symbolized in the matted hair of Brahman who is all pervading The different branches of learning enlighten the world These are signified by his ornaments

Visnu. Now we come to Vişnu as an aspect of Vişnavī trinity (Ad 44 and 47) Visnu, the god of gods should be represented as seated on Garuḍa, wearing celestial yellow garment with Kaustubha brightening his bosom and with all sorts of ornaments. His complexion would be like that of a cloud laden with water. He has four faces and eight 'arms. The eastern face is called Saumya ie placid, Southern Nārasimha ie indicating Narasimha, western Kāpila ie indicating Kapila and northern Vārāha ie indicating Varāha. He wears Vanamālā. He catnes in his right hands an arrow, a rosary, a club etc. (and in his feft hands) hide, cloth and rainbow.

In Adhyāya 60 the image of Viṣnu is described as having one face and two arms carrying Gadā and Cakra. The figure is just like a human being. The other composition of his figure has been described previously. The unfathomable is the Māva of Viṣnu which binds the world and Gada in the hand of god which always subdues all creatures in this Mayā. Gadā is also Lakṣmī, Dhṛti, Kirti, Puṣṭi, Śraddha, Sarasvati, Gayatrī the mother of the Vedas and also Kālarātri.

The Cakra represents a rotation of the world Cakra in the hand of Visqu represents this rotation as well as the wheel of dharma, the wheel of time and the wheel of planets The god Visnu himself is immoveable and he moves the wheel For this reason he is called Cakrahasta

Ad 85, the last adhyāya of Pratimālaksana describes Visnu as Vasudeva in detail. Here Viṣnu is represented as having one face and four arms. The colour and ornaments are as before. The neck should have auspicious lines and be like a conch. An excellent kunḍala adorns his ear. He wears armlets, has fastened bracelets around the armlets and is decorated by the Vanamālā, his Kaustubha on his bosom and Kirija on his head. The lotus over his head should have charming pericarps. His arms are long with hands formed into fists. The fiails of his fingers are thin and reddish.

¹ The text of verses 11, 12 and 13 of Ad 44 is not satisfactory. If we may amend the text as follows, we can make out some consistent sense

| Correct the reading—Saumya | | | into | Saurya |
|----------------------------|----|---------------|------|----------------|
| ,, | دم | Musaladayah | into | Musalásayah |
| | " | Ciram | into | Stram or Stram |
| • | | Dhanuscendram | into | Dhanuscakra |
| P4 | ** | Căpeșu | into | Vāmesu |
| ** | •• | capeju | 1110 | |

With these amendations the translation would be as follows. His eastern face is that of the sun, southern of Narasimha western of kapila and northern of Varaha. His right hands carry an arrow, a rosary, a club and a sword. His left hands carry a shield, a ploughthare a bow and a disc.

The earth in the form of a woman should be shown in the middle of the space between his feet, with her charming middle beautified by the wavy! trivall above the navel. The feet of the god should be placed in her hands. The distance between the two feet should be one Tala and the right foot should be slightly stretched out. The earth should be shown amazed with the sight of the god and looking within.

The dress below the waist should be upto the knee Vanamālā also should extend upto the knee The sacred thread (पनामित) should extend upto the navel

In his right hand there should be a full blown lotus, while in the left, there should be a conch, having the shape of a conch. On the right, Gada should be represented as a goddess having beautiful eyes and a thin middle. She must be represented as a Mugdhā—Ie young woman in her innocence, ado ned with all ornaments and having a cāmara in her hands and looking at the god. The right hand of the god should be placed on her head

An image of Cakra with a hanging belly adorned with all ornaments and with round and wide open eyes should be placed on the left. The image should also have a Cāmara in his hand and intently looking at the god

The Hetu of the various emblems of Vişnu are explained in Adhyāyas 47 and 85. As in Adhyaya 46 so here also this world is regarded as Vikṛti ie transformation of the Supreme Being. This Vikṛti or transformation is called Kṛṣṇa. It sustains the world. Here the world Kṛṣṇa should be interpreted as suggesting the Kṛṣṇa form of Viṣṇu because in the next verse it is said that the lord, the creator of all creatures, assumes Kṛṣṇa form

The significance of all his ornaments is described as follows—The Kaustubha suggests pure knowledge. The world is bound together by the long varigated and dark Vanamālā. Avidyā, which keeps the world going is his garment Vidya is represented as white, while Ajñana as black, but Avidya being regarded as lying between Ajñana and Vidya, is therefore neither black nor white. There fore the highest Vidyā supports the intervening space which is like the bright gold. Garuda is to be known as mind pervading the bodies of all creatures. There is nothing quicker and stronger than mind.

¹ Dr Siella K Page 110—Trivali—three folds above the navel of a woman regarded as a mark of beauty

² Dr S ella accepts the reading Nitta in place of vitta and translates it as the eyes wide open as in dancing

³ Dr Stella takes the second line of the verse 6 referring to the intervening space (antaralam) with monas in verse 7. I however prefer to take it with Vidya

a mirror (ādarša), a waterpot (kamaņģalu) and a skin (carma). The colour of the whole image should resemble the rays of the moon

Now we come to the Gaurisvara form of Siva as described in Adhyāya 55 In this form, Siva should be made with one face, two eyes and four arms and wearing all ornaments. The left part of his body should consist of his beloved—Pārvatī. The rosary and trident should be in his right hands and in the left ones mirror and blue lotus. Here, the Gaurisvara form of Siva symbolizes the identity in difference (abhedabhinnā) of Prakti and Purusa.

The above described image is of the Isana form of Mahadeva

Adhyāya 59 describes the Bhairava form of Mahādeva Bhairava should be made having round and tawny eyes, with a hanging belly, a terrible face on account of tusks (damṣṭra), wide nostrils, and a garland of Kapālas (skulls), and frightfully adorned on all sides with ornaments in the form of snakes. He wears elephant-skin as the upper garment, resembling in colour a water ladea cloud. He has many arms, huge and long like Sala trees, bearing all sorts of weapons as ornaments and possessed of sharp and beautiful nails

When the pose of this image is Sācikrta (ie bent sideways) or as Dr Gopinath Rao says—swaying with right hip—it represents Bhairava and when it is sanmukha (ie frontal), it represents Mahakāla

Parvati should not be placed in front of him but on his left. In his hand there should be a snake, with which he is represented as frightening her (Parvati). There should be Matigana and other attendents bearing various forms around him.

We have already seen in Adhyaya 48 that the union of Parvati and Siva signifies the identity—in—difference of Purusa and Prakti

The five faces of Mahādeva should be known as Sadyojāta, Vāmadeva, Aghora, Tatpuruşa and Isana Sadyojāta represents Mahī (earth), Vamadeva, Jala (water), Aghora, Tejas (light), Tatpuruşa, Vāyu and Isana, Ākasa (sky)

The eastern face suggests Mahādeva The three eyes of which are the sun, the moon and the fire The terrible southern face is called Bhairava which has been described above. The western face is called Nandivaktra. The northern face is known as Umāvaktra and the fifth face should be known as Sadašīva

All have three eyes except the face of Vāmadeva which has only two eyes. The face of Mahadeva is the earth (bhūmih), the Bhairava' face is the light (tejas). The Nandi face is the wind (vayu), Uma' face is the waters (āpah),

¹ Dr Stella Kramrisch translates as 'the Bhairava face should be next' (Page 71) Her reading may be Tatah but she suggests the reading Tejasa, which is confirmed by the Mss-A.B.C.

² Dr Stella Kramrisch translates as—'the face belonging to Rudra is called the water' (Page 71).

and the Sadāsıva face is the sky (ākāsa) Two hands are allotted to each face The ten arms represent ten directions. In the hands of Mahadeva, there should be a rosary (aksamālā) and a Kamandalu, in the hands of Sadasıva the bow (cāpa) and arrow (bana) and staff (danda) and the citron (matulunga) in the hands of Bhairava

The staff shows death and Mätulunga indicates the seed of the world Matulunga is full of small seeds and therefore it is also called Bijapura. These small seeds represent the atoms which constitute the world. In the hands of Nandi there should be a shield (carma) and a trident (Sula). They represent Dharma and Vyākarana. The Trisuladanda is invisible (avyakta) but becomes visible (Vyakta) in the three sulas. The three sulas represent Sattva, Rajas, and Tamas.

Mirror and blue lotus in the hands of Parvati indicate pure knowledge and detachment. The matted locks of Mahadeva represent the variegated Brahman. The digit of the moon on the face of Siva represents his divine power, and Vasuki, the king of serpents represents anger which subdues the three worlds. The tigerskin represents the wide and variegated Trsna (desire). The Bull is the divine four footed. Dharma

The whiteness of Mahadeva represents Prakrti because Prakrti, which means the absence of creation is white ie colourless

I have so far given in detail the descriptions of the images of the Vaisnavi Trimurti and also each of its aspects. Now I propose to give in substance, the descriptions of the representations of other deities classifying them wherever possible under each aspect of the trinity.

Agri (Ad 56)—Agni should be depicted red in colour, wearing a Jajā (matted hair) and having smoke as his garment. He should be surrounded with flames. He has three eyes, four arms, and four tusks. He bears a beard He should be represented seated in a chariot having smoke as its insignia and wind as a charioteer. The chariot should be drawn by four parrots

Svähä sits on his left lap. She carries a vessel of jewels. In the two right hands of Agni a flame and a trident should be shown and in his left hand a rosary. Nothing is said about the other left hand.

Agni's colour is red because he represents Tajas (light) which is red. His other features viz having wind as a charioteer, smoke as a banner and garment resembling the sacrificial fire are according to the text obvious and therefore require no explanation. His rosary, trident, matted hair, three eyes and all ornaments are to be interpreted as these are in the case of Sixa. His flame represents the

¹ Dr Siella Kramrisch translates as—'tow and arrow should be in the Sadain's fore'.

(Page 71)

highest light, and with it accepts the oblation and then he earries it to all the gods. His four tusks represent the vägdanda (punishing with speech), Dhigdanda (punishing with derision) or adopting the reading Digdanda (punishing with confining), Dhanadanda (fine), and Vadhadanda (punishing by death) His beard symbolizes the holy Darbha grass. The parrots yoked to his chariot symbolize the four vedas

Varmaa (Ad 52)—The colour of Varuna, the lord of the aquatic animals resembles a glossy lapis lazuli (Vaidūrya). He has four hands and a somewhat hanging belly. He wears white cloth and a pearl necklace in addition to the usual "all ornaments". He sits in a charjot of seven swans

On his left there should be a flag bearing the sign of Makara and over his head there should be a white umbrella. His wife Gauri beautiful in all limbs has two hands. She is seated on his left lap. She holds in her left hand a blue lotus. Her right hand is on the back of the god. In the right hands of the god, Varuna, there should be a lotus and a noose and in the left hands a conch and a vessel of jewels. On his right is Ganga on a Makara and a lotus in her hands. She is as white as the moon and has a beautiful face. On his left, is Yamund on a tortoise with a camara and a blue lotus in her hands. She is placed. Her colour is like a blue lotus!

Varuna is said to be like the glossy lapis lazuli because that is the colour of the waters and he has assumed that colour to favour them. His garment is said to be white because the waters have a beautiful white colour. Thus waters have two colours dark and white. Vajra asks 'how the colours of waters are natural and unnatural.' Mărkandeya explains this contradiction thus. The vaidūrya (lapis lazuli) like colour of waters is atathya (unnatural.) because that is due to the form of the sky reflected in waters. Its natural form is the one seen in a cataract which resembles the rays of the moon.

The blue lotus in the left hand of Gauri is explained thus 'the lord of crocodiles is Pradyumna, the god of love. His wife Gauri is to be known as Rati the wife of kama. Thus the blue lotus in the left hand of Gauri expresses saubhärya (conjugal felicity)

The lotus in the hand of Varuna is the symbol of Dharma. The conchrepresents riches, the noose (pasa) represents the bondage of samsara (world) and the vessel of jewels in his hand represents the earth which bears all sorts of ratnas (jewels). White umbrella represents his fame (yasa) and Makara is the symbol of happiness. The ornaments on his hands are to be explained as in the case of Brahman.

I Dr Kramrisch translates here the word niraja as cloud?

Seven swans in the chariot are seven seas namely of lavana, ksira, ayoda, dadhimanda, sura, iksurasa and svāduda Yamunā represents Chhāyā (shadow) and Bhagirathi Siddhi (achievement) Makara and Tortoise represent virility (virya) and time (kala) respectively The verse 20 misses one line It explains the lotus in the hand of Ganga and the blue lotus in the hand of Yamunā

Kubera (Ad 53)—Dhanada or Kubera is white like a leaf of lotus and yellow like gold This latter refers to the colour of his garment as will be seen from verses 8 and 9

Kubera has a hanging belly and four arms His left eye is tawny He bears a moustache and two large teeth on his face. His dress is that of a northerner (udicya) wearing a kavaca and is fully decorated with ornaments with a heavy necklace resting on his belly. His crest should be bent towards the left. He rides on a man (naravāhana)

The goddess Rddhi should be represented as sitting on his left lap. She has two hands. The right one is on the back of the god and the left one bears a vessel of jewels.

In the right hands of Kubera there should be a Gada and a Sakti In his feet are a banner bearing an emblem of lion and a sibikā Standingt near him should be drawn the two treasures Sankha and Padma in good form. On his side a face coming out of Sankha and Padma should be shown. Kubera is to be known as Aniruddha. Wearing of all ornaments is to be explained as in the case of Brahman.

Gold is the best of all kinds of wealth. Therefore his dress has the colour of gold. The Sakti weapon represents power and club (Gada) art of government (Dandaniti). Rddhi represents the course of worldly life and the vessel of jewels in her hand represents gunas. The man whom he rides represents sovereignty. Sankha and Padma by their very forms indicate treasures. The significance of ketu (banner) and Sibikā seem to be explained in verse 12 but the meaning is not clear. His two large teeth represent punishment and favour.

Yama (Ad 51)—The colour of Yama is like that of a water laden cloud. The colour of his garment is like that of heated gold and is adorned with all ornaments. He has four hands. He rides a buffalo. His wife, Dhumorn has the colour resembling the blue lotus. She has two hands and is seated on his left tap.

In the right hands of Yama a sword and a staff should be shown. On the top of the staff a head should be placed with a garland of flames. One of his I st hands is on the back of Dhumorna and the other carries a shield (lit leather)

I have amended the reading Nidhisamisthitau into Sagnidhisthitau sam angears to be mis placed through a mistake of a sender

The right hand of Dhumorna is on the back of Yama and the left hand holds a beautiful Matulunga (citron)

On his (Yama's) right side should be placed the good looking Citragupta having two hands and dressed in northern style. His right hand holds a pen and the left one a leaf. On the left side of Yama should be placed the dreadful looking Kala holding a noose

Yama is identified with Sankarşana assuming a tāmasika body. In this aspect he destroys (lit gathers) the world in himself in order to maintain the cosmic order. His colour like that of a blue lotus symbolizes Tamoguna.

His buffalo represents the unconsciousness of men at the time of death and staff represents the unfailing death. His garment is to be explained as in the case of Vasudeva and his four hands as in the case of Brahman. The wearing of all kinds of ornaments is to be explained as in the case of Brahman. His Sword (khadga) and Carman (shield) are to be explained as in the case of Amruddha. Dhumorna suggests Kalaratri and the bijapuraka in her hand is to be explained in the case of Sulin. Citragupta represents the soul which is in all bodies. The leaf on which writing is done represents Dharma and the pen in the hand represents Adharma. Kala who moves along Yama represents Kāla (time) in its own form. The noose in his hand represents the different and terrible path of Yama.

Vajra here raises certain doubts. Samkarşana is supposed to be the destructive aspect of Vişnu. Now Samkarşana is said to possess a body as white as the moon. How then Yama who has the same function of the destroying the universe as Samkarşana has the dark body? Markandeya removes the difficulty by saying that when Rudra the Samkarsana aspect of Vişnu gathers into himself all the worlds then the whole folded world reaches the stage of Prakţii—un differentiated position. At that time he destroys the worlds in the colour of Prakţii. Here we are not clearly told as to what is the colour of Prakţii but from the context we have to take it to mean dark colour. When Yama repeatedly destroys the criatures he does not reach the stage of Prakţii but he is Vikāra i e transformation consisting of happiness and misery. At that time he assumes the colour of Vikara transformatory stage and destroys the world.

Grahas (Planets) (Ad 69)-

- (1) Bhauma—(Mars) should be made like Agni sitting in golden chariot drawn by eight horses
- (2) Budha-(Mercury) should be made like Visnu His chariot is like that of Bhauma
- (3) Bihaspati—(Jupiter) should be of the colour of heated gold having two hands. In one he holds a book and in the other a rosary. He wears a yellow gaiment and is adorned by all the ornaments. His chariot is as above

- (4) Sukra (Venus) should have a white body wearing a white garment He has two hands one holding treasure (Nidhi) and the other a book. He sits in a silver chariot drawn by ten horses
- (5) Sani (Saturn) should be dark, wearing dark garment. His body is covered with veins. He has two hands, one bearing a staff and the other a rosary. He sits on an iron-chariot drawn by eight serpents.
- (6) Rahu sits in a silver-car drawn by eight horses. Only his head should be shown joined to one arm. His hair should be raised and eyes turned up. The single hand which is on the right, should be shown empty.
- (7) Ketu should be represented just like Bhauma His chariot, however, is drawn by ten horses while that of Bhauma eight horses

Acitya (Adhyaya 67)

We come now to the images of the Sun and the Moon They are respectively other forms of Agni and Varuna who have been already described

Ravi has a good form. His colour is as red as Sindura (Vermilion). His moustache is bright. He has four arms. He is dressed in northern style and wears armours. He is adorned with all ornaments. He wears a girdle which is known as Yaviyanga (which is the same as avyanga—the girdle worn by Maga priests.) Raśmi i e reigns in his right and left hands should be shown. They have the forms of a garland whose threads go up and full of all kinds of flowers.

Dandat having an anthropomorphic form should be placed on his left and Pingala of a deep triwny colour on his right. Both should wear dresses of northern style. The remaining two hands of the sun god should be on the heads of these two. Pingala carries a leaf and a pen in his hands. Danda has a shield (lit leather) and a trident (Sûla) in his hands. On the left side of the sun god should be placed a banner having an emblem of lion.

His four sons—Revanta, Yama and two Manus—should be placed on his two sides. His four wives (Rajñi), Rikşubhā, Chāyā and Suvarcalā should also be placed on his two sides. The Sun, who is the lord of planets should be surrounded by them

He should be represented as seated in a chariot. His chariot has one wheel, six spokes and is drawn by seven horses. His charioteer is Aruna

Coming to the significance of his emblems—his seven horses are seven metres. They are Giyatri Usnik, Anuştuba, Bihati, Pankti, Tristubh and Jagati With the rays in his hands, he holds the entire universe so also he bears. The hon on his banner represents Dharma in person. Wearing a girdle is really

This Danda is regarded as a contraction of Dandardynks, the commander in-chief of celestial hosts and is identified with Skanda, by T. A. Gepinath Rao (EHI Page 303-4)

His charioteer is Ambara (sky) The twenty-eight Naksatras are supposed to be his 28 wives, all exceedingly beautiful. In the alternative, eighty-two Bhāvas, (conditions of a planet or astrological houses) may be represented as a result of a particular crossing or conjunction of the planets and Deha. The myth regarding the Naksatra wives is given as follows.—

When there was a war between the gods and the demons, the stars assumed many bodies because these udus (constellations) had the respective forms of gods, who were their masters. Therefore they were killed by the Danavas. The god whose form was taken by Naksatra became his Devata or deity. All these gods were made to take the form of women. Their number was formerly known. They became the Daksäyini women and were saluted by all the people

The moon is the father of all this world. By his creation the entire universe is filled with joy. He represents the quiet aspect of Visnu. The two likes in his hands represent joy and graciousness. Sobhā and Kānti represent their own natures i.e. splendour and beauty. The moon is of white colour because on account of it being the essence of water. The abode of water is known as Amrta or deathless nector. Therefore immortality is his garment. The banner of lion indicates Dharma while his ten horses indicate ten directions.

Kumara (Ad 71)-Kumara has four forms -

- (1) Kumāra, (2) Skanda, (3) Viśakha and (4) Guha
- (1) Kumāra has six faces He is adorned with a tuft of hair. He wears a red garment and rides a peacock. In his right hands are a cock and a bell. In his left there are the vaijayanti banner and a spear (šakti)
- (2) Skanda, (3) Visākha and (4) Guha—should be made like Kumāra but with this difference that they do not possess six faces and do not ride peacocks.

Vāsudeva having four hands became Kumāra in order to lead the army of gods.

Bhadrakal—has 18 hands She stands in the posture of Aligha in her chariot drawn by four lions. Sixteen hands of Bhadrakali bear the following sixteen emblems. They are the rosary (akṣamālā), the trident (triśūla), the sword (kadga), the shield (carma), the bow (cāpa), the arrow (bāṇa), the conch (Sankha), the lotus (padma), spoon (sruk), ladle (sruv), the altar (vedī), the waterpot (kamaṇḍalu), staff (daṇḍa), spear (śakti), the black autelope skin (kṛṣṇāṇṇa)

यजुधित्वनार्थेव शूपो वाजी नरो इयः । अपार्श सप्तधातुद्ध इस्ते ब्योमी गुगस्तधा ॥

[े] अश्वास्तु द्रा चन्द्रस्य यञ्चथन्द्रमना १पः । सप्त रातुर्देयो यात्री हंमी व्योमगृगी नरः ॥ ९ अर्था चाथ चन्द्रमनः स्थ नेर्द्रस्त त्रिपनाः क्वित् । सप्तथातोः पुन स्थाने सदस्ये इस्त सुत्रचित् ॥ २ By comparing these five lists, I arrive at the following amendations of the text .—

and the fire (agni) One hand is shown bestowing peace (santikara) and the other carrying a vessel of jewels

Prajapati—should be made like Brahman but without the swan and fourfaces

Vinayaka—has the face of an elephant and four arms. A trident and a rosary are in his right hands and in the left an axe and a vessel full of sweets (modaka). No tusk should be shown on his left side. The vessel full of modakas should be on the tip of his fingers (lit hand). He has a drooping belly and stiff ears. He wears a tiger skin for his garments and a serpent as his sacred thread. One foot should be on the foot stool and the other should be on the seat.

Visyakarma—is the form of the Sun and consequently he bears a lustrous appearance. He has two hands in E. St. form (Ad 26, verses 50 53). Visyakarma represents the creative aspect of Visnu

Ananta (Ad 65)—The form of Ananta or Seşa should be as white as the moon. His hoods should be shining with jewels. He has four hands. He wears a blue garment and the usual ornaments. He has many hoods. The beautiful earth goddess should be placed on the middle hood.

Lotus and Pestle (Musala) are in his right hands and the plough and the conch in the left. The celestial ocean should be represented by him

The Talavikşa represents the entire world. The plough and pestle have been explained formerly so also Vanamalā because the Seşa supports the whole earth with her mountains and forests. She (earth) is to be shown on the middle hood. This position of the goddess earth surrounded by hoods indicates desires (kāmah).

Tumbura (Ad 66)-

Tumburu should be shown surrounded by divine mothers. He sits on a seated bull like Saria. He has four faces. His form is to be understood as described in the case of Mahadeva. The hand which carries Matulunga (in the case of Mahadeva) carries Kapāla (skull) in this case. It has been mentioned that Tryambaka should carry Matulunga. On his right side two divine mothers Jayā and Vijaya should be placed and on his left Jayanti and Aparajita. All these divine mothers have two hands and four faces. Skulls should be shown in the left hands of all

¹ Dr Stella Kramrisch translates as—'He should have a foot-stool and one foot only should be on the seat."

² Dr Kramrisch translates it as 'in his hand is the sea of liquor' The reading she takes it as kare tasya surambudhih. This would require the fifth hand and there is no association of the sea of liquor with Ananta

In the right hand of Jayā a staff should be placed while in the hand of Vijayā a sword having the colour of wet collyrium Jayanti holds a rosary and Aparājitā a sling for throwing stones

One foot of all of them should be placed on foot-stools The right one should be placed on the vehicle and the left one (presumably the one on the foot-stool) should be made bent

Jayā rīdes a man, Vijayā an owl, Jayantī a horse and Aparājītā a cloud.

The colour of Jayā is white, Vijayā red, Jayantī yellow and Aparājitā black. The colour of the great god Tumburu is white like the rays of moon Mahi (The Earth-goodess) (Ad 61)—

The colour of the earth goddess is that of a parrot She has four arms. Her garment is like the beams of moon. She is decorated with all sorts of ornaments. She carries in her hands vessels of jewel, corn, medicine and a lotus

Her parrot colour is due to the fact that she bears all kinds of herbs

She sits on the back of the four Dinganagas ie four elephants of the quarters. Her white garment represents Dharma, while the lotus in her hand suggests Artha

Akasa (Gagana) (Ad 62)—

In Ad 61 Mārkandeya says that he is going to speak about the form (Rūpam) of the formless which is determined by the Siddhas. He describes it in this adhyāya (Ad 62)

The colour of the sky is like a blue lotus and wears a garment of the same colour. His two hands carry the sun and the moon

It would be convenient to note here the form of Vyoman also. The difference between Ākāśa and Vyoman lies in the fact that the former is a personified deity while the latter has the shape of a Meru

Vyoman (Ad 75)-

Vyoman at the base is quadrangular. Then becomes circular. Then somewhat quadrangular. Then again somewhat quadrangular. It is formed like Meru. This third part of Vyoman is called Bhadrapitha.

The following are the characteristics of a Bhadrapītha. It has columns and its middle portion is quadrangular. On a part of it is another Bhadrapītha. On this Bhadrapītha a lotus should be placed. The lotus has eight beautiful petals. In the midst of the pericarp there is the sun-god. On the petals one should make Dik-pālās according to their respective directions. Below the

According to Dr. Kramrisch 'the goddess is traditionally said to be of bright colour'.

The reading in her text is suklavaroa but the correct reading is however, sukavaroa, which is appropriately explained as above 1 20

Bhadrapith (ie the higher one) the earth should be shown and above the Bhadrapitha the lotus Antariksa should be shown. Then all the chief gods should be placed there. Thus the Vyoman is said to consist of all gods.

Sarasyati (Ad 64)-

The goddess Sarasvatī has a face like that of the moon and stands evenly on her feet (samapada pratistha. She has four hands. She is as usual decorated with all ornaments. In her right hands she holds a Pustaka and an Aksamila and in her left hands. Vainavi and Kamandalu

Her four hands represent the four Vedas and the Pustaka (book) represents all Sastras Kamandalu in her hand is supposed to contain the immortal essence of all the Sastras and the rosary in her hand symbolizes time (kala). The Vainavi is achievement (Siddhi) personified. Her face represents Savitri or Gayatri—the foremost of all. Her eyes represent the sun and the moon.

She is also described in verse 25 of Ad 73 the only difference being that the hand carrying the Vainavi carries a Trisula

The word Vainavi requires som* clarification. I have amended the reading Vainavi into Vinaiva because Sarasvatī is traditionally known to carry Vinā and not a finte of bamboo which is the usual meaning of the word Vainavi. On further consideration however. I find that it is not necessary to change the reading into Vinaiva because the word Vainavi does not mean Vina. It indicates the staff of Vina which must have been made of bamboo as in the case of the present. Ekatura

Laksmi (Ad 82)-

Laksmi is described as the mother of the whole world and the wife of Visnu Laksmi when depicted near Hari I as two hands. She has celestial beauty. She carries lotus in her hand and she is adorned with all sorts of ornaments. Her colour is white (gaura) and wears a white garment. She is matchless in beauty

When the goddess is represented separately she has four names and seated on a beautiful Simhasana i e a lion seat. On this Simhasana a lotus with beautiful pericarp and eight petals should be made. On the pericarp she sits I ke Vinayaka. In her right hand should be a lotus with a big stalk touching the end of the armlet and in her left should be a charming nectar pot and similarly other two hands should carry a bilva and a conch. Behind her back there should be a pair of elephants bending down the pots as if in the act of pouring. On her head should be made a charming lotus.

¹ Dr Krant chit kes the reading geral

² The great skill has required to play upon a kina. Compare the nord praying means prakishah i nayam which by rudh! kṣanā comes to mean an expert

Conch represents good luck, bilva the whole world, and the nectar-pot the essence of waters and the lotus in her hand represents wealth. The pair of elephants personifies the two 'Nidhis 112 Sankha and Padma

Near the goddess Laksmī there should be goddess Rājaśrī, Svargalaksmi, Brāhmilaksmi and Jayalaksmi. All should be made beautiful and well-ornamented

The lotus on which Laksmi stands should be understood Kesava himself. The mother of the world does not remain alone even for a moment without Madusūdana.

Manu (Ad 70)—

The present Manu should have the marks of a king. The future Manu should be made without any ornaments. He should have matted hair, a Kamandalu and a rosary. He should be shown engaged in austerities and eventhough lean should be full of lustre.

If the future Manus are to be made for some purpose they have the forms like that of Sāvarni Manu

The past Manus should have the marks of a King At the back Revanta should be depicted on the back of a horse like the sun

Virupaksa (Ad 57)—

The colophon names this adhyaya Nirrtirupanirmana. In fact, however, it starts with the description of Virupaksa and Nirrti is described in the capacity of his wife

Virupaksa is 'flame-faced with whirling eyes. His hair is raised up. His beard and moustache (lit hair on the face) are green and his features are terrific. His colour is reddish-dark. He has two hands and carries a long staff. He wears black garments and all ornaments as usual. He has a camel and has in his hands a staff and reins or better staff like reins (of camel).

His wife, Nirgti is to be placed on his left side. Her limbs are dark and so is her face. She carries a noose in her hand

Virūpakṣa represents Kala (time) and Nirṛti, death. He is the embodiment of darkness therefore he is dark in colour and wears black garments

The staff in his hand signifies killing and the reins of the camel signify bondage while his vehicle, the camel represents Mahamoha (great infatuation)

¹ Dr. Kramrisch translates as "the conch and the lotus represent two seas"

² I adopt the reading of AC kars lyogena

³ The reading adopted here is pransudardah malaranah

Vayu (Ad 58)-

Vāyu (which is invisible to the eye) takes a visible form. He has the colour of the sky. The sky has the form of the wind. His garments are puffed up with wind. He has two hands. Sivā, his wife, is on his left side. She is the personification of motion (Gamaneccha lit. will to move.). Wind is represented as holding the ends of his garment and so also his wife Sivā. His face is averted and his hair is dishevelled. Vāyu has the smell and the colour of the object it contacts (Samāśrayat.), so, on account of being in contact with sky, his colour is that of collyrium. The sky is also his garment. His wife Sivā represents motion. Anila i.e. Vāyu is Aniruddha i.e. unobstructed.

Dharma (Ad 77)-

He has four faces, four arms and four feet. He wears a white garment and all kinds of ornaments. He should be made white. In his right hand he holds a rosary and a book in his left.

The image of the personified vyavasaya1 should be placed on his right, similarly Sukha having an excellent form should be placed on his left. The two hands of Dharma should be placed on their heads

The Aksamala represents time, while the book, agama or knowledge The four faces of Dharma represent Yajaa (sacrifice), Satya (truth) Tapas (austerity) and Dana (gift giving) His four hands represent space, time eleanness and purity. His four feet represent Struti, Smrti, Sadacara (good conduct) and the good to oneself. He is white in colour on account of predominance of Sattva. Knowledge is his garment

He has fourteen wives 112 Kirti, Lakşmi Dhrti, Medha, Pusti Śraddha Kriyi, Mati, Buddhi, Lajja, Santi Siddhi and Tusti. All of them have two hands and are beautiful. They are all lustrous and well ornamented. These fourteen are said to be the openings of Dharma. Even though Dharma stands alone he should be represented as accompanied by his wives.

Vairagya (Ad 78/1)-

Pradyumna becomes Vairagya when he assumes the body of Kapila. This Kapila as said in verse 5 is the ancient sage who preached the Samkhya philo sophy. In fact, in Ms. C. the colophon calls this adhyāya Kapilarūpanirmānam.

One hand (of Vairagya) should be placed in the middle and the other than that should be attached to it. The other two hands carry a Sankha and a Cakra

¹ Vyavasāya—Son of Dharma by Vapu—daughter of Dakia See William Monier's Sanskrif-English Dictionary

² The meaning seems to be that the hands are in Dhvanamudra indicating meditation. The reading of B satelate is adopted here

(disc) Thus he has four hands. He is seated in a Padmasana pose. His eyes are closed in meditation. Kapila should be made difficult to look at on account of his knot of braided hair or if we take the word mandala to mean halo, the meaning would be the halo of light round his matted hair. His shoulders are muscular on account of breath control. His feet are marked with the emblem of lotus. He wears the skin of a deer and an auspicious Yajnopavita. He is seated on the pericarp of the great Mantra¹ lotus.

He is great on account of his Vairagya absorbed in meditation. He concentrates on highest stage. Thus does the great preacher of Samkhya protect the world

Narasımlıa (Ad 782)—

The great Lord Visnu assuming the form of Narasimha is named Jūāna (knowledge) by the meditators (dhyanavidbhih)

Nrsimha has thick shoulders, waist and neck. The middle part of his body and his belly are lean. He has the face of a lion and the body of a man He has a halo round him. He wears a blue garment. He is adorned with ornaments. His face and mane are surrounded with flames. He stands in aligha pose. He should be represented as tearing the bosom of Hiranyakasipu with his sharp nails. Hiranyakasipu should have the colour of the blue lotus and should be placed on the knees of the god.

Hiranyakasipu represents ajūana (ignorance) while Bliagavān in the form of Samkarsana is the destroyer of ignorance. The impurity of the moving ones is of three kinds arising out of speech, mind and body. The god Samkarsana is constantly tearing up these impurities. Hari, in the Samkarsana aspect, assumes the form of Narasimha. Hari is the destroyer of the three types of darkness of the moving ones. There is no equal to him who is like the hidamurti. (form² of the deep reservoir) in this world.

The Nṛsimha form of the god is for the purpose of destroying all ignorance. Hari in this aspect may be represented in another way uz as sitting at ease on the lion-seat. His two hands should be placed on the head of Gadī. His body is surrounded by firmes. He holds a Sankha and a Padma. His feet are placed on the hands of the image of Pṛthiyi. His hands are beautified by the emblems of Sankha. Cakra. Gadī and Padma. His hair is all fiery.

There is the third way of representing Narasimha. The lustre of his aurora makes him difficult to look at. He¹ may be made with all ornaments or void of ornaments.

The word Mantramahapadma is not clear

² I have amended the reading hardamarti into hidamartih. Hida is the form of a hida or a deep reservoir of water of ambarasannikasah verse 13

³ According to Dr. Kramrisch "He should be furnished with all implements (but) devoid of all ornaments

1

The Lord of the world is knowledge incarnate. He is the abode of light and he is like the sky

Varaha (Ad 79)-

Hars as Ansenddha is Varaha, the embodiment of might and by the power of his might he lifts up the earth on the tip of his tusk

Varaha may be represented in another way, ie as a human boar (Nrvaraha) like Nrsimha ie human body with the face of a boar. He should be represented on Seşa

Seşa should be made with four hands, with beautiful jewelled hoods, with eyes representing wonder and engrossed in looking at the goddess (Prihivi) In his hards should be placed the plough and the club and his other two hands should be shown in the anjali pose. Snakes are his ornaments

On the back of Sesa the god should be shown in the aligha pose

On the span (praint) of his left hand should be placed Vasundharā in the form of a woman. She has two hands and engaged in solutation (namaskara) Sankha is depicted in the hand which holds the earth goddess. His other hands should earry Padma, Cakra and Goda.

Or the god in order to cut off the head of Hiranyakşa raises his hand holding a Cakra and faces him (Hiranyakşa) who has raised a trident

Hiranyakşa represents Anaisvarya (10 mightlessness) whom Varāha by means of aisvarya over powers. Or Varaha in human form should be represented hile Kapila in meditation. Or he may be represented with two hands in the act of carrying the Pinda (globe) of the earth. Or he may be represented as the personification of full anger¹ in the midst of many dānavas. In the act of holding the earth, he may either have a human-boar form or a simple boar form

Hayagriya (Ad 80)-

Hayagriva should be represented as a god having the head of a borse. He should be shown wearing a blue garment and with a smiling face. His feet should be placed in the hands of the image of the earth.

Hayagriva is Samkarsana form of Visnu

The god should be made with eight hands. In four of his hands he holds a conch a wheel, a made and a lotus personified. The other four hands should be placed on the heads of the personified Vedas because in a former age the god, Hayagriva saved the Vedas from Rasātala where the great demons had taken them away.

¹ I have adopted the reading of Ms B samagrakrodbarupo

Sakra (Ad 50)—

Sakra, the white one should be placed on an elephant having four tusks His wife Sacī should be seated on his left lap He has four hands while Sacī has two

Sakra of the golden hue wears a blue garment and all kinds of ornaments His oblique eye should be shown on the forehead Padma (lotus) and Ankusa (elephant-goad) are in his right hands while one of his left hand is on the back of Sacī and the other carries the thunderbolt

Saci holds a charming Santānamanjari in her left hand and the right hand is placed on the back of the lord of the gods—Sakra

Wearing all ornaments and having four arms are to be explained in the case of Brahman. He having three eyes is to be explained in the case of Sambhu His hue is golden because he is the source of all light. His blue garment represents the sky

The Ankusa (elephant-goad) in his hand represents command which subdues all beings. The lotus in the hand of the great god represents prosperity (Lakṣmī) which resides in lotus. The thunderbolt (Vajra) in the hand of Sakra represents anger which subdues the wicked

Sakra represents Vasudeva and Sacī Lakṣmī Therefore Sant mamañjarī in her hand represents Santāna or progeny The elephant Airavana represents artha and his four tusks represent four powers 112 Daiva (luck), Mantra (counsel), Prabhu (sovereign) and utsāha (exertion)

Padmanabha (Ad 81)-

The god Padmanābha should be shown sleeping on sesa. Sesa should be represented as lying in waters. His head dazzles the sight on account of the great jewels on his hoods. Padmanābha—the god of gods has four hands. One of his legs is placed on the lap of Laksmi and the other on the lap—that is the expanded hood of sesa. One of his hands should be extended over the knee, another should be placed on the navel, the third should be under his head and the remaining one should be holding a cluster of the Santāna flowers. Brahma should be shown on the lotus, which sprung from his navel. Madhu and Kaitabha—two demons should be shown clinging to the lotus-stalk.

Near sesa should be represented in human forms the weapons of Visnu. The two Nasatyas (Ad 49)—

The two Nasatyns, the physicians of gods should be shown together. They have two arms. They resemble in colour the lotus leaf and wear the garments of the same colour. They have beautiful eyes and are decorated with all sorts of ornaments.

one Yava should be made in the pericarp. Its circumference should be of one sixteenth part. The remaining part should be filled with eight glossy petals.

Visiarupa (Adhyāya 83)-

The cosmic form of Hari describes another aspect of Hari or Vişnu which is called Visvarupa i.e. 'omniprasent'

The basic four faces are to be Vaisnava i e those of Visnu. On it should be the Maheśvara faces excepting the Iśāna one. On these should be made the faces of Brahmā. The faces of all gods and others should be made sideways and upwards. The faces of various animals also may be represented in these. The Dṛṣṭis i e eye sights as described in Citrasutra should all be shown in the different parts of the different heads. He should be made as if swallowing everything in company of all terrific creatures. Similarly he should have as many hands as the artist can make utilizing his knowledge of Nṛṭtaśastra to represent them in as many poses as possible. Some of the hands may carry weapons some sacrificial staffs some i silpa Bhandas i e implements of silpa some kalabhāndas i e implements of fine arts and some Vadyabhandas i e musical implements.

He may be represented in the Vaikuntha form also. Three worlds should be shown in the different parts of his body by citrakarma ie by painting. All the colours should be shown on the many heads of this god of multiform

Ad 85-

The last adhyaya of Pratimalakşanam is called Devodyana Rupa Nirmana ie the form of a garden of gods. The idea seems to present a collective description of all the gods. It may also suggest a garden in which there would be images of all gods. Or has it any connection with Udyana country?

The first 60 verses are devoted to the description of Visnu in his various as peets along with his attendants and implements

Samkarsana should look like Vasudeva His colour should be white and should wear blue dress. In the place of Gadā and Cakra he should hold Musala and Langala respectively. These Musala and Langala should have the beautiful human forms with a slender waist.

Pradvumna has the form of Vasudeva His colour is dark like the sprouts of Durva and he wears white garment He should hold Capa (bow) and arrow in place of Cakra and Gada The bow and arrow should be shown similar to Musala and Langala (like human forms)

Amruddha should be made like this ie Pradyumna. The colour of his body resembles that of the leaf of lotus. He wears red garment. He should

¹ According to Dr. Kramnsch— Others carrying sacrific all sticks pots of (i.e. containing).
Time arts and music

carry shield and sword in place of Cakra and Gadā respectively Shield (Carman) should be in the form of Cakra and the sword should be made tall

The symbols of Cakra etc should be shown slightly above the heads of the images of gods The forms of the weapons like Cakra and others should be made attractive The excellent banners of gods should be shown on their left should be supported on the staffs and accompanied by their own pieces of bunting The Pratiharas (attendants) of Vasudeva should have yellowish colour are known as Subhadra and Vasubhadra They hold darts or Javelins in their hands The Pratihāras of Samkarsana are Āṣadha and Yajñatāra They are of blue colour The Pratihāras of Pradyumna are Java They hold Mudgara and Vijaya They are white in colour Both carry swords in their hands Pratiharas of Aniruddha are Amoda and Pramoda They are red in colour and holding Sakti in their hands. They all have beautiful forms. They are all well ornamented They have two hands with Tarjani raised Their look should be fixed on the door. Subhadra should be known as Sakra and Vasubhadra as Hutāśana Āsādha should be known as Yama and Yajnatāra as Virūpāksa Jaya should be known as Varuna, the lord of aquatic creatures and Vijaya as Pavana Amoda should be known as Dhanada and Pramoda as Siva All these Pratiharas may also have the form of the eight Diggajas ie elephants There are eight groups of gods The Pratiharas of Vasudeva are known as Anima and Laghima, of Samkarsana, Mahima and Prapti, of Pradyumna, Prakamya and Isitva, Amoda and Pramoda of Aniruddha are known as Vasitva and Kamavasāyitā Thus the image of the god with four aspects should be made Vaikuntha should be made of one form only. He should be made with four faces which have been described before. If the four faces are made, he becomes caturmurti ie the god of four aspects. The eastern face, which is the chief, should be made placed. The southern one, the face of knowledge should resemble a lion face The western face, which is terrible, should be the symbol of Aisvarya Nothing has been said of the northern face. The other characteristics of the four faces are to be made as described before

Tarksya should be made four armed Garuda should have the hands in anjali pose Vişnu sits at ease on his back, holding a lotus in hand. On the wings of Tarkşya, Gadā and Cakra should be placed Śrī should be shown seated on Garuda-seat or on the left lap (of Viṣnu) or God should be made seated on the body of seşa. The face of the god should be made difficult to look at on account of the hoods of sesa. The god seated on the sesa should have his four hands empty. Cakra and Gadā should be made standing near him in human forms. Lakşmī should be made seated on the seşa sespent. God Harishould be made lying on the seşa as his bed. The line Airāvati Samudbhede Yathārūpo mayentah is not clear.

The forms of Nṛsimha Varāha Kapila Visvarāpa Hayagrīva Padmanābha and Brahma Raudra and Rāma the forms of Viṣnu are already described

The god Vumana should have crooked limbs and fat body. He should carry staff and be prepared for study. His colour is dark like during grass and wears black antelope skin. Trivikrama in colour resembles the colour of the water leaden cloud. He bears a staff and a noose and a sankha on his lower lip (as if blowing) Sankha Cakra, Gada and Padma should be done in their natural forms. They should not be shown in human forms and the rest as al He has (only) one face which is turned upwards and his eyes are ready said The forms of Nara and Narayana have been described. The form of Arsna has been described along with Hari, the son of Varuna Hamsa Mats) aand Kurma should have their natural forms. But Janardana should be shown as horned fish. Or he should have the form of beautiful woman and should be decorated with all ornaments. She should carry a pot of nectar in her hand and The king Pethu should be made with all the bodily marks of giving large gifts a Cal ravartin Rama Bhargava 1e Parasuruma son of Bhrgu should be so represented as to make him difficult to look at on account of his matted locks of hair. He wears antelope skin and has an axe in his hand. Ruma Dasaratli 1e the son of Dasaratha should be represented with royal insignia similarly Bharata Laksmana and Satrughna but without a mauli (crest) Valnuki should be fair in colour. His matted hair makes him difficult to look at. He is engaged in austerities and he is calm. He is neither lean nor fat. Dattutreia should be represented like Valmiki

Vyasa—is dark in colour and lean in body. His matted hair is yellow. On his two sides sit his four disciples Sumantu. Jaimini. Paila and Vaisani päyana.

Yudhisthira-should be made with all royal marks

Vykodara or Bhima—should be shown without beard or moustache fat in body but lean in the middle. He carries a club in his hand. He looks obliquely and his eye brows are contracted.

Arjuna—The glorious Arjuna is dark in colour as durva grass. He bears a bow and an arrow. He wears a crown and red armlets. He is adorn d by all ornaments.

Nakula and Sahadeva—should be made like two Asvins. They should carry swords and shields instead of medicinal herbs

Kṛṣṇāt i e Draupadi—should be exceedingly beautiful and resembling in colour the blue lotus leaf

¹ Here Dr. Stella Kramnsch takes Krspa as Krsna. Krspa is the other name of Draupadi

- Devaki—Resembles in colour the white lotus
- Yaśodā—Should be of the colour of the Madhūka flower. She as Ekānamśā stands between Rāma (Bala) and Krsna Her left hand is on the waist and in the other hand holds a lotus
- ¹Ekānamsā—Should be placed between Rāma and Krşna, with her left hand on her waist and in the right holding a lotus
- Balarama—Carries a plough-share and a pestle He is of white colour He wears Kundalas in his ears and has very blue garments. His eyes are intoxicated with drinks
- Krsna—Should be made with the usual colour of the blue lotus, carrying a cakra in his hand
- Rukmini—Should be dark (syama) in colour She carries a blue lotus in her hands
- Satyabhāmā—Should be made seated on Garuda and very beautiful Other goddesses should be made beautiful and charming
- Pradyumna—The good-looking Pradyumna should be made carrying a bow and arrow His colour is like Durvā grass He wears a white garment He is full of intoxication
- Amruddha—Should be made carrying a sword and a shield
- Samba—Carries a club in his hand. He should be made particularly handsome. Samba and Aniruddha should have the colour of white lotus. They wear red garments. On their sides should be placed two women carrying swords in their hands.
- Yayudhāna—Should be made tall, with long arms, good eyes carrying a bow and an arrow and resembling in colour the interior of blue lotus

We are told that it is impossible to describe in detail the manifestations of Vişnu, the god of gods. These manifestations should be represented after knowing their functions and consulting the scripture

Miscellaneous gods and goddesses-

Adhyāya 73 also describes many miscellaneous gods and goddesses

Kasyapa should be made in the form of Prajāpati His twelve wives Aditi, Diti, Danu, Kāṣṭhā, Diniyu, Simhikā, Kadrū, Krodhī, Turā, Prādhā, Vinatā, Surabhi, khisā etc the first mothers should be all made beautiful and with two hands. The eye-sights of Aditi, Diti, Vinatā and Surabhi should be placid. All

¹ cf Brhatsmhitá p 780 In drama named Kaumudimahotsava (Daksinabharati granthamáli No 4 Madras 1926 (p 68)) —

Vindhya Vāsinī is called Ekānangā and she is regarded as tutelary deity of Yadus, युग्देशने हि युद्रमामेशानहा ।

these mothers of gods should be made according to the rules of image-making. The other wives of Kasyapa should have bewildered eyes

Dhruva the lord of planets should have the form of Visnu He has two hands and a placid-look. He carries the Cakra and reins in his hands (?or rays of the Cakra)

Agastya should be made in the form of future Manu So also Bhrgu and other great sages

Jayanta, the son of Indra should be made handsome with two hands carrying bow and an arrow and with a gentle mien

Bala, the son of Yama should be represented as carrying shield and sula Puşkara has the colour of the lotus-leaf. He carries a sword and a book in his two hands

Jyotsna, the daughter of the moon, matchless in beauty and decorated with all ornaments should be shown on his (? Puşkara) left side

Nalakubara—has two tusks in his mouth and carries a vessel of jewels in his hand

Manibhadra should have the form of (Dhanada) Kubera He is depicted with his wife and riding a man but there should be no sibikă

Purojava-The son of Vayu has the form of Vayu

Varcas—The son of Soma should be made exceedingly beautiful He holds a lotus as a plaything (Lila Kamala) in his hands which makes him radiant

Nandi—Strong armed Nandi has three eyes and four arms. His colour is as red as Sindura. He is covered with tiger's skin. He holds a trident and a Bhindipala in his two hands. The third hand is on his head and the fourth one is in a threatening pose. He should be represented as watching people coming from a distance.

Virabhadra should be similarly made

The description of Dharma should be understood as given in Adhyāya 77 Artha should have the form of Kubera

Kāmadeva should be made of matchless beauty with eight hands and having Sankha and Padma as his ornaments (The meaning seems to be that sankha and Padma are in two of his hands). He holds a bow and arrows in his hands and his eyes indicate intoxication. He has four wives of charming beauty—Rati Priti, šakti and Madašakti. Four of his hands should be shown touching the bosoms of his wives. Makara should be made as his banner. He should be shown with the five arrow heads.

¹ According to Dr Kramrisch—'All the mothers should be represented by one (engaged) in the work of making images.'

Nidrā should be represented with her left hand on the waist. To her right should be placed Sankarşana and Vāsudeva on the left and so also his son Maikānah i

The verses referring to Laksmi and Sarasvati have been incorporated at the proper places

Vārunī should be exceedingly beautiful, carrying a Kalasa

Camunda should be made with a drooping belly with her bosom covered by a red cloth She has many hands Some of which carry tridents and others are themselves weapons. She has a huge chariot. She subdues all creatures

Suskā should have three faces and he particularly haggard looking. She has many hands and is covered all round with snakes

Bhimā wears a garland of skulls and carries a Khaţvānga

The messenger Siva should be made having the face of a bitch fox. She has four hands and stands in the Alidha pose. In her three hands she carries a pot full of blood, a sword and a Sūla while the fourth hand is full of flesh

The Mothers should have the emblems of the respective gods All of them carry flesh and vessels full of blood. They are to be shown in dancing poses whose forms are not described.

Purvā (Eastern direction) should be represented as a Balā (a girl), seated on an elephant Her colour is red

Purvadaksına (South-East) should be shown as a Brhat Kanyā (a grown up girl) seated on a she-elephant Her colour is that of a white lotus Daksınā should be represented as a Prāptayauvanā (a girl who has attended youth), seated in a chariot Her colour is yellowish. The South-west is dark yellowish and seated on a camel. The west has a dark colour and seated on a horse. Both have passed the age of youth

Vadavā (N W) should be represented as an āsannapalita (one whose hair is becoming white) Her colour is blue. North is Vrddhā (old woman) Her colour is white and she is seated on a man. Pūrvottarā (North east) is very old, has pale colour and is seated on a bull. The lower region (adhastāt) should be made like the earth while the Urdhvā should be made like Gagana.

Kāla who is frightening has a terrific face and moves everywhere. He has a noose in his hand and has serpents and scorpions as roma (hair on the body)

Jvara has three feet, three eyes and three faces and three hands He looks fierce and his eyes are bewildered Ashes are his weapons

¹ The reading Maikanam ca tathā is not clear (Slo 24)

Dhanvantari should have a beautiful form and should be pleasing to look at In his two hands are jars full of nectar

Samavedal should be represented as having a horse's face. Alternatively the Vedas should be represented in the forms of gods as follows—

Rgveda in the form of Brahma Yajurveda Vasava (Indra) Samaveda Visnu and Atharva Sambu

Šiksa should be known as Prajāpati and Kalpa as Brahmā Vyakarana as Sarasvati Nirukta as Varuna Chhandociti as Agni and Jyotisa as the sun Mimainsa as the glorious moon and Nyayamarea as the wind Dharmasastras as Dharma and Purana as Manu Itihasa as lord of Praja Dhanurveda as Sata kratu Ayurveda as Dhanvantari Phalaveda (Astrology) as Mahi Nittašastra as Mahesvara Pincaratra as Sankarsana Pasupata as Rudra Yoga as Ananta Sankhya as Kapila Arthasāstra as Kubera and Kalasastra as Kama

All other Sastras are to be represented in the forms of their authors because the authors are the presiding deities therefore the Sastra has the body of the author

The form of the different limbs of time should be made resembling the appearance of their own god

Aiduka

Ad 84 describes the form of Aiduka Let us study it

First comes Bhadrapitha ² It is furnished with four beautiful steps or flights of steps corresponding to the four directions. This Bhadrapitha is surmounted by two other Bhadrapithas. On the third a Linga form should be placed. This linga³ should not be accompanied with the RePha. In its middle should be raised a four sided immoveable (dhruva) staff. Above it there should be thirteen Bhumikas⁴ i.e. floors. On it (i.e. the thirteenth bhumika) there should be an Amalasaraka and above the Amalasaraka there should be a rounded staff. It should be decorated with a medallion. In its middle there should be two equal halves of the moon (or there should be the sun and the moon if we accept the amendation Samarkacindra). In the space below the bhuvanas (floors) but above the linga should be placed in the four directions the Lokapalas carrying the Sulas in their hands. Their names are Virudha Dhrtarastra Virupakşa and Kubera. The Lokapalas have the dress of the sun. They wear armours and beautiful ornaments. These four Lokapalas are to be known as Sakra Yami Varuna and Kubera.

According to Dr S Kramnsch Eternal Samaveda should be represented but with the face of a dog

² See Ad 75 for a description of the Bhadrap tha

³ According to Dr. Kramr sch. t should also be furnished with the lines of a phal s

⁴ According to Dr. Kramrish. Bhum kā means steps

In this form the thirteen bhumikas and Amalasāraka represent fourteen bhuvanas (worlds) The linga represents, of course, Mahesvara The rounded staff represents Pitāmaha ie Brahman, while the four sided staff represents the god Janārdana ie Visnu The three Bhadrapithas are to be understood as the forms of Gunas These Gunas are probably Sattva, Rajas and Tamas The putting up of the three gunas in the form of three Bhadrapīthas indicate the aggregate of the three worlds with their animate and inanimate objects

This form of Aiduka is called Prajahita The importance of erecting an Aidūka is shown by saying that by worshipping Aiduka, the whole world is worshipped Men who remain engaged in the worship of Aiduka get happiness in this world and at the end secure a place in the heaven

Now let us consider the significance of Aiduka

The preceding account of Aiduka raises several questions of importance. The first and the foremost question is what is Aiduka. It is a word, which if not unknown, is comparatively very unfamiliar. From its description, the only thing that we clearly understand is that it is a sacred object of worship. Let us consider whether it is an image, a deity or some sacred structure.

Linga which represents Maheswara seems to be the basic deity from which arises Visnu in the form of a four-sided staff and from Visnu arises Brahman in the form of a rounded staff. But the point to be noted is that none of these principal deities are represented in any image as such but are symbolized through the linga and the four-sided and the rounded staffs. The only anthropomorphic figures are the four lokapālas who are akin to the images of the sun and his attendants. These are, as we have seen in the section on the sun, in the foreign northern (udicya) garbs (Ad 67)

The worship of Aiduka is tantamount to the worship of the whole world. The same is said about the worship of Linga (Ad 74) and of the Vyoman (Ad 75). A comparison of these three namely the Linga, the Vyoman and the Aiduka brings to light the fact that these three being not imitative or representative in their forms of any specific things, are symbolic of the entire unlimited infinite universe. We may, therefore, say that Aiduka is not the name of any specific deity but is like Linga and Vyoman, a structure symbolizing the cosmic divinity.

The fact that Aiduka follows the Visvarupa (Ad 83) of Visnu, is also of some significance. In the earlier chapters the specific forms and manifestations of Visnu have been described. But in the Visvarupa form, his image is to be so made as to include all deities, all creatures, all arts etc. In short, the image is to comprehend the whole universe and though it is not unimitative like Aiduka, Linga or Vyoman, it does not remain an image in the ordinary sense of the word but becomes a sort of repository structure.

Kşīrasvāmin in his commentary on Amarakośa also derives it from

एड्- तत्रह्मानतार्थनतास्थि, एध्यत एइसम् ।

Mahesvara, however, in his commentary on Amarakosa says

नत्रुष्यमनः येस्न वीरस चेदेहर संतम् अन्तर्यम्तानि रीरमानि अस्यीनि दार्ट्यार्थं यत्र तत् । मीरस वठीनद्रव्यस्योपलक्षणम् ।

From the above discussion we gather that the word Edüka was used for a wall or a structure which contains bones. In later times, however, the word seems to have meant any wall or structure in which bones or some other material was used to strengthen the wall (dārdhyārtham) as explained by Mahesvara

Now we come to the root ed from which both Hemacandra and Kşira swamin derive the word edüka. I have not been able to find this root in Sanskrit Dhātupāthas. It is however, found in early Prakrit works like Bhagavatisūtra Rāyapaseniya etc. There it is used in the sense of to put away, to abandon etc.\(^1\) So eduka is something in which bones are put away. This gives us a clue to the original meaning of the word aidūka. It has something to do with cremation It must have been a sort of shrine holding sacred relies in the form of bones. But it should be noted that the word eduka as such is not mentioned in the Prākrit dictionaries like Paiasaddamahannavo or Abhidhanarājendra.

We, however, find the word eluga or eluya used in early Prakrta literature. There the meaning is 'threshold' or 'a wood under a door frame'. It is connected with clu (a kind of tree). Compare udumbara and ummara (Guj umbaro).

Edgerton in his Buddhist Hybrid Sanskrit Dictionary (Vol. 1) mentions the word cluka and regards it as equivalent to AMg—cluya threshold of a door and computes it with Pali claka—In the second meaning he equates it with Sk eduka and gives the meaning 'Monument for containing the ashes of a dead person'. He regards it as probably a Buddhist word—He refers to the Maha vastu II 486.5—In the prose section, the word cluka occurs and there it "refers to the bones' of ordinary laymen, not of religious persons"

So we must distinguish between cluka which is related to cluya and cluka which is related to eduka. From the quotations tatra ca clukadvare etc (Buddhist Hybrid Sk Dictionary p. 157) it appears that the Buddhist cluka might have been a sort of threshold where bones of laymen might have been interted. The Pāli Jataka version uses the word khettāni in this sense. It must be regarded as older than Mahāvastu. It is likely that the Mahavastu might have substituted the more current word clukāni in the place of khettāni. If this is correct, it would lead us to the conclusion that the Desya word edūka, which later on became sanskritised and accepted in sanskrit lexicons, originally must have meant a structure containing bone relics.

¹ See Palasaddamahaqqavo छोडना, स्य ग करना, इहना, दूर करना

The Pālī word eluka which stands for the Prākrta eluya or eluka and sanskrit eduka is probably a non-Indo-Aryan word. We have seen that Hemacandra derives eduka from the root ed which is a Prākrta root used in some ¹Jain Āgamas

Dr ²Helmer Smith informs me 'if searching for roots, we may as well think of canarese el to stand up, to rise ' I think that the original word for eluka and edüka is connected with this root

Eluka is 'something which rises up' It might refer to a form of Linga or a structure suggestive of it

From the theory that the root ed or el is a non-Indo-Aryan root belonging to the Dravidian group of languages alone, we can draw no conclusion about the age of this Linga like structure, but we have evidence in the Harappan culture for the existence of what are called proto-siva Lingas We may thus combine the linguistic datum of elüka with the material datum of a Linga form and guess that elüka might have been a pre-buddhist structure of Linga shape with bones or ashes as relics in it 3

The inquiry about the philological origin of Aidūka leads us to one indisputable fact. The cluka of Mahāvastu and the cdūka of Amarakosa, Abhidhānacintāmanī etc agree in one point that it is a structure containing bones as relies. This would naturally lead us to think that cduka is some sort of memorial structure connected with a kind of Smasāna. The description of Aidūka in the Visnudharmottara makes it clear that it is not an image of any particular deity but a structure signifying the whole trinity as well as all the worlds with Linga or Mahesa at the base. So we have said that Aidūka is basically a Saiva structure

When we compare these linguistic and descriptive data pertaining to Aiduka, we find that there is a discrepancy—The description in the Visnudharmottara does not mention any kind of relic while Amarakośa and other Sanskrit lexicons do not specify the sectarian character of Aidūka—This discrepancy can—be explained in

¹ See Paiasaddamahannavo

I had the pleasure of meeting Dr. Helmer Smith in Stockholm at his residence and discussing the problem of Aidūka. I sent him an offprint of my article on Aidūka published in the Journal of Oriental Institute Vol. 1, No. 3, March 1952. In a letter dated 7-VIII-1953 acknowledging the receipt of my letter be made some important suggestions and drew my attention to the Jataka passage and Edgerton's Buddhist Hybrid Sk. Dictionary referred to above.

If from the description of Aidūka in our text particularly its quadrilateral Bhadrapitha and the general make up of the thing, we can infer Aidūka to be more or less a quadrilateral structure, it will be possible to connect it with the catth srakti smašāna of the daivi praja mentioned in the Satapatha Brahmana. I have hazarded a guess that the Aidūka is a developed form of catth srakti śmašana, and stūpa is a developed form of parimandala śmasana of the āsuri or prāci praja—Eastern people mentioned in the same work. Vide. On further consideration, I have modified some of the views contained in my article on Aidūka published in the Journal of the Onental Institute, Baroda, Vol. 1 No. 3 1952.

the following way —Originally cluka or equika implied a funerary structure From times immemorial, Rudra siva is associated with smasana in Indian tradition. So it is reasonable to assume that the relic containing cluka or equika had some sort of Linga marked or made on it. When the Buddhists later on substituted the word clukani for khettani¹ they might have raised similar structures with or without a Linga on them. As mentioned in Mahavastu the Buddhist Aidukas might have carried the relics of laymen, probably to distinguish them from their stupas which are supposed to contain relics of Buddha or prominent Bhikkhus.

The original Saiva aidukas seem to have followed a development parallel to those of the Caityas and even stupas, just as Caityas and stupas lost their funerary connections and were built near towns and cities and became sacred objects of worship, so also the Saiva aidukas might have moved from Smaśana to towns and cities and become sacred objects of worship. They might have become so popular as almost to displace gods and temples

The Mahabharata, disapproves these Aidūkas—Śaiva or Buddhist-containing bones, ashes and other funerary relies, probably because in pure Brahmanical tradition these things cause pollution and are therefore to be avoided. When worship of such things displacing the worship of gods and their holy temples becomes popular, we can understand the disparagement of the Mahabhārata

Here, however, another discrepancy arises. On one side the Mahabharata disparages Aidūkas while on the other the Visnudharmottara purāna commends it as an object of worship. This discrepancy can be explained on the assumption that the practice of putting bone relies which causes pollution might have been given up on account of the disparagement it received from the holy Brahmanas as illustrated in the Mahabharata. This would also explain why an Aidūka form without any bone relies is described in the Visnudharmottara. In fact it might have taken a long time for the practice of putting funerary relies to cease in avowed by byshvanceal structure.

So we can explain the discrepancy between the linguistic data and the descriptive data regarding Aiduka by assuming the following four stages —

- (i) Eluka signifying structures containing bones or other funerary relics suggestive of the shape of a Linga mostly in a cemetery
- (2) The substitution of cluka for khetta by the Buddhists to indicate a structure containing the funerary relies of laymen probably to distinguish it from the stupa containing the relies of the Buddha and his prominent followers

¹ See Buddhist Hybrid Sanskitt Dictionary P 157

- (3) Prevalance of the practice of raising such Aidukas saiva and Buddhist-containing pollution for the Vedic Brahmin, displacing gods and temples
- (4) Strong disparagement of such practices resulting in the building of saiva Aidūkas without any funerary relics

One more problem arising from the description of Aiduka still remains to be considered. The names of the four Lokapālas belong to the Buddhist mythology. How do they come in this Saiva object of worship? It has been said that Aidūkas were originally Buddhist and therefore the association of Buddhist Lokapalas has survived even in the saiva Aiduka. As shown above, Aidūka is like stupa a ipre-buddhist structure and originally, if anything a Saivite structure. Therefore, the association of the buddhist Lokapālas and their identification with the Saiva Lokapalas are due to the influence of the Tantrika cult. Tantrism was creating a sort of syncretism of Saivism and Buddhism. We find a clear illustration of this in the religious cults of Sumatrā, Javā, Bāli etc., particularly in the cult of Lokapātha.

This Tāntrika interpretation of Aiduka would also explain its mystic character of symbolizing the trinity as well as the whole universe consisting of 14 worlds Inherence of the Tantrika power in Aiduka would also explain its capacity to be Prajahita ie to achieve the welfare of the people. It would also explain why inspite of the Mahabharata disparagement it has been strongly commended as a sublime object of cosmic worship

¹ History of Indian and Indonesian art (P 30) by A K Coomaraswamy

OUR TEXT AND THE REMAINS OF ANCIENT INDIAN PAINTING AND SCULPTURE

Here I propose to discuss how much of the information derived from our text regarding painting and sculpture can be corroborated by the actual monumental remains

Painting

Mural painting—

We have seen that Adhyāya 40, which is called Rangavyatikara opens with prescriptions as to how the surface of the walls have to be prepared for painting. The first place given to wall painting shows the great importance attached to it, probably on account of its prevalence in ancient times. As Mr Percy Brown, after describing the Jogimāra cave, says 'it is more than likely that other rock-cut halls and chambers were originally also adorned with frescoes. Mr Havell's says 'a Citraśalā or galiery of rural paintings was an indispensable annexe to a Hindu palace until quite modern times.

The oldest concrete example of datable painting is to be found on the walls of Jogimara cave of the Ramgarh hill in Sirguja in Madhya Pradesha. The wall-paintings in the Buddhist cave-temples at Sigiria in Ceylon, Ajanta and Bagh are well known. In the rock-cut temple at Sittannavasals in the ancient Pallava country not far from Pudukkotai fresco-paintings were discovered in 1920. These paintings are regarded as Jain by Prof. Dubreuil and Dr. Coomaraswamy. There are remains of Brahmanical frescoes at Ellora also which may be of the 12th cent. or earlier?

*The devastating influence of the Indian climate has been responsible for the destruction of the mural paintings. But from what has been said above

Indian Painting-Mehta N C) (Pages 11 and 12)

¹ For literary reference see Indian Painting by Percy Brown Pages 19 to 24, and Indian Sculpture and Painting (revised edition 1928) by Havell Pages 154 to 163

² Indian Painting-Percy Brown Page 17

³ Indian Sculpture and Painting—Havell Page 156

⁴ See also History of Indian and Indonesian art (pp. 87 to 91)

⁵ Indian Sculpture and Painting-Havell Page 173 7

⁶ History of Indian and Indonesian Art—Dr. A. K. Coomaraswamy Page 89

The figure of Ardhanariswara however, from this cave cannot be called Jain. Mr. N. C. Mehta is of the opinion that it is impossible to say whether the Sittannavasal pictures are Jain in their subject matter unless more is known of these pictorial remains. (studies in

⁷ Indian Painting—Percy Brown Page 42

it becomes clear that from very ancient times mural painting was practised in Brahmanical, Buddhist and Jain rock-cut and structural temples, royal palaces and mansions of nobles and wealthy merchant princes etc

The Jogimara¹ cave-paintings are presumed to have been executed about the first century before the christian era. The Ajanta caves have been classified into the following periods of time—

²(A) Caves 9 and 10

Second first century B C

- (B) Pillars, in cave 10
- " A D 350 (perhaps later)
- (C) Caves 16 and 17
- " AD 500

- (D) Caves 1 and 2
- " A D 626 628

The paintings of Siginya³ and Bagh are supposed to belong to the 5th cent. A D those of Sittannavāsal to the 7th cent A D and those of Ellora to the 12th cent or earlier

The technical process-

The technique of the paintings at Ajanta and Bagh has been a matter of discussion. Sir John Marshall says that it is Tempera painting not Fresco Buono but as Mr E B Havell' says there cannot be any doubt that the true fresco Process has been practised in India for many centuries. Its technique also has been inferred from the existing remains by scholars such as Havell, Dr Coomaraswamy and Mr Percy Brown and others. Some scientists may as well study and chemically test the prescriptions regarding the preparation of wall surface, paints, mixture etc given in Ad 40, ślokas I to 9. Any way history has more or less confirmed the claim अपि वर्षश्वस्थान्ते न प्रणाविद्य किहिन्द । that the painting thus made will not disappear even after a hundred years

Some details-

Eventhough our text is Brahmanical while the monumental remains are mainly Buddhist, as far as the technique of painting and its secular matter are concerned, there could be no religious distinction. Religion only came in the depiction of mythological matter not in its artistic mode of expression. In

मातद्वद्वारसपट्रबद्धे

स्तम्भितं चित्रमृदारपुरुछै । धौत जरेनापि न नाश्येत [१ च]

तिष्ठलनेकान्यपि वत्सराणि॥ ३१

I Indian Painting—Percy Brown Page 17

² Indian Painting—Percy Brown—Page 30

See also Archaeology in India

³ History of Indian and Indonesian Art—Dr A K Coomaraswamy, Pages 77, 87, 163

⁴ Indian Sculpture and Painting—Havell Page 171 and also Appendix Page 278

⁵ Compare also the last verse of this Adhyaya—

fact, we can, by comparing the information of our text with the actual paintings at Ajanta and Bagh, find many items of our text illustrated in them. For example—the five types of men described in Adhyāya 35 viz Hamsa, Bhadra, Mālavya, Rucaka, and Sasaka as well as the five types of women described in Adhyāya 37 can be illustrated from the great variety of men and women depicted in the above mentioned frescoes as well as in other paintings. For example—the prescription—a woman standing near a man should be in height upto the shoulder of man can be illustrated in many of these paintings, so also many other details of the different parts of the body of men and women. Characteristics of cakra vartins like webbed fingers of hands and feet, a tuft of hair between the two eye brows can also be illustrated in paintings and sculptures of Gupta period. Similarly a study of the paintings would show that the instructions of our text regarding the postures mudrās or hand poses, rasadīstis—sentiments and moods expressed by eyes—and many such artistic observations are carefully followed.

As we have seen our text employs the word citra to cover both painting and sculpture. Therefore many things said about painting in Citrasūtra apply also to Pratima. In fact the pratimā laksana taking for granted the technique described in Citrasūtra mainly devotes itself to the description of a great number of deities male and female, their vehicles and symbols and insignia

We find in the Gupta age¹ the worship of Vişnu, Siva, Sakti, Kārtikeya Surya and many other deties as highly prevalent. Vişnu is mentioned under various names in the inscriptions. So also the various names of Siva are mentioned. Linga worship² also was current in this age.

Sakti is referred to as Bhagavati Bhavani, Devi Gauri, Katyāyani and Parvati "Višvavarman, a feudatory of Kumara Gupta I, constructed a temple for the worship of the Divine Mothers (Matras) a very terrible abode filled with full of Dakinis or ghosts who utter loud and tremendous shouts in joy and stir up the very oceans with the mighty winds rising from the performance of the täntric rites."

The other desties that we find mentioned in Gupta inscriptions are Kubera who is also called Dhanada or Dhanesvara, varuna, Indra or Sakra, Yama or Antaka or Kṛtānta, Hanumat Rama Kamadeva Lokapala Maghavat Bṛhaspati, Vidyādhara, while Nara, Kinnara, Gandharva, Mahisasura and Nandi are men tioned as demi gods

If we compare the above information derived from the Gupta inscriptions about various deities with what we find in the Pratimalakşana we shall be

¹ Gupta Empire-Radhakamal Mookerii-Pages 134 to 138

² The earliest Siva linga is that bearing an inscription dated A D 436 and found at Kara madanda in Tyzabad

able to understand the development of Saiva and Vaisnava pantheon as we find in our text

Now I will try to show how some of the images described in our text resemble in a more or less degree to some of the existing images of the corresponding deities

Padmanābha—on the wall of the Gupta temple at Deogarh, a composite image of Ananta-śāyi Nārāyana is shown. This image agrees with the description given in our text (Adhyāya 81)

Śeṣa-Sayın Vısnu (from Shahabad) has disc and conch in his two hands.

Laksmi (Adhyāya 82)—The images of Lakṣmi are commonly seen in the pictures as well as in the Museums

Saraswati—In the provincial Museum, Lucknow, there is an image of Saraswati with four hands and seated on the vehicle of a peacock. It, however, differs in some respects from the description given in our text. In our text, She holds in her four hands rosary, trident, book and a water-vessel, while in this image Saraswati holds Vinā in two hands and in one a book but the remaining hand is damaged. So in the fourth hand there might be water-vessel or trident or rosary. No vehicle of Sarasvati is mentioned in our text.

Surya—According to Sir R G Bhandarkar the images of the Sun that are found in the extant remains of the temples of Sürya from Multan down to Cutch 'have boots reaching upto the knees and a girdle round the waist with one end hanging downwards'.

As Dr V S Agarvala says in his work, Gupta Art Sûrya images of ancient Indian type with a chariot of four horses are known in the early art of Bodhagayā, Bhājā and Anantaguphā A new type of Sûrya clad in Northern dress (Udicyaveśa) and wearing long buskined boots became the usual feature in Kusāna images influenced by the Magian Sun worship from Persia The Persian influence is even more strongly marked in the Gupta images not only of the Sun-god, but also of his two attendants Danda and Pingala, the latter a pot-bellied figure holding a pen and an inkpot

"At Khair Khaneh near Kabul Mon Hackin discovered a remarkable image of Surya dressed like a Sassanian king and wearing a round apron like tunic fringed with pearls. The Sassanian kings had a special liking for pearls set in the dress. Bana also refers to the fashion of pearl-spangled tunics worn by kings in the train of Harsha (Taramukta-phalopaciyamana varabana). Some of the statues bearing close

¹ pp 154-5. Vaisnavism and Saivism, EIR.

Sassanian influence lead us to infer that the intercourse between India and Persia in the Gupta-Sassanian epoch was much more intimate than is often imagined. A life-size bust (D. I Mathura Museum) wearing a Kulah cap (Skt Khola) with a crescent and globule symbol, spiral curls of hair, a tight beard band, a bejewelled cuirass and a belled coat, represents a figure in Sassanian style During the reigns of Shahpur II and his successors Ardashir II and Shahpur III (between 309 and 386 AD) upto the reign of Khusru II 590-628 AD), the cultural nter-relation between India and Persia was at its peak. The scene of the so-called Persian embassy being received by an Indian king in full court ceremonial painted in Cave I at Ajanta, and another scene identified as that of the Persian king Khusru Parwiz and his beautiful queen Shirin, illustrate the degree of Sassanian influence. This is evident all through in painting and sculpture and also in terracottas Indian artists in rendering the faces and costumes of their foreign neighbours scored a striking amount of Success" 2

Kumara—In the Indian Museum at Calcutta there is an image of Kumāra or Skanda. It is in damaged condition. Out of his four hands two are damaged. His one hand is resting on a peacock and another holds a bell. So it is difficult to find out what his two other hands contain. But we can guess from the description given in our text (Adhyaya 71) that there must be a flag and a spear in the two damaged hands.

Ekanamsa—The image of goddess Ekanamsa between Balarama and Kṛṣṇa is in the Lucknow Museum (G 58). The description given in our text (Ad 85) agrees with this image.

Kubera—The image of Kubera of Mathura Museum more or less agrees with the description given in our text (Adhyāya 53)

Agni-In Lucknow Museum there is an image of Agni. He is seated on his vehicle of goat holding kamandalu and rosary in his two hands and having a long beard and matted locks of hair

Two images of Agni at the Mathura Museum and Indian Museum agree with the descriptions given in Agni Purana and Matsya Purana, but slightly differ from the description given in our text (Adhyaya 56). Our text refers to parrots yoked to his chariot while the other Puranas make a goat, his vehicle

Ganga and Yamuna—The images of Ganga in the Central Museum Lucknow and in one temple of Chanoda Karnali, and Yamuna in Benates are quite similar to Ganga and Yamuna described in Adhyaya 52

¹ A Handbook to the Mathura Muceum, Page 52 Fig 41

² Gupta Art-by Dr Y S Agareals, Pages 9 and 10

There is a doorway of the Gupta temple at Devagarh. In its right upper corner there is the figure of Gangā and in the left that of Yamunā as described in Ad 86, Ślokas 68-69

Aidūka—While discussing Aidūka I remarked that it is a form which is both sculpture sque as well as architectural. The description of Aidūka as given in our text can partially be illustrated in some of the Buddhist stūpas. In fact, Aidūka has been regarded as primarily Buddhaiduka but our text provides evidence for a Saiva-aidūka as we have seen. A monumental remain discovered at Ahichhatra in Bareli district is regarded as a form of Saiva-aidūka.

We have seen the great importance that has been attached to the symbols in the Pratimalaksana of our text. These are technically called Hetus. Dr. A. K. Coomaraswamy in his monumental work, History of Indian and Indonesian art (pp. 41 to 47) has discussed and explained symbols of images of different deities.

If we bear in mind the interpretations and explanations of the various Hetus given in the Pratimalaksana portion of our text, we can understand the ethical and spiritual ideas expressed by those signs and symbols as well as their importance as expressing these values. This confirms the view of Sir John Marshall¹ based upon the study of the remains of the Gupta Art namely that it was an attempt 'to embody spiritual ideas in terms as well as his other remark namely the vision of the Indian was bounded by the immortal, rather than the mortal, by the infinite rather than the finite'

¹ Cambridge history of India Vol. 1 pp. 644 and 649 compare also the remarks of Dr Ccommasswamy on the Gupta art (p. 71)—History of Indian and Indonesian Art

THE HETUS OR THE PHILOSOPHICAL SIGNIFICANCES OF SIGNS AND SYMBOLS

Vajra in Ad 85 inquires of Märkandeya as to why God always holds out with weapons? Of whom is he afraid,—He, who is the soul of all and who removes the fear even of gods? Märkandeya explains that these are not really weapons but represent the great elements which the Lord Hari bears eg. The conch in the hand of god represents space. The disc symbolizes wind, the gadă tejas and the lotus water. When these main elements are abandoned by Hari, they become quickly scattered. So Hari keeps them together in Himself. Visnu is identified with the human soul. When he leaves the body, all elements residing in the body become scattered. The world is supported by the elements when held together by god Vişnu. Their power of holding together is caused by Him. This philosophical explanation constitutes the Hetus of the images, their signs and symbols

In the preceding sections dealing with Citra and Pratima we had occasions to note the various objects associated with different deities, as also their Hetus or Significances. As this is an important aspect of Indian Sculpture, it will be helpful if I treat the matter in a separate chapter by bringing together the material arising out of Hetus scattered at various places.

These various emblems can be classified under several heads such as

- (1) Colours of the deities
- (2) Limbs of the deities
- (3) Apparel of the deities
- (4) Weapons of the deities
- (5) Various other objects associated with the deities
- (6) Musical instruments
- (7) Animals and Birds as vahanas

I. Colours of the deities

White-Mahesvara, Varuna, and Dharma

The whiteness of Mahesvara represents Praktu because Praktu which means the absence of creation is white i.e. colourless

Varuna is said to be like the colour of waters. The colour of waters is said to be both white (Sita) and dark (asita) because the Vaidurya like colour of waters is agree (i.e. unnatural) because the form of the sky is reflected in waters. Its natural form is seen in a cataract which resembles the rays of the moon

On account of predominance of Sattva, Dharma is white in colour Red—Agni and Āditya.

Agni's colour is red because he represents Tejas which is red Aditya is red because he is the source of all lustre

The Parrot colour—The earth goddess is of parrot colour because she bears all kinds of herbs

Blue lotus colour—Yama in colour resembles the blue lotus on account of the Predominance of Tamas

Virūpākṣa—represents Kāla He is the embodiment of darkness therefore he is dark in colour and he wears black garments

II. Limbs of the deities:

Padmāsana pose of Brahmā represents meditation of his formless nature One face—Sarasvati.

Four Faces-Brahmā, Visnu, Dharma

Five faces-Mahadeva

The face of Saraswati represents Savitri or Gayatri—the foremost of all

The four faces of Brahman represent the four Vedas.

The four faces of Vișnu represent strength (Bala), knowledge (Jñāna), Sovereignty (Aiśvarya) and energy (Śakti)

Strength is personified in Vāsudeva, Jñāna in Samkarsana, Aisvarya in Pradyumna and Šakti in Aniruddha

The four faces of Dharma represent Yajña (sacrifice), Satya (truth), Tapas (austerity) and Dāna (gift giving)

The five faces of Mahadeva are-

- (1) Sadyojāta representing Mahi (earth),
- (2) Vāmadeva " Jala (water),
- (3) Aghora ,, Tejas (light),
- (4) Tatpurusa ,, Vāyu (wind),
- (5) Isāna "Ākāša (sky)

Eyes—The Three Eyes of each face of Mahadeva preresent the sun, the moon and the fire

The two eyes of Saraswati represent the sun and the moon Beard—Agni, Kubera

The beard of Agni represents the sacred Darbha grass, the four tusks of Agni represent Vägdanda (punishing with speech), Dhigdanda (punishing with derision), Dhanadanda (fine), and Vadhadanda (punishing by death).

Two tusks of Kubera represent punishment and favour

Four Arms—Brahmā, Saraswati, and Dharma

The four arms of Brahma represent the four directions.

The four arms of Saraswati represent the four Vedas

The four arms of Dharma represent space, time, cleanness and putity.

Four seet—Dharma—His four seet represent Sruti, Smfti, Sadācāra (good conduct) and good to oneself

III. Apparel of the deities:

Kaustubha-In connection with Visnu Kaustubha suggests pure knowledge.

Vanamālā—In connection with Viṣṇu it indicates that the world is bound together by the long, variegated and dark Vanamālā

Garments-Visnu, Mahi, Virūpākşa, Vāyu, and Dharma.

The Garment of Visuu shows Avidya, which keeps the world going

The white garment of Mahl symbolizes Dharma.

Virūpākṣa wears a black garment because he is the embodiment of darkness

The garment of Vayu indicates the sky.

The garment of Dharma is knowledge.

IV. The Weapons usually mentioned in connection with the images of the deities: Danda—Bhairava, Yama, and Virūpākşa

Danda in connection with these three deities represents unfailing death and the act of killing.

Cakra-Vāsudeva, Vişņu.

In the hand of Vasudeva, Cakra represents the Sun.

In the hand of Visnu, Cakra represents Air.

Gadā-Vāsudeva, Kubera.

In the hand of Väsudeva Gada represents the Moon.

In the hand of Kubera Gadā represents the art of government

Langata and Musala—In the hands of Samkarşana represent Time and Death Fiery bow and arrows—In the hands of Pradyumna represent Samkhya and Yoga.

Carma-Leather shield-Aniruddha, Nandi.

In the hands of Aniruddha Carma represents illusion which is necessary for the creation of the world.

In connection with Nandi, it represents Dharma

Nandaka—The Sword represents Vairagya with which the bondage of the world is cut

Trident (Trisula)-In the hands of Nandi represents Vyakarana Three śūlas represent Sattva, Rajas and Tamas

Sakti-Spear of Kubera represents power

V. Various other objects associated with deities:

Kamandalu-Brahmā, Saraswatī, Laksmī

Brahmā holds in his hand a Kamandalu which carries water, because the universe comes out of waters

Kamandalu in the hand of Saraswati, represents the nectar of all sastras and in the hand of Laksmi it suggests the essence of waters

Rosary (Akṣamālā)—Brahmā, Saraswatı, and Dharma—

In connection with these deities rosary represents Time

Antelope (Kṛṣṇājiṇa) skin—Brahma wears the antelope skin It suggests the two types of ceremonies sukla and asukla

Tiger's skin (Vyāghra Carma)—Šīva wears the tiger's skin This skin represents the wide and variegated Trşnā (desire)

Lotus (Padma)-Visnu, Laksmī, Parvati, Mahi, Śakra, Soma and Kubera

Lotus arising out of the navel of Visnu represents Mahi (the earth) and its stalk-the Meru mountain-to show its firmness. In his hand Iotus represents Water

Lotus in the hand of Laksmi represents wealth

In the hand of Parvati Lotus indicates detachment, and in the hand of Mahi, Artha The lotus in the hands of Sakra represents prosperity. and in the hands of the Moon indicates joy and graciousness and in connection with Lord Kubera it represents his treasure-begs

In general the lotus or Padma symbolizes the entire world Sankha—Vişnu, Laksmi, Varuna and Kubera

Visnu holds in his hand Sankha Sankha symbolizes sky In connection with Laksmi it represents good-luck, in connection with Varuna, It represents riches and with Kubera his treasure bag

Mātulunga-In the hand of Bhairava citron indicates the seed of world These seeds of citron represent the atoms which constitute the world

Bilva—In the hand of Laksmi, it indicates pure knowledge

The Moon-(Candrakala)-The digit of moon on the face of Siva represents his divine power

Noose (Pasa)—Varuna and Yama

Noose in the hand of Varuna represents the bondage of the world (samsāra) In the hand of Yama it indicates the terrible path

Jewelled Box (Ratna Patra)-Varuna, and Rddhi

The jewelled box in the hand of Varuna represents the earth containing all sorts of precious stones and in the hands of Rddhi, the wife of Kubera good qualities

White Umbrella (Sitam chatram)-Of Varuna represents same

Pen (Lekhana)—In the hand of Citragupta the pen is meant for noting Dharma and Adharma

Book (Pustaka)—Saraswatī and Dharma

In the hand of Saraswatī the book represents all sastras and in the hand of Dharma it represents scriptures

The reins of Camel (Uştra Rasmayah)—in the hand of Virūpākṣa, singify bondage

Ankusa—In the hand of Sakra represents the command which subdues all beings

Thunder-bolt-(Vajra)—In the hand of Sakra Vajra represents anger which subdues the wicked

Tala-Represents the entire world

VI. Various kinds of Musical instruments are represented in early and late iconography. But here only two names occur. They are Sankha and Vina.

Sankha is mentioned in connection with Trivikrama

The Vina in the hands of Saraswati signifies achievement or proficiency (Siddhi)

VII. Animals and Birds as the Vahanas of the deities.

Bull (V_f\$a)—The Vehicle of Mahesvara represents the divine four-footed Dharma

Buffalo (Mahisa)—The Vehicle of Yama represents the unconsciousness of men at the time of death

Camel (Uşira)—Vāhana of Virupakṣa represents Mahāmoha

Elephant (Gaja)—The elephants in connection with the earth goddess symbolize the four directions. The elephant Airāvana of Šakra represents artha (wealth) and its four tusks represent the four means of governance, Mantra, Prabhu and Utsāha

The pair of elephants in connection with Laksmi personifies two Nidhis viz Sahkha and Padma

Horses (Ašvas)—Seven horses attached to the chariot of Āditya are seven Vedic metres, Gāyatri, Uspika, Anustubha, Bihati, Pankti, Tristubha and Jagati The ten horses of the chariot of the moon signify ten directions

Lion (Simha)—On the banner of Aditya, Lion represents Dharma

Makara (crocodile)—In connection with Varuna, Makara is the symbol of happiness

In connection with Bhagirathi Makara represents virility (Virya) and in connection with Visnudhvaja it symbolizes eros (kama)

Mṛga—Mṛga symbolizes action (新) in connection with Visnudhvaja

Varāha—Varāha in human form should be represented like Kapila standing in meditation

Vasuki—Vāsuki in connection with Siva represents anger which subdues the three worlds

Tortoise (Kurma)—Conveyance of Yamunā represents Time (Kāla)

Swans (Hamsa)-Brahman and Varuna

Seven swans in the chariot of Brahman represent seven Lokas Seven swans in the chariot of Varuna are the seven seas

Garuda—Of Visnu is to be known as mind pervading the bodies of all creatures

Tarksya-In Visnudhvaja, represents Mind

Parrot (Suka)-Parrots yoked to the chariot of Agmi represent the four Vedas

SPIRITUAL SIGNIFICANCE OF AVAHAHANA-VIBODHANAINDUCTION OF DEITIES INTO IMAGES

Adhylyas 103 to 108 describe how the different deities and objects connected with them are inducted to their images. As we had occasion to know several of them in the preceding chapters, we do not repeat the lists here. It would, however, be appropriate to understand the purpose of divine induction (avihana prayojana). We are told in Ad. 103, verse 1, that bhavantyavahita mantrury asmatsannihitah surah. Gods become properly placed in the images if they are inducted to them by prayers. In these inductions of various deities to their images. Visnu is also included. This creates a difficulty in the mind of Vajra. He can understand the lower limited deities coming and residing in their images. But how can this happen to Visnu? Visnu is in all places. He is greater than the great and smaller than the small. He is all pervading. The world consists of Him. There is nothing in the world in which Janardana is not. The world consisting of sat and asat (real and unreal) is infused with him. What is the point in inducting this god who is everywhere? He is the essence of all sense power and mental power.

Mārkandeya tries to answer the inquiry of Vajra in the following way — All gods have their images in accordance with their bodily forms (pindita mūrtayah). When Vişnu becomes manifest (i.e. assumes an Avatura) he also will have a bodily frame. All forms consisting of the five elements are pindita. It has a beginning end and middle.

God has two aspects—the higher and the lower (para and aparamurt). The higher aspect is spiritual (paurus) and free from the five material elements (para ya paurus) murtih pañcabhuta vivarjita 10). With that aspect he becomes the omnipresent lord—There is nothing in this world which is devoid of purusa (supreme spirit)—This aspect has no beginning middle or end and is incompre hensible—It is the power of the senses and of the minds of all and he is everywhere—Even when he becomes manifest and limited in material forms, his

विष्णु सर्वगतो देवो महद्वयोऽपि महत्तर ॥ १ श स्क्षेभ्यक्षातिस्कृषध सर्वव्यापि जगन्त्रय । नारित किश्चिजगद् यस्मिन् यन नारित जनार्दन ॥ ८ ॥ सद्सश्च महाभाग तेन व्याप्तं महरमना । आयाह्नेन कि कार्यं तस्य सर्वगतस्य हु ॥ ५ ॥ अ १०८

omnipotence continues but this depends upon his will and so when he does not wish it, then his omnipotence would not operate. The omnipotence of the infinite spiritual is natural (Nisargasiddha) and so it is always and everywhere

The only reason of inducting this great god to an image who is always omnipresent lies in the mental satisfaction of the devotee. His image is made not for his satisfaction because he is always satisfied, but for the satisfaction of his devotee. He does not want his image but he concedes his image to his devotees only to satisfy their devotion (bhakti). It is for favouring (anugraha) the devotees that he has allowed his images to be made. He who has no body comes to assume body in order that his devotee can meditate upon him (bhakta-laksana bandhartham) because it is very difficult to concentrate on what is formsless, while it is easy to do so on what has forms. So Markandeya has instructed as to how his form is to be made and how he is to be inducted. After meditating on god through a particular form (sākāra), a man becomes capable of meditating on him without the aid of any form (anākāra)

Whatever god accepts is for favouring the devotee. There are two paths for salvation (Moksah) path of knowledge (Jñānamārga) and path of action (kriyamarga). Any action done with a desire leads to bondage (bandha), the same done without a desire leads to salvation (Mokṣa)

After this argument Mārkandeya asserts आवाहिताः सनिहितास्तु देवा भव त्यवस्यं तृप मन्त्रयुक्तया। स्वतृज्ये देत्रवर्स्य विष्णोराबाह्न वज्र बुधै प्रदिष्टम् ॥ ११।। अ. १०८

'The gods when invoked through Mantras come to reside in the images without fail. The invocation of the great god Visnu is to be done for one's own satisfaction.'

RITES AND RITUALS

Life in ancient India was within a framework of rites and rituals. We find ample evidence of these in our text. We saw in Ad 40 that a painter before he starts his work performs certain ceremonies. Similarly when the architect goes to forest to find wood (Ad 89) or to a mountain to find stone (Ad 90) for his temple also performs certain rites. When he is examining the different pieces of land for selection of sites he has to perform certain rites, so also in Brahma silanyasa and Dhvajavidhi (Ad 94) The removal of Salyas (Salyoddhāra Ad 95) consists of many magical rites. A whole adhyāya 96 is devoted to a discussion of what time is auspicious for installation of images. Ad 97 is called the Diksadhyaya wherein we are instructed about the number of Rtvijas and their functions for the ceremony of the installation. The ceremonials of raising a Torana (Ad 98) are elaborately given with much interesting information about signs and symbols to be made on the Dhvajas of different gods rituals of arghya, padya and pancagavya in connection with installation ceremony are described in ad 99. There is a peculiar adhyaya (100) on arcasauca, sanctifying an image. The adhivasana ceremony, the Mantras to be recited and the blowing of conches and beating of drums and the uttrance of the word raya are described in adhyāya 101 Ad 109 describes Vaişnavahomavidhi, ad 111 Visnubrhatsnapana and ad 115 Sattvatejya These are specifically Vaisnava rites. Ad 117 is devoted to yatravidin. It describes how sacred festivals are to be performed. The last adhyaya 118 named pradurbhavapajana instructs us as to what particular god is to be propiliated for fulfilment of a particular desire

As most of these rites and rituals belong to the domain of magic, I am not discussing them in detail. We will have here, however, a brief account of the ceremonies of the performance of Devayatra (ad 117) and Pradurbhāvapūjana (ad 118) as they are interesting from other points of view

Devayatravidhi:

The Devayatra—the festival of a detty is to be held on the date (Tithi)
On the Tithi particularly assigned to him. When, however no such assignment
is to be made a full moon day is to be selected for the festival. All dates are
sacred for the great god Vasudeva. He has no particular date

To start with, the temple should be brightened with lime wash. Then it should be well painted. Then on a good day Vinayaka or Ganapati should be propitiated. On the second day the planets and the stars, on the third the Nagas,

on the fourth Pramatha should be propitiated. On the fifth day the brāhmanas should be honoured and alms given to the poor and the helpless, and on the sixth day the ceremonial bath. After the great bath all the citizens (sarve eva magara janāh) wearing white garments, having the pavitrās in their hands should go to a lake or a river or a stream whichever is near the city with beautiful daneing and sound of musical instruments. Then jugs should be filled with water from one of these water places and covered with pure cloth and should be placed on the back of an elephant and brought to the city. With the water of these jugs the glorious god should be bathed. Then he should be worshipped with the ceremonies described in connection with installation preceded by the ceremonies of concerning bhoga. Then the god should be propitiated with dance, instrumental music (vadya) and singing

When the day for the festival comes a small image of the deity which would be called Pratima should be made and be placed and made firm in a beautiful chariot of the Kutagara shape having small bells and covered with various pieces of different kinds of cloth and decorated with jewels garlands and flags. The chariot with the Pratima should be taken through the whole city by the trained horses or tall men. A well dressed citizen with only a bow in his hand should walk in the front of this Kūtagara chariot. The other citizens should throw about the garland of flowers and should be singing the praises of the deities. In front of them should be the bards and the reciters of Mangala. The king with bands playing should follow it with his four-fold army or the governor of the city or any one else appointed by him. He should be followed by the astrologer seated on an elephant. He should look for the auspicious signs. After this a number of unauspicious signs and their effects are described.

After this procession through the city and knowing the effect of signs Pratima should be installed. Then the great festival should commence. Beginning from the second day one should hold performances of actors, male and female dancers, wrestlers, magicians etc. and give them money. This would go on daily but for as many days as one can afford. At the time of the spectacle one should honour the spectators with flower garlands, betel leaf, cosmetics etc. The invisible spectators such as ghosts etc. in the different directions of the stage should be propitiated with food, fruits, flowers, flesh, sweetmeats, water etc. Then the spectators should be invited to witness the next yatra as they have done on that day. If some unauspicious event happens then after removing the evil effect by the ceremonies one should perform the yatra properly.

The merit of one who performs such yātrās regularly every year gets all his desires fulfilled in this world and goes to the abode of Visnu. The performance of yatra is beneficial to the king and the citizens. It is supposed to remove all evils.

RITES AND RITUALS

Į

Life in ancient India was within a framework of rites and rituals. We find ample evidence of these in our text. We saw in Ad 40 that a painter before he starts his work performs certain ceremonies. Similarly when the architect goes to forest to find wood (Ad 89) or to a mountain to find stone (Ad 90) for his temple also performs certain rites. When he is examining the different pieces of land for selection of sites he has to perform certain rites, so also in Brahma silanyāsa and Dhvajavidhi (Ad 94) The removal of Salyas (Salyoddhāra Ad 95) consists of many magical rites. A whole adhyāya 96 is devoted to a discussion of what time is auspicious for installation of images. Ad 97 is called the Dikşādhyāya wherein we are instructed about the number of Rtvijas and their functions for the ceremony of the installation. The ceremonials of raising a Torana (Ad 98) are elaborately given with much interesting information about signs and symbols to be made on the Dhvajas of different gods. The rituals of arghya, padya and pancagavya in connection with installation ceremony are described in ad 99. There is a peculiar adhyaya (100) on arcasauca. sanctifying an image. The adhivasana ceremony, the Mantras to be recited and the blowing of conches and beating of drums and the uttrance of the word Jaya are described in adhyaya 101. Ad 109 describes Vaisnavahomavidhi, ad 111. Visnubihatsnapana and ad 115 Sattvatejya These are specifically Vaisnava Ad 117 is devoted to yatravidhi. It describes how sacred festivals are to be performed. The last adhyaya 118 named pradurbhayapujana instructs us as to what particular god is to be propitiated for fulfilment of a particular desire

As most of these rites and rituals belong to the domain of magic, I am not discussing them in detail. We will have here, however, a brief account of the ceremonies of the performance of Devayatra (ad 117) and Pradurbhavapūjana (ad 118) as they are interesting from other points of view

Desayatravidhi:

The Devayatra—the festival of a derty is to be held on the date (Tithi) On the Tithi particularly assigned to him. When, however no such assignment is to be made a full moon day is to be selected for the festival. All dates are sacred for the great god Vasudeva. He has no particular date

To start with, the temple should be brightened with hime wash. Then it should be well painted. Then on a good day Vinayaka or Ganapati should be propitiated. On the second day the planets and the stars, on the third the NJgas,

on the fourth Pramatha should be propitiated. On the fifth day the brahmanas should be honoured and alms given to the poor and the helpless, and on the sixth day the ceremonial bath. After the great bath all the citizens (sarve eva nagarā janāh) wearing white garments, having the pavitras in their hands should go to a lake or a river or a stream whichever is near the city with beautiful dancing and sound of musical instruments. Then jugs should be filled with water from one of these water places and covered with pure cloth and should be placed on the back of an elephant and brought to the city. With the water of these jugs the glorious god should be bathed. Then he should be worshipped with the ceremonies described in connection with installation preceded by the ceremonies of concerning bhoga. Then the god should be propitiated with dance, instrumental music (vadya) and singing

When the day for the festival comes, a small image of the deity which would be called Pratima should be made and be placed and made firm in a beautiful chariot of the Kūṭāgāra shape having small bells and covered with various pieces of different kinds of cloth and decorated with jewels garlands and flags. The chariot with the Pratimā should be taken through the whole city by the trained horses or tall men. A well dressed citizen with only a bow in his hand should walk in the front of this Kutāgāra chariot. The other citizens should throw about the garland of flowers and should be singing the praises of the deities. In front of them should be the bards and the reciters of Mangala. The king with bands playing should follow it with his four-fold army or the governor of the city or any one else appointed by him. He should be followed by the astrologer seated on an elephant. He should look for the auspicious signs. After this a number of unauspicious signs and their effects are described.

After this procession through the city and knowing the effect of signs Pratmā should be installed. Then the great festival should commence. Beginning from the second day one should hold performances of actors, male and female dancers, wrestlers, magicians etc. and give them money. This would go on daily but for as many days as one can afford. At the time of the spectacle one should honour the spectators with flower garlands, betel leaf, cosmetics etc. The invisible spectators such as ghosts etc. in the different directions of the stage should be propitiated with food, fruits, flowers, flesh, sweetmeats, water etc. Then the spactators should be invited to witness the next yatra as they have done on that day. If some unauspicious event happens then after removing the evil effect by the ceremonies one should perform the yatra properly.

The merit of one who performs such yatras regularly every year gets all his desires fulfilled in this world and goes to the abode of Vişnu. The performance of yatra is beneficial to the king and the citizens. It is supposed to remove all culs.

Desire and Deity:

The last adhyaya 118 is interesting in as much as it enumerates the specific desires of men and the gods who would fulfil them. One who wants all his desires to be fulfilled should worship caturmurti the four fold image of god. One desiring Dharma (Dharmakāma) should worship Aniruddha, Artha, (Artha kama), Samkarşana, Kāma (Kamakama), Pradyumna, and Moksa (Mokṣa-kama), Vasudeva the lord of the worlds

One desiring a son should worship Padmanabha but one desiring Vidyā (learning) the god Aśvaśiras. One who wants bhogas (enjoyments of life) should worship the god lying on the bhoga, i.e. the hood of the serpant but one who wants position or places should worship the god sitting on the hood of the serpant

One wanting dhanya (corn) should worship Matsya or fish and one desiring arogya or health should worship Kurma (god in the form of tortoise) One desiring knowledge (jūānakāma) should worship Hamsa or the god Nṛṣimha One desiring learning (vidyākāma) should worship Vālmīki or Vyāsa One wanting to be proficient in the Samkhya philosophy should worship kapila. A person wanting prosperity should adorn Varāha and one desiring success in a court of law, on a battlefield and in gambling should adorn Nṛvaraha

One desiring Dharma should worship Dharma and Brahman A person desiring the destruction of his enemies should worship Mahideva One desiring to fulfil one's yow should worship Ramabhargava or Rama Dasarath Itmaja

One desiring Sri should worship the companion of Sri (ie Visnu) and one desiring strength should worship Balabhadra Balabhadra should be worshipped also for the success in agriculture. In short, the god being omnipotent should be worshipped in a form suitable to a desire

But better than this lustful worship (sakāmā) is the worship of the great god without any lust

The significance of this chapter is like that of the significances of the Heiu and the Āvāhanaprayojana. It suggests on one side the deflication of desires in various deities and on the other rising above all desires in the pure worship of the highest (varenyam)

TEMPLE-BUILDING

After images of gods, it is natural to think of temples of gods; after मिल्नाल्क्षण, प्रामादल्क्षण Adhyāyas 86 to 88 treat of this subject. They call themselves प्राप्तारल्क्षणम् , सर्वेतोभद्रप्राप्तादलक्षणम् and मामान्यप्रामादलक्षणम् respectively. Just as Visnudharmottara gives us many new aspects for the study of religious sculptures in its प्रतिमालक्षण, so it does about temple architecture in its प्रामादलक्षण. It describes 101 varieties of temples and informs us as to what deities are to be installed or not to be installed in particular temples.

Material and Sites:

Adhyāyas 89 to 92 describe the different kinds of material, that is used in building temples and also some processes of building like plastering. Ad 93 tells us what sites are appropriate and what sites are to be avoided for the building of temples. Adhyāyas 94 to 100 describe the various ceremonies connected with temple-building and installation of images. The ceremonies in connection with wood-fetching and similar other things are described in the preceding adhyayas. Adhyayas 101 to 106 are connected with āvahana i.e. inviting the deities to live in the images. The adhyāya 107 describes the invocation of Vāsudeva. Ad 108 explains in a philosophical way the significance of āvāhana. Adhyāyas 109 to 118 describe various forms of worship, sacrifice and ceremonies connected with the building of temples and installation of images.

For systematic treatment we will take up first adhyayas 89 to 93 which treat of the material for building and selection of sites and then take up the adhyayas on Prasadalaksana

Three kinds of material namely wood, stone and brick are described in adhyayas 89 to 91 respectively Wood:

The sthapati or the architect on an auspicious day enters a forest for selection of trees (Ad 89) whose wood is to be used for building purposes. The trees to be avoided are those with hollows, entwined with creepers, caten by worms, touched by fire, felled by wind and broken by elephants. The trees which have nests of birds in them, which are near ascetics, which are watered with jars (i e artificially watered), and which are the abodes of Sattvas should also be avoided. The trees which are crooked or dwarfish, which have many veins, which are dried up at the top and which have become old in their infancy, should not be used. One should be careful to avoid the trees growing in a cemetary, a temple, an ant-hill, single trees of a garden, trees indicating boundaries and trees growing in a road.

The particular trees to be avoided are Palāśa (Butea Frondosa), Kovidāra, Šālmali (silk-cotton tree), Pippla (the holy fig-tree), Vaţa (the fig-tree), Āmra (the mangotree), Puṣpaka, Vibhītaka (Terminalia Belerica), Vetasa (the cane) and Āsāra (oozing) trees. The trees which are recommended are Nandana, Syandana (Ougeinia delbergioides), Sala (Shorea robusta), Šimśapa (Daibergia Sissoo), Kadira (Acacia Pennata), Dhava (Anogeissus latifolia), Kimśuka (Butea frondosa), Padmaka (Prunus Pudum), Haridra (Canna Indica), Cīnaka (Panieum miliaceum), Arjuna (Terminalia tomentoza), Kadamba (Anthocephalus Cadamba), Madhūka (Bassia latifolia), Añjana, Devaviksa, Jātyā (Jasminum grandiflorum) and Raktacandana (Pterocarpus Santalum). The trees, whose core is red, are supposed to be auspicious for kings, white for Brahmins, Jellow for Vaiśyas, and black for Śūdras.

The rest of the adhyāya is devoted to the magical ceremonies for felling a tree and with suggestions as to what is magically good. The wood is to be carried in a cart or by men or bulls, of course, at an auspicious time. The learned sthapation architect will employ this wood as required (Yathayoga) according to purpose (yathoddesa) and scientifically (lakṣanānvitam).

Stone:

With the same ceremonies the architect goes to a mountain in search for stone (Ad 90). Here also the appropriate colours for different varias are described. The stone that is recommended for use should have one uniform colour, should be even and gloosy (snigdha) and under the ground. It breaks only after severe blow. It is massive and yet pliant. It pleases the mind and the eye. It is smooth. The stone which is washed by river water or which is plunged in water or which is under the shelter of a tree or which is near some holy place is also recommended. It should have proper length and circumference.

The stone which has been licked by fire or heated by the rays of the sun or which affected by saline water and which is already used for some other work should be avoided, so also the stone which is very much damaged, rough, spoiled by cavities and full of curious dots and curved lines, pierced (viddha) and affected by Vimala. The Vimala is of three types iron, bronze and gold. The magical injury which arises out of these Vimalas is described, so also the stone which has some living creatures in it (sagarbhām) is also to be abandoned. How the different creatures are to be detected by means of the colour is also described. If it is of the colour of mānjistha (Red as madder) then it is frog, if yellow, godhā (alligator), if black, serpant, if tawny, the rat, if red, kṛkallāsa (lizard), if the colour of Guḍa (molasses), pāṣāna, if the colour of pigeon then grhagodhikā (a small house-lizard), if the colour of sword, water, and of ashes, vālukā (sand). All these are to be avoided

I We have taken the reading आसाराष्ट्रमास्तथा

Instructions are given as to how the creatures lying in the stones are to be sovered, when there is no outward signs. This knowledge which is called garbhavijñ in a applies also to the trees

The following eight colours in the stone are regarded as praiseworthy Sveta (white), Padmavarna (colour like lotus), Kusuma, Usana¹ (like black pepper) Pandura (tawny), Mudga (colour like that of kidneybean) Kāpota (colour like pigeon) and Bhrnga (like a large black bee) The stone which has black colour and which is white like the diamond is specially auspicious. Then the various ceremonies are described. It is to be carried to the town as the wood is carried. After stone comes bricks

Brick.

Adhyaya 91 describes the process of brick manufacturing. It starts with the clay of different colours white, red, yellow and black which are good for the different Varnas, Brāhmana, Kṣatriya, Vaiśya and Śudra as before

The clay has to be taken from a good unmixed ground. Then it should be dried. This dried clay should be mingled with water and the Saivala plant. Out of this loam bricks can be prepared as desired by means of machine one hand in length, half a hand in breadth and one fourth hand in height. Then they should be left in the heat of the sun to dry. These dried bricks should then be baked in fire of dried wood, dried cow-dung and grass. The baking should be mild and not excessive. The bricks which are not properly baked or which stick together should not be kept. The bricks which are excessively baked break when a Rūpaka?

I We amend the reading usara into usana

What is the meaning of the word Rupaka in verses 7, 10 11 and 12 (of Ad 91) and verse 8 (of Ad 93)? It cannot be in the sense of a dramatic composition nor can it be in the sense of a figure of speech. So the word Rupaka may here be taken to be equivalent to Rūpa and should be taken in the sense of akara. But it is not clear what akara is indicated in these verses. Verse 11 (Ad 91) says that each Rupaka is formed by a collection of bricks or an arrangement of bricks. So it appears here that the word Rupaka is used in the sense of some structure form or figure made of bricks. As verse 12 tells us that there can be similar Rupaka in stone also

The word however is not found in either the Dictionary of Hindu Architecture or Encyclopaedia of Hindu Architecture by Dr P K Acharya Dr P K Acharya, however, translates the word Rupottara as entablature. The word Rupottara, however is found in Tantrasamuccaya. Manusyalayacandrika, Mayamata etc. In Tantrasamuccaya, it is one of the three Uttaras other two being Khandottara and Patrottara (See Studies in Sanskrit Texts on Temple Architecture by N V Mallaya P 58 verse 45) Dr N V Mallaya explains the characteristics of Uttara as follows— It is a horizontal structural division, rectangular in shape. It sits on the walls if walls are present, or on columns and in the latter instance it extends from column to column. It is treated as a bearing member upholding the load of toof and the symonyms found mentioned in the Manasara, point towards this essential function of beam ("uttara"). (P 253)

is made out of it. The unbaked bricks are without strength. The bricks which are stuck together destroy' the maker. When the baked bricks become cool, they should be joined together in appropriate forms and put in appropriate place. In this way each Rūpaka should be made with a number of bricks properly joined together and appropriately placed. This placing of Rūpaka is done in stone also, so also wood should be joined together (? and made into a rūpaka)

Wood should have joints of iron, unbaked bricks of mud, baked bricks and stone of Vajralepa. Thus the constructions of baked bricks should be made. It should be accompanied with lime. The lime stone should be used for temples of gods but not for domestic houses.

Vajralepa.

What is Vajralepa whose bond is recommended for burnt bricks and stone? This is explained in adhyaya 92 which is called वृद्धरेशन It is given as follows —

Bilvaka, Kapittha, Āmra as well as the flower of Salmali, the seed of Sallaki, the skin of Dhanvana and Vaca should be taken in equal parts and mixed up in water eight times in quantity. The whole mixture should be boiled till it reduces to one eighth. Then the following things should be put into it, the Vinyasa of Sallaki, the Guggula of Bakula, Bhallataka, Bilva, Kunduru, Sarja and Atasi. When it (this mixture) is heated properly, it is called Vajralepa

The second kind of Vajralepa is made out of the following -

The Lākṣā, Kunduru, Gṛhadhūma (smoke in the kitchen lit house), the pulp of Kapittha and Bilva Nagaphala, Balā, Madhuka, Kinjāpa, Madana and Mañjiṣṭha and āmalaka and Sarja

The third variety consists of the following the horns of bulls and buffaloes the hide of goats, buffaloes and cows (or the milk of buffalo and cow) and the juice of Nimba² and Kapittha

The fourth variety is made with following things—Eight parts of Naga (tin), two parts of Kāmsya and one part of riti (rust of iron)

In the fifth variety the lime is baked first and then moistened and mixed with the hide of cows and srough hair

The stone houses should be made with each one of these Vajralepas so also the houses made of baked bricks. Houses made in this way become firm and with

So if the Rüpaka of our text is the same as Rüpa in Rüpottara it would be one of the Utiaras. This meaning however does not suit the context in all the verses. Rüpaka might be a word of some older Västuvidyä tradition.

¹ This is the literal meaning of karry nasadah. But in this context however, it makes no sense

² We have adopted here the reading of MS D rasam nimbakapitthänam

³ We have adopted the reading of V C. D khararomayuta.

the Vajralepa lasts for centuries. All houses should be plastered with Sudhā-vajra (taking the reading of MSS, A B D Sudhāvajrena) Then it should be white washed with lime for beauty. The application of Vajralepa is recommended for the interiors of the temples and mansions

Sites:

Now we come to the selection of sites for the temples (Ad 93) The hue of the ground may be white, yellow, red or black to suit the four varnas The ground should be covered with Kusa, Śara, Kāsa and Dūrvā In taste it should be Madhurā, Kasāyā, Āmlā and Lavanā

The following kinds of sites should be avoided Grounds which are covered with thorny trees, full of pebbles and clods (losta) which have chasms, uneven, difficult for approach, covered with ant-hills full of rat-holes, covered with various kinds of ants, so also the ground which is broken by cart-ruts and which has been formerly flooded with waters. The ground which had on it the slaughter house or prison is also not good. A place where the residences have been burnt by lightening or fire is also to be abandoned. The ground which suffers from evil eye of those who live there, whose back is like that of a tortoise or which is triangular in shape and which is void of turnings and the shape of surpa, which is low towards the south or at the back and which had taken in water formerly and which had many veins (Susira) should be given up. The ground which after being dug cannot be refilled with the dug! out earth or in whose pit a lamp becomes faint, the garland of flowers becomes withered and water poured for filling it, does not stay should not be selected. The ground which gives out bad smell should also be carefully avoided.

A ground which is opposite of this is preferred e g the ground which gives out good smell and good sound, which is bent to the north, which is glossy and firm, whose earth dug out from the pit not only is capable of filling it, but also remains in excess and in whose pit the lamp does not faint and the flower does not whither and water stays for a longtime is good for building a temple

If while looking for a good site, one sees an auspicious thing or hears something auspicious, the ground of that site is good and should be selected without any inquiry. When however, one sees or hears something unauspicious, the ground is bad and should be properly examined. The work of examining the site should be done on a very auspicious day.

The next adhyāya (94) is devoted to the description of Salyas and how to clear the ground from them. Much of these is magical though some of it might be of scientific character. After the ground is made auspicious by the removal of Salyas and ceremonies and after them it is properly prepared and made even,

¹ The reading syampda of MS C is adopted here

one must think of placing the doors, the height of the doors, the height of the pillars, the placing of the bamboo, the height of the āmalasāraka and the sign of the deity, the weapon and the vehicle of the god should be used as his symbol. One of these should be made on the amalasaraka eg. Garuda in the temple of Visnu, Simha in the temple of Durgā, Trisūla in the temple of Hara, Padma in the temple of Lakṣmī, Hamsa of Brahman, Makara of Kamadeva, Tala of Samkarsana, a hon standing in half moon of Āditya, a Mrga (deer) standing in a round circle of the moon, Vajra of Sakra, Danda of Vaivasvata, Paśa of Varuna, Gadā of Dhanada, Sakti of Skanda, Paraśu of Ganapati, flame of fire, crumpled ($\pi_{\overline{a}}$) cloth of wind, Camel of Nirrii etc when the white washing with lime is finished, the work of painting should be undertaken. The Kati of the temple should have good pictures so also the white washed back. The painting (Citra) should be done scientifically

We have instructions also as to where the images should be installed and what surroundings temples should have. The installation should take place in a fort or in a good city. It should be done always at the head of the market road in a village or hamlet of cowherd where there is no market. The installation should take place in a garden outside the village. It should not be done in the middle of the village. The following places are specially recommended for installation because there the gods are in viccinity. These are banks of the rivers, forests, parks, banks of lakes, tops and charming Upatyakas and the caves of mountains. Gods never approach the places which are devoid of water, reservoirs. A temple should be so built as to have a reservoir of water either on its left or on its front and on no other side. If a temple is made on an island, water on all sides is approved.

Varieties of temples—in this chapter, we will take up first Samanya Prisada laksana of adhyaya 88. It gives us general informations about temple building

General characteristics of temple --

1d 88 (Siminyupasidalaksuna)-

A temple should be made so as to have 64 Padas' 1e its ground area should consist of 64 equal parts. The idea seems to be that the ground area of a temple should be first divided into 64 equal parts or squares. The doors should be in the middle of temple standing in a way to face the direction evenly (sama) 1e not facing cornerwise. The height of the door is double its width

I The word $q_{\overline{q}}$ in this sense cannot be taken in the sense of any measurement because that would I mit the ground area of all kinds of temples. This would be impossible. Therefore I have taken the word $q_{\overline{q}}$ to mean a part or a division or a square $q_{\overline{q}}$ —the foot as a measure of length (equal to 12 to 15 fingers or $\frac{1}{2}$ of $\frac{1}{2}$ of a prakrama)

The column of a temple should be made of wood of pure tree The door should be made of the wood of trees known as Devakula 1. The wood should not be perforated, should not exude moisture and should not be hollow. One should avoid a door bent like the middle of Vajra 2. It should be auspicious and accompanied with figures on it

The measurement of the image with the pedestal should be less by oneeighth of the door. The image consists of two parts while the pedestal should consist of one part.

The measurement of the image with the pedestal should be less by one-eighth of the door. The image consists of two parts while the pedestal should consist of one part. The Kati should extend over the door. It should be less by one-eighth of the measurement of the door ie the door should raise above the Kati by one-eighth. The Vasudhā ie Jagati (platform) consists of one-third of the measurement of the temple, so also Kati and Mañjari. Thus a temple consists of three equal parts.

The Garbhadvara or the door of the inner shrine should be less by one-fourth of the measurement of the main door. The wall of Garbha should be less by one-eighth of the wall of temple ie its thickness should be less by one-eighth of the thickness of the main wall of temple. Its height should be one-fourth of the height of the temple. The vasudhasañeara ie the jagati passage should be in a part of Kati. The Sopana or the flight of steps should be in the middle and less by one-eighth (of the measurement of the passage). The number of the steps should be even. The steps should neither be very narrow nor very wide. The width of the steps should be void of width as they rise higher from the base (ie from the ground). The meaning seems to be that the steps should decrease in width as one goes up. The flight of the steps should be decorated on both sides with highs.

The temple³ should not be skull-shaped (munda) or should not be pointed like a Sūla—It should not also be bent (ānata) but it should be even and beautiful and possessing auspicious figures—Its pinnacle or turret should be whitewashed with lime (sudhā) and have beautiful ornamentation on its Kaṭī (waist-part)—At each side of the doors of a Garbhagtha there should be pratihāras as in the case of the main doors

Devakula—Any one of the five trees of paradise vic Mandára Párijáta, Santána, Kalpa and Haricandana

² We amend the reading appayed at into appayers.

It is not clear what is described in verses 12 and 13a. I think it applies to a temple in feneral

The pedestal of the image should be made in the middle of the Garbhagha It should be like the Bhadrapitha, beautiful, polished and void of indentations (ghātavivarjitam)

The hundred temples.

The Vişnudharmottara gives in all 101 varieties of temples, 100 in Ad 86 and one sarvatobhadra in Ad 87. The first variety namely Himavat seems to be the main type of which the remaining 99 are the variations of the main type. So the description of the first variety along with the general description of the temple in adhyaya 88 would give us a connected picture of a typical temple of ancient India.

(1) Himavat—The description given in first twelve verses of this type apply to other temples in a general way. The modifications in each case are given in the description of the particular temple.

The temples are defined on basis of the Hastat measure

The measurement in terms of Hasta is in relation to the Samsthana re the measurement of the whole

The portion of the temple is the same as that of the Jagati The meaning seems to be that the height of the temple should be equal to the area of the Jagati (platform) The Jagati should consist of three stages (bhumikas) of equal height. The length of each stage should be half of its height. The shape of each bhumika is that of a Bhadrapitha. The Kati2 should be half of the temple in measurement similarly the Kuta. The width of the flight of the steps should be one-eighth of the measurement of the bottom of the Kaţī For each bhūmikā (stage) steps should be of equal number. The portion above the Kati (1e Kuţa) should be divided in three's parts or compartments. Over each compart ment there should be made a beautiful āmalasāraka. The Kuta should be quadrilateral and should be gradually elevated. The three compartments should be decorated with a row of lions. The height of the door should be one-eighth above the deity installed. The height of the door should be twice its width On it (the door) should be made an elevated Candrasala which beautifies the door or a candrasala consisting of a gatehouse (Dvarasobha) should be made (one of the meanings of Dvarasobhā being a gatehouse something like Gopuram) Over the first compartment of the Kūţa beautified by an amalasaraka, the temple should be made with four bent (bhagna) or unbent (na bhagna) doors

एक दस्तादि प्रामाद्यावद्यस्तरातार्थकम् । प्रमाण समके मुले नासिकामिति गद्यत ॥ ३ ॥

अ ३ प्राप्तादमण्डन

^{2 •} The hip of a building according to Dr P K Acharya

³ Dr P K Acharya takes these three parts to be Sikhā, Amalaka and Sikhara This 48 possible if we can change the reading given in the text into Sikhāmalakasekharāh

larly it should be made in the two other compartments of the Kuţa The temple would be surrounded by four separate Candraśālās (naturally) on the four doors. This beautiful temple is known as Himavat

A temple having a Kūţa with two compartments is called (2) Malyarat A Kuţa of (3) Srngarat² temple is without any compartments. The Sṛngarat temple having only one door is called the (4) Agăra temple and the Āgāra having two mekhalās (girdles) is called (5) Bharana and the Āgāra having one Mekhalā is called (6) Gṛha. A Ṣṛngarat temple with two mekhalās is called (7) Niṣadha. The distinction between the Bharana and the Āgāra seems to be that the Bharana has only one door while the Niṣadha has as many doors as Ṣṛngarat i e as many as Himarat. Niṣadha with one mekhalā becomes (8) Nila. Malyarat temple with two mekhalas is called (9) Sreta and if it has one mekhalā, it becomes (10) Vindh) a

All the varieties of temples mentioned above except Āgāra may face any direction. The Āgāra varieties, however, face only the East and the West. In the case of one mekhalā or two mekhalā temples the divisions are into \$\pi T^2\$, \$\pi T^2\$ and \$\pi^2\$ as before

(11) The Valabhi temple having the shape of Valabhi faces any one of the four directions as desired. Its length is thrice its width. It has one mekhali and on its ridge on both the sides there would be a Candrasili (attic room). There should be three Amalasirakas. This type of temple consists of three parts (1) Mekhali, (2) Kaji and (3) Valabhi. They should be in equal measurement.

The extent of Mekhala should be one eighth of the measurement of the temple. The width of the Sopana should be less than two-eighths ie one-fourth of the Kaji. The high gate should be in one direction only

In a temple which has four doors, each one facing each direction is called (12) Viddhida temple. It is to be understood that the other details are according to the Valabhi temple.

(13) Triguna temple is distinguished in two ways either its doors are triguna thrice in height or it has three doors. Presumably the other details are those of Vtddhida temple. The three doors of the Garbhagihas contain

We adopt the reading vicehinna of V here

Lit A temple with one Küja is Singavat but as the two previous types have also one Küja the distinguishing mark lies in "Chedas". The sense is as given above

This Valabili temple in short has a tople division of its vertical section. The kall triains its name and position, instead of Japati however, it is the McLhall which forms the lowermore that pair of the structure. Another substitution is, it appears, of a greater a fundamental land to the structure. Another substitution is, it appears, of a greater a fundamental land.

three gods who are seated, attached to the wall of the Garbhagtha whose doors face one direction

If the Valabhi type is void of Valabhi on both the sides, it is called (14) Sikhara though it has sides. Triguna temple without the lateral Valabhis would be a (15) Nigtha lit meaning the house of men (16) The Vittida and (17) Kāmada temples are also without the lateral Valabhis

When the temple on the Valabhi¹ has its doors facing the directions made wide, it is called (18) Turaga, or the other meaning may be that in the Turaga temple the door is to be made on the side of its width

When the door of the Turaga type is made circular, it is called (19) Kunjara

In the (20) Yathesta variety of Valabhi the number of Garbhagrhas, the extent of the temple, and the measure of doors are as one wishes. Yathesta having one door and one Garbhagtha is called (21) Visala

When the Valabhi is extended lengthwise on the ridge of Māiyavat, it is called (22) Bhadra and when it is extended obliquely it becomes (23) Dvāra-sālā, or Dvārapāla according to the reading of Ms C. When Šveta is made like Bhadra it is called (24) Subhadra and when (25) Saumya is made like Dvārasālā, it becomes (26) Gandhamādana. The Saumya and Subhadra varieties are most praiseworthy of all

A temple having an eight-sided summit (Kuta) with three compartments and auspicious āmalasārakas, and eight-sided Jagatī, with one Mekhalā and having eight Garbhagihas with eight doors facing the eight directions, is called (27) Kamala temple

When in Turaga variety, the Jagati is raised without the shape of a Bhadra pitha and when its front portion is void of Valabhi, it is called (28) Arunodaya It must face the east or the west and no other direction, when the same temple is made very long it is called (29) Guha or Guru if we adopt the reading of Ms B. When two small temples are attached to the Aruna variety facing the north and the south have similar Jagatis with top rooms (Valabhi Chadiki) facing each other and doors equipped with Jalakas, it is called (30) Garuda

A temple having the shape of a Linga and three mekhalās is called (31) Sarva, and the same with two Mekhalas is called (32) Trailokya and with one Mekhalā it becomes (33) Linga temple. The Linga temple having a Kūṭa and Valabhī is called (34) Sarvakīṭa. Presumably the modification is in the Sarva temple, because the following two varieties are of Trailokya and Linga. Trailokya temple with Valabhī becomes (35) Brahmanda. Linga with Valabhī becomes (36) Sāra temple. The above mentioned six temples—Sarva and others.

¹ I am not, however sure of the above interpretation. In slokas 36 to 38 there is some confusion.

face the east and the west. When the Valabhi type is devoid of Mekhalā, door and the front wall and is equipped with pillars and is quadrilateral, it is called (37) Caturasra. It must be made attractive

When it has a Mekhalā, it is called (38) Samekhala. When the number of Mekhala is two, it is called (39) Dvimekhalā and when three, it is called (40) Mekhalāḍhya. In these temples all the deities mentioned above and those not mentioned should be made Sabhāsthas ie courtiers.

The meaning seems to be that in this peculiar type of temples all sorts of gods are placed just as we find in many cave temples

The Caturasra and the following types of temples, when they have doors are called Dhisnya, Salya, Budha and Indu Probably Caturasra is called (41) Dhisnya, Samekhala (42) Salya, Dvimekhalā (43) Budha and Mekhalādhya (44) Indu When these four are devoid of walls and have ventilators on four directions, they are called (45) Candra, (46) Megha, (47) Ambuda and (48) Åkasa, respectively.

Caturasra temple having one storey and in shape like a Guhā or cave is called (49) Grha 1

When the same type has many storeys, it is called (50) Bahubhūmika

When a temple has six sides, four doors and twelve storeys it is called (51) Meru When it has eleven storeys, it is called (52) Suktimat, (53) ten, Mandara, (54) nine, Pāriyātra, (55) eight, Alaka, (56) seven, Vimāna, (57) six, Nandana, (58) five, Pañcaka, (59) four Catuşkaka, (60) three Tribhūmī, (61) two Dvibhumika and (62) one Ekabhūmi

A temple round in shape and having one mekhala round it, is called (63) Samudga ² When the same Vitta or circular temple has a four-sided Mekhalā and the form of Bhadrapitha with eight compartments having āmalasārakas, it is (64) Nandi The Guhārāja³ (65) temple is like the Guhā type having a great length

The Vitta having one summit and two Mekhalas is called (66) Visa The same temple having the shape of Hamsa would be called (67) Hamsa, of (68)

According to the readings of Mss. A and B, the meaning would be a Caturasra having one storey and made like a house (Grha) is called Grha. The reading of Ms. C however which is adopted in the text as it can mean a cave temple. Many of the features attributed to Caturasra are like those of cave temples.

Itah Samudganamām—cl Dictionary of Hindu Architecture by P K Acārya.
 If we adopt the reading of Mss A B grhākāro grhārājah the meaning would be a long

temple having the shape of Rājagiha. Would this have any relation to or connection with the cave temples near Rājagiha. There is another interesting reading in the footnote of V. bhadrākārah sa kartavyo instead.

There is another interesting reading in the footnote of w characteristic range instead of bhadrakalyassa karravyo. If we adopt this reading, the Guharaja temple would have the thape of Bhadra variety.

Mekhalt and at each of the two sides of the flight of steps three temples should be placed. Of these three the first गर्भमिंदर is of सामान्य type without मेहला and मण्डप

The first one is गुममंदिर without the Mekhala. In the middle is सामाय and the third one is without the Mandapa. On its side two temples of the Himavat variety without the Mekhala should be made. At the base of these steps two tem ples are to be placed on two sides. These pairs of temples having no pavilion are called Devakula Damstras in the Samanya variety. Similarly at the corner on the top of the Jagati a devakula should be placed. Here the central temple with the pavilion should be erected. The number of pavilions is four. They have sikharas. In the corners of the central temple and at the junctions of the pavi lions pairs of temples should be placed. Here each pavilion should be beautified with three doors and in the fourth door a Garbhagrha should be placed. The gateways of the pavilions should be decorated with pillars. The number of sikharas in this temple is nine. Of these eight are equal in height and the ninth is higher The central sikhara should be void of a sikhara (The meaning seems to be that the body of the central sikhara should not have a pointed pinnacle). It should be decorated with various figures. It should neither be skull-shaped nor pointed like a sula. The remaining eight sikharas should have kuharas and be equipped with Jalas and Gavaksas The sikharas at all places should have amalasarakas Cakras Patakas and Dhvajas This temple rising high looks like being crowned in the sky

In such a temple the courtyard should be extensive and beautified with natural celestial waters properly banked. Beyond it there should be four gate keepers (Dvarapalas). There should also be located a beautiful temple of the Dvarasala type. On the compound wall (Prakara) the beautiful range (inner caves) should be made in a row according to Ms. C. however compound walls should be made in rows of the shape of many In these the different manifestations of Visnu can be placed. Alternatively all multitudes of gods may be placed in their proper order.

The above description of the great temple Sarvatobhadra clearly shows that it was regarded as something unique. One who builds this type of temple becomes Cakravarin. The sight of it destroys all evils and bestows bliss

In the appendix a chart has been given showing in a tabular form the characteristics of the temples described above. We saw in the section on painting that four varieties of Citra are mentioned. We would expect some such classification of the temples also in our text. But sign ficantly enough we do not find any mention in it of the usual classification of Nagara. Dravida and Vesara

¹ Appendix 4

This would go to confirm the opinion of Dr Tarapada Bhattacharya According to which this classification was a very late innovation of the writers on Indian Vāstuvidyā and not known to the earlier writers of the North Indian School of Vāstu works. It was 'only in the South' Indian works on Vāstu that these terms Drāvida, Nāgara and Vesara are found together. In that case our text can be said to belong to the North Indian school of early writers on architecture. In this view the list of temples in our text would belong mainly to what came to be known later as a Nāgara style.

Gupta period supplied the basic foundation of the later Indian architecture. In this we find the two styles which came to be known by the terms Nāgara and Drāvida (See Indian culture Vol. VIII 1941-42 (pp. 183-190) with their various elaborations and ramifications.

Classification

It would be, however, interesting to attempt a classification of some of the temples described in our text into Nagara, Dravida and Vesara on the basis of their shapes 3

Here stopl simply means the top of the sikhara and should not be confused with the domical crowning element (sechnically known as the stopl or stopika) of the Dravida temples.

According to him Visvakarmā Prakāśa, Brhatsamhita, Matsya Purāņa, Agni Purāņa and the Samarangana sutradhara of Bhoja are earlier works on Architecture of North India A study on Vastu Vidya by Tarapada Bhattacharya, pp 156, 157, and 354

² Mayamata and Kasyapa

I have taken this basis of shapes from an article of Mr S K Saraswati on Origin of Medieval Temple styles "(Indian Culture pp. 183-190 Vol. VIII.) Regarding Vesara as a mixed style he describes the characteristics of Nāgara and Drāvida as follows—' The three styles—the Nāgara, the Drāvida and the Vesara—are always distinguished in the texts by their shapes.' As for example, the texts are all agreed in laying down that a Nāgara temple is quadrangular all over, i.e., from the base to the Stupi. But this feature of the plan is so very general and common that it is difficult to consider it as a sure and distinctive cognisance of a particular-style. In its origin every type of building may be found to have begun from a quadrangular shape and to have retained it, with slight modifications until a very late stage in evolution. The octagonal and circular shapes respectively of the Drāvida and the Vesara styles are also too inadequate to be regarded as sure and distinguishing marks for the style concerned. Under the circumstances, one has to depend on the evidence of the monuments themselves for a knowledge of the particular form and features of any one of the styles.' (Pages 184-185)

सर्व वै चतुरसं यात्रासादं नागरं जिदम् । — शिल्परान.
 गृत्राचाशितरं युगान्नरचित गेहं स्ट्रतं नागरम् । — सन्त्रसमुख्य.

३ त [१ सो]पानस्तूपीपर्यन्तं युगास नागरं भषेत् । —यानिकागम स्तूष्यन्तं चतुरस्र यद्यागरं परिकीर्तितम् । —गयमत

I, however on the basis of characteristics given by Mr. Saraswati elastified them differently. According to Bhattacharya twenty hagara temples are given in the Lit of one bund of

Nagara temples--Ananda, Grha, Valabhl

Drāvida temples—

Alaka, Ekabhūmika, Catuşkakah, Tribhūmī, Digbandha, Dvibhūmika, Nandana, Pañcataḥ, Pāriyātra, Meru, Mandara, Vimāna and Šuktimat

Vesara temples-

Nandı, Vışa, Samudga, Ghaja and Padma

Comparison with Architectural remains-

Considering the rich information given by Visnudharmottara, it would be very enlightening if we could identify different varieties, their features and characteristics with the remains of temples in our country. Unfortunately, however, there is not enough material in the surviving monuments to make an attempted identification very successful. Dr. Tarapada Bhattacharja in his Study on Västuvidyä thinks that all the twenty Nägara temples described in his work are included in the list of these hundred temples. He also thinks that the hundred and one temples of Visnudharmottara belong mainly to the type of Nägara temples.

Dr Kramrisch also has devoted a whole chapter in the appendix to her monumental work 'The Hindu Temple' to this list of Visuudharmoitara temples (pp 411-421) She has based the discussion of the subject on the eight fold division of the temples given in the text namely (1) Himavat, (2) Spingavat,

and one temples of our text.—They are Meru, Mandara Kailāsa Vimāna Nandivardhana, Nandana, Sarvatobhadra Vṛṣa, Simha, Kunjara, Ghaṭa Samudga Padma Garuda Hamsa, Caturasra, Astasra, Şoḍasasra, Mṛṣa and Gṛharāja

On the evidence of monuments, however, 'the fundamental characteristics of a Nagara temple are the cruciform plan and the curvilinear tower (Sikhara) (Page 186)

[&]quot;In plan the Dravida temple presents an inner square chamber as the sanctum and a bigger square enclosure, covered and roofed over, as the pradaktina around. The division of the external walls into niches by pilasters is also a characteristic element of the South Indian temples. The convex roll cornice with Caitya window motifs demarcating each of the stages and the little pavilions in the upper storeys may also be regarded as peculiar features of the style. (Page 188) In addition to this a further point in connection with Dravida style is noted as follows—"The use of the roll cornice carved with well shaped caitya arches—a decorative scheme that came to be regarded as a distinguishing mark of the Drivida style." (Page 189)

Eventhough in the section on Painting the Nagara Citra has been explained on the analogy of Nagara Prasada on the principle of understanding the unknown from the known. It appears that the fashion of classifying temples into styles might have been an extension of a similar fashion in Citra.

(3) Valabhi, (4) Mālyavat, (5) Linga, (6) Caturasra, (7) Grha and (8) Kailāsa

She is of the opinion that 'Amongst extant buildings, few seem to conform with the three-fold division of the height' As to those that do 'belong to two widely distant countries, the temples of Kashmir of the eighth and ninth centuries' and to Hoyasala temple in Mysore about three centuries later.' (p 412)

She finds some resemblance of Valabhī temples in 'the wellknown early relief representations in Sāñci etc and also the shape of the Bhima Ratha in Mamallapura'. (p 413)

Temple at Nava-Devi in Yogeswara (Almora District), the Vaital Deul in Bhuvaneswara and the Telikamandir (Gwalior) are compared to a type in which the valabhi of group three appears placed on the top of the building of group one.

The Maniyar Math in Rajgir is regarded by her as an illustration of the Linga or circular type of temples

To illustrate the sixth group she refers to certain representations in Barhut reliefs

For the seventh group she does not find anything coming near it. She, however, thinks that the 'Draupadiratha in Mammallapuram would come near this type if its roof could be considered as one of the shapes of the Valabhi and if the triple division of the height in Jagati, Kaji and Talpa is not considered by binding in this group'

The Surarat temple in the eighth group is compared with 'the certain Jain temples on the one hand and the Hoyasala temple of Mysore on the other, both of which date from C 1100 AD onward ' (p 417)

As to the Sarvatobhadra variety, she would refer to 'Avantiswami temple in Kashmir and Kesava temple at Somanathpur in Mysore'

Eventhough Dr Kramrisch has made a very laudible attempt to compare and identify the various types of temples and their characteristics described in our text. One has to say that it is all very conjectural

Further research both in the understanding of the text and a carefully minute study of the existing remains of temples in the light of the information of our text are still not sufficient as to justify any definite or near definite identification

Temples and gods

Adhyāyas 86 and 87 not only describe the various types of temples but also give instructions as to the installation (Pratisthā) of particular deities in particular temples. Generally, these instructions follow the description of each variety. In the previous section I have tried to give a connected account of the temples reserving the topic of the installation of the deities for this chapter.

We will start with a general rule—Wherever there is no specific instruction about the particular deity to be installed in the particular temple, all the multitudes of gods may be installed but specially the multitudes of gods related to Vişnu (Slo 130 Ad 86)

After describing the Himavat, Mālyavat, Śṛngavat, Āgāra, Bhavana, Gṛha, Niṣadha, Śveta and Vindhya temples a general rule is given that all deities can be installed in the above types excepting in the Āgāra and its varieties (Ad 86 Ślo 17) In all the varieties of Āgāra only the Linga is to be installed. Thus Āgāra and its varieties become Śaivite temples.

Valabhi—Brahman, Vişnu and Maheśvara or Ekanamśa between (Bala) Rama and Krşna, or Trilocana between Ganeśa and Skanda, or Janardana or Tvaştă between the Sun and the Moon or according to the reading of Mss A & B only Janardana, (Ślokas 26, 27) or only Durga with many arms, or Lakşmī or Bhogasaya ie Vişnu lying on the body of the serpant or Janārdana with his quadruple manifestation or Dhaneśvara in company of Śakra, Kināśa (ie Yama) (Ślokas 28,29) and Varuna It has been explicitely enjoined that gods other than those mentioned above should not be placed in a temple of Valabhī type (Ślo 30)

Vrddhida—Hari, the ford of the universe in his quadruple manifestation (Slo 32)

Triguna—Brahmā, Visnu and Rudra (Slo 34) or Āditya, Vişnu and Candra or Ganesa, Rudra and Skanda (Slo 35)

Turaga—Sukra, Sani, (38) Vinayaka, Bhadrakali, Skanda and Laksmi, (39) or Nagas and Pramathas and not others

Kunjara- Kinnaras and Sakra and not others (Slo 41)

Yatheşta and Visala—The Matrs, the Grahas, the Nakşatras, Ādityas, Vasus, Rudras, Visvadevas Maruts, Bhrgus, Angirasas Sādhyas, the two Asvins, eight Dikpalas and five Bhutas 1 e elements (44 to 46)

Bhadra-Bhadrakalı (47)

Kamala—eight Lokapalas in eight directions or Grahas ommitting Ketu eight in number in the following order—Surya, Sukra, Kuja (1e Mangala), Rahu, Saura (1e Sani), Candra, Budha and Guru or Mahādeval in the form manifesting eight aspects 11. bhu, jala, ākaša, vahnī, indu, arka, marut, dikṣata, (1e one consecrated for a sacrifice),

¹ cf Šākuntala šloka 1

or Vasudeva in his eight fold manifestation1 (or Hari in his four-fold manifestation in the principal quarters and Asvasirsa, Varaha, Narasimha and Trivikrama in the intermediate directions, Isana etc.) (\$10 52 to 57)

Arunodaya—For all gods (Slo 58)

Garuda-Aditya2 in the main temple and Danda and Fingalaka in the two side temples or Sukra and Sani or Kesava and Sankara, or Candramas in the main temple and Sisira3 and Ambupa 1e Varuna in the side temples, or Kāmadeva in the main temple and two Vanamalinas in the side temples or Devarad means Indra in the main and two Vanamälinas in the side temples. Or Yama in the principal and Mrtyu and Kala in the side or Varuna in the principal and Gangi and Kalindi (1e Yamunā) in the side temples Or Dhanadhyaksa ie Kubera in the main and Sankha and Padma in the side or Brahman in the principal and Kesaya and Isvara re Siva in the side or Mahadeva in the main and either Visnu and Pitamaha or Vinayaka and Kumara or Virabhadra and Nandi in the side, Garuda in the main and Kasyapa and Vinatā in the side or Vasudeva in the main and either Rudra and Pitamaha or Candra and Arka or Varuna and Anila or Laksmi and Kalaratri or Anala (fire) and Anila (wind) or Tarksya and Ananta or Garuda and Aruna or Dharma in the principal and Artha and Kama in the side temples (62 to 77)

Šarva, Trailokya Linga, Sarvakita }—Linga (82) Brahmanda, and Sara

Caturasra-Sakra with multitudes of gods or Yama with Pitrs

¹ The meaning of prabhave Japanena ca is not clear

An inscription at Mandasaur records the construction of a temple to the Sun in the year 437 A D by a guild of weavers and its repair in the year 473 A D. Another on a copperplate found at Indor in the Bulandshahar District in the United Provinces mentions an endowment of Devasishu in 464 A D for lighting a lamp in a temple of the Sun And in a third is recorded a grant in 511 AD to a temple of Adilya or the Sun. A great many more sun temples have been discovered especially in Western India from Mulian down to Outch and Northern Gujarat. The ruins of one exist at Modherd eighteen miles to the south of Papan in the last named province and they contain the date Vikrama 1083 corresponding to 1027 A D. There was another at Gwalior constructed in the time of Militakula the Huna Prince in the beginning of the sixth century (Page 154—Vaisnavism and Salvism)

He cannot however from the more remains of these temples say whether the shape of these sun temples was like that of a Garuda temple or not

³ The combination of Sistra and ambupa meaning Varuna is not clear Probably the reading may be trisirambupau where trisira or trisiras may mean Kubera.

or Mahākāla with Matis (84) or Nisimha and Durgā, the moon and the Nakṣatra, the Sun with the grahas or

Väsuki with serpents (84, 85)

Samekhala, Dvimekhala and Mekhaladhya as those not mentioned should be placed here as courtiers (Slo 87)

Dhişnya, Salya, Budha and Indu-any deity that one desires to install (Slo 89)

Gtha or Guha—Laksmī (Ślo 91)

Bahubhūmi-for all gods (Slo 92)

Guhar ya-Bhadrakālı or Vişnu lying on the serpent bed (Ślo 100)

Lokapula-The Lokapulas (Ślo 120)

Mahābhūta-Mahabhuta (Ślo 120)

Digbandha-all gods (Slo 122)

Ākāsanī—Ākasa (Ślo 126)

There are instructions also about the combination of the deities. When the Candra and Arka are in the same apartment they should not be mixed with other gods. They should face towards each other's direction the east and the west but not the south and the north. Similarly Skanda and Vināyaka. Naga, and Garuda, Yama and Mahesvara, Mahakala and Nīsimha and Rakta and Suskā should not be placed together in the same Vešma ie apartment. Kāmadeva should not be placed with Brahman, Rudra, Yama and Bhadrakali similarly Varuna and Anala (fire)

Two images of one god should not be made but two images of the great Visnu can be made according to the manifestation (pradurbhava=Avatara) Also those gods whose pairing is prohibited may be placed in the company of other gods. The Sun and the Moon may be accompanied by the row of G ahās (planets). Skanda and Vinayaka should be near Mahadeva, similarly Seşa and Tarkşya near Vasudeva. In this way even the opposing gods may be brought together suitably in the company of other gods.

Sarrotabhadra

Hatt in his four fold aspect is the principal god to be installed in the Sarvatobhadra temple (verse 1). Vasudeva faces the east or west but no other direction (v. 17). First the direction which Väsudeva has to face, must be fixed up and when Väsudeva faces the east in accordance with that Samkarşana faces the south, after that Prdyumna the west, Aniruddha the north. Lakşmi should be placed to the right of the eastern Mandapa. Nidra to the left of the South Mandapa and Kalarātri to the right of the southern Mandapa, to the left of the western Mandapa Siddhi and Rati to its right, to the left of the north Kirti and to its

Inght Sarasvati, to the left of the east Pusti Asvasirşa, Varaha, Narasımha and Trivikrama are to be installed in the temples at the corners ie in the intermediary directions beginning with Aisani in due order. The following twenty four deities are to be placed in small temples which have a mekhala band. Among these twenty four Ananta, Makara, Kaustubha are also included and considered as deities (caturvimsatirityete vibudha vibudottama) and also the weapon divinities or Ayudhapurusas of the respective aspects of Visnu are given in the list of twenty-four gods. They are Tarksya, Sankha, Padma, Cakra, Langala, Musala, Ananta, Gada, Tala, Trisula, Sarnga, Sara, Makara, Parasu, Mudgara, Carma, Pasa, Pafisa Nandaka, Sakti, Musti, Vajra, Kaustubha and Vanamala

The following deities are to be installed in the Damstradevagrhas — Indra and Agni in the eastern direction, Yama and Nirri in the southern direction, Varuna and Amila in the western direction and Dhanesvara and Mahesvara in the Northern direction. Eight planets are to be placed in the Dainst a temples are as under. Sun and Venus in the eastern temples, Ma's and Rahu in the southern, Saturn and the Moon in the western, Mercury and Jupiter in the northern. Two Damstra temples are dedicated to Subhadra and Vasubhadra, the Pratiharas of Vasudeva. Āsadha and Yajnatara of Sankarsana, Jaya and Vijaya of Pradyumna and Āmoda and Pramoda of Aniruddha should be similarly placed in other Damstra temples. They are all Digpilas and Grahas

The images to be placed on the Jagati band are Gayatri, four Vedas, Vaişnavı Aparajıtā Mrtyu, Kala, Yama, Danda, Kavaca, Sara, Sankhya, Yoga,
the Pañcaratra system, the Pasupata system, Vyasa, Valmiki, Markanda and
Mahabhutas one after the other

Benefits of building Sarvatobhadra temple

One who builds such a temple and properly worships all gods is called a cakravartin in the first Kalpa of the Tretayuga. One who builds the surrounding temples lives in the heaven as long as he desires and then he is united with Visnu One who worships all the gods with the parafernalia of gandha, malya namaskara, dhupa, dipa and anna in this temple, one gets the benefit of making the gift of three worlds. Undoubtedly he gets whatever he desires

As soon as this very beautiful temple with its Cakra and Patakā comes to sight all the troubles disappear. One who enters this temple has no disease, unnatural death and the calamities. Yoginis, Yaksas, Raksasas, Pretas and Vinayakas have no power over such a person. All the principal Sattvatas attain communion with Visnu. All the male and female servants who are in the house go to heaven and remain there till the time of 14 Indras.

The king in whose dominion such a temple exists, remains in the heaven of Indra and enjoys happiness for a long time. Any one who offers a Pataka has his sin swept away by it (ie the Pataka). Calamities do not arise for him

and he obtains excellent merit. One who builds such a temple is born in the next birth as a cakravartin

The water of the place is always holy (tirtha) When a dramatic performance (yūtra) is given at that holy place, all the gods with Indra the great omniscient Rşis and ancient Rājarşis fe holy kings with their followers who residing in heaven and whose exploits are like that of Indra, Gandharvas, Apsaras, and the benevolent Bhūtaganas in bodily forms come to witness the great festival of the god. The man who witnesses this great festival undoubtedly attains prosperity (kalyāna)

No one should damage in any way the Devadravya ie the property of god. The king or his appointed officer who does this goes to terrible hells with his sons, relatives and cattle and in this world undoubtedly he loses his position. Those who are devotees in this place, prosper by the grace of the god of gods, Visnu with their cattle and hoards of wealth. Such a temple even made by others must be seen because the sight of it frees a man from all sin and gets him merit (verses 44 to 63, Ad. 88).

Thus the section on Prāsadalakṣana opens before us a vision of one hundred and one varieties of temples. Eventhough, the picture in many details is vague, we have much definite information from which it will be possible to understand the progress of temple architecture in the age of Visnudharmottara. Much of this architecture has disappeared in course of time. Still it will be worth while for a student of art and archaeology to study the surviving monuments in the country in the light of the information derived from the Visnudharmottara.

XII

ART AND RELIGION

The inquiry which started with the question of Vajra as to what brings happiness in this world and the next has now been fully answered in detail by Markandeya. Making of images and inducting deities into them, building of temples and the worship of gods give the desired happiness. But before one could do this, one had to master all arts—arts of sound and arts of form. Markandeya has thus covered the whole field of fine arts—architecture, sculpture, painting, dance, music, drama and poetry. All these arts are taught as bearing on one another and as arts in their own natures. These arts as implied by Markandeya have their final culmination in the temples of gods.

The principle of rasa has been explained in detail in Ad 30. In Sanskrit culture the principle of rasa is associated primarily with Natya and Kavya Vişnudharmottara however, extends this principle to other arts as well

Let us recapitulate what our text has to say in this matter

Kavyarasa

About Kavya, it is said that its action (karya) should be accompanied by the nine rasas wz Hasya, Srngara, Karuna, Vira, Raudra, Bhayanaka, Bibhatsa, Adbhuta and Santa (Ad Sio 15)

Natya-

Coming to Natya we find that the above mentioned nine rasas are characterized as Natyarasas (Verse 61, Ad 17) It is said that the predominant feature of Natya is Rasa (Rasah pradhanamevaitatsarva natyam) and therefore in all its varieties the composition should follow Rasa (Bandho rasanugah karyah sarvesvetesu yatnatah Slo 62) The different forms of Rupakas are distinguished by the predominence of one or the other Rasa. All the rasas and the Vittis find scope in a Nataka. In a Natika, Singara is predominant. The same holds good about Prakarana and Prakarani. In Utsistakanka Karuna is predominant. Samayakara has three types of Singara bised upon Dharma, Artha and Kāma

Ihāmīga has Srngara as its predominant Rasa but its nature is different from the ordinary Sīngāra in as much as one has to seek after, or fight for one's beloved In Vyayoga, Dipta 1e Vīra rasa is predominant In Dima—Raudra is predominant, while in Prahasana Hasya is predominant (Ad 17 Slo s 19 28)

Gita--

While discussing Gita (Ad 18) our text says purvoktāsca navarasīh ie the nine rasas mentioned before have also their place in Gita Different notes are supposed to evoke different rasas for example—Madhyama and Pañcama indicate Hūsya and Śrngūra, Sadja and Rsabha, Vira, Raudra and Abdhuta, Niṣūda and Gandhūra Karuna, Dhaivata Bibhatsa and Bhayānaka, and Madhyama Śūnta The three layas also express particular rasas. Thus Madhyama laya has its place in Hasya and Ś rgara, Vilambita in Bibhatsa and Bhayānaka and Druta in Vira, Raudra and Adb uta (Vol 1 P 44)

While describing the play of the various Talas on Mṛdanga etc our text says that Additā has its place in Śingara and Hāsya, Vitasta in Vīra, Raudra and Adbhuta, Ālipta in Karuna and Śānta and Gomukhī in Bibhatsa and Bhayānaka (Vol. 1 p. 46)

Nrtta-Nrtya--

While describing Nrtta or Nrtya (Ad 20, Sio 62) our text says it should be accompanied by Rasa and Bhāva and that it should be in harmony with the Kavyarasa (rasena bhavena kavyarasanugam ca Sio 62). It is also said that Rasa is the root of the Natya and there can be no Nrtta without Rasa—therefore one should try to have Nrtta based upon Rasa (sloka 29, Ad 30). The four Nrttis,—Bharati, Sattvati Ārabhati and Kaisiki—the four styles of dancing and of art in general—have their specific rasas. (Ad 20, Sio 56). Vira is predominant in Bharati, Sattvati in the former particularly through Vak or speech, Raudra in Ārabhati Sīngāra and Hasya in Kaisiki (A 20, Sio s 56 58).

While describing the various postures and movements of dance we had occasion to note how these express different sentiments and emotions. I have also referred to the 36 rasadrstis indicating the different rasas and bhavas (Ad 25). These Drstis have a special significance for not only dancing and acting but also for Citra re painting and sculpture. The point to be noted is that out of 36 Drstis nine are called Rasadrstis after the names of the various rasas excepting the forgum. The Ingula district called Kanta and the others are called Thaylonaka, Hasya Karuna, Adbhuta, Raudra, Vira, Bibhatsa and Santa. As we have seen even the movements of cyclalls and cyclorows are associated with different sentiments and emotions. Some of the Gatis are also named after the rasas which they are supposed to express e.g. Singarini, Bibhatsika, Sthirapada for Karuna etc. In short the Abhinayas of Angas and Upangas are related to the expression of particular rasas and bhavas

In the Citrasutra our text says that like Nitta, Citra represents the three worlds—in modern phraseology painting and sculpture are representative arts like dancing and acting

¹ Compare Adhyāya 42 śloka 48 Sādršyakaranam

Therefore the Anga and Upāngakarmas, the rasa and bhāva Dṛṣṭis described previously apply here also (Ad 35, Ślo 5,6, Ad 43, Ślo 37) It is also expressly stated that rasas and bhāvas mentioned before should also be expressed in Citra

In addition to these general remarks one whole Adhyaya 43 is devoted to the topic of nine Citrarasas

I have discussed the citrarasas and the matter incidental to them in the section on Citra

In the case of Citra not only the category of rasas but the categories of guna, dosa and bhusana or alamkara are applied to it. These also have been dealt with at the appropriate places

Concept of rasa-

Thus we find that the concept of rasa pervades all the arts excepting that of temple building or architecture. In the arts of painting and sculpture it is specifically called Citrarasa while in the arts of Poetry, Music, Drama and Dance, it is known as simply rasa or kāvyarasa and nātyarasa. It is significant that the principle of rasa does not extend to the art of temple building or architecture This limitation implies that the principle of rasa holds good in imitative or representative arts The theory of rasa arises primarily out of the experience of sentiments and emotions (sthayi and sancaribhavas) These are essentially human and so the means of evoking them have to bear some semblance to conditions which arouse human emotions. The arts of music, dance, drama and poetry on one hand and painting and sculpture on the other provide such means Architecture having no such semblance could not be taken as evoling any kind of rasa However this may category in Visnudharmottara is not enunciated as a theory of aesthetics in so many words, it is implicit in the treatment of different representative arts

These arts and the rasas that they evoked were primarily humanistic like all other valuable things to men. The larts were also offered to divinity by way of

करोति देवप्रासाद याबद्वारं सुषावितम् । जन्मान्तराणि तावन्ति यशस्यो भुवि जायते ॥ चित्र राभणसपुक्त कारवित्वा दरेर्गृहम् । गन्धवेरोक्नाप्नोति दहून्यद्वगणानि तु ॥ दत्त्वा च गीतं धर्मशा गन्धवे सह मोदते । स्वप गीतेन सर्व्य तस्य चातुचरो भवेद् ॥

Compare the following verses from Vispudharmo tara edited by Vyankateśwara Press, Bombay

worship. As such their content became religious and the emotions that they evoked though human in their nature became sub-imated. It is the fascination of this sublimated 34 which really explains the religious turn that artistic impulses took in ancient India. The impulse of sublimation is found working even in the field of religion itself.

The first attempt to make anthropomorphic concepts of gods and goddesses superhuman has resulted in giving them huge forms with more heads, hands and eyes more terrific weapons and strange vehicles. This however, could not satisfy the finer religious understanding of the cultured people. As a result of this dissatisfaction which may have been due to either the spiritual influences of the Vedantic, Buddhist and Jain thought or the mystic understanding of these deities, an attempt seems to have been made in the age of Visnudharmottara to give these unhuman features of deities as well as their weapons, insignia, vehicles etc. a metaphysical and a spiritual meaning. The technical word for this sort of explanation is Hetu as we have seen These 'Hetus' carry the expressions of religious myths in connection with gods to the plane of divine consciousness of the universe worship of gods is not the worship of material objects of which the images are made but is the worship of divinity in its manifold relation of the universe. The divinity is worshipped as the source, maintenance and disappearance of the universe as well as the inspiration of spiritual and moral light in human consciousness short, this view of gods and their emblems prepares for a mystic vision of the divinities

The same inspiration is seen in the discussion of avahanaprayojana where it is suggested that a man passes from the paramurti of god to the aparamurti i.e. from the worship of his inducted divine presence (paurusi) in an image to the contemplation of the divine in a purely spiritual way (Sunya) (Ad 108)

The spiritual experience has an affinity with rasanubhava or aesthetic experience. Later writers have attempted to describe the nature of rasanubhava According to Abh navagupta the essence of Rasa is Nirvighna Samvittih (NSP 280 GOS) and is known amongst literary critics by such words as Camatkira, Nirvesa, Rasana Asvadana Bhoga, Samapatti, Laya, Visranti etc. The last

वार्धं दस्ता तथा विश्वः शक्तोकमवाप्तुयात् । स्वयं वाद्येत सर्वेत्यं तस्यैवातुचरी भवेत् ॥ वाद्यानामपि देवस्यं तन्त्रीवाद्यं सदा वियम् । तन सर्वेत्रं वरदं गाणपर्यमवाप्त्यात् ॥ तृ व दस्ता तथाप्ताति स्दलोकमस्ययम् । स्वयं नृप्येतं सर्वेत्यं तस्यैवातुचराः भवेत् ॥ वेश्वणीयवद्यनेत श्वतः शेक्सवाप्त्यात् । three words Samāpatti, Laya and Viśrānti are the words which are also used to denote the highest state of spiritual experience. According to Abhinavagupta the concomitant condition of Rasānubhava is Prakasa which is essence of Ānanda. He compares the cognition of Rasa with the highest experience of a Yogin and distinguishes it from Yogi's experience by the fact that the Rasānubhava is characterized by beauty (Saundarya) while the Yogi's experience is devoid of it (Saundarya Virahat) (N S Vol I p 286). Thus the experience of Rasa being akin to this mystic vision of the divinities makes arts eminently fitted as modes of worship. The contribution of the third Kanda of Visnudharmottara in understanding ancient Indian Culture lies in expressing this relation of art and religion. By its inherent, akinness, the aesthetic experience could easily grow into spiritual and mystic experience. The perception of this harmony in beauty and divinity led to the great synthesis of art and religion in ancient Indian Culture.

APPENDIX II

Iconographical Materials from other Puranas

Agnipurāna—Adhyāya 46—Sālagrāma,

Adhyāya 49—Matsya, Kūrma, Varāha, Narasımha, Rāma, Parasurāma, Balarāma, Vāman, Buddha, Kalkı, Vāsudeva, Pradyumna, Aniruddha, Brahmā, Saraswatī, Laksmī, Jalasāyin, Harī, Dattātreya, Gaurī

Adhyāya 50—Candi, Navacandikā, Rambhā, Lalitā, Lakşmī, Saraswatī, Jānhavī, Yamunā, Gaurī, Brahmi, Tumburu, Sānkarī (Kārtikeya), Vārāhī, Vināyaka, Candikā, Durgā, Bhāravī

Adhyāya 51—Sūrya, Bhāskara, Aryamā, Parjanya, Vişnu, Idā, Sūşumnā, Mahākāla, Kapila, Budha, Šukra, Rāhu, Ketu, Taksaka, Kulika, Indra, Agni, Yama, Varuna, Vāyu, Kubera, Lokapāla, Hanumāna, Kinnara, Vidyādhara, Pišāca, Vetāla

Adhyāya 52-Sixty-four Yoginis

Adhyāya 53—Linga

Matsya Purāna—Adhyāya 126—The Sun and the Moon with their vehicles Adhyāya 259—Śiva, Natarāja Śiva, Yogiśvara Śiva, Bhairava

Adhyāya 260—Ardhanārisvara, Šīvanārāyana, Mahāvarāha, Narasimha, Vāmana, Brahmā, Kārtika, Ganeśa, Kātyāyanī, Mahisāsuramardini, Indra

Adhyāya 261—Sūrya, Agnı, Yama, Dharmarāja, Lord Varuna, Triśulapāni, Kubera, Išāna, Matṛkās

Nāradiya Purāna—Adhyāya—85—Kālikā

Adhyāya—86—Mahālakşmī

Adhyāya—88—Sri Rādhā

Bhavisya Purana—Adhyāya 132—Surya

Adhyāya 12—Visnu, Vāsudeva, Nīsimha, Hayagrīva, Nārāyaņa, Maheśa, Durgā, Lakṣmī, Saraswatī

Skanda Purāna—Adhyāya 15—Pañcavadana Mūrti

Adhyāya 19-Rāma, Krsna, Vasudeva, and Subhadrā

Adhyāya 72—Bhairavī etc

Adhyaya 63—Rama (Dasarathi)

Kālikā Purāna-Adhyāya 62-Bhadrakāti.

Deví Bhāgavata—Adhyāya 50—Mahākāli, Mahişāsuramardinī, Mahā-saraswati

Samba Purana-Adhyaya 6-Sun

Adhyāya 21-The Sun and his Chariot.

APPENDIX III

Emblems of various deities represented on their images as given in V.D.

| Images | FF 1 | Wed | ipons | – Other emblems |
|-------------------|-------|------------------|-------------------------|-------------------------------|
| | Hands | Right | Left | - Other emoters |
| Brahmā | 4 | rosary | waterpot (Kamandalu) | |
| Vişnu | 8 | an arrow | a skin | |
| | | a rosary | a garment | |
| _ | | a club | a bow | |
| \$ _{iva} | 10 | a rosary | a citron | three eyes, Lunar de- |
| | | a trident | a bow | git on the forehead |
| | | an arrow | a mirror | of Šiva. |
| | | a staff | a water-pot | |
| _ | | a lotus | a skin | |
| Brahman | 4 | rosary | water-pot | a chariot with seven swans. |
| Vāsudeva | 2 | Sun | Moon | |
| Samkarşana | 2 | club | Ploughshare | |
| Pradyumna | 2 | bow | arrow | |
| Aniruddha | 2 | shield | Sword | |
| Mahādeva | 2 | aksamīlā | Kamandalu | |
| Sadāšīva | 2 | bow | arrow | |
| Bhairava | 2 | staff | citron | |
| Nandı | 2 | shield | trident | |
| Umi | 2 | Mirror | Lotus | |
| Nāsatya | 2 | divine medicinal | Books | |
| Śakra | 4 | lotus | on the back of Saci | the elephant with four tusks. |
| | | clephant-goad | Thunder bolt | |
| Saci | 2 | Resting on the | Sprout of the | |
| | 2 | back of Sakra | - | |
| Yama | 4 | Sceptre | On the back of Dhumorea | On a buffato. |
| | | Sword | Skin | |

| | LI an In | Wed | pons | Other amblems |
|------------|----------|----------------------------|------------------------------|--|
| Images | Hands | Right | Lest | – Other emblems |
| Dhūmorņā | 2 | On the back of Yama | Beautiful Citron | l |
| Citragupta | 2 | A pen | A leaf | |
| Vагипа | 4 | Lotus Noose | Conch Jewel-box | Chariot with seven swans |
| Gaurī | 2 | On the back of Varuna | blue-lotus | |
| Gaṅgā | 2 | Cāmara | Lotus | On Makara. |
| Yamunā | 2 | Cāmara | Nilotpala | On Tortoise. |
| Kubera | | Mace | Jewel-box | Man as his vehicle. |
| | | spear | on the back of Rddhi | A flag by an emblem of hon. |
| Ŗddhı | 2 | On the back of Kubera | Jewelled vessel | |
| Tārkşya | 4 | An umbrella | A full pitcher | |
| - | | Two hands | -folded | |
| | | or Two hands sup | port the feet of | |
| | | god | | |
| | | | ands folded | |
| Gaurisvara | 4 | Rosary, Trident | | The left half of Siva's body is Parvati. |
| Vahni | 4 | Flames, Trident | Rosary, on the back of Svāhā | Chariot yoked by parrots |
| Svāh3 | 2 | On the back of Vahni | Jewelled vessei | |
| Vīrūpākṣa | 2 | Staff | On the back of Nirrti | Vehicle-a Camel. |
| Nuin | 2 | On the back of Virūpāksa | Noose | |
| Vāyu | 2 | Holding by both to of a ga | | |
| Śivā | 2 | | | |
| Bhairava | | A snake | Parvati) | Garland of skulls snake ornaments |
| Visnu | 2 | Club | Wheel | |
| Mahi | 4 | Jewel-vessel | | Seated on the back of four elephants. |
| | | Corn-vessel | Lotus | |

APPENDIX

| Image | 1 b J | | pons | Other emblems |
|------------------------------|-------|---|------------------------------------|---|
| Images | Hands | Right | Left | - Other emblems |
| Gagana | 2 | Sun | Moon | |
| Brahmā | as de | escribed above | | Seated on a lotus- seat |
| Sāvitrī | 2 | (On the back of Brahmā) | A garland of rosary-beads | |
| Saraswatī | 4 | Book Rosary | Kamandalu (Vinā) | |
| Ananta | 4 | Lotus Sea of liquor | Plough Conch | Many hoods, on the middle hood the earth goddess should be placed |
| Tumburu | | Citron | Skull | On a bull |
| J ayā | 2 | Staff | Skull | Man as vehicle |
| Vijaya | 2 | Sword | Skull | An owl as Vehicle |
| Jayanti | 2 | Rosary | Skull | On horse |
| Aparājītā | 2 | Small Javelin | Skull | Born on a cloud |
| Sun | 4 | In two hands so two hands on the and Pingala | inbeams as reins heads of Danda | A chariot with seven horses A banner bearing the mark of a lion |
| Pignala | 2 | Palm leaf | Pen | |
| Danda | 2 | Shield | Lance | |
| Moon | 4 | Two white Lotuses on the back of Lustre (Kanti) and Bea | ntv (Šahbā) | A chariot with ten horses A banner bearing the mark of a lion |
| Di. | | (Kanti) and Dea | uty (200) | A golden car with |
| Bhauma Budha Bihaspati | 2 | A book | Rosary | eight horses |
| Sukra | 2 | Jewel receptacle | Book | A car with ten horses |
| Sanı | 2 | Staff | Rosary | An iron chariot drawn by eight ser- pants |
| Rāhu | 1 | empty ha | nd | |
| Future Manu | 2 | A water vessel | Rosary | |
| Kumāra | 4 | Cock Bell | Flag Vaijayanti A spear | A Vahana of pea- cock |
| V 20 | | Den | | |

| Images | Hands | Wee | apons , | - Other emblems |
|--|-------|-------------------------------------|--------------------------------|--------------------------|
| mages | Hanus | Right | Left | - Other Chibients |
| Bhadrakālı | 18 | Rosary | Spoon | In the posture of |
| | | Trident | Ladie | ālidha on a car |
| | | Sword | Seal-ring | drawn by four hons. |
| | | Shield | Water-vessel | |
| | | Bow | Staff | |
| | | Arrow | Spear | |
| | | Conch | Black antelope | |
| | | Lotus | skin | |
| | | | fire | |
| | | | in abhaya Pose Jewel-vessel | |
| Vmāyaka | 4 | Trident | Axe | Face of an elephant; |
| , , | | Rosary | Vessel full of | Big belly |
| | | | sweets | |
| Diti Danu Kāsthī Dinayu Simhikā Muni Kadru Krodhā Tura Prādhī Vinatā Surabhī Khasa | 2 | All these divine gaged in making | | e represented as en- |
| Dhruva | 2 | Wheel | Rays | |
| The sons of Sukra and Jayanta | 2 | Bow | Arrow | |
| Lord Bala, the | 2 | Spear | Shield | |
| son of Yama | ~ | C., and | Book | |
| Puskara | 2 | Sword A jewel vessel | HUUK | |
| Nalakuvera | | A lotus at case | | |
| Purojava | 4 | Trident | Short Jayelin | Three eyes |
| Nandi (Ad 73) | 8 | Bow | | Makara as |
| Kāma - | O | Four of his hands touching the bose | should be shown | an emblem in his flag |

| Images | Hands | . 1 | Veapons | |
|-----------------------|-----------|---------------------------------|--|---|
| | Hanus | Right | Left | - Other emblems |
| Saraswati | 4 | Rosary | Book | |
| Vāruni Cāmundā | | Trident A pitcher A spear | Water-vessel | |
| Śuska | Many | i i opene | | Three faces. Sur |
| Bhīmā | hands | Kh | atvānga | rounded by snakes A garland o |
| Śiyā | 4 | Vessel full of blood Sword | Spcar flesh | skulls. Standing in the aligha posture, a |
| Eastern direc- | | | | jekal-face. Seated on an ele- phant. |
| Southern-eastern | | | | Seated on female Elephant. |
| Southern | | | | On a charget |
| South-Western West | | | | Seated on a Camel. Seated on a Horse. |
| North-east Kāla | | N 1 | _ | Seated on a Bull. |
| ever | 2 | Noos ashes as his we | | Serpents, Scorptons. |
| Dhanvantari | 3 2 | | of Nectar in both | |
| amaveda | | | | The face of a dog. |
| Vara | 2 | rosar | ies | Between these two there should be Badari. Both are |
| Vārāyana | 4 | rosari | cs | seated on an eight- wheeled beautiful chariot. |
|)harma | 1 | | The book ould be placed on assiya and Happi- | Four faces. Four legs. |
| larasimha - | 4 | The conch Wheel | Club Lotus | Piereing the heart of Hiranyakasipu with sharp nails. |

| T | 77 | IVec | apons | 0.3 |
|--|-------|---|---|---|
| Images | Hands | Right | Left | - Other emblems |
| Hari | 2 | Resting on the (Personified club | | Seated on a hou- throne |
| Seşa | 4 | Plough Two hands joir Pose | Mace ned in the anjali | Snake ornaments |
| Bhagavān, on the back of Seşa | 4 | Conch Lotus | Wheel Mace | |
| Bhagavān with Hiranyakşa | | | | With raised spear and with the wheel ready to cut off the head of Hiranyakşa |
| Hayagrıva | 8 | The conch Wheel Four hands on somfied vedas | Mace Lotus the head of per- | |
| Padmanābha | 4 | the knee | Under the head (of the god) holding a sprout of Santāna (tree) | |
| Lakşmî (near Harī) | 2 | Beautiful lotuses | in the hand | |
| Lakşmî (alone seated) | 4 | Lotus with long stalk Conth | Nectar-pot Bilva | Behind her back a pair of elephants pouring out the con- |
| Lakşmî (standing) | 2 | Conch | Lotus | tents of two jars Standing on a lotus |
| V ₁ dy ₁ dhara | 2 | The head | Sword | Engaged in looking at the goddess |
| Vamana | | A sta | af f | Having narrow joints and ready for study |
| Trivikrama Rāma (10 Parašu Rāma) | | Staff, Noos An | e and Conch axe | Matted locks of hair |

APPENDIX

| Images | 77. 1 | | Weapons | 0.1 |
|----------------------------------|--------------|-----------------------|----------------------------|--|
| | Hands — R | Right | Left | - Other emblems |
| Vikodara | | | A club | Very plumb body, lean middle, bent glance and contract- ed eye-brows. |
| Arjuna | | | Bow, Arrow | |
| Nakula and Sahadeva | | | Swords, Shields | Like Asvins but without medicinal plants. |
| Bala (<i>i e.</i> Bala Rāma) | | arry <u>ing</u> ub | g the plough-share and the | Eyes dilated through wine. |
| Rukmiņī | | | A blue lotus | |
| Satyabhāmā Sāmba | | | A club | Riding on a camel. By his sides two female attendants with swords in hands. |
| Yuyudhāna | Вс | ow | Агтом | |

APPENDIX IV

Character'stirs of Hundred and one temples (as described in Visnadhurmottara)

| | LIN'A IN | Inla Auga | Diāra | Jäha | Sikhara | St. hara Bhumi | Stanthin | Stantlin Valukti Bitri | D) [r·1 | Alora |
|-----------------------------|------------|--------------------|-----------|-----------|----------|----------------|----------|------------------------|-----------|------------|
| | - | 7 | 3 | 4 | S. | 9 | 2 | ø j | 6 | 10 |
| Amhuda (48) \$10, 90 | , | | - | all cuted | | | 1 | 1 | ! 1 | 1 |
| Ambuda (9)) \$10-128 | . İ | | • [| } - | ** | 1 | 1 |] | 1 | Anden |
| Alika (46) \$10.95 | 1 | 1 | च |] | . } | e) | ì | 1 | ì | Sachera |
| Akasan (95) Slo 126 | ŀ | 1 | . 1 | | 1 | . 1 | Many | Yukh | Varyeta | . 1 |
| Akasa (19) Slo 90 | erò. | ţ | Yukta | all sides | Ę | ı | . } | ļ | } | ŀ |
| Agira (4) Slo, 14 | 1 | - | - | i | Ţ | 1 | j | ! | ł | 1 |
| Ananda (80) Slo 114 | Urechhrita | 1 | 1 | Many | ţ | 1 | 1 | ſ | 1 | Cantract |
| Thatham's (22) 612 07 | | | • | | | • | | | | or vrita |
| Texabiliaring (03) 3.0 3. | 1 | { | a | 1 | ţ | - | i | İ | 1 | ショウコST3 |
| 1900 (45) 5(0, 87) | J, | 1 | Yukn | 1 | ţ | j | 1 | 1 | | J |
| Validate (27) Mil 11 | - | Aşlansa Aşlansa | œ | 1 | ļ | 1 | } | 1 | J | į |
| /f old (al) mencury | 1 | ! | 1 | ļ | ļ | 1 | ; | Parsy ata | | I |
| | | | | | | | | Valabhi 11 ee | | |
| Kunyrra (20) Slo 40 | 1 | ł | Yukta | - | Į | ſ | j | un. 1 | ! | ļ |
| Karlasa (73) Slo 104 | 1 | 1 | ব | 1 | 'n | 1 | j | J | 1 | · [|
| Garuda (30) Slo 62 | 1 | 1 | ! | 1 | Ţ | J | 1 | ļ | ì | 1 |
| Guha (28) Slo 59 | 1 | ! | 1 | 1 | Į | 1 | i | Hoam | 1 | 1 |
| Cina (6) Sip 15 | ~ | | | ! | ŧ | ļ | ì | 1 | } | ۱ ۱ |
| Oras (50) Sto 91 | ļ | ļ | 1 | -1 | ı | | į | 1 | 1 | Caturesta |
| Charata (99) Std (46) | 1 | ţ | ! | 1 | { | ļ | ł | 1 | | Direha |
| מור סופ (מח) לוחדווס | } | [| l | 1 | l | ļ | i | 1 |) | Ghata- |
| Caturasram (38) \$10 83 | 1 | - | V. f. Ash | | | | Part se | | 1 | |
| Catuskak nh (60) Šlo 83 | 1 | l | 4 | 1 1 | | 1 - | meinu . | Į | A arjutam | |
| Candra (46) Slo 90 | 1 | i | . | off ender | | • | 1 | i | | |
| Chhatra (85) \$10 118 | i | ١ | ' I | משונה היה | | ſ | i | i | | |
| | | | 1 | Ì | | i | 1 | 1 | | |
| Justa (72) Sig. 103 | 1 | • | ঝ | _] | | i | 1 | | | ri i |
| SE 018 (61) carin I | i | ţ | Vatria | } | | 1 | ł | _ | ì | 1 |
| Trigues (74) Slo 101 | ቍ | ! | [] | 11 | 3 Sriter | 1 1 | } } | anyo t | 1 | 1 |
| Toguna (Merham) (17) Sto 17 | I | ! | L.J | 1_ | | ! | í | | 1 1 | ! ! |
| | 1 | (| ſ | _ | | • | ł | _ | ì | ! ! |
| | | | | | | | | | | |

| Theyer (9)) Sto 124 Vunckhall I 2 3 4 5 6 7 8 9 10 Theyers (9)) Sto 124 Vunckhall I 11ma | | Mekhala | Κυία | Diard | Jaha | Sikhara | Blumi | Srambha | Valabhi | Valabhi Bhiit Akara | Akara |
|--|--|-------------|------|--------------|--------------|-----------------|------------|----------|----------|---------------------|-------------|
| Yunkhall Upcla 3 Yukia Varyinam 110 Yakia 11ma Yukia Yuki | | 1 | 7 | 3 | 4 | \$ | 6 | 2 | 8 | 6 | 95 |
| You'la 11ma 3 Yukia | Tnguṇa (93) Ślo 124 | Vımekhala | 1 | 1 | Upeta | : ! 1 | , , | 1 | 1 | 1 | 1 |
| Yukita 19ma Yukita Yukit | 19 19 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | | | • | | | t. | 1 | 1 | 1 | Cadacea |
| 110 Variula 8 Yukia | | 1 5 | i | 17:20 | ţ | 1 1 | n ! | Virkin | 1 | Vorestorm | Catarotta |
| 110 Vartula 8 Yukia 2 Yukia 110 Yuki | Jeimennala (41) 310 o/ | E COL | ļ | Linia | l | i | j | יו מעוד | | * 41/23/16 | - Calultana |
| Vartula 8 Yokkia 2 Yokkia 1 Yokkia 2 Yokkia 1 Yokkia 2 Yokkia 1 Yokkia Yokkia 1 Yokkia 1 Yokkia 1 Yokkia 1 Yokkia Yokkia 1 Yokkia 1 Yokkia | Jrailok) a (32) Sio 79 | 7 | ı | t | ţ | ļ | } | 1 | í | l | -PBut |
| 110 Youtula 8 Youkia 2 Youkia 110 | The transfer of the Add | | | | | | | | **** | | Taria |
| 110 2 | DVLTESSIA (24) NO 45 | \ | i |] | ļ | | } | } | TOVIT | ļ | Liryan |
| 110 | Digondha (90) Sig 122 | Vartula | F | ×c • | į | YUKIZ | }, | 1 | í | ! | Aștasri |
| 110 2 | Dvibhumika (62) Sjo 97 | 1 | 1 | 4 | ŧ | j | ~ | 1 | f | 1 | Sadasra |
| 116 | Dharrandhara (77) Slo 110 | ţ | I | 1 | ţ | f | 1 | ١ | f | 1 | 1 |
| 116 | Dhisaya (42) Sio 89 | • | ŗ | Yukia | Ţ | ı | ş | 1 | f | 1 | ١ |
| 116 | Nandaka (94) Slo 125 | } | 1 | 1 | ļ | 1 | ł | Many | ſ | i | i |
| 116 | Nandana (58) Slo 96 | i | i | 4 | ļ | ì | v | 1 | į | 1 | Sadasra |
| 116 | Nandi (65) Sio 99 | 1 | 1 | ł | ļ | i | } | } | 1 | 1 | Vnta |
| 116 | St ols (1) edbes N | (-) | 1 | 4 | ţ | 1 (SEE3) | ſ | ١ | 1 | ! | } |
| 116 | Nila (8) Slo 16 | _ | ļ | 다 | l | 1 (Smga) | ł | 1 | ſ | 1 | ١ |
| 116 | 20 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | ļ | I | I | 1 | 1 | 1 | í | Valabhi- | 1 | i |
| 116 | Nightan (18) Sio 37 | | | , | | | | | hinam | | |
| 116 — 4 — Munda 4 — Yatheştam Yuktu 2 — Yukta | 1 inca (86) 310 119 | ! | l | vo • | Sreņi | 1 | } | j | 1 | i | } |
| 110 2 | | } | ļ | 4 | ļ | i ' | 4 | 1 | 1 | 1 | Sadasra |
| 2 | off ok (28) spentineposti | 1 | 1 | ţ. | ţ | Munda | }. | 1 | 1 | ı | } |
| 2 | Farty iffana (44) Sig 95 | 1 | ١ | 4 | ł | ! | ; 6. | 1 | í | J | Sadasra |
| 2 Yukta | Danuphumika (51) 530 94 Restansada (24) 610 | ł . | ! | } | [| l | Yathesta | <u> </u> | í | J | 1 |
| 17 | Redby (44) Co. | 71 | 1 | ; | l | ı | i | ł | Yukta | ! | Lings |
| 77 | Notice (34) 500 65 | 7 | I | y ukta | ļ | l | Ş | ł | í | ! | . 1 |
| Yukta | Name (53) 500 47 | 1 c |] - | ١. | { | 1 | 1 | ; | Ayata | ı | } |
| Yukta 2 4 | Mandan (7) My 14 | 7 | 7 | - | ţ | ł | ļ | ł | í | 1 | } |
| Yukta 2 4 | Mahamana /24) Clo. 144 | ł | İ | | { | 1 | ş | j | f | í | Mandapa |
| Yukta 2 Yukta on all sides 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 | Marine Sanda (04) 510 11 | i | ا د | | į | 1 | } | í | 1 | f | |
| Yukia on all Slots Yukia 12 | Mecha (47) Cla 90 | ا د د | 7 | | ! | I | } | i | 1 | ł | } |
| Yathesta - Yukta 12 | Ment (52) Sin 93 | 17 Y T | ľ | | on all sides | | • | 1 | i | ŧ | } |
| Yathesla Kuharopeta | Minesia (100) Sin 128 | } | Į | | i | | _ | i | 1 | } | Sadasra |
| Yathesla Kuharopeta - Kuharopeta | Mandara (\$4) \$10.94 | 1 | l | ! - | 1 | | • | 1 | 1 | ļ | 1 |
| Yathesta - Yathesta | Mrdahea (86) Slo 118 | ļ | ļ | ŧ | l | ı | | 1 | ł | ! | Sadaces |
| Kuharopeta - Kuharopeta | Yathesta (21) \$10 42 | 1 1 | 1. | 1 | į | ł |] | i | } | ! | Michania |
| | Raiaraia (76) Sto 100 | } | ! | richina r | ! | 1, | ł | i | i | ! | 1 |
| | | } | ļ | I | l | Kuharopet | <u> </u> | 1 | ĵ | J | } |

r

| | Mekhala Kuja | Kuţa | Dyura | Jalra | Sikhara | Bhuml | , | Sian tha I alabel Bhirt | Bhittl | Akara |
|---|---------------------|-------------|-------------------|----------|------------|----------|------------------------|-------------------------|------------|----------|
| | - | 64 | - | 4 | 85 | 9 | | so | 5 | 10 |
| | - | ı | 1 | 1 | } | 1 | 1 | ١ |] | |
| Lokapája (89) Sio, 120 | 1 | l | 'n | 1 | Srengaha | 1 | 1 | 1 | I | 1 |
| | 1 | Į | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | i | Vajra |
| Adjacon (15) (1) Angeley | V mckha! | l ff | 1 | 1 | ١ | 1 | ı | 1 | 1 | Catura- |
| 3/212 /11) 612 35 36 | | | , | | | | | | | E CLUS |
| Value of the control | - | l | | } | 1 | 1 | Į | | ı | i |
| Variation (72) Cla 111 | } | į | 1 | 1 | 1 | t | ļ | í | 1 | 1 |
| Vienana (52) Cla Ok | i | [| 1. | 1 | Yekta | 1 | J | } | i | ı |
| Vi (Dynamet forla (10) Clar &C | ١, | l | 4 | J | 1 | ۲. | ı | 1 | 1 | Sadasra |
| Vendhya (10) \$10, 17 | 4- | [• | ۱, | j | } | 1 | I | 1 | 1 | ! |
| Visita (22) Sto 41 | ٠, ١ | 4 | 4. | I | } | l | 1 | 1 | 1 | 1 |
| Visvakarma (F.S.) Sin 116 | } | l | | 1 | } | i | 1 | i | ſ | i |
| Vanavanta (98) Slo 127 | ! | Į | İ | 1 | 1 | 1 | 1 | i | 1 | 1 |
| Vrindim (V Sandam) (16) 61- 13 | 1 | ŧ | 1 | i | Yukta | i | ſ | i | i | ſ |
| Ved the day (10) 510 51 | ١. | į | l | i | 1 | ļ | ! | Yukta | ſ | ļ |
| Vrs (67) 614 101 | , , , | I | 남 | l | 1 | 1 | ſ | Yukta | ı | 1 |
| | vi (dvi) Dekhaja | l | i | ł | 1 Smga | 1 | 1 | } | 1 | Vnta |
| | - Land | í | | | | | | | | |
| Sarva (31) \$10 78 | en. | Į | 1 | 1 | 1 | l | İ | } | t | Sankha |
| | . { | ļ | <u>ئ</u> ر ا د |] | { | Į | í | } | l | Lings |
| | i | ſ | Ti de | 1 | i | ļ | i | ١, | I | . 1 |
| | 1 | Į | 7 | 1 | i | !: | i | r ukta | ŧ | 1 |
| | 1 | 7 -4 | 7 | | 1 | = | i | 1 | ļ | Schastra |
| Sveta (9) Slo 16 | 7 | ٠, | - 47 | ! | } | ł | i | í | I | 1 |
| | ş | I | - 1 | ! , | ; | i | 1 | j | İ | t |
| .56 | ١ | | | | ì | Î | ſ | j | i | 1 |
| m | Cathere |] 2 | i | ſ | 1 | 1 | l | } | į | i |
| Samakita (34) Slo 80 | | Y. 1.15 | 1 | i | i | i | i | i | I | Veria |
| ສ | 1 | 1 | ! | i | S . | ł | i | Yukta | 1 | |
| | - | ! | ł | ļ | - | i | i | 1 | ì | 1, 1 |
| Suff ha (70) Sto 102 | • 1 | Į | ļ | 1 | i | I | l | Yukta | Į | I man |
| Suguha (92) \$10 124 | Virmelhart | ! | 1 | 1 | } | I | 1 | ١ | i | Coffib. |
| Subhadra (25) \$10, 49.50 | THE PERSON | [| I | Jalakope | 1 1 | í | 1 | 1 | , ; | SHIES . |
| Surekhala (39) Slo. 86 | ا د | 1 | Í | 1 | ł | 1 | ļ | l | ! | 1 |
| | HXn. | ſ | 1 | 1 | 1 | ł | 1 | | Í | 1 |

| | Alin | | 2 | | 1 | 1 | l | 1 |
|---------------|------------------|----|------------------------|---------------------|-----------------------|-----------------------|---------------------|-----------------------|
| | Dirit. | | | | 1 | ł | i | 1 |
| | Valabhī | • | 0 | | ţ | 1 | 1 | 1 |
| | Starting Valabit | 1 | | | i | ļ | Į | 1 |
| 240 | District | 9 | | 1 | ! | ſ | 1 | I |
| Calhon Direct | n military | ٧٠ | | Yukta | 1 | 1 6mm | | <u> </u> |
| Jalia | | 4 | | l | ı | i | | ! |
| Di āra Jāliā | | m | | l | Many | `₹ | 4 | .] |
| Kūļa | | 7 | | 1 | Esc | i | Yukta | 1 |
| Mekhala Kūļa | | 7 | | 1 | Friabhog | ! | 1 | 1 |
| | | , | Surarata (70) Sto. 112 | Susuma (81) Cla 116 | CIT 'OIC (ca) mineral | Marinya (73) 550, 105 | Humavan (1) Sio. 12 | Haftişa (63) Slo. 101 |

APPENDIX V

Lists of temples according to Puranas, Brhatsamhita and Manasara

V D TEMPLES

| l | Hemavān | 36 | Kamala |
|----|---------------|----------|---------------------------|
| 2 | Malyavān | 37 | Arunodaya |
| 3 | Śrngavān | 38 | Guha |
| 4 | Āgāra | 39 | Garuđa |
| 5 | Bhavana | 40 | Sarva |
| 6 | Grha | 41 | Trailokya |
| 7 | Nişadha | 42 | Linga |
| 8 | Nila | 43 | Sarvakīja |
| 9 | Sveta | 44 | Brahmanda |
| 10 | Vindhya | 45 | Sara |
| 11 | Valabhi | 46 | Caturasra |
| 12 | Vrddhida | 47 | Samekhala |
| 13 | Triguna | 48 | Dvimckhala |
| 14 | Sikhara | 49 | Mekhalādhya |
| 15 | Nggha | 50 | Dhişnya |
| 16 | Vrtu | 51 | Śalya |
| 17 | Kamada | 52 | Budha |
| 18 | Turaga | 53 | Indu |
| 19 | Kunjara | 54 | Candra |
| 20 | Yatheşta | 55 | Megha |
| 21 | Vışala | 56 | Ambuda |
| 22 | Bhadra | 57 | Akaša |
| 23 | Dvarašāla | 58 | Giha |
| 24 | Subhadra | 59 | Bahubhūmika |
| 25 | Gandham idana | 60 | Мегй |
| 26 | Śuktimana | 61 | Trikuţa |
| 27 | Mandara | 62 | Saumya |
| 28 | Pariyatra | 63 | Rajarāja |
| 29 | Alaka | 64 | Dharamdhara |
| 30 | Vimana | 65 | Vimana |
| 31 | Nandana | 66 | Surarat |
| 32 | Pancaka | 67 | Ānanda |
| 33 | Caturaska | 68 | Susama |
| 34 | Tribhūmi | 69 70 | Prabhanjana Višvakarma |
| 35 | Dyibhūmi | 70 | visvakarma |
| | | | |

APPENDIX 239

| 71 | Ekabhūmı | 86 | Mrdanga |
|------------|------------|-----|---------------|
| 72 | Samudga | 87 | Vajra |
| 73 | Nandı | 88 | Lokapala |
| 74 | Guhāraja | 89 | Digbandha |
| 75 | Vrsa | 90 | Samanya |
| 7 6 | Hamsa | 91 | Suguha |
| 77 | Ghața | 92 | Triguna |
| 78 | Simha | 93 | Nandaka |
| 79 | Mandapa | 94 | Ākašanī |
| 08 | Dvadasasri | 95 | Śankha |
| 81 | Sadasrı | 96 | Sodašasri |
| 82 | Astāsri | 97 | Vaijayanta |
| 83 | Kailasa | 98 | Ambuda |
| 84 | Mahāsumana | 99 | Mangala |
| 85 | Chhatra | 100 | Sarvatobhadra |

AGNI PURĀNA

| I | Vairā | ja — Quandrangular or squai | re (C | atusrah) |
|-----|-------|-----------------------------|-------|-----------------------|
| | 1 | Мети | 6 | Cāruka |
| | 2 | Mandara | 7 | Nandika |
| | 3 | Vimāna | 8 | Nandivardhamāna |
| | 4 | Bhadra | 9 | Śrivatsa |
| | 5 | Sarvatobhadra | | |
| 17 | = | | ah l | |
| H | Puşţ | oaka — Rectangular — (Āyāt | AII) | 7 . 1 |
| | 10 | Valabhi | 15 | Brahmamandita |
| | 11 | Gṛharāja | 16 | |
| | 12 | _ • | 17 | |
| | | Viśala | 18 | Świka-Veśma |
| | 14 | Sama | | |
| Ш | | | | |
| 111 | | ılāsa — Round — (Vīttah) | 24 | Uşnısaha |
| | 19 | Valaya | - | |
| | 20 | Dundubhi | 25 | |
| | 21 | Padma | 26 | |
| | 22, | Mahāpadmaka | 27. | Sva-Vikea or Khaviksa |
| | 23 | Vardhani | | |
| IV | Ma | iņika — Oval — (Vritāyata) | | |
| | | | 31 | Hamsa |
| | 28 | Gaja | 32 | Garutmān |
| | 29 | Vṛṣabha | 33 | Śrijaya |
| | 30 | Rukşanāyaka | 22 | |

| _ | |
|-------|----|
| | ~ |
| * 7 . | rı |
| | ι. |

VISNUDHARMOTTARA

| | 34. 35. | | 36. | Pythvidhara |
|-----|------------|-----------------------|-------------|----------------|
| V. | · | istapa — Octangular — | - (Astāsra) | |
| • | 37. | | 42. | Svastikakhadga |
| | | Vajra Cakra | 43. | |
| | , | Sinstika | 44. | |
| | • | Vajrasvastika | 45. | |
| | | Citra | 72. | 133474 |
| | 411 | Citta | | |
| | | | MĀNASĀR | Λ |
| Sin | igle ste | oreyed buildings. | | |
| | Ē. | Vaijayantika | 5. | Śrikara |
| | | Bhoga | 6. | Hastipṛṣṭha |
| | | Srivišāla | 7. | Skandatāra |
| | 4. | Svastibandha | 8. | Kesara |
| Tu | o stor | cyed buildings | | |
| | 9. | Śrikara | 13. | Antika |
| | 10. | Vijaya | 14. | Adbhuta |
| | 11. | Siddha | 15. | Svastika |
| | 12. | Pārsnika or Paustika | 16. | Puşkafa |
| Th | ree ste | preyed buildings | | |
| | 17. | Šrīkānta | 21. | • |
| | 18. | Āsana | 22. | |
| | 19. | Sukhālaya | | Merukānta |
| | 20 | Кезага | 24 | Karlāša |
| Fo | | reyed buildings. | | |
| | 25 | Visnukānta | 29. | |
| | 26 | Caturmukha | 30. | Mancakānia |
| | 27 | Sadāšīva | 31. | Vedikānta |
| | 28. | Rudrakānta | 32. | Indrakānta |
| Fi | ive sto | reyed buildings | | |
| | 33 | Airāvata | 37. | Yamakānta |
| | 34 | Bhātakānta | 38. | Grhakanta |
| | 35 | Viśvakānta | 39. | Yajnakānta |
| | 36 | Mūrtikānta | 40 | Brahmakānta |
| S | ix stor | eyed buildings | | |
| | 4ī | Padmakānta | 43 | Jy oti(ș)kānta |
| | 42 | Kāntāra | 44 | Saroruha |
| | | | | |

APPENDIX 241

| 45. | Sundara | 50. | Vipulākţtikā |
|------------|-----------------------------|------------|-------------------|
| 46. | | 51. | Svastikānta |
| 47. | Kamala | 52. | Nadyāvarta |
| 48. | Ratnakānta | 53. | Ikşukānta |
| 49. | Vipulānka | | |
| | reyed buildings. | | |
| 54, | | 58. | Райјата |
| 54. 55. | Punḍarika Śrīkānta | 59. | Aśramāgara |
| 56. | - | 60 | Harmyakānta |
| 50. 57. | 44444 | 61. | Himakānta |
| | | 01. | |
| Eight sto | reyed buildings. | | |
| 62. | Bhu-kānta | 66. | Janakānta |
| 63. | Bhūpakānta | 67. | Tapa(s)kānta |
| 64. | Svargakānta | 68. | Satyakānta |
| 65. | Mahākānta | 69. | Devakānta |
| Nine stor | eyed buildings. | | |
| 70. | Saurakānta | 74. | Supratikānta |
| 71. | | <i>75.</i> | Višvakānta |
| 72, | Candita | 76. | Vivșta |
| 73. | Bhūṣaṇa | | |
| | eyed buildings. | 80. | Antarikşakānta |
| 77. | Bhūkūnta | 81. | Meghakānta |
| 78. | | 82. | Ambujakānta |
| 79. | Bhavanakānta | | • |
| - | toreyed buildings. | | |
| 83. | Śambukānta | 86 | Yamakānta |
| 84. | Bahānta Bakānta | 87. | Vajrakānta |
| 85. | | 88 | Akrakānta |
| - • | storeyed buildings. | | |
| 89. | | 94 | Kerala |
| _ | Drāvida | 95 | |
| | Madhyakānta | 96 | Magadhakanta |
| 92. | | | Janakanta |
| 93. | Varia (2 Virita) | | 20 (tg) taya |
| | GARUDA | PUR | kāņa — |
| I. Vai | Sja — Square — (Caturasrah) | | 83 a 3 |
| 1. | Meru | | Recakt Napiana |
| 131 2. | Mandara | 4, | A Zippoli d |
| , ,; | | | |

| | 5 | Vimîna | 8 | Nandwardhana |
|----|-----|----------------------------|------------------|-----------------------|
| | 6 | Dhadrakaha | 9 | Śrīvatsa |
| | 7 | Sarvatobhadra | | |
| II | Puş | paka — Rectangular — | (Äyātah) | |
| | 10 | Valabhi | 15 | Brahmamandira |
| | 11 | Gįharāja | 16 | Bhavana |
| | 12 | Śālāgīha | 17 | Uttambha |
| | 13 | Mandira | 18 | Śrbikāveśma |
| | 14 | Vimāna | | |
| ш | K | ullsa — Round — (Vft | iah) | |
| | 19 | Valaya | 24 | ប់ទុព្វទ្ |
| | 20 | Dundubhi | 25 | Śankha |
| | 21 | Padma | 26 | Kalasa |
| | 22 | Mahāpadma | 27 | Guvavikşa (Gihavikşa) |
| | 23 | Mukuli | | |
| IV | M | anıka — Mālika — Oval | — (Vpttāy | ataĥ) |
| | 28 | Gaja | 33 | Bhūmukha |
| | 29 | Vṛṣabha | | Bhodhara |
| | 30 | Hamsa | 35 | - - |
| | 31 | Garuda | 36 | Pŗthividhara |
| | 32 | Simha | | |
| V | | vıştapa — Octangular — | | |
| | 37 | Vajra | 42 | Khanga |
| | 38 | Cakra | 43 | Gada |
| | | Muştika | 44 | Śrivykşa |
| | 40 | Vakra | 45 | Vijaya |
| | 41 | Svastika | | |
| | | MATS | YA PURAN | IA—Ad 269 |
| | 1 | Meru | 11 | Gaja |
| | 2 | Mandara | 12 | Kumbha |
| | 3 | Kailasa | 13 | Samudgaka |
| | 4 | Vimanacchhanda | 14 | Padmaka |
| | 5 | Nandivardhana | 15 | Garuda |
| | 6 | Nandana | 16 | Hamsa |
| | 7 | Sarvatobhadra | 17 | Vartula |
| | 8 | Valabhicchhandaka | 18 | Caturasra |
| | 9 | V _{IS} a Simba | 1 <i>9</i> 20 | Aşţāsra Sodoiāsas |
| | 10 | ងពេក្រថ | 20 | Şodasāsra |
| | | | | |

APPENDIX 243

BHAVIŞYA PURĀŅA—Ad 130

| 1. | Meru | 11. | Gṛharāja |
|----|---------------|-----|---------------|
| 2. | Mandara | 12. | Vṛṣa |
| 3. | Kaılāsa | 13. | Hamsa |
| 4. | Vimāna | 14 | Ghaţa |
| 5. | Nandana | 15. | Sarvatobhadra |
| 6. | Samudga | 16. | Sımha |
| 7. | Padma | 17. | Vrtta |
| 8. | Garuda | 18. | Catuskona |
| 9. | Nandivardhana | 19 | Asţāsra |
| 0. | Kuñjara | 20 | Şodasāsra |
| | = | | |

BŖHATSAMHITĀ—Ad 56

| | | 1.1 | Ghata |
|-----|----------------|-----|-----------|
| 1. | Meru | 11. | _ |
| 2. | Mandara | 12. | Samudga |
| 3. | Kaılāsa | 13. | Padma |
| 4. | Vimānacchhanda | 14. | Garuda |
| 5. | Nandiyardhana | 15. | Hamsa |
| 6. | Nandana | 16. | Vŗtta |
| | | 17. | Catuskoņa |
| 7. | Sarvatobhadra | • | · · |
| 8. | Vrşa | 18. | Așțāsra |
| | | 19. | Şodasāsra |
| 9. | Simha | | Grharāja. |
| 10. | Kunjara | 20. | Ofmaraja. |
| | | | |

श्चान्दानुकमणिका (अ. १-१७)

| | अध्या. | श्लोक | | ३ ,च्या. | शेक |
|-------------------------|--------|--------------|----------------------|-----------------|-----------|
| सक्षरवंधा | 98 | ξ | अनुष <u>्</u> डुप् | 3 | . 9 |
| अ प्रि | ٤, | 93 | अनुज्ञा | ¥ | 99 |
| अङ्गान्त | १७ | 94 | अनैकान्त | Ę | ३, १५ |
| अद्गिरस | 6 | 90 | अपदेश | Ę | 5 |
| अर्चा | | ٠ ٤, ٥, ٥ | | 10 | 12 |
| अतिकृति | 9 | د برب | अपश्रष्ट | रेषण | ३२ |
| अतिकारत अतिकारत | 3 | 8 | अपादान | વ | २० |
| अतिदेश | Ę | 99 | अपार्थ | 4 | ۷ |
| | Ę | · Ę | अप्रसिद्ध | 98 | ¥ |
| अति भृति | 3 | | अमिधान | 43 | \$ |
| अतिमुक्तक | ર | 93 | अ म् बुप | c | 98 |
| अतिच्या ख्या न | É | 96 | अलंगर | 98 | ७, १२ |
| शतिशक्षरी | 3 | * | अश्विन | 4 | 90 |
| अतिशयोक्ति | 98 | 90 | अन्तरवैदि | 9 | २, ३ |
| अल्छि | 3 | ३, ५ | आकाश | 4 | ٤ |
| अर्थ | ٩ | 93 | आकृति | 3 | ø |
| अर्थः यामोह | 98 | 6 | आकोश आकोश | * | 10 |
| अर्थान्तर | 38 | v · | आख्यान | ¥ | 11 |
| भर्यान्तरन्यास | 98 | ۷ | आस्मनेपद | 2 | 94 |
| क्षगिपिति | لر, و | २९, ३, १३ | आतग र आतोध | ર | ٧, ٥ |
| धद्भुत | § 94 | 98 59 | आदिख | 6 | 14, 3= |
| अधिक्ररण | } 9 v | ۲, ٤ | आदल | 4 | 14 |
| अनंत | ę c | 2 | आप्तवचन | ų | 17, 14 |
| अनागत | _ | ¥ | आभाम | Ŋ | 12 |
| अनिहद | ٤ | 3 | आरंभ | 4 | فب |
| धरेल | ٥ | 94 | आरंग आर्यग्रह | 90 | ¥Ì |
| धनुदंध | 90 | ર્૧ | - स्तुन - अत्रस | 3 | ¥ |
| अनुपत | Ę | u, | | 5 24 | 3 |
| भेनुमान | 4 | १२, १३, २६ | इतिदास | 9 20 | ७, २१, ३१ |
| धरुषंश | 90 | ¥ | इन्द्र | C | 12 |
| स नुप प्र | 90 | ₹ 1 | द्शान | ~ | 35 |

विष्णुधर्मोत्तर

| | अध्या. | श्लोक | ; | अध्या. | श्लोक |
|------------------------------|-------------|--|-------------------|--------|------------------------|
| इँहामृग | 90 | २५, ६३ | क्लहान्तरिता | | |
| उ रकृति | 3 | , ,, , , , , , , , , , , , , , , , , , | | 90 | ५८ |
| उत्पत्ति | ų | | | 9 ६ | U |
| चत्त्रेशा | 9¥ | १६, १७ | | 90 | ३७ |
| उ स्स् <u>र</u> काङ्क | 90 | v | | د . | 14, 39 |
| उदात्तनायक | 90 | 77 | वाम - | 90 | ६३ |
| उदाहरण | 4 | २८ | कामदेव | C | 3 |
| उपदेश | 3 9 4 | ર | नारम | २ | 95 |
| उपदे शक | | 5 | क[च्य | 9% | ર, રૂ, ૧૫ |
| उपन्या <u>स</u> | 94 | ٩ | साध्यवध 🕈 | 94 | 90 |
| उगम्बात उपपद | 48 | ی ج | काव्यवस्तु | 90 | ३ ९ |
| | ર | १६, १७ | क्रिशर | 6 | २४ |
| उपमा | 98 | ४, १५ | किंपुरुष | | २४ |
| उपमान | 48 | ٤ | दीना श | ۷ | 93 |
| उपमेय | 34 | ¥ | धुरुकम | 93 | 94 |
| चपवर्ग | ٩ | 33 | इमार | Ł | 13 |
| उप्सहार | ч | ¥ | धुमारकः | 30 | ¥K |
| उपोद्धात | 90 | á | क्ट िश | c | 4 |
| उमा | ć | 4 3 9 | कृत क | 4 | २१ |
| उध्यिक् | 3 | 9 | कृति | 3 | Ę |
| ऋग् | ¥ | 9 c | मै यिक | 4. | * ? ? |
| ऋष्यकेतन | ¢ | 3 | कौमोदरी | | • |
| औदार्य | 90 | 494 | नांशिक | L | 12 |
| औपचार | 43 | 96, 23 | क्षमा | 6 | 6 |
| व थावस्तु | 90 | ર | शोणी | ۷ | <i>c</i> |
| क्पोल | 32 | ty (| বর | 73 | 98 |
| क्मल | 4 | v | ल ङ्गयुद्ध | 6 | ,• ₹ |
| कम ङ्क | do | 90 | ર્લ | ٤ | 4 |
| करण | ą | ₹\$ | संड | _ \ | 98 |
| कर्ण | } 94 90 | 18 | रा डिता | 9 v | 46 |
| व रीपिणी | 6 | 69 | गगन | 93 | - Je |
| वर्मणि | २ | | गणपति | 6 | 12 |
| क्रप | 90 | | गदा | د | ξ |
| वरुपना | ∫ ၅६ | | गद्य | ₹ | 9°, 9₹ |
| | 190 | 9 [| गहड | ć | • • • • |

| | अध्या. | <i>श</i> ोक | | अध्या. | <i>ग्</i> होक |
|-----------------|---------|---------------|--------------------------|------------|---------------|
| TT-7 | | a | तालघाज | C | \$ |
| गहडवाहन | ۵ | | तिङ | ર | <i>م</i> ر |
| र्फ | 90 | ५३ | तुल्यशब्द | 98 | ۷ |
| गायत | 3 | 9 | 80441-4 | () | 92 |
| गडिव | ۷ | ٧ | तन | ₹ ६ | 1 |
| गीत | २ | ८, ९, १०, ११ | | (90 | 9.9 |
| गीतलक्षण | 90 | فع | त्रिदशा | 90 | v |
| गीर्वाण | ۷ | 9 | त्रिष्टुप् | 3 | ર્ |
| I £ | 6 | २ १ | च्यम्ब क | C | ٩ |
| गुरुस्न | 4, | 9 | द्यात | 4, | ¥ |
| गूड | 9 € | \$ | दानव | ¥ | v |
| गुडाक्षर | ¥ | 6 | दिड् | ą | 3 o |
| गधवै | ۷ | २,२ | दिघ्यनायक | 90 | २ २ |
| गध्वैनगर् | 9 | 94 | देवार्चा | 9 | 19 |
| गघवैनायक | 90 | २५ | दुर्गा | 6 | 93 |
| चक | ٠. | Y | . इत्याक्य इत्याक्य | 94 | 92 |
| चकी | 6 | 2 | देवतागृह | 9 | u, |
| चतुरद्वा | 90 | २० | देवतार्चा | 3 | v |
| चित्रमा | • | 3 | देवना | ¥ | ξ |
| चरित | ვა | U | देवी | c | Y |
| चाप | ۵ | Y | दैवतिक | 90 | 30 |
| चित्र | 3 | ષ | देश्य | 90 | 10 |
| | 53 | v | धनाप्यक्ष | ć | 15 |
| चित्रसूत्र | } | ٦, ٦, ٧ | धनुष | \$ | • |
| चोदना | ે પ | Ę | परा | c | • |
| চে ং | { > | 12 | पर्म - प र्म | 30 | £\$ |
| | ₹ ₹ | 1, 5, 12, 10 | धर्म वज्यी | 14 | • |
| त्रगती | રૂ | ર | । भूनरा द्रा | v | 74 |
| अ तबद | 4 | 11 | भृति | 1 | 4 |
| र्ग म्य | \$ | 15 | न्ध्र | ć | 15 |
| र्यम | 4 | २1 | गगर | 11 | 3+ |
| उद्ग्यम्। | 5 3 | ર ર | । ृह्यभान | 30 | ¥4, |
| श्च | 9 23 | 24 | म म | 4 | < |
| दिस | 4 10 | 20, 42 | गर्भ दा | \$ | 17 |
| 374 | 10 | \$ | ⁱ महाश्रा | 16 | 73 |

| | अध्या | a 7 | ोन | Shire | |
|------------------|----------------------|----------------|----------------|--------------------------------|-----------------|
| नाग | Y | | | अध्या | श्चे क |
| नागान्तक | 6 | | | , | २० |
| नाटक | 90 | | ५ नगम | { x { v _q | 3 |
| नाम्यस्थण | 90 | | निमित्तिम | ٠ (ع | २३ |
| नाटशख्यानः | | | भे नेहन | 4 | 96, 9 5 |
| नादिमा | 90 | | पक्ति | 3 | 9 & |
| नाट्य | | 91 | ९ यताका | 93 | ર |
| | 9 to 1 | Ę: | रे । पद | • • •• | 93 |
| न⊦यक | { १५ } १७ | ¥, €, =, 9. | • | | ¥ |
| | | c, 30, 84, 6. | ५ पदार्थ | { \(\psi \) | 8, 99 |
| नायमप्रतिनार | यक र १५ १७ | ₹, ₹ | पद्य | , , | 9, 43 99, 93 |
| | _ | 4 | परस्मेपद | 3 | 14 |
| नायिकः | ∮90 | ۹۷, ३٩ | परिजन | 90 | ٧. |
| | } 90 | इक्ष, कर्ड, पद | परिमाण | 4 | 90 |
| नारायण | 6 | * | परिहार | c _q | Ę |
| नारी ००० | 94 | ч, | परिहासिका | 15 | 4 |
| निर्ऋति | ۷ | 9¥ | पर्वतना | 2 | 99 |
| निदर्शन | 38 | 94 | पवन | c | 9 tu |
| निन्दा | ¥ | 90 | पशुपति | 6 | |
| निन्दाम्तुति | ງ ሄ | 93, 98 | पाठ | <u> </u> | 9 € |
| निवद्ध | 989 | Ę | पार्वेतीपात | è | 99 |
| नियन्यना | 98 | २, ८ ९ | पाद्यजन्य | ٤ | 90 |
| निमृता | 9 6 | د | पितागह | 4 | • |
| नियोग | Ę | प, ५० | पिना क | ۲ | 9 a . |
| निर्णय | Ę | ą | पुनहत्त | 4 | ų, |
| निदर्शन | 38 | 98 | पुरन्दर | ٠ | £ |
| निदक्त | { ¥ { 4 | 3 | पुरहून | 4 | 93 |
| | | 11, 9६ | पुराण | 30 | 93 |
| निर्देषन | • | ₹• | पुस्तक | 13 | २, ३, ४, ७ |
| निर्वहण | 90 | 49 | पूर्वेपश | Ğ | 98 3. ala |
| नियुत्त | 90 | ₹ 9 | पृथ्वी | G | 1, 94 |
| निष्क्रम | 90 | 19 | प्रकरणी | 90 | 4 |
| मीच | 70 | ३२ 🗍 | प्रकिया | | ₹+ |
| मृ त्त | 10 | فع | | 10 | 2 |
| चृत्तरा स | 3 | Y, 4, 4 | দ্রহারি | { ? | ₹ ₹ |

| | अध्या. | श्लोक । | | अच्या. | ম্পৌ ক |
|-------------------------|----------|------------|------------------|-------------|---------------|
| प्रस्थातनायक | 90 | 90 | बोध | ¥ | C |
| प्रतिनायक | 94 | 3 | बृहस्प ति | د | 29 |
| प्रनिमालक्षण | , , S | 3 | बृह ती | ₹ | २ |
| प्रति <u>म</u> ुख | 90 | 48 | , ब्रह्मा | ۷ | 90 |
| प्राने स र्ग | 90 | * | । ब्राह्मण | ঀ৽ | 9 |
| प्रतिज्ञा | 4 | 8 | भगण | C | 3 % |
| प्रत्युदाह र ण | ٠ در | 3 | भचक | ۵ | 3 4 |
| प्रदेश | , Ę | • | भर्तृदार | 90 | 84 |
| प्रगुम्न | Č | ३ | | § १५ | 96 |
| प्रमदा | 4 | 99 | भयानक | र् १७ | ٤٩ |
| प्रमाण | ч | १२ | भाण | 93 | २२ |
| प्रवासगतका न् ता | 90 | ध्रु | भाण∓ | 90 | 4,8 |
| प्रदेशक | 90 | 93, 98 | भाक्त | ц | ₹.0 |
| प्रज | 3 | 99 | भारती | 3 • | 39 |
| प्रसमा | ¥ | 90 | भास्कर | C | २० |
| प्रमुग | Ę | 74 | भूमि | C | 4 |
| प्रम्तृत | 98 | હ | भृमिपाल | 9 € | 18 |
| प्रहमन | 90 | 48 | भेभ | ۷ | २9 |
| प्रहेरिका | ५६ | 9 | मक्षिम | 11 | 14 |
| Dt | (0 | 9,99 | मति | 3 | 1 |
| भारत | 190 | ₹ | मन्त्र | 90 | 1 |
| मितिपदिस | • | १८, २२ | मंदिर | 1. | 13 |
| मसाद | ٩ | 99 | मन्यन्तर | 1 0 | ¥ |
| देतनायक | c | 93 | मरण | 94 { 90 | د عء |
| देप | ¥ | 90 | महत | } | 14, 15 |
| नेपितमतृं हा | 90 | 4 | महाक स्य | ` 94 | ٧, ٩ |
| ভাগ | ₹ | 99 3 | महादेर | ć | 7• |
| RR POTA | 4 | 1,1 | मही | 4 | ε |
| 1687 108-0 | 9 | 15 | मात्र | ŧ | 3* |
| सुदेगितः सन | 10 | 1 3 | माद्देश्वर | 4 | 4 |
| राज राज | 90 | 11 | ₽ 3 | ¥ | 4 |
| राज रीमाम | 4 | 16,81 | र मंगर | ٧, | ** |
| 14 4 14 | 94 6 | 33 | arı | 15 | ?? |

| | अध्या. | श्लोक | | अध्या. | श्लोक |
|----------------------|------------------|-------|--------------|--------------|----------------------|
| वेश्या | 90 | 26 | सती | ۷ | 99 |
| वैडविड - | ٤ | 9 € | समनन्तर | 9 05 | २ १ |
| वैश्वानर | 6 | 93 | समवकार | 90 | ५३ |
| वैध्णव | 6 | 8 | समानरूप | 9 Ę | ч |
| व्यमिचारिणी | 9 \$ | 99" | समानशब्द | ९ ६ | 6 |
| व्यवहित | 9 ६ | 8 | समास | ų | G |
| न्याख्या व्याख्या | 1 4 24 | Ę | समीर | ۷ | 94 |
| ब्यामू ढ | 96 | \$ | समुचय | Ę | ६, २३ |
| रूउ व्याहत | 4 4 | ۷ | सर्ग | 90 | 8 |
| शकरी | 3 | 3 | _ | \$ \$ | २३ |
| शक | 4 | 93 | सरस्वती | 199 | 3 |
| হাত্ত্ব | 90 | ३२ | सविता | 4 | २० |
| शब्द | 9 | 9 | संस्कृति | 3 | ٤ |
| शमी | 99 | 98 | संप्रदान | ર | २० |
| হাৰ্ৰ | c | 96 | संबंध | 4 | ५, २२ |
| शर्वरी | 3 | २ | संयोग | 4 | 96 |
| शंकर | | 9 & | संवत्सर | 9 | . 9 |
| | | 90 | संवाद | 4 | २० |
| र्शख | ब १२ ८ | v | संशय | Ę | 8, 96 |
| शंभु | 4 | 90 | संस्कृत ' | 90 | १० |
| गढ़ शक | ٤ | 4 | संहार | 90 | 3 |
| राई | 6 | ٧, | संज्ञा | 98 | • |
| | (94 | 98 | साध्य | ч | 2,5 |
| शान्त | { 30 | ६९ | साम | ¥ | 90 |
| যান্ত্ৰ | . ૧૫ | 9 | सिद्ध | ٧ | 9 € |
| शिखर | 93 | 99 | सिद्धि | 4 | 95 |
| शिव | 6 | 9 ६ | सुदर्शन | C | * |
| | (94 | 98 | मुनंद | 6 | ٤ |
| श्ंगार | 190 | १९,६१ | सुपर्णा | ٥ | 3 |
| रोप | ۷ | ٦, \$ | मुप्तिङ् | ٦ | 9 <i>4</i> २७ |
| शीर्य | 90 | ५५ | सुरनायक | 9 v 9 | 11, 12 |
| श्चेप | 98 | Ę | मुरार्चा | ٦ ع | 17,15 |
| ฆ์เ | 6 | Υ - | मुश्त | ٠ ب | ۱۲ ۹, २, ५, ६, ۹۹ |
| श्रीभिय | 30 | ₹• | स्त्र | • | , , , , , , |

सङ्गीतपारिभाषिकशब्दानुक्रमः (अ. १८-१९)

| | अध्या. | श्लोक | | अध्या. | श्रोक |
|-----------------------|----------|--------------|----------------------|----------|-------|
| अप्रिष्टामिकः | 90 | ४३ | आहिप्त | ą | ४६ |
| अजकान्त | १३ | ४३ | आश्वमेधिक | 99 | ¥₹ |
| भ ार त | 3 | ४६ | उ जीविक | 48 | ¥₹ |
| भरयमिष्टोमिक | , 90 | Αź | उत्तरमन्द्रा | Ę | ¥₹ |
| | ٧, ६ | ¥¥ | उत्तरा | • | ¥ŧ |
| अद्भुत | 90,8 | 86 | उत्तरायता | v | ¥₹ |
| अधेपाणि | २० | ४५ | उद्गता | ٧, ٩ | *\$ |
| | 9 | 86 | उर्ध्व | 98 | ૪ૡ |
| अर्थसावित्रः | 9 6 | 83 | चपन्यास | શ્રું. ૧ | YY |
| अर्थोर्घपाणि | 30 | ४५ | उड़ोप्य | श्री. ४ | XX |
| | a | 86 | अएभ | * | ¥¥. |
| शनुवादि | ર | XX | ऋगगथा | श्ली, ५ | ¥¥ |
| अ पकाःत | 93 | ¥₹ | एकपाणि | २० | ¥ų |
| अपरा न्तम | श्लो, ४ | ¥¥ | ओडव | भ्हों. १ | ¥¥ |
| अभिराम | 44 | ٧ŧ | करण | ¥ | ¥¥ |
| धयुक् | \$ | 84 | क् रता | 4 | 84 |
| भरवय | 98 | | कलोपनता | 4 | ٧₹ |
| सलहार | श्री. १ | YY | कन्याणकर | ₹• | ¥Ĵ |
| अरु≠युमप्रिय | 36 | ٧ ٤ أ | रि न्न रप्रिय | 2.0 | ٧Ą |
| अन्यत्वम् | ≱ল. ૧ | AA | युसक | 11 | 84 |
| क्षेत्रधान | ર | YY | पुन्तिमा | ۷ | ХÌ |
| अगनदम् | ٩, २ | ** 1 | गतना | શ્લો, સ | 46 |
| भाषा | · · | *'4 | गायक | श्ली, व | 46 |
| भारोह | ¥ | | गीतक. • • | મી. ૪ | YY |
| ^अ थकान्ताः | v | Y1 | | ₩. ર્ | 46 |
| भग | श्री, १ | NY | गोदानिक | 13 | ΥŽ |
| भानोच | 1 | | गोमुत्ती -२० | 4 | ΥÇ |
| क्सपेद | * | | गेमिविक | 32 | ¥₹ |
| भारतपा | C | • | गान्धसांतुमना | 90 | 41 |
| भारिक्ष | 34 | A.d. | गान्धार् | 3 | ** |
| ર | | | | | |

| | अध्या. | <i>श</i> ोक |] | अध्या. | श ्चेक |
|-----------------------------|----------|--------------------|-------------------------|---------------------|---------------|
| घह | શ્ચે. ૧ | ¥¥ | प् द ुतान्त• | • | ४६ |
| प्राम्। | ₹ | 8.5 | प्रकरण | 96, 0 | ¥¥ |
| घन | ٦, | 84 | | 7. | 86 |
| चमरपुरक | 3 | ४५ | प्रकरि | ओ. १८, ४ |)A |
| चित्रा (यृति) | 4 | *4 | प्रचलन | 36 | ¥£ |
| चोक्षाप्रयोग | u | YY | प्रवेश | ۵ | 86 |
| चोक्षमज्ञक | શ્હો. ધ્ | YY | प्रसंजान्त | ঞ্চী, ই | AA |
| ऐ चक | 99 | ૪૫ | प्रसन्त।दि | श्री. ३ | YY |
| সারি | শৌ. ২ | YY | प्रसत्तमध्य | श्लो. ३ | አ ደ |
| च्ये ष्ट | 90 | ૪ફ | त्रस्वापनम् | 14 | 45 |
| <u> </u> | 95 | 83 | प्राजापत्य | 92 | ¥₹ |
| - जीवन | 94 | ¥₹ | वहुत्वम् | भी, १ | YY |
| नत | ₹ | ٧4. | बहुसुवर्णिक | 94 | ¥₹ |
| तार | શ્લો, ૧ | YY | यी भत्स | ¥ | ¥(|
| साल | 1- | ٧٩. | बद्धगीति चा | મહો. પ | YY |
| तुम्बुरिप्रम | 90 | ¥₹ | झझतान | 13 | ¥₹ |
| दर्दर | ٧, | *4 | भयानक | 14, 5 | YY |
| दसविहिता | મકો. પ | ** | | ¥ | 45 |
| दक्षिणमुख | ٩¥ | 494 | भवन | 42 ³ . 9 | ¥Ş |
| दक्षिणा (प्रति) | • | 44 | भागैवदिय | 15 | ¥Ž |
| <u> इ</u> त | 70 | X ^t 4 | भीमसेनद्रि <i>य</i> | 15 | *3 |
| द्वार | শ্ৰী. গ | *4 | महाल्ह्मण | 10 | ¥₹ |
| द्भिहरतप्रदशिनी | Ą | *6 | गहामतिक | 12 | Υ₹ |
| धै वत | ર | ¥₹ | मत्तकोहिल | 34 | AŚ |
| ㅋੜ | 3.4 | A.d. | मःसरीकृता | U | Aź |
| मागाश्रय | 33 | 8.5 | मध | २ | * £ |
| नारद्रिय | 74 | YÌ | मध्यम | • | Yf |
| निप तप्रदेशिनी | 15 | *4 | सन्द | ₹. | * \$ |
| निपाताद <u>र्</u> गुलि | 96 | 3) ⁽⁴) | मार्गी | • | Υį |
| नियेशनम् | ন্টা । | ** *£ | मान्द्र सार्वनिशा | 35 | ΑŚ |
| नियाद | Y | ¥% | भागागर। सुरका | ऋते ¶ | ¥ (|
| निकाम ने क्क | শ্ৰী 1 | *5 | 7 / 201 | ج التخ | A.É |
| नेप ध्य - प्राप्त | * . 1 | 77 | म्बर्धन। | *ग. १ ∵ | × (|
| <i>इ</i> या म | 114 1 | | ▼ - | ¥ | Υţ |

| | अध्या. | श्लोक | [| अप्या. | श्लेक |
|---------------|----------|--------------|---------------------|-----------------|------------|
| स्दङ्ग | ч | ४६ | शारदः | 90 | કર્ |
| यज्ञाभ्रय | 93 | ४३ | शारिराः | ₹ | ४५ |
| योग: | 90 | ४६ | गुद्धमध्यमा - | ц | ४३ |
| रजनी | v | ४३ | । शुद्धा | 4 | 83 |
| रसाः | 3 | 88 | ्र ग्रुद्धपड्जा | v | 43 |
| राजम्यिक | • • • | ४३ | शृहार | Ę | ** |
| रोविन्द | શ્લો. ¥ | 88 | | ર | 85 |
| रोद | 96, Ę | ጻጸ | इयामता ल | ۷ | 84 |
| | ₹ | 84 | पड्ज | ર્ | ४३ |
| स्पृक् | v | 88 | पर्यिता | \$ | 84 |
| ल्य | 4 | ¥¥ | पाडव | <i>स्</i> हो. ९ | 38 |
| | 90 | ४५ | दोडशाक्षराणि | 93 | 84 |
| वाजवेयिक | 99 | ४३ | , समपाणि | ٩ | ≥ € |
| वादि | 3 | ** | समहस्त | 15 | ४५ |
| विजय | 9 9 | *3 | सन्निपात | ۷ | *4 |
| वितस्त | * | ४६ | सावित्र | 94 | ¥₹ |
| विनत | 98 | ४३ | मुराराधन | श्ली. ६ | 88 |
| विलम्बित | Ę | ¥¥ | सुवर्णः | 95 | 83 |
| | 90 | 84 | मुपि रम् | 9 | *4 |
| विक्षेप | v | ¥4 | सौवीरी | ч | ΥĘ |
| विप्णु | 9 € | *\$ | संवादि | २ | XX |
| विष्णुकान्त | 94 | ४३ | संश्राव्य | 35 | ן |
| विष्णुनर | 35 | ४३ | स ज्ञा | २ | X. |
| षीणादि | २ | ** | स्वर | ٦ | 18 |
| वीर | ¥ | 88 | स्वराः | 1 | *1 |
| | 3 | *\$ | | 1 | ¥ų |
| दे णक | श्री. ४ | YY. | सर्वेतोमद | 15 | ¥Į |
| वैणयाः | 3 | *4 | ह्यकान्त | 13 | *1 |
| शीप | • | *4 | द्वारिणाश्वा | 4 | *1 |
| वंसादि | 2 | ** | द्दांस्य | 1 | A.A. |
| वंशवादक | श्लो. १ | A.C. | سيأل | 1 | 46 |
| पान्त | 4 | λλ | हुम्पहा | 34 | * \ |
| | Y | A () | र्दनः . | ,- | 25 |

रुत्तपारिभाषिकशब्दानुक्रमः (अ. २०-३४)

| | अघ्या, | श्लोक | 1 | अध्या_ | <i>শ</i> ীক |
|----------------------|---------------------------|------------------|------------------------|----------------------|----------------|
| कर्द | રૂ ર | હ વં. | अलपह्रव | 7.5 | 92, 65 |
| अ र्गेलम् | 5.0 | 46 | अलात | ₹• | ** |
| अघोर | 33 | 48 | । अस्रातक | 70 | 3,8 |
| अज्ञुत | २० | 49 | अवकान्त | 2 6 | ¥ \$ |
| अ तिकान्त | २० | 28, 85 | अवलेकित | ३ ५ | ¥८, ५9 |
| अर्धचन्द्र | २६ | 9, 22 | अवदित्य | ₹ ₹ | 96, 23 |
| | ३२ | 9 o q. | | | , ६७, ७६ |
| अर्धमत्ति | २ ० | ** | | ٠, ١, | ξ.v. |
| अर्धरेचिम | 20 | ¥1 | | ₹ 9 | ३४, ४ ५ |
| | ₹ ६ | 9, 46 | असम्मोह | 39 | ** |
| अर्धस्वस् तिक | ₹ 6 | ¥₹ | क्स्स्य | | الم الم |
| अर्धम् चि | ₹0 | ४२ | अगिन | 4 4 | € d , |
| चन <i>न</i> त | 33 | \$ | अवहार | ₹ ० ₹ ¥, | • |
| अनि हद | 33 | 4 4 | | , | 39 |
| | 3 \$ | 993 | अधित | ځ لا د, | 9×, 94, |
| अ नुकृति | ₹ • | 9, 90 | | 90, | 44, 49 |
| | २७ | * | _ | ₹ € | 4, 4¥ |
| अनुकृत | 24 | 86,40 | ভা র কি | 25 | 4, 48 |
| भपराजित | २० | २९ | अद्वित | २० | २७ |
| अपराध | ₹ १ | ي ت | अस्त | 34 | 4 |
| अ गवारितक | | , ५९, ६० | | ₹o 9, 3 | وي ريا و |
| अपविद्य | ₹• | ₹¥, ¥0 | | | -0, २८ |
| क्षपस्त | ₹● | ₹* | अद्भुता | ર્ ૧ ૨૫ ૧, | 40 |
| | | , १४, १ ५ | अन्तरिक्ष | | . ∠, ?¥ |
| क्षासम् | R1 | 19, 86 | भभ्यस्या | | , 99 th. |
| अभितशः | २८ ३ | | भन्न (स्त्रा) | 11 | AA. |
| अमर्प | 41 | ३३, ५१ | अध | | 44, e4 |
| समृत् | ₹ ₹ | 48 | अश्वतिरसः अश्वतिरसः | 39 | 45 |
| भराव | | 1, 6, 3Y, [| आदम्पत | ₹ ₹ | 110 |
| | રહ્ ₁ ક∉ કર | 16, UY, | | 9 4 | * |
| | 34 33 | . 24 to 24 . | -0.244.144 | ₹. | 44 |

| | अध्या. | श्रेक | 1 | अध्या. | श्लोक |
|---------------------------------|-------------------|------------------|-------------------------|------------|--------------------|
| आ कारावच | 36 | ين برن | उदाता | २ o | १३ |
| आ ङ्गित | २५ ३: | ३, ३५, ३८ | उद्धत । | २ ० | १२, १६, १७ |
| आकुधित क | २ 9 | ٩, ३ | उद्घाटित | २० | र९ |
| आकेकरा | | ३, १५, २८ | | २४ | ५६, ५७ |
| आकारत | 30 | 49 | रदर्त | २५ | 83, 86, 80 |
| সারি ক | 30 | 8, 20 | उद्ध नेक | २० | ३२ |
| | 30 | ۹, ४ | उद र्ते | २ ६ | ८, ७२ |
| आभ्यन्तर् | , २० | , 3 | उदर्त न | 28 | ¥₹, ¥ ६, ¥९ |
| भायत | २ ३ | 96, 30 | रदा हित | 3 9 | 9, 6 |
| | . ` २ ८ | ३७ | - | ₹ ४ | ६, २९, ५०, |
| अलस्य | 3 9 | 90,84 | | | ५२, ५५ |
| শানি ত্র | _ | 9, 98, 90 | उट्टाहिता | ₹ ¥ | ३८, ४१ |
| आलोकित | ર પ્ | 86, 40 | ्य उर्ध्वमण्डल | २६ | 93, 64 |
| आवर् न ित | 28 4 | ०, ५३, ५३ | उन्माद | 39 | ₹°, ¥¥, ¥८ |
| आवाहिःया | 33 | υĘ | उन्मेप | | १२, ३४, ४० |
| আবিদ্ৰ | २८ | 48 | उपवेशन | ३ २ | ٦, ٩٩ |
| थाविद्वयक्त | २६ | 5, 44 | उरगशीर्ष | २६ | २, ३५, ६६ |
| आवेग | • | ه, لاق, لاه | उहरूत | 20 | ¥9 |
| आस्कन्दित क्षानकर्म | २० | २६ | उरोमण्ड ल | २० | ¥¢ |
| आहार्य | २० | 98, 94 | | २६ | 99, 60 |
| 3776 | २७ | 9, 7, 40 | उ ह्वण | 3 4 | 92, 50 |
| आक्षिप्त आक्रि | २० | ३३, ४८ | उ ह्रोक्टित | २५ | 14, 49 |
| आक्षिप्तक आक्षिप्तक | २० | २८ | एकांकिडित | २० | २६ |
| आक्षिप्त रे चित इशामी | २० | ¥₹ | ऐश्वये | 3.3 | 17, 46 |
| - इसान - इसान | 33 | २८ ६ २ | ओंकार | ३२ | 9 ч. |
| वधान वद्रता | ३३ | ¥4 | औरमुक्य | ₹ 9 | 35 |
| रमता रमत | 3.3 | 42 | औप | 11 | >4 |
| रनः द दरक्दुक | 39 | 9, 92 | कर्त्रड | २६ | 4,44 |
| उत्पन्धक उत्पन्नति | २२ | 3, 45 | कर्त रि मुस | 3.5 | 1, 31 |
| र नगता देस न्न | 35 | | च .पिर् य | 24 | ۶, ३۰, ६٩ |
| दम्मा ह | 36 | بر وه ميدوو | क्षिल | 13 | 33 |
| 416 | २५ | 20, 59 | क पोर्च | ** | المراجعة المادية |
| 377m | ₹ 1 | 4, 40 | 6-11 T | 24 | *5 |
| राष्ट्र | *4 | ५१, ५४ | | | |

| | अष्या | . ধৌক | | अ ध्य | श्डो∓ |
|--------------------|------------|----------------|---------------------|--------------|------------|
| हम्प | २५ | ६९, ७१, ७३ | विरिणी | ₹ ₹ | - } |
| बम्पन | २४ | ¥₹, ¥4, ¥0 | बेलप्रम | 45 | ₹, ३९ |
| वस्पित | 74 | 45, 69 | को श | વધ | ₹, 98, ₹० |
| क र्ण | २० | ३५, ३६, ३७ | | રૂપ્ | 80, 40, 89 |
| | 38 | Ę¥ | | ₹6 | ₹९ |
| वरिद्धिन | २० | ٧٩ | | 3 • | 28 |
| करित | २० | ફે ફ | | 39 | 4, 80, 89, |
| य रिह्म्त | २० | ų ર | | | ¥6, 49 |
| | २६ | 90, 23 | | ₹ ₹ | 5.6 |
| करण | ३५ | 86 | कौंबेरी | 3 3 | 30 |
| | 25 | 15 | र्वोस्तुभ | ३२ | 95 4. |
| | ३० | 9, 9, 8, 92 | | ₹ ₹ | 9 - 5 |
| | 39 | 80, 44 | क्षाम | 28 | ३६ |
| क रुणा | २५ | 9, 0, 28 | | ₹ ¼ | 46 |
| वल्प | ३२ | १६ प | क्षिप्त | 3 ¥ | ५०, ५२, ५४ |
| कलापक | ₹ • | 3 6 | खटकामुख | ₹ | 3,6 |
| वारण्य | २५ | 40 | | 3 \$ | ₹ 9, ux |
| या हुल | २६ | ₹, ३८ | खटकावधमान | 34 | فرع فرق |
| वान्त । | <i>5</i> £ | 9, 4, 23 | खण्ड | 3.6 | ٩٧ |
| ऋान्त | २० | १ ५ | खण्डक | २० | 34 |
| ्रा [‡] त | २२ | ٦, ٩ | खण्डन | २५ | ६६, ६७, ६८ |
| मोड | २० | ३२ | खड्ग | ३ ३ | 96 9. |
| पु स्थित | २० | ** | | 44 | ३२ |
| | २४ | ५६, ६२ | म प्र ावसर्ग | २० | ५३ |
| | १५ | ५९, ६१ | गजदन्त | 34 | ٤, ६६ |
| कुविता' | >ર્ય | 8, 20, 20 | | ₹ο | 90 |
| कुट्टन | २ ५ | 41, 40, 42 | गतिमण्डल | २० | રે૧ |
| पु द्रा | 44 | २, १२, २६ | गया | १२ | १६ वे. |
| कृष्यः; | १२ | ¥ | | ‡ ‡ | qu, 90c, |
| कृदा | * 44 | 42 | | | 114 |
| कृणिसा | *4 | 65' 68' 66 | गान | ₹ ₹ | ٧₹ |
| धूर्म | 11 | <u>१</u> पॅ. ् | गर्ड | १२ | १४ पे. |
| भेष्ठ ै | 11 | 9 4 | महेडयेथ | 44 | 30 64 |
| धेशवर्धन | , 16 | 5, <9 [| गरहण्डत | 40 | -44.30 |

शब्दानुक्रमणिका

| | अध्या. | श्होक | | अध्या. | श्लोक |
|--------------------|----------------|-------------------|-------------------|-------------|--------------|
| गर्डवाहन | | | जनान्तिक | 26 46 | , ५, ६० |
| गर्व | | પર | जवनिका | 2 . | ٠, |
| गृहपलीनक | ٠ ، ٦ ه | 49 | जानुगन | ર્ ર | २, १५ |
| ग्रयत्री | | • | जिह्मा | ૦૫ : | २, ११, २६ |
| તાકના | 3 9 | ৬ ৭ | जिर्ण मुदा | 33 | 60 |
| ग्लाना | ३३ | ४, २३ , ३२ | जीव | ₹ ₹ | *,3 |
| ग्टानि | | | जुगुप्स | ३० | २६ |
| | | ६, ४४, ४६ ५ | जुगुप्सा - | ३ ५ | ६६ |
| गोरृषम् | ३३ - | 84 | 33 | ३१ | 90, 84 |
| चतुर | २० ′ | | जुगुप्सिना | રુષ | م، عرب |
| | | ४, १६, १८ | ज्योति प | ३२ | ૧૭ વં. |
| | | ३, ५५, ५८ | ज्ञान | 33 | 90 |
| **** | २६ | 3, 89 | तडिद्भ्रान्त | २ ० | YY |
| चतुरस | २६ | 6, 69, 64 | तलमन्दा | | ₹ ० |
| चपलता | | 4, 88, 86 | ताडित | ३५ ३ | ३, ३७, ३९ |
| चलन | | १, ४३, ४६, | ताल | ३२ | 90 Ÿ. |
| | | . 3 | तालुष | ₹• | Yo |
| चारी | 28 2 | (२, २३, ६३ | ताण्ड्य | २० | ર |
| चापगत | २० | २७ | तास्यम् | 32 | ९ पं. |
| चिन्ता | ३५ | 39 | तारभाउरग | 3 2 | ٧, q. |
| | ३९ | 44 | | 33 | ३८ |
| चित्रत | २५ | ६६, ६८ | त्रास त्रिपताक | ₹६ | 9, 90, 29 |
| चक | ३२ | वृष् पै. | , 1840ta | | 45, 68 |
| | 3 3 | 900 | ; | 36 | २३, ४४ |
| चक्रमण्डल | २० | ¥0 | विविक्रम | ३२ | ٩ ٩. |
| चिग्डिश | ३ ३ | 4.4 99 4. | • | 33 | 37 |
| चन्द्र * | ३२ | ૧૧ પ. ૧૭ પં. | • | ३० | *4 |
| चर्मन् | 32 | 90 4. 90 | 1 | २६ | 10, 4 |
| धन्दोविचिति = - | ३२ | 11 | दण्डपाद | २∙ | 74 |
| द्व <u>नि</u> | २७ | * * | 1 .> | ३ २ | ર વં. |
| धिन | ર્• | <<, <<, << | | 11 | 43 |
| बक्र | 74 | د, ۱۰, ۱۰ | दाराग्यी | 13 | ¥ 9. |
| | ર• | 3 | C Cower | 3. | 2.5 |
| जटामुदा जदमा | 12 | yu, 40 | l a | 11 | ¥4 |
| ad 6 1.5 1 | 33 | • • | • | | |

विष्णुभगीयर

| • • | भाषा. | A. | रेव | क्ष्या | - শীহ |
|---------------------|---------------------------|---------------|---------------------------|-----------------|-----------------------|
| देशीः | 11 | • | % निद्या | | |
| ै देखिका व | ₹• | | १ निर्धालिया | 11 | j., aa |
| दन्य | 37 | 11, Y | 1 | ₹ 4, | ₹, 75, ₹ • |
| दी ४ | 46 | 4, | | ₹४ । | 15, 33, 33, |
| धोलपाद | 3.6 | | | | ₹ \(\sigma \) |
| दौरापाद | | | ร ¹ โคลิๆ • | ક્ષ્યું : | ls, iv, v+ |
| T RI | | Y' | - 1 | 3.8 | 34, 20 |
| धनुः | • | 12, 21 | 7 | १२ | १७ वे. |
| ห ล | 12 | 10 9 | 1 | 34 | २८ |
| นกโ | 11 | 30 | • | ₹• | 15 |
| पर्धि | ₹• | ٢. | • | रे१ | 11, ¥4 |
| | ₹• | ξ • | निर्म | ₹. | ¥\$ |
| पी(सिटिन्। -केटे | ₹• | 33 | - निर्मा | २४ | ₹6, ¥• |
| पीरोदमा | | 13, 15 | नियभ | 3.5 | 4, 53 |
| <u>ধুব</u> | કંસ | 1 | निप् करम्पि णी | 11 | 3u |
| ঘূৰ্ঘিন | ₹• | XX | निष्यम | | , xx, xa ,0 |
| पृष | 44 | 44 | नुत्रर | ₹• | |
| <u> धनसुदा</u> | 11 | ¥• | युग | 34 | 8 4 |
| भृति | ३ १ २ | २, ५ १ | वृत्तमातृका | 4.6 | νţ |
| ध्यम | 11 | ึงไ | मृ त | | 10 |
| मन | 39 | 1, v | चुिंह | | , ga, uy |
| | ₹Y ₹1, ₹₹ | • | | \$8 | २ • पं. |
| | فرس فره | | नैवेच | 11 | ₹, 515 |
| नमः | 45 (9, 6) | | पद्वज | 4.4 | ¥2 |
| नमस्नार | 44 | | प्र क िपत | 11 | তদু |
| नरनारायण | ₹ ₹ | s 4. { | 411-11 | १४ २८, १ | |
| नम | ś. | २५ | पहि | 33 | ¥\$ |
| मागप्रसीहित | ₹• | 40 | प्रगात | 11 | u |
| नारसिंह | 44 | 112 | पद्म | ₹ ₹ | 7 * |
| माय | ₹ | 30 | पदाकार | ३२ | १२ एँ, |
| निकृद्धिक | २० | į | पद्मक्षेश | ₹ ₹ | 33 |
| বিহ্রমিন | ۹• ¥٤, | ¥\$ | | ₹ ₹, 1; | ₹¥, |
| | देख ५४, | | | 24 | 25 |
| निरूण्डक | ₹. | | মহুশ্ন | २८ २२ | ?? |
| नितम्य | ₹० | 42 | _ | हेर इस | હ થું |
| | | | | ३ र | 328 |

| | अध्या. स्रोक | • | अध्या. | श्लोक |
|-----------------------------------|-----------------------|-------------------|-------------------|-------------------|
| | -, | | રૂપ ૪ | २, ४५, ४७, |
| पतन | २५ ५३, ५४, ५७ | प्राकृत | , , , | " ["] ૬૨ |
| पताक | વર્ષ ૧, ૧૪, ૧૪, ૬૨ | पिङ्गल | 33 | £ \$ |
| | | पिण्डि | 20 | ५५ |
| — . D | २८ २५, ५२ | 10 | २० | २ ७ |
| प्रला <i>लि</i> इ | च् व १, १६, १७ | पिहित | २५ ३ | ₹, ₹4, ४+ |
| प्रमदा | 35 996 | | | , 8, 4, 84 |
| परशुराम | ३२ पं. ३ | i | 33 | ¥¥, ¥\$ |
| प्रायुक्त | २० ३३ | 3 . | २ ६ | 6, 63 |
| •• | २४ १० | वस्य | ३२ | पं, ८ |
| परिच्छिन्न • | ३० १२ | 0.0 | ३ २ | પં. પ |
| परियृत्त | २० ४९ | | ₹¥ | ३६, ३७ |
| | २४ ५०, ५३, ५५ | | 3 0 | ५३ |
| परिरुप्तकरेचित | २० ११ | ' | ئ ر لو | 46 |
| परिहोलित | २४ १३ | | રૂ ર | ₫, ¥ |
| परिवाहित | ٧ ٧ | | २० | 32 |
| परिक्षिप्त | عره ي | } | 20 | 1 |
| प्रम्वित | २६ ९,८० | A | 33 | 303 |
| प्रसान्तधीरा | २० १३ | a _ | ર ષ | ¥¢ |
| ^{प्र} मपितत्तरः | 30 43 | 1 | ३० | 9, 7, 4, 4, |
| प्र मारित | 49 9, 8 | | | 3.5 |
| | २४ ३१, ३२, ३३ | | 39 | 90, 85 |
| | રૂપ, રૂ | | 25 | ३, १५ |
| | 2× 94, 95 | ' į | २५ | 9, 5, 34 |
| पशावधित | ٩٥, ٧٥ | 1 | 3.3 | 43 |
| पधोद्योत | ع في عام دو | १ । सुप े होध | 33 | देश |
| पातन | qu 49, 44, 46 | प्रयाचे जुमहे भरा | \$5 | તં. ૧• |
| गलालमञ्जन | ` ` | | 11 | 94 |
| पादिवञ्च | 4 4 | ६ । भग | ₹ ¶ | Y |
| पार्थाकान | 3. | | 15 | \$ 64 |
| पार्थच्छेद | No. | 1 | 11 | 4, 44, 41, |
| पश्चानुद | ζ0 | | | 48, 48 |
| भार्यमम्बस इस्टेन्स्ट | 3. | • भगानक | વખ | Y0, 1Y |
| पर्थम्यस्त्रः पर्येभ्यसम्बद्धः | | | 35 | 16 |
| भव भ्यस्मद्रस | ٦٤ ٢٦,٠ | 6 | | |

ŧ

| | अध्या | श्लोक | | अध्या | श्लोक |
|---------------------|------------|-------------------|------------------------------|------------|--------------------------|
| भयानक | 30 | 9, 3, 4, 6, | महाचारी | ₹ ७ | २२, २३ |
| | | 3.4 | महासुद्रा | ३३ | પવ |
| भयानक | ३१ | 40 | मण्डित | 30 | 4.9 |
| भयानका | 34 | प ६ २३ | मनि | 39 | ३५ ५७ |
| भरममुद्रा | ₹₹ | 9. | मदिरा | | ¥, ??, ₹9 |
| भीता | ३ ५ | र, १२, १४, | मिरिना | | ३, १५, २८ |
| | | २ ६ | मयूरलित | ₹6 | u, q |
| भु जद्गनासित | २० | ४३ | मार्देव | २० | २६ |
| भुजङ्गाद्वित | ⊋ ¢ | *4 | माउपी | २० | Ęg |
| भुनङ्गनस्तरेन्ति | २० | 84 | मारनी | ₹ ₹ | રહ |
| भुम | २४ | १९, २१, २६ | मुकुल | | ३, ५२, ६१ |
| मेरवी | ३३ | 50 | सुरुग | | x, २९, ३१ |
| भोगशयम | 32 | प १३ | सुष्ट | २६ | 92,60 |
| भोग | 33 | 24 | ु भुग | 3.5 | 7, 20 |
| भौम | 30 | 74 | गुस ल | 32 | g 90 |
| | 3 3 | \$3 | मु क्त | | x, 95, 9¢ |
| भ्रम्ण | 44 | ×9, ×0, ×4 | मुजजानु | 33 | 9, 98 |
| भ्रमर | 20 | २६, ३०, ४५ | मृगशीय | 7 \$ | ٦, ٦ |
| | ₹ € | 3, 88 | | ર ૮ | ų¥ |
| भ्रमित | २० | *4 | मृत्यु | ₹ 3 | ×s |
| मृ द्ंटि | 34 | ५३, ५५, ५८ | मोइ | 39 | ₹• |
| मकर | २० | ६, ६५ | मोइ | ą 9 | 85 |
| | ३२ | વં ૧૦ | य चुर्वेद | 3.5 | प १३ |
| मण्डल | 20 | २३, ३५, ४३ | | 39 | ş |
| | २३ | 9, 5, 9 } | रधगति | 35 | 29 |
| | 28 | ६५ | रवि | ₹ ₹ | \$ ₹ |
| मत्त ि | 30 | fo' er | रहस्यमुदा | રે ર | प १ |
| में इस्य | ₹ ₹ | प | राहु | 33 | \$14 |
| मद | ₹ 9 | | 不 智 | 24 | 93 |
| | | 86, 49 | द श्या | રપ | 96 |
| मर्ण | 39 | 30,80 | न प्रमेद | } 3 | प १३ |
| मत्ताक'ड | २० | 25 | रंघव ने दि न्द | ₹\$ | २९, ३२ |
| मन्दा | વધ | ६२, ६३, ६५ | रेचित | 30 | ξξ, γ^ω |
| मादालम | ३ ३ | 9, 4 | | २४ १४ | , eu, 9€, |

शब्दानुक्रमणिका

| | अध्या. | श्होक | | अध्या. | . श्लोक |
|-------------------|----------------|-----------------|---|------------|----------------------|
| रेचित | ৭৬. | ५६, ६० | वराह | ३ ३ | 90 |
| | ર ષ | ५४, ५६ | चलन | २४ | ४३, ४५, ४८ |
| | २६ | 9, 69 | | २५ | ४१, ४३, ४५ |
| रेचिना | · | , ४०, ४३ | विस्त | २० | % % |
| रोमाञ्च | | , 88, 88 | ļ | २६ | १३, ९१ |
| | ₹1 | , 40, 49 | वक्ष:स्वस्तिक | २० | ३ २ |
| रोप | २५ | . , , , , , | ब्यंसित | २७ | ४७ |
| रोद | ર ५ | ৬४ | ब्याकरण | 33 | पं. १६ |
| | _ | १२, १३, | वाचिक | २० | १४, २० |
| | 73 119 | 98 | | २७ | ۹, २ |
| | રે ૦ ૧, | २, ४, ७, | वानरप्छुत | २० | *6 |
| | 47 1) | 7 38 | वामदेव | 33 | 40 |
| | ३१ | ४८, ५५ | वामन | ३२ | 4. 99 |
| रोदा | ર્ષ | 9, 6, 28 | वामबद्ध | २ ० | ર પ |
| रजिता | २५ २ | , १२, २७ | वायु | ३२ | ₫. ६ |
| त्यु मु ख | ર્ | 6, 93 | वारुणि | ₹ ₹ | २६ |
| उ ता | २६ १० | , ८२, ८३ | ब्याधि | ₹ 9 | વે. ૪৬, ૪૮ |
| नतालसित | २० | 86 | वागुदेव | ३ २ | 4. v |
| टतारृक्षिक | २० | * \$ | | 3 3 | 920 |
| ख्टारतिलक | २० | γv | विकसित | 34 | مړي |
| र हित | २० | બષ | विध्यम्भ | 3.0 | 44 |
| | २६ १३ | , 40, 49 | विष्यम्भित | २२ | 9, 4, 9° 28 |
| व्यवसम्बार | ર્0 | २४ | विरुत | 30 | ६२, ६४, ६५ |
| र्शलना | 4 4) | ८, २२, ३२ | विरुष्टा | | ६९, ७२, ७४ |
| टश्मी | ३२ | પં. ૧૨ | दिग <u>ृ</u> द्दन | ₹• | ₹ 1, 0 ti 0 ti ₹¥ |
| सास्य | २० | २, ४ | ['] বিখিস ০জিলক | | ३८, ३९, ४६ |
| विप्रसुदा | ३ ३ व | ۱, ۵۷, ۵۰ | ्याच्छ्रभा . ट | 11 | 43 |
| सीन | २ ० | 80, 89 | वितर्क वितर्वा-वितर्धिता वित्तराज (द्वरा) | 3 4 | |
| होस्त <u>ि</u> | २ ५ | 86, 69 | िल्लाम (स्था) | 13 | 43 |
| वम | ३३ | 3. , 6.9 | ् विशिष् | | 15, 24, 21 |
| वरमान | २६ | £, \$6 | ्विभ्रता - | 34 | 4, 15, 1+ |
| र नमान्य | 33 | ۷, २८ ••• | विस्मित | 35 | į |
| žn. | २२ | 71° | विस्तिता | ३५ | 3, 33 |
| रत्र | ३२ | 4, 41 | 1 | | |

विष्णुधर्मोत्तर

| | अध्या. % | पेक 🌡 | सधा. | श्लोक |
|--|------------------|-----------------|-------------------|----------------------------------|
| विस्मिय | રૂપ : | र बीर | | |
| | | 15 | २९ ३० ९ | 94 |
| | ₹9 4, 1 | 85 | ₹9 | کی لا _ن کا عاد داد |
| विगुक्त | ٩٩ ٩, ٩ | ६ वीरा | ۲ <i>ب</i> | ધર, ષદ |
| विद | | र बीडा | | 9, 5, 44 |
| विश्वत | | ¥ <u>यु</u> धिक | 33 | २३, २४ |
| विधुद्धान्त | | ३ व्रिधेक्रेचित | 70 | ३०, ४७ |
| विरुद्ध | * 2x 44, 40, 4 | | ₹• | *É |
| विह्पाक्ष | 4 4 | 1 _ | ₹• | 44 |
| विलसित | ₹0 ₹ | 1 2 | ३२ | पं. १२ |
| विलाप | • | 1 | - 3 š | ٠, ٦ |
| विलाम | • | 4 | ₹ 6 | ३७ |
| विद्यन | | 1 & | ₹ ₹ | 35 |
| ਵਿਲਗ <u>਼</u> | • | 1 4 - | ₹ ₹ | 99 |
| निले कि त | २५ ३, १७, २० | | ₹ 9 | ४ने |
| निवर्तन - | 74 ¥6, 49 | 1 2 | २३ | 9, 4 |
| विवर्तन-विवर्तित | 28 88, 20, 29 | | २ - | 17 |
| । प् रवृत्त्य—। प् रवृत्ति | *4 89, 88, 86 | | ३ ३ | د ام ا |
| " विवर्तित | देश ६९, ७०, ७३ | | 44 | ६४ |
| । मन। तत | २० ४९ | 1 | ₹० | 477 |
| | २१ १,५ | - | ₹9 | łą, w |
| | रक्ष ३१,३३,३५ | | ३५ ३, ९ | 14, 35 |
| 6 | ३५ १२, १५, ४० | शह | ३२ | q. 99 |
| विश्व मुदा | 11 28 | | ₹ ₹ | 9 - 5 |
| विष्रुस | २४ १४, १६, २०, | शक्ति | नेने २०, ३ | ०, ७३ |
| Frances | ₹¥ | | ३ ३ | \$ X |
| विदण्णा | रुप ३, १७, २९ | | ₹ ₹ | 54 |
| विपाद | 11 Yc | शच्याम्थान | २ १ | 3 |
| विष्णु | ₹ 9 9. 9. | सर | 33 | 4. 15 |
| O | Υ. | ্বহাদ্ধলী 💮 | 11 | uY , |
| विष्णुकारत २०-४ | 3. 41 | शसाद्ध | 11 | * |
| विसर्ग २८ | 84 £5, 45, 48 | धारता | 24 3, 90 | . 24 |
| ৰিদিন | 3+ 35, 44 | ग्रि खर | 24 2 | , 45 |
| भौर | १५ १८, ४७, ४६, | गि खा | 44 | 40 |
| | At | सिमिला गति. | 35 | 14 |

| | अધ્યા. | श्लोक | | अध्या. | श्लोक |
|--------------------|---------------------|----------------|----------------------|--------------|------------|
| रीर | ् ३३ | ६६ | सद्योजात | २३ | ५६ |
| राक्ष | ३२ | 4. 94 | सरलित | २० | २५ |
| • | ३३ | 993 | सर्वात्मन | ३ ३ | EN |
| formit- | | • | सञ्जीव | २७ | ł, xx |
| शिष्रागतिः | 35 | | सद्धर्पण | 3 2 | 121 |
| शुक्तुण्ड सम्ब | | , २६, ६७ | स्कन्द | ३ ३ | 39 |
| য়ুদ্দ | ३३ | 48 | स्वित | २० | 20, 42 |
| चतार | २५ ३९ | | स्तब्ध | २४ १५ | , 90, 95 |
| | 35 | ₹, ७ | । ''' ' स्तरभन | २१ ४३ | , YE, YC |
| | ₹0 9 , | ₹, ४, €, | स्तम्भ | 39 | ¥5 |
| | | १६, २२ | ्र _{स्तालम} | २२ | 9, 6 |
| | ३ ३ | ४६, ५४ | स्वरमेद | 39 | 42, 49 |
| राज्या | | , 20, 39 | स्वस्ति | 11 | u o |
| शुल | ३३ | ३६ | स्वरितन | ર• | ¥٩ |
| शेप | ३२ | 4. ٩३ | | २६ ५, | مي لري |
| शोक | ર્ષ્ય | ६५ | | - | 66 |
| | ₹९ | 1 | | २८ ९. | 44, 44 |
| | 30 | ર ર | ः स्वस्ति हरेचित | ₹• | 44, Ye |
| | 39 | | . स्वस्य | २ २ | ٦, ٦ |
| शान्ता | રેં ૧, | ٦, ٧, ٤, | ' साचिद्रन | ۾ <i>ب</i> | ¥¢,¥ *. |
| | | 5, 99 | | 44 | 44, 61 |
| धम | ₹ ٩ | 96, 76 | सामनेद | 33 | 4. 1r |
| भारता | વપ રે, | 18, 26 18 | सारिवय | | 10, 11 |
| सक्छ (गुद्रा) | 11 | ર્ | | 3.3 | 3 |
| षदंश | 46 | 1-, 4 3 | | ३८ | 47 |
| मर्भिन | ₹• | 4, 7 | | 11 | પુર |
| मन | 29 22 32 | , 46, 42 | নিবি | <i>5</i> , 6 | 5.5 |
| | 30 11 | 16, 15, | स्पिर्दरन | 3. | 7,6 |
| | 45 44. | 79. 55. | lear (nft) | *5 | ٧ |
| | V = · | (3 | 10.41 | 30, 2, | 34, 3% |
| मनपाद | *1 | | िद्विषं दिल | ** | 4.8 |
| गमामरिय गमामरिय | 3,4 | > (| , पुरुषा | ₹• | 48 66 |
| 有 要素 | | , 44, 44 | | 11 | 344 |
| समुक्त | 14 | 11, 31 | श्रुपद | 14, 11, | 14, 14 |

विष्णुधर्मीत्तर

| | अध्या | श्लीद | F | अध्या. | श्लोक |
|----------------------|-------------------------------|------------------------|------------------------|---------------------------|-------------------------|
| स्यति | ₹ 9 | २ २ | हर्ष | | |
| स्चिविद | | , 89, Ye | 4 | રષ | ४४, ४८, ५० २, ११, २६ |
| सूच्यर्ध | २० २ ६ | २ ४ | 4 3 | ३ ३ | 993 |
| स्च्यास्य | २ ६ | , 33 , 33 | | २३ | 90, 38 |
| स्वेद | | ९, ७६ ४९, ५, | हयशिर | ३ २ | य २१ |
| सोच्छवासा | - | 48, 44 | हरिण <u>ध</u> ुन इल | 30 | ५२ |
| सीम्य | २ ० | ₹ ₹ | हास | દે ર ર ૧ | प १ ६ १, २ |
| सीम्या | ર ય વે ષ રે. | 85 | हास्य | २५ ४० | |
| संघातवः | ₹ v 7 7 7, | १४, २७ ३८ | | ₹• 9, | , २, ६, ६, |
| सद्ष | २५ ७०, | 45, AR | | + 9 | 99 ४५, ५५ |
| सदश | ₹६ | ३, ४९ | हास्या | २ ५ | ٩, ६, २४ |
| सप्रवेशन सम्रान्त | | 81,85 | हुतारान इस | ३३ | २५ |
| हर्ष <u>.</u> | ર∘ ર ∠ | ३२ ३९ | हस प भ | ३२ २६ ३, | प २ ४७, ६८, |
| | 35 | भ, 9 ६ | | | טט, אט |
| | रे१ ७, २ | £, 89, | इसास्य | ₹ <i>६</i> ₹ <i>६</i> | २८ ३, ४६ |

चित्रपारिभापिकशब्दानुक्रमः (अ. ३५-४३)

| | अध्या. | श्लोक | | अध्या. | श्लोक |
|------------------------------------|------------|-----------|---------------------|----------------|---------------|
| अर्घवि छोचन | ३९ | વ | ऊ र्णा | ३७ | ų, |
| अर्धसमा | 38 | 88 | य पित्थ | ¥0 | २० |
| अध्यर्धाक्ष | 38 | 98 | करण | ¥₹ | ۹, ۷ |
| अन्यचिन्तता | 89 | 93 | य .ला | ४३ | ३८, ३९ |
| अलवर्तेक | 38 | ų | कपम् | ጸ፡፡ | 3 |
| अ यर्जु | 38 | 80 | कुमुम्भ | 80 | ર |
| भग्नस्त | ४३ | २० | कुड्य | 80 4 | , 0, 1, 99 |
| अर्घार्घ | 38 | 89 | युन्तला (केशा) | ३७ | 4 |
| अम्निद्रभायाः | 80 | ર | क्षयगृद्धि | ३९ ३ | ८, ३९, ५१ |
| अजिद्यरेख (नेत्रम्) | ३७ | 96 | | 89 | 5 |
| अतिघनता | 80 | Ę | | *\$ | 95 |
| अतितनुता | ४० | Ę | क्षिरेण | A.c. | 4 |
| अधि क | 80 | 95 | गण्डपर।पृत | 36 | ¥9 |
| भ्रतिगुप्त | 89 | 98 | गतरस | ¥₹ | २० |
| अविभ क्तरच | 89 | v | गुइम् | ¥ο | 1 |
| थविभक्तत्व | ४३ | 90 | गुग्गु ल | Ao | 1 |
| अहीनमान . | 35 | १९, २५ | घन | >3 | ₹₹, ₹¥ |
| अरीयमान | ¥9 | 94 | धनोल्वण | ¥9 | ¥ |
| अशीन | ३९ | ۷, ۷ | चतुरसम् | ¥9 | 3 |
| भद्भुत | ¥ ₹ | 9, 8, 8 | चिरित | 35 | ¥3 |
| अ नृजु | 3 % | ٦, ٩ | चापाकारम् (नेप्रम्) | १७ | 5, 50, 53 |
| ঝারী | ¥٦ | ८२ | नित्तप्रहण | (1 | ૪૭ ૧૨ |
| आलिड | 35 | 46, 40 | चित्रगोनुत्रक | 43 52 | |
| रश्चा | 40 | 9 | चित्रदोषाः | A Ś | 76 |
| देशन् | *0 | Ę | 0 | Υ₹ | • |
| उपलपन्नाभ | 36 | 9, 9. | चित्रस्माः | Y• | 30 |
| ^{उत्पलपश्चाभम्} (नेत्रम्) | ą u | 4, 11, 14 | ्राचत्रवपुरा | ٧٦ | રૂપ |
| ^{देश} नगर्भ | ¥٩ | \$ | वित्रयथ | 35 | 3 |
| रे ल न | 35 | ¥₹ | वित्रप्तम् क्रम् | ¥• | 11 |
| के र म | 35 | ४२ | वित्रादीम | , - | • • |

विन्युधनींत्तर

| | क्षस्या. | क्री | r | ₹ंग या | <i>ষ</i> ীক |
|---------------------|----------------|-------|-------------------|------------------|------------------|
| ना जा। | ખ ુર | • | दसावय | 44. | |
| गदा | ۷4 | 99 | | ૮૫ | ६५ |
| गर्गेश्वर | CY | 13 | | . 41 | ٦, |
| म ह | ξ •, | | · · | ७३ | 3 |
| <u> </u> सामग्री | Ęo | 9 | | ६७ | U |
| 17 | ξo | * | 1 ' 3 | υĘ | 3 |
| गहरी सहसी | | ده | | ८५ | uz |
| गाँ रारी छक्ष्मी | Ę o | ŧ | 1 | ७३ | ર |
| | ę o | ¥ | े विशि (पर्वतन | व्दिनी) ५९ | Ę |
| स्य | งๆ | Ę | भन्यन्तरी | v ₹ . | হ গ |
| ñł | ٩٩ | 8 | धस | ৬২ | ч |
| गाँग | '4 2 | ¥ | धर्म | ৬৬ | 3 |
| गौरीधुरम्प | 44 | | भगै शासी | υĘ | * € |
| चम | ८५ | 93 | पतुर्वेद | પર્વ | *4 |
| चागुण्डा | २८ | ५३ | ब र | , u? | 3 |
| पुन् र | ७३ | 84 | ,, | ષ્ટ્ર | E |
| द्धाया | Ęu | 90 | धूमीर्था | 4 1 | |
| जगनी | ξv | 93 | ध नराष्ट्र | 68 | ર |
| जनार्दन | YY | 39 | ধূ রি | Ęo | 13 |
| जयत्रभूगी | ८२ | . 98 | | 45 | x |
| जग्रन | v ર | 4 | " निरुष | | £ |
| जयन्ती | ĘĘ | 99 | नहिंद् नहिंद् | د ^و م | ξ \$ |
| जया | ĘĘ | 99 | न <i>िद्</i> षक्र | ७३ | 94 |
| जगर | ષ્ટ્ર | 80 | नर नर | 88 | by. |
| ज्योतिप | ७३ | 86 | न <i>र</i> | ५ ६ | ₹ |
| ज्यो स्स्ता | ७३ | 99 | नरनारायण | € e | ¥ |
| तन्युरुष | 86 | ₹ | | 9 \$ | 9 |
| ताल | 48 | | •• नारायण | ટાવ | 4,6 |
| सार्भ्य | 48 | | नलरूदर् | v ç | 3 |
| 33 | 64 | | गर्भः नासन्य | ৬३ | 35 |
| िमना विमना | Ę C | ſ | -गरा च =सास् | * \$ | 9 |
| तिवक्म | ماج | | निकाति | 5 2 | ¥4 |
| त्रिष्टुस् | Ęv | | निद्रा | પુંહ હર્ | 7 A |
| तुम्बुर | ĘĘ | | निरुक्त | ∪३ ∪३ | २ ३ ४४ |
| तुष्टि | ৬৬ | ₹ ₹ | <u> </u> नगास्त्र | U ž | ¥.a |
| | | | | - | - |

विष्णुधमीतर

| | skái* | क्रीय | 1 | क्षच्या. | श्लोक |
|------------------------------|----------------|-------|------------------------|----------------|------------------|
| गरी | uz | ¥3 | रेगन्त | Vo | 4 |
| गदेश्वर | ७२ | Ç | ٠, | Ęu | • |
| 7; | CY | 6 | रीप्र | eu | 43 |
| मानर: | υĘ | 13 | लगा | v v | \$ |
| गौंधागा | v3 | ¥ cq. | सम्बेद्री | u) | হ ৬ |
| गुनि (यपित्र) | v3 | ¥c | रदमण | <4 | Q |
| मृष | 80 | وب | रक्षी | งเง | 6 |
| मेघा | 90 | c | ,, | ८२ | ર |
| भै नान | ७३ | 3.4 | 92 | eu | 43 |
| यजुर्द | υĮ | ¥ą | रिप्न | UY | ຈ |
| यम | Ęú | • | ভিন্ন | CY | ¥ |
| ,, | 49 | ર | वर्चम् | υţ | 98 |
|), | 45 | 12 | वटवा | ७३ | ३७ |
| यमुना | ષ ર | U | वरु | U 😘 | \$ |
| यशसार (विष्पाक्ष) | 24 | 3 € | व्यामाय | 33 | ą |
| यशोदा | 643 | სე | वराद | 45 | \$ |
| यादीगण | cu | ३ ७ | चर्ण | 43 | 1 |
| युधि छर | 24 | Ęu | वमु | 4 | 1 |
| दुदुधान | cus | us | वसुभद्र (हुतारान) |) د <i>ل</i> ر | રૂ પ, |
| याम्यपधिमा | ५३ | ३६ | वार् | ęد | ч |
| र ति | ७३ | २९ | वादि (१ राजी) | ६८ | ¥ |
| रवि | ξw | ٦ | यामनै | ८५ | પુ ષ્ઠ |
| रवि (अर्फ) | ξψ | 3 | वामदेव | ** | २ |
| राजधी | 67 | 93 | वायु | ₹ ८ | 3 |
| रामीय | Cu | •३ | वाराइ | ረԿ | ५२ |
| राम (परशुगम) | دلا | Ę٩ | य। मुदेव | ७३ | 1 |
| राम (दाशरथि) | ۵4. | ६२ | 31 | ૮૫ | ¥ο |
| राहु | Ęţ | ٤ | ,, | ** | 99 |
| राज्ञी | Ę to Con | 90 | वारणी | ७३ | ₹\$ |
| रि स्रमा | ę ဖ က | 90 | चारमीकि स्यान्त्राम | દધ | ¢¥. |
| स्द | υ ર | ¥2 | व्यावरण व्याम | 03 | YY afa |
| स्द्र -िप्प णी | ७३ ८५ | vy | च्याम च्योम (रूपं) | 64 | ę ⁱ y |
| रुक्मिणी गर | 85 | ٧ | | uk | 9 |
| रुपसम्पद | - > | 3.4 | *1 | ĘC | فر |

| | अप्या. | <i>स</i> ीव | : 1 | अध्या. | श्लोक |
|----------------------------|-------------|-------------|-----------------|----------------|-------|
| विनना | υĘ | | i | | |
| विजय (पवन) | ८५ ८५ | Y | _ | ĘS | € . |
| विद्या | | ₹७ | 1 | બુધ્યુ •••• | ٠, |
| रियाधर | ĘĘ | 99 | राम्मु | पुष | 3 |
| विना यक | ٥, | 95 | शान्ति | •• | \$ |
| विरुद्ध | ७१ | 93 | । शिनिया | ७३ | 93 |
| | 28 | 39 | शिव | تبريح | ર |
| হিন্দা <u>স</u> | 6.4 | ३६ | ,, (महादेव) | \$\$ | 9.5 |
| विरूपाझ (यम) | 68 | 99 | शिव | ७३ | ३० |
| विस्पाध | 40 | 9 | ,, | اع ب | 3 |
| विश्वरूप | ८ ३ | 9 | नि क्षा | ६४ | 2,2 |
| 37 | ۷٦ | 4 रे | शुक (जयन्त) | ७३ | خ |
| विश्वहमी | fv | 90 | হুক | Ęo | فع |
| विश्वदेव | ७२ | ч | शुःन | υĘ | 38 |
| दिराख - | 43 | Ę | शेष (अनन्त) | દબ્ | 9 |
| ^{दिध्} य (जनाईन) | RR | \$ | ,, | 63 | ૨ |
| दिष्पुर्य | 80 | 5 | y . | 64 | 88 |
| विष्णु | CU | 98 | द्ये:भा | ६८ | 3 |
| विष्यु (हरि) | Ęo | २ | सङ्घर्ग | 64 | 29 |
| दीरमद | ¥2 | 96 | " | 80 | 33 |
| इ क्षेदर | 64 | Ęv | ,, | Şv | २३ |
| च् प | Ę۷ | ¥ | सञ्भामा | ८५ | ન્દધ્ |
| वेदजननी | ٤o | 8 | सयोजात | 86 | २ |
| वैशाय | vv | 9 | सप्तधातु | Ęc | 4 |
| वैसम्पायन | ८५ | 44 | सरस्वती | ÉR | 9 |
| वरमञी | Ço | ₹ | ** | ६० | ¥ |
| वै श्रवणह्य | ५३ | | ,, | ७३ | २५ |
| য়ক | 4 | 33 | साङ्ख्य | પ ર્ | 86 |
| যিস্ক | c¥ | • | साध्य | ७२ | २ |
| राज्ञहरप | 4. | | सामवेद | υĘ | ४३ |
| राची | थ् | | साम्ब | ८५ | vv |
| गतका | પ ર્ | | सावर्णि (मनु) | U o | ¥ |
| ण्युन | ८५ | | मादित्री | έź | • |
| धदा | UU | | सिद्धि —— | UU | \$ |
| थदा | Çc | ¥j | बु खः | vv | ¥ |

विष्णुधर्मोत्तर

| | • | | | | |
|------------------|------------|-------|---------------------------|-------------|-----------------|
| | अभ्या. | *ঠায় | - | अध्या, | श्रीक |
| ए भद | C % | 24 | र्यग ^{ें द्र} गी | ८२ | 93 |
| सुगन्तु | 64, | 55 | स्याहा | 4,6 | 3 |
| गुरनि | υĘ | ¥ | दयभीय (अधः | ीर) ८० | • |
| गुवर्चया | £ 0 | 3+ | | cy | ખુ _ર |
| सोग | ७२ | * | हरि | υĘ | , |
| सोग(चन्द्र)रूप | 96 | [| 49 | cy | 96 |
| स्यगद | Ęu | ۲] | इ स | 64 | 48 |
| सम | ξu | c | इंम | \$ ¢ | ų |
| | | | | | |

प्रासादवास्तुपारिभापिक शब्दानुक्रमः (अ. ८६-८८

| | अध्या. | श्लोक | -1 | अध्या. | <i>श</i> ्चेक |
|------------------|-----------------------|------------|---------------|------------|---------------|
| | | | | | |
| अमलसारक | ८६ | y | गवाक्ष | ۷۵ | 94 |
| | ८६ | 90 | गवाक्षक | ८६ | 113 |
| | ८६ | २२ | चन्द्रशाला | ८६ | 7 🗢 |
| | ८६ | 40 | | ८६ | १२ |
| | ८७ | 9४ | | ८६ | ३२ |
| उ च्छ्राय | ८६ | ¥ | | ८६ | ۷ |
| | ८६ | 9 | जगती | ८६ | २० |
| उच्छेद | ૮६ | v | | ८६ | 49 |
| कटी | ٤٤ | ٤ | | د و | ५७ |
| | 48 | રં | ļ | 45 | 906 |
| | ૮૬ | २३ | ł | ८६ | 998 |
| | ے ۔ دق | 28 | | ८६ | 992 |
| | <i>e</i> | 998 | | 60 | २ |
| | ۷ ج | 939 | | 20 | ۷ |
| | 66 | ६ | जाला | ८६ | 993 |
| | 66 | 9 | | ८६ | ९२३ |
| | 66 | 9 રે | | 60 | 94 |
| इहर | ८६ | 900 | जालवन्ती | ८६ | 9. |
| | رب درج | 98 | देवकुल | 69 | c |
| | د بع د بع | 94 | | 66 | ą |
| क्ट | ۷٤ | y . | देवायतन | 66 | 9 |
| ~- | ८६ | १०, १३, २० | प्राकार | 6 | 906 |
| | ۶ ۱ ۷ ξ | ์ ५० | | 60 | , 3 |
| | ८६ | ۷• | | 69 | ४२ |
| गर्भगृह | 20 | २ | भद्रपीठ | ८६ | Ę |
| | رن | do | | 66 | ५७ |
| | وي | ४२ | | 66 | 38 |
| | 66 | 98 | भूमिका | ८६ | ¥ |
| गर्भमन्दिर | 20 | Ę | • | 35 | 3 |
| गर्भमिति | ८६ | ३८ | भूमिशाग(?य)ति | 6 | Ę |
| 14 | | | | | |

विष्णुधर्मोत्तर

| | अध्या | श्लो | क | अध्या | स्रोर |
|-------------------|------------------------------|------------|-----------------|--------------------------|-----------------|
| मचरी | د ۾ | 9 9 3 | १ वातायन | ८६ | 993 |
| | 66 | v | 1 _ | ۷٤ | 903 |
| स ण्डप | ८६ | 903 | 1 | د ۶ | 900 |
| | 45 | بان و | | ۷٩ | 990 |
| | 45 | 904 | . | ر د | 119, 192, |
| | 65 | 906 | विखर | کر خ | 995, 939 |
| | د ۶ | 909 | | ८६ | 177, 173 |
| | ۷٤ | 999 | | 66 | 174, 15e |
| | ८६ | 121 | | ر بر د ب | 93 |
| | ٠, | • • | | رن | 98 |
| | ८७ | 90, 99 | | ر بر د ب | 94 |
| | ۷۵ | 93 | सिंहभूपण | 20 | 99 |
| मेखला | CĘ | 9¥ | सिंहमाला | ८६ | ζ. |
| | cq | ፃԿ | सोपान | ک ق | હ |
| | 25 | 14, 14, 29 | | - ۱ ۲۹ | ₹Υ |
| | 25 | २३,२४ | | ر ۶ | 906 |
| | ८६ | 49 | 1 | 48 | 990 |
| | ८६ | ওৎ | } | 46 | ¥ |
| | ८६ | ८६ | | <i>((</i> | થ |
| | ८६ | ۷۵ | | ((| (|
| | ८७ | Ę | | " | \$ |
| | ८७ | * | | << | 90 |
| | 20 | 4 | | ((| 9 9 |
| | 20 | Ę | सस्थान | ८६ | ર |
| | ۷۵ | 34 | स्तम्भ | ८ ६ | 924 |
| वलमी | ८ ६ ८६ | २९, २२ | | 44 | 12 |
| | ۷ ۲ | २३ | 건경 | ८६ | 7-7 |
| | د ب د ب | *6 | | ا د | 908 |
| | 4 | (0) | | (\$ | qou |
| | ا ا | 29 | | " | |
| वसुधा सग्र | 24 | | इस्त (प्रमाण) | ८ ८ ८ ६ | 9 ३ २ |

प्रासादगतप्रतिमानां नामानुक्रमः

| | अध्या. | श्लोक | | अध्या. | श्लोक |
|------------------|------------|-------------|--------------------------|-----------|-------------|
| अनल | ८६ | ७६ | आषाढ | ৫৩ | З× |
| | ۷٤ | 938 | इन्दु | ۷ ۾ | ५४ |
| अन्नत | ८६ | ७६ | ईश्वर | ८ ६ | vg |
| | ८३ | २६ | ईन्द्र | ۷۵ | ર૬ |
| अनिल | < \ | ७५ | एकानंशा | 4 | २६ |
| | 45 | ७६ | कवच | 29 | 36 |
| | 63 | ३० | कश्यप | ८६ | ७४ |
| अनिरुद्ध | 60 | २० | काम | ۷ ج | UY |
| | 69 | ३५ | कामदेव | ं ८६ | ** |
| अग्नि | ૮૭ | २९ | | 6 | ६५ |
| अन्तक | ८६ | १३४ | काल | ८६ | Ęc |
| अपराजिता | 24 | ₹6 | | ૮૫ | 36 |
| अर्ण | ८ ६ | ७६ | कालरात्रि | ८६ | ဖန |
| 3 र्क | ८६ | २७ | | 20 | 43 |
| | ۷ ج | 34 | कालिन्दी | ८६ | 65 |
| | ८६ | 48 | किनाश | ८६ | ३० |
| | ८ ६ | ७५ | कीर्ति | 60 | 44 |
| | 64 | 939 | कुज | ८६ | ५३ |
| અર્ય | ٤ ۾ | 99 | | 60 | ₹9 |
| अद्गिरस | ८६ | 80 | कुमार | ८६ | ७२ |
| अम्युप | ८ ६ | Ł | केतु | CĘ | ५२ |
| अक्षशिषे | ८६ | ५६ | केशव | ८६ | ५६ |
| | 60 | २४ | | ८६ | \$ ¥ |
| अधिनी | 6 | ¥4, | _ | < 6 | vy |
| आकाश | ८६ | | कोस्तुभ | ८७ | 37 |
| आदिन्य | ८६ | | ट् रण गणेश | ८६ | २६ |
| | 4 | રે પ | गण्य | ८६ | २७ |
| | ۷ ق | 1 | गदा | ζŧ | ३५ |
| | 45 | | यदा प्रस्ट | ¿v | ₹ |
| आमोद | 20 | 4,1,1 | A.B. | د۹ | પ ર |

विष्णुधर्मोसर

| | अध्या, | <i>र</i> होक | | अध्या. | श्चेक |
|------------------|------------------|--------------|------------------|------------------|--------------------|
| गह् | د ٩ | હદ્ | दिवाकर | 20 | 4 |
| गन्ना | د ٩ | 45 | दिक्पाल | 6 | * \$ |
| गुरु | ८ ६ | v.ર | दीक्षित | د ق | u _i y |
| प्रद् | 44 | ¥¥ | दुर्गा | 35 | २८ |
| | ر ٤ | ५२ | | ८६ | & k |
| | C\$ | ረዓ | देवराट् | ۲ | 44 |
| | ८६ | 938 | धनाध्यक्ष | د و | ६९ |
| | ر ة | 934 | धने धर | د ٩ | ₹ 2 |
| गायत्री | ૮૭ | ₹८ : | धर्म | ر ۾ | ६६ |
| चक | ে | ર્દ્ | नर(सिंह | ۷. | ५६ |
| चन्द्र | د چ | २७ | | ८६ | २४ |
| | ZŠ. | ÷4 | नक्षत्र | ८ ६ | YY |
| | / 5 | 4 ર | | ८ ६ | Ęĸ |
| | ८ ६ | บน | नन्दी | ८६ | € ₹ |
| | ۷٩ | * 79 | नाग | ८ ६ | Ęų |
| | ۷۷ | ३३ | निदा | ८६ | २ २ |
| चन्द्रमा | ८ ६ | ६४ | नित्र ॄति | ₹ | ą o |
| चर्म | ۷ ع | २७ | मन्दक | ۷ ٩ | ₹ € |
| जनार्दन | 6- | २७ | नृ सिंह | ८६ | Ę¥ |
| | 4. | २९ | | ۷ ٩ | 934 |
| जय | ረ ७ | 32 | पघरात्र | 20 | 34 |
| জ ਲ | ८६ | 48 | परशु | ۷٩ | २६ |
| গা ন | ۷ ک | 35 | पट्टिश | ८६ | २६ |
| ताल | ८ ७ | ३६ ॄ | पद्म | ८६ | ३ ० -र ् |
| तारूर्य | ۷٤ | २६ | ारोडी: - | ८ ६ | ₹ ६ |
| | 45 | 30 | पाश क्तरावन | ८६ ८ ६ | 35 |
| ~ 3 | د۶ | 93° | पाशुपत पितामह | دو | ξ ₹ |
| त्रिलो चन | ۷۹ | 46 | 170,40 | د و | 44 |
| (त्रविक्रम | ۷ ٩ | 28 | ि वृ | <u>د ۲</u> | ζ. κ |
| Farment | ८ ७ ८७ | 2 ξ | िङ्गलक | ۷. | Ęŧ |
| त्रिशूल स्थाप | د بر د ب | २६ | पुःह | ۲.۰ | ૨ ૩ |
| स्वष्टा दण्ड | ८७ | 63 | प्रथम | 65 | ¥ |
| d.a. | 24 | 3A | प्रमें द | / 9 | 3 4 |

| | अध्या. | <i>श</i> ्लोक | | अच्या. | श्लोक |
|-------------------|----------------------|----------------|----------------|------------|------------|
| प्रयुम्न | ८७ | २० | मृत्यु | ८६ | ६८ |
| | 20 | ३५ | | 40 | ₹८ |
| बुघ | ८६ | 4,3 | यम | ८६ | Ę Ę |
| मह्मा | ر ق | २६ | 44 | | |
| | ر و | 38 | | ر ق | €ø |
| | ८६ | v _o | | ८६ | ۲۶ |
| | ८६ | 934 | | ८७ | ३० |
| बृह् स्पति | 20 | ३२ | | / ও | ३८ |
| भद्रकालि | ر و | ĘS | यज्ञतार | ८७ | 'ई४ |
| יין טוויזי | ۲ ۹ ۲۹ | 80 | योग | ে ড | રે જ |
| | 26 | 900 | रति | ८७ | २२ |
| | 48 | 934 | रात्रिप | ر ۾ | 933 |
| भू | ८६ | 48 | XII-71. | ۷٤ | 936 |
| भूतपञ्चक | ८६ | . ४६ | राम | ८६ | २६ |
| भोगशय (विष्णु) | ८६ | ગ્ ય | राहु | ८६ | 4,३ |
| (0 / | ८६ | 900 | रेतस् | ८ ६ | ३८ |
| मृगु | ८६ | ४५ | | ८ ६ | ६३ |
| मकर | ۷۷ | २७ | रुद | ر ق | ₹ <i>४</i> |
| मस्त् | 4 | 48 | į | ८६ | ₹ 4 |
| महाकाल | ८६ | 28 | | ८६ | 84 |
| | ८६ | 9३५ | | ۷٤ | ७५ |
| महादेव | ८ ६ | 48 | | ८६ | 944 |
| | ८६ | 99 | लक्ष्मी | ८६ | २८ |
| | ८६ | 9 ₹ 9 | | ८६ | ₹ ९ |
| महाभूत | ८ ६ | 38 | | ८६ | ७६ |
| nàu- | ८७ ८६ | રેલ | | ८७ | २१ |
| महेश्वर | ۲ ۹ ۲۹ | 938 | स्राप्तल | ্ ড | 36 |
| | 20 | 30 | লির | ८६ | 98 |
| मातर | 4 | አ ጸ | | ८६ | ८२ |
| मातृ | ८६ | 2 × | लोकपाल | ८६ | ५२ |
| सदर | وح | २७ | वनमाला | ८६ | १२० |
| मु सल | رن | २६ | प्रमाण | ۷ | ६६ |
| मु ष्टि | ૮૭ | २८ | | ८६ | ६७ |
| યુંહ | ۲ | 36 | | ८७ | २८ |
| मन्द | 24 | ६३ | वराह | ۷٩ | 46 |
| मरुद्रुण | 4 | ४५ | | ∠ ७ | २४ |
| मार्कण्ड | 20 | 35 | बहण | ८६ | ३० |

| 1 | | | | | |
|------------------|------------------|------------------|-----------------------|-------------|--------------------|
| | गध्या. | श्लोक | | अध्या | श्लोह |
| वरुण | ८६ | ٢2 | शशाह्य | د ع | |
| | 45 | ৩५ | शशि | دو | ş. |
| | ۷ | 936 | | ۷٤. | <i>د</i> لا معم |
| | 20 | ₹0 | शिशिर | ۲۹. | 114 |
| यसु | 25 | 84 | राष्ट्रर | | Ęų |
| वसुभद | ۷ ن | ₹¥ | राङ्ख | ८६ | €.R |
| य ज्ञ | ۷٠ | ٠ ٦٧ | | دو | 96 |
| पातुिक | ८ ६ | ረዓ | হাক | ر بر د د | २६ |
| वास्मीकि | 20 | 15] | XI II | ۲۶ | ३० |
| वासुदेव | ₹ € | uşu, | | ۷٩ | ¥\$ |
| • | ८ ६ | 48 | शक्ति | ۷٩ | (Y |
| | 4 | [| शार्थ | ۷ و | 37 |
| | 20 | 939 | | ۷۵ | ३७ |
| | ر ب د ب | 70 | शुक | ८ ६ | 44 |
| विजय | ८७ | ₹₹ | | 20 | 39 |
| विनता | د ډ | ₹4 | शेप | < \$ | 735 |
| विनायक | د و دو | UĘ | सरस्वती | ८ ७ | २३ |
| | <u>د ۹</u> | ३ ९ ७२ | साध्य ि | ८६ | X4 |
| | ۲ | 938 | सिद्धि | ८७ | २२ |
| | 4 | 934 | सुमद | ८७ | \$x |
| विष्णु | 48 | | <i>चर</i> | ૮હ | 31 |
| | د ٩ | 38 | स्र्यं | ८६ | ५३ |
| | ۷ ۾ | 34 | | 4 | 353 |
| | 4 | પ ર | 3. | ८ ६ | 136 |
| E3 | د ٩ | १३७ | तौर म हर्पण | ८६ | 43 |
| विश्वदेव | 4.5 | *4 | 1844 | ८७ | 35 |
| वीरभद्र | < ₹ | υ ξ _ | lines:19 | ۷۵ | źĸ |
| वेद | CO | 42 1 | ा ङ्ख्य | 24 | 35 |
| वैष्णवी | ८७ | ₹८ ९ | कन्द् | ८६ | २७ |
| ^ह यास | ८ ७ | ₹ ₹ | | ४६ ४६ | ३५ |
| शनि | 20 | 39 | | ۲۹ ۲۹ | 35 93¥ |
| शर | ८७ | २७ | | د ق | 935 |
| | ८७ | ३८ हा | रे | 45 | 32 |
| | | | | | • |

प्रकीर्णशब्दानुकमणिका (अ. ८९-११८)

| | क्षच्या. | श्लोक | 1 | अध्या. | श्लोक |
|-----------------------|---------------------------------------|--------------------|-----------------------|-------------|---------------|
| अर्क | 5,6 | ६३ | आपातसूना | ९३ | 3 € |
| अग्नि | • • • • • • | રફ | आच्छादन | \$8 | २४ |
| अर्घ | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | y | आज्य | 68 | 39 |
| VI-4 | १०२ | ₹ | आधर्वण | 904 | 65 |
| | १०३ | • | आर्द्री | ९६ | ३० |
| | 908 | ६, १२,१४ | OIIXI | 908 | ६१ |
| | 908 | ર | - अस्तिका | ९४ | 89 |
| अङ्गारक | 908 | २९ | आदिरय | 908 | २४,७१ |
| अच्युत | 908 | 90,२६,२७ | | 908 | २५ |
| <u>* + </u> | 900 | 98,86 | | | ` · · |
| अर्जुन • रे | 908 | 993 | आत्मयोनि | 908 | ३५,३ ६ |
| ^{अण्डो} द्भव | 908 | બ પ | आमलक्सार | 98 | |
| भतसी अथवैवेद | ९२ | ر دع | आमोद | 906 | 986 |
| अर्थ | १०६ १०५ | 48 | आयुध | \$ 8 | ३६,४४ |
| अदिति | 908 | ६२ | আশ্বি ন | ९६ | ٥ |
| अधिवासन् | 909 | 9 | आश्चेपा | 908 | ६६ |
| अनम्त | 908 | २६ | आषाढ | १०६ | १३६,१३८ |
| अन्नयज्ञ | 998 | 9 | इउया | 909 | 9 |
| अनिरुद्ध | १०६ | २२,२४,9 ४५, | इंडा | e u | 92 |
| .,,,, | 1-4 | 940,949, | इन्द्र | 908 | 52 |
| | | १२९,१३० | इल्विला | 908 | ومأه |
| अप्रमेय | 904 | 96,98 | इशान | १०६ | २३ |
| अभ्र | १०३ | ३९ | इष्ट | 89 | 9 |
| अयन | 3 € | 98 | | 98 | 99 |
| अर्थमा | 908 | ৩৭ | इप्टक | ९ 9 | 8 |
| अयोनिज | 904 | 98 | 1 | ९४ | 92 |
| अश्वत्य | 908 | 26 | | 9.8 | ३२ |
| अक्षमेध | 93 | 96 | इष्टापूर्व | ९३ | 90 |
| अश्विनि | 908 | 40 | ईती | 990 | ષ્ |
| अश्विनौ | 904 | ६१ | उद्य:श्रवस् | 904 | Ę÷ |
| | 903 | ¥ | ما | 908 | ชวุ |
| अजीर | 53 | u, | उत्तराफाल्गुनी | | · |

| | अध्या. | श्लो | 'क ∫ | अस्य | . श्लेक स्रोक |
|--------------------------|---|--------------|----------------------------|-----------|------------------|
| उद्भेदज | 905 | | ६ काल | | |
| उमा | 908 | | 1 | 901 | , |
| ख ल्काः | \$6 | 8 | | \$1 | , je |
| उपा | 7 · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | 8, | 1 | \$ | 9 92, 93 |
| उध्र | | 3 3 | | 5. | |
| 4 3 | 903 | ٦, | | 53 | \$ |
| सर्वे | 904 | \$, | ľ | 5 € | ેટહ |
| | dox | 9 4 | 1 | 53 | . ધૂ |
| उर्भशुष्का | 65 | t. | ्राञ्चार | 56 | 36 |
| अन्सन | ٠, ६ | 6.8 | • | 308 | 39 |
| क ध्मा | 94 | 4 | इं भ | 98 | *** |
| ऋर् | 55 | 9 | बुलीर | 35 | • 4 |
| | 908 | 3 3 | ব্রষ্ট | 50 | qe |
| त्रस्येद | 9 0 6 | હ | | 5.3 | રૂહ |
| ऋतु. | 9-3 | دې م | चेतु | \$6 | ر د ن |
| ऋदिवज् | 86 | 980 | | 9-8 | u u |
| ऋदि | 904 | *1 | चेन्द्र | 5€ | 974 |
| ऋक्ष | 56 | | कोमोदकि | 9•6 | € 6 |
| | 908 | 33,0x | कौलप | 56 | 6 6 |
| | , - 0 | \$3,00,03,0° | कौस्तुभ | 908 | 90, 44, 44 |
| ऐन्द्रि | 3.6 | 69,55 | कं स | 908 | 924 |
| ऐसवण | 9 o ly | * | इ क्लास | 5. | [,] |
| ऐरावत | 308 | \$ | कृतिका | 38 | २७ |
| अोप धी | | ₹ ८ | 1 | 908 | فون |
| क्∄िद्रीन | 90३ | 36 | क ृष्टचा | 900 | 5 |
| कन्या | 904 | 2 | | 908 | se, gov |
| कपिल | 5 § | \$\$ | कृष्णमध्यका | 68 | < 5 |
| करवीर | 906 | 84 | Seal: | 9 - 4 | 56 |
| | 90 | 98 | क्षिति - २२ | 906 | બુલ |
| काम —— } - | 904 | بري | क्षीरिणः - ते रे | 44 | 4 |
| यामदेव | 44 | 80 | थीरोद | 908 | 998 |
| | 3 5 | 3×9 | क्षेत्रज्ञ | ₹+₽ | 4 |
| क्षान्ति | 904 | ₹0 | क्षीणी | 106 | 45 |
| कार्तिकेय | 30% | Page as | खात —— | 43 3 | 5, 40, 82, 82 |
| कालभ | 305 | . 44 | गङ्गा | 4.6 | १९ |
| न्धारम | 104 | 7. | | 904 | 14 |

| | अध्या. | श्लोक | | क्षध्या. | श्लोक |
|-----------------------------|-------------|-----------------------------|------------------|-------------|--------------|
| गजवस्त्र | 308 | ४८ | छाया | 904 | ' ৩৩ |
| गरोश्वर | 908 | ४८ | जगिजध्यु | 908 | ३ ३ |
| गणाध्यक्ष | 98 | ४२ | जगत्पति | 908 | 3 |
| गदा | 308 | ४९ | | 906 | 3 |
| • | 88 | ४२ | जगित्रया | १०३ | ३३, ३५ |
| | १०६ | Ęv | जगद्योनि | 908 | ٠ ٦ |
| गर् | ९६ | 44 | जगन्नाथ | 908 | ३२, ७८ |
| गरुड | 48 | ३९ | जनार्दन | १०२ | 48 |
| गरुय | 90 | २६ | | 908 | ` ३३ |
| | ९२ | ۷, 90 | | 90६ | 90 |
| गह्न्री | 40 £ | ξ\$ | | 906 | R |
| गान्धारी | 905 | 922 | जय | 905 | ९०४, ९४२ |
| गायत्री | | ६८ | जयन्त | 904 | ४६ |
| भीष्म | 908 | (4 | जरायुज | 906 | Ę |
| गोधा | ९६ | 92 | जलाध्यक्ष | 808 | २५ |
| गोमय गोमय | 80 | ٠٠ ع | | 9०२ | 9 |
| गान्य गोवर्धन | 98 | 926 | जीव | १०४ | ३८, ३९ |
| गोविन्द् | 908 | ۷, | ज्ये ग्वा | 908 | ८२ |
| गौरी | 904 | રૂપ | ज्व र | 904 | ę |
| प्रह | 904 | 44, 8 \$ | उवा ला | 5 ¥ | 83 |
| ^{न्} र महगोधिका | 903 | 93 | झप | 908 | ३७ |
| महराह्यका चक | 90 | ६४, ६६ | तमोमूर्ति | 908 | ५२ |
| | 905 | 30 | ताल | SY | ¥\$ |
| चतुरस्र | 38 | | तालीसपत्रक | 50 | 98 |
| चन्द्र | दह र | , ६०, ६१, ६२, | ताक्य | 905 | ţ¥ |
| | ६३, | ६५, १०७, ११० १९४, २७, २७ | तीर्थमाह।तम्य | 55 | વ |
| | | 38 | तुरग | 904 | 99 |
| चन्द्राश् <u>व</u> | 904 | 40 | तुला | \$ § | \$6 |
| चमू राणक | १०३ | 994 | तेजोवती | 5 Ę | Y |
| चाणूर सन्तरम | 909 | ٦, ٠ | तोयधर | १०३ | ર્ષ્ |
| चान्द्रायण चित्रगुप्त | 950 | ३२ | तोरण | 36 | 3 |
| प्याप्त चित्रा | 904 | રૂપ | तीतिल | 44 | 200 |
| ' गता | 59 | 94 | त्रिक्रेण | 43 | ર્ |
| विद् | 90X | 30, 35, 88 | त्रिभाग | \$ ¥ | २२,२३ |

| * | अध्या. | श् रेक | 1 | अध्या, | <i>खे</i> क |
|-------------------|-------------|-------------------|-----------------|------------|-------------------|
| त्रिभुवनेश्वरी | 906 | 2.0 | 32- | | *** |
| त्रिविक् म | 9 • 6 | ₹9 | देष्द्रीण | ९६ | 96 |
| निश् ल | 900 | ۷٩,८६ | द्वादशास | 5 € | 300 |
| | ,00 5¥ | 92 | द्वीप | 303 | 3 3 |
| ः तरा | | 35 | धनद | 38 | ४२ |
| स्वष्ट्रा दण्ड | 90% | 40 | • | 908 | 906, 900 |
| 400 | 4 7 | ४२ | धनाध्यक्ष | 903 | 94 |
| | 904 | २२, २८ | धन्वन्तरी | 904 | ५९ |
| दत्तात्रेय | १०६ | 300 | धनिष्ठा | 908 | 45 |
| दर्दुर | 50 | 99 | धर्म | १०५ | ५३ |
| दिन | 304 | २ २ | | 908 | 43 |
| दिवाकर | 308 | २ २ | धर्ममृति | 906 | 5€ |
| दिवासय | 52 | २३ | धर्मश्रज | 902 | 92 |
| दिवीकस | \$ ₹ | 95,20 | धर णीधर | 908 | |
| | 903 | 93 | धूप | 103 | २८ |
| | 900 | 7 | | 903 | • |
| दीक्षा | 30 | 9 / | | 908 | 3 |
| दुर्गा | 53 | 3.8 | | 905 | £, 92, 28 |
| | 5 ¥ | 35 | धूमकेनु | 90% | ب م اوچ |
| दुर्भिक्ष | 900 | , | धूबोर्ण | 904 | ¢ ماوی • • • |
| | 90 | 90 | ध्वज | 44 | 75 |
| देवकी | 206 | 990 | | १०५ | *4, *4 |
| देववुल | 54 | *\$ | नयुःल | 9-6 | 94 |
| देवगृह | 43 | j | नहकुवर | 904 | 111 |
| देवागार | ** | | नदी नदी | | t e o |
| | 65 | | न न्द् क | 9•₹ | 3 C |
| देवाल्य | 58 | | न्दीश्वर - | 30 E | oy. |
| देवतायतन | 65 | | it | 904 | 8 |
| | ९२ | (| ार् क | 900 | 8.5 |
| | 53 | | याश | 55 | \$ |
| देवताचेश्म | 4.5 | _ | भन | 903 | 55 |
| देवेश | 5 \$ | ३५ म | गि | 56 | ४६, ४८ ८७ |
| देवज्ञ | ₹ 6 | \$ [‡] न | गक्ल | 42 | 4 |
| | \$ ¥ | ४ ∫ ना | गर | 196 | े ₹,४ |
| हुम | 805 | ३१ न | गेन्द्र | 9-3 | 53 |
| | | | | • | 7 ' |

| दाद्रदानुक्रमणिका |
|-------------------|
| 71. 71. |

| | | दाब्दा नुः | क्रमणिका | | , 88 |
|-----------------|------------|-------------------|---------------|------------|----------------|
| | अध्या. | श्चेक | | अध्या. | श्लोक |
| नारायण | 905 | ९७ | विद्वेक्षण | 908 | (c) |
| | 900 | ¥ | पितामह | १०६ | 40 |
| नासत्या | १०३ | 8 | पितृ | 908 | ĘIJ |
| निऋ्ति | 48 | ** | विशाच | १०३ | ٧o |
| V | 908 | ८ ३ | पीतसारा | 68 | 93 |
| निदा | 904 | ५ ७ | पुण्डरी सक्ष | 906 | ۱, ۷۶ |
| निधि | १०३ | ६२ | | 900 | 4 |
| निखुम | 904 | 94 | पुनर्वेसु | ९६ | ३१ |
| च् वराह | 908 | ४६, ४८ | • | १०४ | ६३ |
| र्गिह | 904 | ३९, ४२ | पुरोजव | 904 | ५ 9 |
| पद्भवन्धा | . , | 93 | पुरोहित | dog | ३८ |
| पद्म | 904 | 84 | वृर्वेफालगुण | 908 | 5 0 |
| | 908 | ६२, ६३ | पूर्वीपाढा | 908 | ८६ |
| पद्मयोगि | 908 | ₹ | पूपन् | 908 | ્પ |
| परमेश्वर | 904 | 99 | पुष्कर | 54 | * |
| परमेष्टिन् | 906 | 94 | | gold | ४८ ३१ |
| परशु | 48 | 99 | पु ध्य | ९६ | £8. |
| v | 98 | ४३ | | 908 | 4 ° 9 ° 8 |
| | 9 0 € | 903 | पृथु | 908 | 6 |
| पाधजन्य | 9 0 8 | ६१ | वौस्रोमी | 954 854 | 88,84 |
| पाताल | १०२ | ३२ | प्रजाध्यक्ष | ९०४ ९३ | ٦ , |
| पर्धि | १०६ | ११२ | प्रतिमा | 8 É | १३१, १३२, १३४ |
| ६ पाद्य | 903 | v | -851 | ९३ | 4, 90, 99, 98, |
| 14th | १०३ | 3 | प्रतिष्ठा | | ۲4, २२, ۲۷ |
| | 908 | २२, २४ | | 96 | 4, 20, 52, 935 |
| • | १०६ | २ | | 90 | 9 |
| पार्वती | 908 | ३१,४० | | 909 | 9 |
| | 904 | ४६ | 1 | 994 | 9 |
| पाश | 58 | ४२ | | 195 | १८, २०, १०६, |
| | 904 | ३७ | प्रद्युम्न | 905 | 120, 126, 141, |
| पार्षद | 903 | ४२ | | | 146 |
| भिक्र जट | 908 | 4 | | 45 | . 14 |
| विहल | 904. | २३ | प्रमधेश्वर | | |
| | | | | | |

| | अध्या. | ×. | ोक | अध्या. | 477.2° |
|--------------------|-------------|--------------|-------------------|--------|-------------|
| त्रागाचाः | 903 | , | ४७ भत्रस्ती | | श्लोक |
| प्राची | 908 | | | \$4 | 92 |
| प्राजापस्य | \$ § | | | 305 | ५८ |
| प्र.पृट् | 54 | | ≀ऽ मीम | 5.6 | २६, ६३ |
| प्रोष्टपा द | 54 | | 10 | 993 | २८, ४३ |
| बलि: | ۷۹ | | ।० मकर | 28 | *• |
| बव | 4.6 | | . • | 9 - 6 | 44 |
| बालव | | | प मिषा | 30% | . ६८ |
| बिन्दु | 5 \$ | 2 | | 305 | فإن |
| विल - | \$0 | • | ७ मण्डल | 50 | 4, 90, 93 |
| विन्व विन्व | ٥, | | ٥ | 48 | 9 % |
| থী জ | \$ ₹ | | ५ मत्स्य | 905 | 59, 52 |
| | १०२ | | भघु_ | 63 | 2,9 |
| युध | 55 | २६, १२५ | | 904 | v |
| 22 | 908 | ३ २ | | 306 | 9 |
| म द्भ | 95 | ঽ | मध्यफलाः | 43 | 99 |
| ब्रह्मन् | 308 | *4 | ्रम तु | १०३ | २७, ५३ |
| ब्रह्मचारी | ९७ | ४२ | į. | 203 | 43 |
| नदा - | 5 ¥ | Yo | मरत् | 903 | 93 |
| नाद्मी | 50 | 94 | म'हिप | 904 | २७ |
| भग | 808 | 45 | माञ्जिष्ट | 50 | ** |
| भद्रवाली | 5.€ | 69 | मादेश्वरी | ₹0 | 14 |
| भूघर | 303 | 39 | मित्र | 54 | 3 \$ |
| भक्षतक | 88 4, 9 · | , 19, 92, 94 | मिथुन | ₹ € | \$ % |
| भरत | £ 0.5 | 906 | मिहिर | 3.6 | 923 |
| भ (णि | Por | • | मीन | ९६ | 30 |
| भार्गव | 908 | ** | मुस्तक | 50 | 35 |
| মা ण्ड | 40 | | सहत | 9 ◆ ₹ | ¥\$ |
| मास्कर | \$0 | 1, 7, 90 | मूर्ति | 5.4 | ৰ |
| -11(41) | 55 | 4.2 | मूल | 104 | 64, 64 |
| | 9.8 | 103 | 0-1 | 54 | રૂહ |
| भीम | 105 | 111 | मू यक | 50 | 18 |
| | 44 | 111 | मृ ग | 3.8 | *1 |
| भुजग भज्जन | | 6 | मृगला इहान | 968 | ** |
| भुजनम | \$0 ' ' | 42 | म्गराज | 308 | 16 |

| | | श्लोक | | अघ्या. | श्लोक |
|-----------|--------|---------------|-----------------------|------------|-----------------|
| | अध्या. | | T.2" | 903 | 6 : |
| मृत्यु | 904 | 39 | रुद | 908 | ६०, ९१, ९३ |
| मेप | 96 | 98 | *Ortal | 43 | 6 |
| मैथुन | 94 | ٥ | रूपक | 30 | 6 |
| मोद | 905 | JAR | रेखा २च | 908 | 96 |
| मोहन | 908 | ५ २ | रेवती | 904 | પે ર |
| यजमान | 908 | ५, ११, ११७ | रेवन्द | 908 | 40 |
| यजुर्वेद | 906 | 60 | रोहिणी | 908 | 89 |
| यजुस् | 908 | . ३२ | लम्बोदर | 908 | 906 |
| यन्त्र | 9 € | 939 | लव्ण | 704 908 | 900 |
| यम | 908 | 96 | लक्ष्मण | • | २ १, ३२ |
| यमुना | 904 | 3 4 | ल ६ मी | 908 | ۷۰, ۲۰ |
| यशोदा | 908 | 996 | _ | 900 | 96 |
| यशमृति | १०३ | બબ | लोककान्त । | ९६ | ₹८, ४४ , |
| | 908 | ¥ | होक्मात रः | ૧૦ ર | ४२ |
| यज्ञयोनि | 903 | 3 | वञ्च | ९४ १०४ | 973 |
| यज्ञवाह | 903 | 3 | | | 90 |
| यज्ञेश | 908 | R | _ | ५०५ ९१ | 98 |
| याचक | 308 | २ | वज्रलेप | 45 | 9, 4, 0 |
| यात्रा | 990 | 9, 2, 3, 4, 0 | | 96 | ۷۲ ر. |
| यादव | 906 | २१, २५ | वणिज | 308 | હ્ય |
| याम्य | 56 | 80 | वनमारा | ८९ | 3 |
| याज्ञसेनि | 908 | 994 | वनस्पती | 94 | 9 |
| युग | 903 | ५२ | वन्दाक | 900 | 3 |
| युधिष्ठिर | 908 | 990 | वराह | 906 | 88, 49 |
| रक्तसारा | دع | 93 | | • • • | ** |
| रति | 904 | ५६ | वर्ण | 908 | २५ |
| राजस्य | | 96 | वसु | 58 | १७ |
| रात्रि | 4.5 | 23 | 49 | 9-3 | ч |
| | 904 | 902, 904 | वसुमद | 9=5 | 122 |
| राम ** | 905 | 1 | बसुधा | 904 | ५९ |
| राशि | 34 | чо | वसुन्धरा | 700 | ٦ |
| राह् | 408 | 75 | वर्षा | 405 | \$6 |
| राही | 304 | 420 | यहि | 54 | AŚ |
| रेकिमणी | 904 | 17. | , , | | |

विष्णुवर्मीत्तर

| | अध्या | ra ⁷ | कि 📗 | अ या. | ^{क्र} ीक |
|-------------------|-------------------|-----------------|---------------------|--------------|-------------------|
| वाङव | 903 | | ४ विष्णु | | लाव |
| वातप्रभग्न | 48 | ء ع | | Jos | ₹४ |
| बह्धश | 90 | | | 906 | ३०, ८५ |
| बान्मी रि | 908 | 9 | | 906 | ₹, 5, ₹9 |
| वायु | 5 ¥ | 90' | 32 | 913 | 9 |
| G | 908 | x . | 1 | 998 | 9 |
| वासुदेव | 900 | U | | 994 | 9 |
| | 900 | • | | 995 | 9 |
| | 91 € | | 1 | 790 | 9 |
| | 3, 4 | रे, १२४, १४१ | | ₹ € | 68 |
| | 904 | 943 | | 43 | २५ |
| वासपर्यय | | 9,८२ | | १० ३ | 86 |
| वामर् | <i>د</i> م و م | 9 6 | , | १०५ | u , |
| वासव | १०३ | પ ૧ | इ धिम | \$ \$ | 5 Ę |
| नारन <u>ु</u> | \$ \$ | ફેટ | रुप | ع د بر | ર |
| वाहन | 48 | १५, १६, १९ | च्यम | 5€ | \$Y |
| विध्नहर्ता | \$ ¥ | ३६ | 3- | 900 | \$ |
| विपोश | Jok | 85 | वेदा | 904 | २६ |
| विजय | Jek | 75 | वेरम वैद्र्य | ۷۹ | २६ |
| विनाय क | 905 | १४०, १४३ | विध्न विध्न | Jos | 3 % |
| ावनाय रु | 48 | 9 | | 4 6 | 80 |
| | 54 | 44 | वैवस्वत | 28 | A3 |
| Cont | 308 | १२३ | वैभवण | 308 | 906 |
| विद्यु ध्य | 300 | b | वैश्वदेव वैष्णवी | 4 6 | ३७ |
| विमावसु | 908 | ٥ | प्रकावा | 90 | 14 |
| विभु | 400 | 64 | व्यतीपात | • ६ | ३, १३१ |
| विरुपाक्ष | 904 | 33 | व्यास इयास | \$ \$ | YU |
| विशाखा | 908 | 4 | व्याहित | 9 - 5 | 905 |
| विशाल | 306 | 480 | शक | 908 | y e |
| विश्वरम् | 5 ¥ | 3 | W | 98 908 | ४३ |
| विश्वदेवा | 9 = \$ | ę | | 308 | 15 |
| बिपमा | 54 | रेभ | शरुन | 54 | 4 3 |
| चि ष्णु | \$¥ | 1 | शक्ति | 48 | د د د د |
| | 903 | | बंदर | 108 | ¥₹ |
| | | • | | ••• | §• |

| | | | | | _ |
|---------------|-----------|-----------------|----------------|-------------|------------------------|
| | अध्या. | श्लोक | | अध्या. | श्लोक |
| शची | 908 | ३८ | शेप | 908 | २० |
| | 904 | 6 | शैल | 903 | ३० |
| शल्य | ९५ | 9 | शोभा | 904 | २१ |
| शशाङ्क | 908 | २७ | भ्रवण | ९६ | ३८ |
| | 904 | २० | पण्मुख | 908 | 30 |
| शह्च | gay | 88 | सगर्भ | 80 | 99, 90 |
| VI | 908 | Ę٥ | सङ्कर्षण | 88 | 80 |
| शतमिपा | 908 | 90 | | 905 | १४, १६, ३६, ३३७ |
| शतुष्न | 908 | 906 | सर्ज | 65 | ' |
| राख्न | १०३ | ५७ | संस्यभागा | 908 | 933 |
| शस्त | ९६ | 96 | सन्धा | 904 | २४ ६५ |
| शस्ता | 90 | २ | सर्प | 908 | d o |
| | 89 | ٦ | सप्तजिह्ना | 908 | 90 |
| | 43 | ३१, ४१ | सप्तार्चिष | 908 | १५३ |
| | 58 | y | सर्वेग | 905 | ₹ <i>&</i> 1,74 |
| शाकी | 90 | 94 | सवल्भीका | 6.5 | Ę |
| शाईक | وبم | 6 | स्वत्सर | 990 | 38 |
| शाई | 9०६ | ৩৭ | सञ्चम | \$ ₹ | 9 |
| शिला | , , ९० | १, १८, २२, २३, | सरस्वती | १०० १०५ | 46 |
| | • | २५, २७, ३० | | 303 508 | 49 |
| | 59 | ९२ | > - | 908 | 998 |
| | 9.8 | ११, १३, १९, २०, | सहदेव | 908 | ३७ |
| | | २३ | सहस्राक्ष | 908 | २ २ |
| शिविका | م د لام | 85 | सहस्राशु | 4.8 | * |
| शिवा | 904 | 80 | सारवत | 908 | ĘS |
| शिशि र | ९६ | 98 | साप्रत | 908 | ३ २ |
| शीताञ्ज | 908 | 3 3 | साम | | 939 |
| য়ুক | 96 | १२३ | साम्ब | 908 | 303 |
| | 98 | २ | सितजीवेन्दुपुन | 4 | 92 |
| | 908 | ४२, ४३ | सिद्धपूजा | 43 | 25 |
| शुक्रसारा | 48 | 45 | सिधाः | ९०३ | 35, Y 9 |
| राषिभारा | 53 | ३७ | सिंह | 58 | 43, 54 |
| श्ल | 964 | 3 | l | 24 | |
| | | | | | |

| | अध्या. | ভ ী | Б | अध्या. | श्लोक |
|------------------|-----------|------------|-------------------|------------|-----------|
| सीता | 906 | 991 | स्वर्लोक | | |
| सुतप्त | 53 | | ſ | 300 | 90 |
| सुदर्शन | 906 | | | \$\$ | \$ 04 |
| सुभगा | 44 | Ęu | | 3 0 % | vv |
| सुरगृह | 43 | 35 | | 400 | २५ |
| सुरा लय | | ३ ० | स्वेदन | 906 | • |
| इरा ल्य | 3.8 | 9 | ह्य | 904 | 11 |
| 3 | 996 | , 1 | ह्ययीव | 306 | 96 |
| सुरेश्वर | 9 0 € | थु७ | हर | 38 | 38 |
| मुशिरा | 63 | 4 | | For | ¥₹ |
| | \$3 | 30 | | 908 | ¥3 |
| | 44 | ` ` ` ` ` | हरि | 904 | 56 |
| • सूर्ये • | ९६ | २५, २८, ६० | हविष्याशी | 50 | 3 |
| सूर्यनन्दनौ | 903 | Y | इ स्त | y o y | νą |
| सीनन्द | 908 | | हिमादि | 908 | 115 |
| सीमद् | 906 | ya | हिरण्यवर्ण | 55 | 2 |
| सौर | | 133 | हिरण्याक्ष | 904 | *4 |
| स्कन्द स्कन्द | 56 | २७, ७२ | हुताशन | 908 | 4, 44 |
| Lising | 48 | 4.5 | हेंमैत | 46 | 36 |
| | 9 = 3 | 89 | हैम | 50 | 10 |
| ***** | 908 | हे ० | होस | 5 Y | 16 |
| स्थपति | < 5 | २, १८, ३० | | 101 | 1 |
| | 9.0 | 1 | होरा | 56 | 36 |
| | 28 | ٧, २६ | इंस | SY | ¥• |
| स्थावरेश्वर | 903 | ₹ 0 | | 904 | 34 |
| स्वर्गाजिन | 735 | ¥ | | 306 | ** *\$ |

श्रोकपर्क्ति—अनुक्रमणिका

| | | | | | | -641 | | | |
|--|--------------|------------|--------------|-----------|---------------------|-----------|-----------|-----------|---------------|
| 879277a C | 3,641 | की | , | ā |) | | अध्या | श्लेष | ā |
| अक्षमारा तिशूर च | ওপ | 5 | 9 | ९७ | अञ्जलिध क्षेतः | 4 | ३६ | 4 | υų |
| वजमा गवरक्रा | ξŞ | 6 | 9. | دع | अरातमध्यपर्य-त | | 908 | ૨૧ | |
| ^{क्षमाला} स्पृत वार | ७७ | ų | 2 6 | ı J | अज्ञानध्या तमातः | | ०६ | ४३ | ३२३ |
| व गाल निश्च च | ५६ | Ę | 94 | - 1 | अञ्चित यत्र जहचे | | २३ | | ३२५ |
| अभारा सीरिको उभा | ९५ | , V | ३७ | ſ | भावती पूर्परासी | _ | - | '9 | <i>ે</i> પુંહ |
| ^{अप्रमृ} त्विप र्कि | ۷٩ | २६ | 34 | | अज्ञता कृषेराभ्या | - | २६ - | | ८१ |
| ^{क्षेत्रा} खा जवस्त्राचीटा | 90 | `* { | | - 1 | | - | २६ | ७९ | ८२ |
| ध्य मुख प्रय नम | ، د ع | • | 3 4 | 1 | यद्वित शक्ष्यास्य च | | | २७ | ४९ |
| वैद्योरस्य स्मृता सुद्रा | | २४ | ३५ | 1 | अत पर प्रवक्यामि | | | ५६ | 83 |
| अट्युराप्रहणालाग | 3 3 | ५९ | २९ | Ĺ | 12 | | 13 | 9 | न् ७ |
| केहदी बद्धकेयूरी | 23 | २७ | ९० | | " | | | १९ | 80 |
| भेजनगण्यसावश्च | ۷4 | 8 | १२२ | 1 | 27 | | 4 | 3 | 80 |
| ^{अनुप्र} दमानेन | ₹ 9 | Ն Ա | 909 | ſ | 27 | | ٩. | 7 | ९७ |
| ^{शहरव} भाउनेपथ्यो | ३७ | 9 | 939 | | 27 | ર | Lą. | 9 | १२७ |
| ^{ला} न्हारीजिनिदेश्या | २९ | 99 | 96 | 1 | 29 | 8. | र ५ | ৬ | 9 ላ9 |
| भिहारे सुक्तिते | २८ | ४७ | 68 | } | 1, | 9 | f | 9 | २५७ |
| वन्दी स २ | ۲¥ | 3 | 328 | | ,, | 5 | ₹ ' | 9 : | २५९ |
| बर्टी हो नरात्क्षाम देराज्य कर | ફે ૭ | ₹ | 454 | ł | त पर मण्डल स्या | त् द | ₹ ' | ₹. | by |
| ^{देहगुल्य} सहता सर्वा वेदगळ्या : | ३३ | ४९ | ११६ |) अ | त शेपेषु गानपु | 34 | | 9 | 133 |
| वेदगुल्या धार्येतास्मन् अवस्थारे - | £ £ | ሬሄ | 998 | અ | तसी सुममद्याम | 208 | • | • | vo |
| ^{अ=्गुल्यो} यस्य हस्तस्य | ₹ ६ 1 | 44 | 60 | 1 | ारत्यसक्तमन।पि | 80 | 2,8 | 3 | ԿԿ |
| elaste no | 36 3 | હ | وي | 1 | तेना नाभिगयन | २४ | € ३ | • | Ęų |
| अन्यत्या असता सर्वा अन्यत्या | ३२ | 4 | 197 | अरि | काता । चित्र च | ₹0 | २४ | 3 | 6 \$ |
| थ गुल्यान् इता सर्वा | ३३ ६ | v | 996 | | हुभ्भा वृषस्था च | ξυ | ३८ | २० | , ર |
| अहुरम्न चतुर्भाग | ३५ १ | २ | 326 | अति | रृष्टिहर प्रो∓त | 990 | R | ३५ | . 4 |
| व शो च तन्था | 3 हे इ | 8 | 998 | | शक्री च विथिता | 3 | x | | Ę |
| बर्णास चर्ना रावा | ₹3 ¥ | હ | | | ता मनव कार्या | 90 | 4 | 95 | Ş |
| ्रिंग भेरत प्रत्या : | देवे प | | | | व लियत एइमा | 38 | 90 | 93. | ጻ. |
| द्धार∤त स्टब्स् | 6 c) | | | | द्वेषु स्ववस्थाप्य | ą | 93 | • | 9 |
| ा विधिक मट | 50 91 | | - 1 | | भगवतानेन | * £ | ٩ | 95: | , |
| Titler was a | | | 92 | | ममय रित्यार् | २७ | 90 | د ع | |
| ५ व्यस्तरम् ३ | 3 394 | 5 | १२२] | अन्तर | स्द । यरद | १०२ | 4 | 480 | , |
| | | | | | | | | | |

| | =ग्रमा | श्लोक | Ą | ļ | अध्या, | , श्लोक | ā . |
|------------------------------|----------------|------------|-------------|--|------------|------------|-------------|
| अलर्थं तरष्ट्रत र।जन | 9 6 | • | 39 | अनिर्णात प्रतिरानां | ঽ৬ | 30 | 20 |
| अत्यन्तोपहता रक्षाम् | 90 | و | 248 | अनित्य सशियो दृष्ट | 3 | 98 | 39 |
| अलप्रिसत्त छदध | Ę | eş. | Ę | अनिरुद्ध गण शित्र | 906 | 949 | ३३५ |
| अत्र सात्वतामुच्या यै | 60 | ४३ | ₹ ४ ५ | अनिरुद्ध रागभ्येहि | 906 | २४ | ३२४ |
| अथ चैवास्य वते॰या | ६८ | Ę | १९३ | अनिरुद्ध त्वप्रस्यहि | 905 | १३० | ३३३ |
| अथवा चार्य कर्त या. | ٥v | 2 | 306 | ानिस्टम्य ा₁होर्याः | ४७ | 93 | 954 |
| अथ वा पाधिव श्रेष्ठ | 20 | ४३ | २ ४६ | अनिरुद्धस्य मिह्नैया | 64 | 3 3 | इर्प |
| अशाहहारान्य ६यामि | 2 ه | 36 | ४९ | अनर्त्तीर्णप्रतिज्ञाना | २७ | * 9 | 66 |
| अथाती रूपनिर्माणम् | 49 | 9 | 9८३ | अनेन कथा स्थानेन | २३ | 93 | 46 |
| अथात सप्रवस्यामि | v | 9 | 94 | अनेत्व च हपेण | ξv | 90 | 309 |
| अथ। स्विशासी हप | 60 | 3 | २१४ | अने नेव तथा कार्यम् | २६ | *3 | 48 |
| अथो वार् सप्तधातुध | Ęc | ų | 363 | अननैव तु हपेण | υ३ | V, | २०० |
| अदृष्टे तु तथा स्वप्ने | 90 | २८ | २५ ६ | अने नेवानुसारे ण | ३५ | 90 | 120 |
| अदितिध दिनिश्चेय | હરૂ | ¥ | २०० | अनेनेव प्रकारण | 80 | 90 | 989 |
| अधिका शोकतननी | ₹ ८ | 94 | 938 | अनेन्य विधाने। | 88 | \$8 | २६९ |
| अधिक च स्वरार् उज्ञ | 3 | 96 | v | अनेन विधिना ऋरपा | 994 | 9 | ३५१ |
| अधोगुखम्धित चापि | 28 | 97 | ६९ | अनेन विधिना कृवा | 995 | २ | ३५३ |
| अधोसुखीना सर्पासाम् | २६ | ३६ | ی | अनेन विधिना यस्तु | 990 | 9 | ३५४ |
| अ धोमुखास्तु वै तिस्र | 33 | ξZ | 990 | अनेन सम्यग् विधिना | 50 | ३९ | ३५६ |
| अघोमुखे रियत चैव | 33 | ų | 43 | अनिधर्य महामोह | 905 | 80 | ३२६ |
| अयोमुखोत्तानत ल | २८ | 44 | 34 | अन्त >देशन चैव | 30 | ७ ३ | પ ર્ |
| अधीमुख सिन यासी | २८ | ¥ ዓ | ९३ | अप्यतिक्रेडथ वर्तन्ते | 33 | 3 | २९ |
| अघोनिरीक्षिते नाथ | ₹८ | 45 | 44 | स तरिध तथा पद्म | ৬২ | u | २०६ |
| अध्यर्ध भ्रह्माट च | 38 | 99 | 9३७ | क तर्हशा मही वार्या | 63 | Z | 552 |
| अध्यर्धशेषां च वटी | 38 | 95 | 930 | अ तर्वेदि ५दिवेदि | 3 | 3 | 3 |
| अनन्ते वियुत्रे दिव | Jos | २० | ३०५ | अज्ञयहोत मपूज्य | 398 | 3 | ३५० |
| अवन्त सर्वेग नाय | 900 | 3 | रुइ७ | अप्यमिश्री न वर्तव्यी | 24 | 4 5 9 | २४१ |
| अनवस्थिततारा च | २५ | 96 | ٤٥ | अन्यरूपस्य चार्थस्य | 18 | v | 3 3 |
| अन्धि शिएरोपेतो | ۶ ۾ | १२८ | 288 | | 40 | 140 | २०४ |
| अनाकारे महाराज | 900 | २३ | 583 | | 3.8 | 48 | 426 |
| अनादिवारण तन | 906 | २१ | ₹४• | अम्येप्यनुस्ता कन्ध्याः | εĘ | 44 | 2 \$ 13 |
| अनादिमध्यनिधन | 306 | 97 67 | ३४० ११६ | अ वरशवणीय तु अ वेपामपि दवाना | २८ | ५९ | 94 |
| अनामा मध्यमे हेनु | 4 3 | 5 8 | 920 | अन्येषा देवनाशाताः अन्येषा देवनाशाताः | υ ξ | 9 | 200 |
| अनामिका गूलगा तु | \$ \$ | 2 0 | 11-1 | ा जना अन्यामित्रश | 36 | 144 | २८६ |

| | अध्या क्रोह | ъ у. | | थध्या, श्री | क पृ. |
|-----------------------|-----------------|------------------------------|---|------------------|------------------|
| अस्मयुषपदे चैव | २ १७ | ሄ | ं ,, दक्षिणा | | • |
| अरष्ट्रभूतल सेव | ३२ ५० | فرنع | 77 414(4) | dog dos | • |
| अस्याहुन्यस्तु विरहा | | v.c | | | |
| अस्य चयोपगमनात् | 28 48 | £ 3 | 2 2 | | • |
| अस्य वामा तु संये।ज | , - | 998 | ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, | १०३ ५९ | ३०३ |
| अस्येत दक्षिण पादं | 23 99 | 42 | 7 | १०६ १०८ | \$ \$ 8 |
| अहमादाहयिष्यामि अ | • | -76- | 2000 | ९०५ ४२ | ३१९ |
| | १०६ १२९ | ३३ ३ | ,, सर्वा | १०३ ६० | \$03 |
| ,, ভহাঃ | 904 80 | स्वर ३२१ | ,, सहदेव | १०६ १९४ | ३३२ |
| | dod so | | ,, स्वेपतनी | १०५ १७ | ३१७ |
| 2 ~ | 904 8 | ३९७ | ा, सीभद्रम् | 1< £ 455 | \$\$8 |
| en men | ૧-) ક ૧૦૫ ૪૭ | ३१६ | अहर्निश शक्रसिक्ध | 93 6 | २९ |
| ⊒6171. | 203 20 | ₹₹0 *** | आराशनी सा भवति | , , , | २४१ |
| -8 | gok ko | 34, | अपुनितं सम चैर | २५ ३३ | 90 |
| ~~ | १०५ ५९ | 37.a | आउच्चान्मरिते | ३३ ६२ | 990 |
| | 10 £ 388 | રે ૧ ૧૧ | अ शिप्तरेचित शिप्त | २० ४३ | 40 |
| | १०६ १३६ | | आनच्छ चाप वरद | १०६ ५२ | ३१८ |
| arameri. | 304 35 | ₹ ₹ ४ ३ १ ७ | अ गच्छ खबराहेह | १०६ १८ | ३०६ |
| 277 | १०५ १९ | 390 | आगच्छन्ति वृरोगेऽहि | | २६२ |
| | 306 837 | Į. | आयच्छिति प्रतिष्ठापु | 63 50 | ÷ ६२ |
| ,, दबका ,, धर्मपुत | 304 390 | ्रदेर दे३द | आगन्द्र सुसलाचेह | 906 03 | १२८ |
| ,, ๆเช้ | १०६ ३१२ | ₹₹ ₹ | आगच्य लाहराधेद आगच्य वरदे छद्दिम | gos vo | ३२८ |
| ,, पिङ्गले | १०५ १३ | 390 | आगच्छ धर्नचैदेह | १०६ ३० | 3 o A |
| ,, पुरोजन | govy vg | 330 | आगच्छ यनपद् अ गच्छेह द्वतिहास | 9º६ ሬ፡ | \$ 2 6 |
| ,, प्रद्युम्न | 904 904 | 339 | आगार।रमे। भव-येव | १०६ ४२ | ₹° ₹ |
| ,, प्रशुम्न | १०६ १२७ | 333 | आग्नेयमेनश्चनस्यमुक्तं | < 9 98 | 2 3 9 |
| ,, भीम | 9-5 799 | ३३२ | आक्रेय च सगायास | ५६ १० १०४ ११२ | 9 94 |
| ,, मन्धेरं | १०६ ५३ | ३०२ | आघातस्ना भूविध | | 19 * |
| ,, मुहूतन् | 902 85 | 1 | भाचन्द्रार्क स्थिता सीरे | • • | 5 £ & |
| ,, यमुन | १०५ ३९ | | आचक्ष रुपनिमणिम् | | २७६ |
| ,, यशोदो | 104 196 | 1 | अस्वि हर्ष रक्ष्मा | €4 9 ८२ 9 | 946 |
| ,, युद्धान | १०६ ११२ | | आतपे तारतथा शुक्रा | 49 W | 399 |
| ,, सर्वा | 103 83 | २०० : | भाते।चं मुहि धर्मरा | रे ७ रे | २५७ ३ |
| 🥠 स्हमग | 904 900 | 139 3 | आतोच ये। म जानाति | २ ६ | ર |
| | | | | , 4 | 4 |

| | अध्या. | स्रोक | ā . | | ⊰₁ ∢₹ | स श्लेष | ह ह |
|-----------------------|-----------------|----------------|-------------|---|------------------|--------------|---------------|
| आवाह्याम्यहं देव | 908 | 99 | ३१२ | आवाहियण्यामि तथा | हरस्य | | |
| आवाहयाम्यह देवं | 905 | રૂ | ३२० | | 90 | 3 % - | 309 |
| आवाह्य।∓यह देव | 905 | 98 | 323 | आवाहियम्यामि दिश | | - | ₹ 9₹ |
| आवाह्याम्यह देव | 905 | ə ર | ३२४ | | | | 305 |
| आग्राइयिष्यामि तथा वि | सिरान् | | · | आवाह्यिष्यामीन्द्राग्नी | | | \$40 |
| 1 | 903 | 3¢ | 255 | भावाह िष्याम्यजिताः | | | 200 |
| आवाह्यिप्यामि तथा च | तुर | | | आवाहियप्याम्यदिति त | | ` '' | • |
| | 9०३ | ર્હ | ३० १ | | 903 | r ६ २ | ३०९ |
| आपाइविष्यामि तथा वे | • | • | | आबाइयिष्याम्यर्य ^{म्} णम् | | | ζ-• |
| | 903 | & > | ३०९ | | 308 | ן ט | ३९० |
| आवाहियप्यामि तथा न | • | | • | अ वाह्यिष्याम्यादित्या | | _ | 356 |
| | १०३ | ΥĘ | 300 | आ ग्रह्यिप्याम्ये पृथ्य | 903 | | 300 |
| आवाइविष्यामि नधा प | धम बत्सर | ान् | | आवाह्यिध्ये गम्धवीन् | , | | २९५ |
| | 903 | 49 | ३०२ | आवाइयिप्ये नकुछ | • | 993 | ३३ २ |
| आवाइसिष्यामि तथा प | ातालान् | | | आवाहियप्ये महिप | ५०५ | _ | ₹9∠ |
| | 903 | ३२ | ₹0₽ | आबाह्यिये वरद | 904 | | ३२० |
| आवाह्यिप्यामि तथा पि | शाचान् | | | 11 93 | 908 | e é | ३२४ |
| | FoP | 8. | १०१ | ,, वरदो | 304 | 40 | 329 |
| आवाहिययामि तथा मा | नरो | | | अवाहबाम्यह देव | 9.8 | 9 | 308 |
| | 903 | *4 | ३०१ | आवाहितानां क्तंव्य | 908 | 996 | 338 |
| आबाह्यिप्यामि तथा रा | धमान् | | | थावाहितापि वित्रन्द्र | ३८ | २३ | 934 |
| | 903 | 98 | 344 | आयाहिता सलिहिनास्तु | 906 | á đ | 349 |
| आवाहियिध्यामि तथा रेव | न्द | | | आविद्रायमंच्याख्यी | ₹ € | \$ | ७५ |
| | 904 | 42 | ३२० | आदें। चेत्र हर्रे | 35 | ч, | 50 |
| आबाइदिष्यामि तथा वर | | | | आवेगे। जहता हर्षे। | 3.1 | ورم | 300 |
| | 903 | २२ | ३०० | आप द समहागरव | 906 | १३८ | \$ 3 ¥ |
| आबाइयिष्यामि तया वि | | | _ | आयाड देवदेवेस | ८५ | ३६ | २२५ |
| 5 - 5 | 9 - 3 | 90 | 335 | आमत्तपटिना मीण | 4 | ३७ | २०१ |
| आवाइयिष्यामि तथा सम् | | 21- | 3.0 | आमधा च विज्ञृष्टा | 34 | 94 | 3.6 |
| आवाह्यस्यामि तथा सब | १०३ १ | 34 | 300 | आधर्येत्यु इनयने। आधित्य महिमां प्राप्ति | ৬९ | ą | 292 |
| आवाह्ययम्याम तथा सव | 1न् १०३ | 45 | 309 | आध्य न महमा प्राप्त आध्यिन नारामाप्तीति | 306 | ₹ | 344 |
| आगाइयित्रामि तथा स्व | _ | 4 > | 4-1 | अहिंबुम्ये र ङा निष्य | ९६ १ ६ | 31 | २७५ |
| न्नामाह्यय गाल समार् | | ¥ 9 | 209 | कारियुष्ये हहा स्तीता | • | , | ₹ ७ ४ |
| | | - • | 4-1 | ILITY IND E. Chi. | 38 | 42 | २७७ |

विष्णुपर्मात्तर

| | शच्या | . श्रीक | ₹. |] | क्षस्या | . श्रोक | ā. |
|-------------------------------------|-------------|-----------------|-----------------|---------------------------------------|--------------------------|--------------|------------|
| एतापडुक्तं चृप मृत्तशास्त्रं | 23 | 928 | 923 | एवंविधे देवगृहे निविश | य ८४ | 14 | ₹५• |
| एतायदुक्तवा ता देवी | ₹¥ | 96 | 934 | एवंविधेषु वार्वेषु | 35 | - | 30 |
| एताबदुक्त्वा ब्रह्माणं | ३४ | 98 | 934 | एवंविधेऽन्न नासादे | `` €\3 | | २४६ |
| एताबदेवाभिनये तु तुभ्य | | Ę¥ | 44 | एवं दि प्राया बनसंप्रदे | | | 243 |
| एतासा चेष्टिताकार | 90 | • | ४२ | एवं हि रात्तमा जगता | | 4.1 | ~74 |
| एते कला कीशरसंप्रयुक्त | | • | ٠ ૪ ૨ | , , , , , , , , , , , , , , , , , , , | 43 (1) | 9 ម | 295 |
| एसे च वामुदैवस्य | 80 | 9¥ | 964 | एवं शाखा शुभ काल | | 930 | 264 |
| ण्ते प्रशस्ता विह्नेया | ¥ \$ | | २५२ | एई जेयाः वराः सर्वे | , , , , , | 74° | 49 |
| एते विशेषयान्त त्वा | 900 | 93 | ३३८ | एप कार्यः सदा पादः | 7 8 | ५९ | Ęų |
| एते ये संयुता हंस्ता | २६ | Ŷ | | एप अचारसम्बारे | 38 | 49 | 43 64 |
| एवेषां खछु सर्वेषाम् | 83 | 30 | 946 | एप प्रहारप्रहण | 3. | 4 1 9 4 | ۱٦ 4 |
| एतेषा चैव वश्यामि | ₹0 | Yo | u, iq | एव ग्रहारे व्यायामे | 7 9 7 6 | 77 74 | 9 t |
| एतेपा समयेताना | 53 | ₹ | ३५९ | एपा सुद्दा महामुद्रा | 33 | 992 | 932 |
| एतेषा संप्रवक्षामि | 20 | રૂપ | L, o | एपा मुष्टि तनः कृत्वा | २२ ३३ | 117 | 923 |
| एतेष्येत्र तु सर्वत्र | 25 | ¥ | 30 | एवा वशहमुदा द्व | 44 33 | \$ 5 | 920 |
| एतैरभ्यु रियते हैं या | २० | _ | 85 | एवा पृष्टे जगत्यूर्व | ۲٦ د ن | 3 | 2¥3 |
| एकनायकसंयुक्त | 90 | è | રૂહ | एहानन्त महाभाग | 906 | ٠ ٦८ | 328 |
| एकेक्स्य तु वर्णस्य | 38 | 9 | 39 | एहि कृष्ण महाभाग | | 926 | 3 3 4 |
| ् मिळेंपितमस्मानं | 50 | २० | २५ ५ | ,, खद्र ममाधेप | 905 | UV | 333 33¢ |
| एवमध्येन संयुक्ता | 33 | 909 | 929 | ,, देव विष्णाक्ष | 908 | 4 | 399 |
| एवमन्यसमेताना | ٠ ۾ | 940 | २४२ | ,, मूल महाभाग | 908 | 24 | 399 |
| एवमुक्तस्तदा विष्णुः | 3.8 | • | 93¥ | ,, मे क्पिलायह | 906 | 84 | 126 |
| एवमुक्तवा तथा तन | 45 | 96 | २५२ | ,, से पुण्डरीमाध् | 905 | \$ | 322 |
| एवमुन्यादितं नृतं | 38 | २9 | १२५ [| ,, मे रानबहुले | 908 | २२ | 3=4 |
| एवमेव वुधैज्ञीया | 96 | 3 | 8.8 | ,, राम सह।भाग | 906 | 1 2 ¥ | ३३३ |
| ' | 904 | २७ | ३४१ | ,, विद्वारियल | 306 | υĘ | ३२८ |
| एवं कृते देवगृहे नरेन्द्र | 5 Y | ኢ 3 | २७० | ,, सङ्क्षणाचित्य | 908 | 9 € | ३२३ |
| एवं सोरणविन्यासे | 36 | 9 | २५१ | ऐकारथ तथीकारः | • | Ę | 94 |
| एवं(१व)मध्येन संयुक्त। | | | 929 | ऐकाहिको ह(? धी)प्त रसं | 196 | २६ | 35 |
| एवं रूपक विन्यासं | 59 | 92 | २५८ | गृह्र इस्पनिर्माणम् | CA | 9 | २३० |
| एवं लोगेपचारेण | 70 | ** | 63 | एंड्र हप किंतं मयैतत् | | 94 | २२१ |
| एवं विधानविहिते | 20 | ^{भु} ष | 280 | ऐन्द्राग्ने कर्तृनाशाय | | ₹ 6 | २७७ |
| एवंविधाश्च प्रयिता | ۲۰ | 94 | Y / | एन्द्रामी नारामाप्नोति | 5\$ | 6 | २७४ |
| एवेविधा सशुक्रारा | 9 13 | 15 | 14 | ऐरावतग धर्मज | 308 | ₹८ | \$ • v |

| | अध्या. | श्लोक | ā. | j | अध्या. | . श्लोक | ą. |
|---|------------|----------|--------------|---------------------------|--------------|------------|--------------|
| एरावति समुद्भेदे | 24 | ५२ | २२६ | कमण्डलु: पलाण्डुश्च | 93 | ه و | ३७ |
| ऐशाने तु ततः क्रोण | ९४ | २० | २६७ | करजाःयान्यसंयागात् | 33 | 90 | 993 |
| ऐरान्यादिकमाः कार्याः | 60 | २४ | २४५ | करजास्तु रमृतास्मवी | 33 | وں | 996 |
| ऐशान्या दिशि यः कुम्भः | 308 | 990 | 393 | करमध्यस्थिता होता | 33 | 93 | 993 |
| ऐ धर्मतिगम्भी रं | 908 | ५५ | ३२७ | करमध्येतुतां (१ताः)वृ | त्त्वा ३३ | २० | 993 |
| ऐ श्वर्यमनिरुद्धस्तु | ७९ | 9 | २ १ २ | कराभ्यां खड्डधारिभ्यां | ८२ | 93 | २९७ |
| ऐश्वययोगाद्भृतसबैलोकः | હ | 99 | २१३ | क्टिशीपैनिविष्टामी | ₹ | 68 | ८२ |
| प्राथम = | | | | करेण कटिगेनाथ | ५३ | २३ | २०२ |
| एथर्य तु कला चान्द्री | 86 | 90 | १६७ | करेण धारयच्ड्रीमान् | 40 | 90 | 955 |
| वोपधीशं द्विजाध्यक्षं | Jok | २७ | ३०६ | करेणुगा बृहत्कन्या | હફ | ३५ | २०३ |
| औपच्यः पावनं वृक्षा | 995 | ź | ३५२ | करो बाहुद्धयं चैव | 33 | 39 | 998 |
| ॐकारपूतमाज्यं च | 38 | 92 | २६७ | वर्तव्यस्तन सोवेशः | 65 | ३२ | २३ २ |
| औदार्थ सत्पर्थ द्यौर्य | १७ | ष्प | ४१ | क्तेव्यस्तुम्युरुदेवो | ६६ | ٩ | 965 |
| अंददेशे प्रस्ती तु | २६ | ۲9 | ८२ | क्तंव्यथानिहडोऽपि | ८५ | UU | २२९ |
| अंसोपरि शिरः कृत्वा | २१ | Ę | ५३ | वर्तव्यथामरवरो | در | 98 | २२३ |
| करेया सटा सुरा जङ्घा | 99 | ч | २५ | कर्तव्यं सिंहवेकत्राभं | 24 | *4 | 256 |
| न्युनीयाध क्तेव्याः | ર્હ | 38 | 66 | कर्तव्यः क्षित्रो देवो | 4/9 | 3 | २०९ |
| कटिपार्श्वभूजासान्तैः | २४ | ३२ | ६ २ | कर्तव्यः पद्मयत्राभो | ५३ | 3 | 104 |
| कटिरप्टमभागोनं (? नां) | | Ę | २४९ | क्तंब्या देवनामाष्ट्रा | ७३ | 33 | ₹•३ |
| ^{क्ण्टिक} मसंकीण | 43 | ३४ | २६४ | कर्तच्यानि महीपालैः | 53 | v | २६१ |
| ^{कुण्ठस्ताल} त्रिमागः स्यात् | | 38 | १२८ | कर्तव्यास्ते महाराज | ¥₹ | 4 | 386 |
| कर्ठन शुभरेखेण | ۷4, | 3 | २२२ | कर्तव्यो नाभिदेशस्यः | ۲9 | 4 | 210 |
| ष्यितान्यधार्याण्याहुः | 90 | ٦. | ३७ | क्तरयो वामनो देवः | 64 | 4,Y | 35€ |
| क्ष्यः कोधा तुरा प्राधा | ७ ३ | 3 | 300 | वर्तव्योऽमिनमस्तरम | 33 | 36 | 900 |
| कनिष्टाये तथा हे तु कनिष्टानामिकामध्ये | ३३ | ५३ | 995 | यर्तस्यो ततुमध्यो | <i>د</i> لار | २३ | २२४ |
| क्तिष्टिरान्ते चाह्गुरुं | ₹ ₹ | ٥ | 992 | कर्तव्यो या गहाराज | ٤, | ÇY | 314 |
| क्रिशिकां सह्यिताम् | ३३ | 9 | 992 | यर्तुम्तु तदनिष्टं स्याप् | 43 | 13 | ३ ६३ |
| इनिष्टिके दे चाहरठी | 33 | • | 993 | मनुः गुसायहा नीय | | U J | 364 |
| क्रिनेश मध्यमे योजय | 3 3 3 5 | 99 ८५ | 999 | यम्यां साधसे प्रोचा | • • | 4 9 | ३७८ |
| इन्दायां हो इक्टन्ता स्यात | ₹ • € | 45 | 262 | क्रमध्यप्रजनप्र' | • | 4.5 | 945 |
| ^{क्रमाल} मालिनी भीका | v 3 | ३० | | क्मोंचेवानि सर्वानि | - | <i>(</i>) | 110 |
| क्राले तस्य कर्वस्य | 6 5 | 3 | 165 | बर्मी/शाय निरंगी | 29 46 | , 11 | 16) 16) |
| विस्थानिकार प्रका | 33 | હર્ | 110 | इत्यासकेम्हानाम | | 13 66 | 3 V A Y A |
| इनिपेडनामिका दीगी | 11 | 55 | 45. | इस्हास्तरित प्रेचा | 1 * | - | • • |

| | अध्या, | श्लोक | ह. | | अध्या | . स्होक | ā. |
|--------------------------|------------|-------|-------------|--------------------------------------|----------|------------|--------------|
| कलानां प्रवरं चिनं | ८३ | 36 | 940 | यालवितस्थपतिः पूज्यो | 58 | २६ | २६८ |
| म रावलुसभूलेखं | ३९ | 42 | १३७ | यारस्य स्परपाणाम् | 9 ६ | 98 | 3 8 |
| प्रतिविद्या पटो | 92 | 6 | ₹ હ | पालः परालयदनो | ખર્ | 3% | 3.3 |
| कली प्रष्टतः सर्वोऽयं | \$3 | 4 | २ ६९ | वाटः प्रोक्तो विम्पादाः | 44.5 | · 😮 | 960 |
| कलपनागापितायां नु | 9 ६ | ષ | રૂપ | कालिन्दी यमुना प्रोका | • | २२ | 2 9 |
| बद्यपस्यापराः परन्यः | υŞ | Ę | 500 | यान्यं कलाकी रालमे प्रयुक्त | 5 94 | 915 | २४ |
| पश्मिन् काले तु कर्तव्या | . | 9 | २७४ | भाव्ये येऽभिहिता दोपाः | 98 | 9 | રૂ બ |
| काड्गूलेनामिका वका | २६ | ३८ | હટ | काष्ट्रानामायस यन्धं | \$9 | 93 | २५८ |
| कार्तकः स्यानु कृतको | પ | 39 | 99 | या या विष्णोस्तनुं भक्तः | 996 | 9 | ३५६ |
| कार्तिनेय जगनाथ | 908 | ३२ | 306 | वांतरपं परं स्थानं | 35 | ٠, | 936 |
| कारता भयानका हास्या | १५ | 9 | ĘU | किथि(प्रतम्बज्ञ हरी | ५२ | 3 | 9 0 3 |
| वापोतः करणधेव | ३० | Ę | 909 | रिविदुद्ध (² ह्य)तवैशाध | व ४२ | ₹¥ | 985 |
| कापिल पश्चिमं वक्त्रं | ** | 92 | १५९ | टे विधिद्भता ततः वाले | 58 | 36 | २७६ |
| क्षामार्ता म्डबरितों खेव | २८ | ५६ | 54 | रि यहानवसंकाशाः | ४२ | 80 | 985 |
| कामदेवो न क्तैब्यः | 6 | 938 | ₹४३ | रिधिदुंशमितपुरा | રૂપ | 9 8 | Ęc |
| कामनिष्टान्प्रयच्छन्ति | 9 | 96 | २ | रिश्विश्म्बोदरः वार्यः | 48 | É | 900 |
| काममावाहियध्यामि | 904 | ध्य | ३२१ | किन्नराख्याः किंपुरुषाः | 2 | २४ | 15 |
| काम बागप्रदं शान्तं | 906 | 98 | ३२३ | किधिदानुधिते नेने | ٦ ع د | | 30 |
| क्यिमावाहनं तम | 9.4 | 343 | ३३५ | कि क्रीव्य मनुष्येण | 9 | 9 | • |
| कार्यष्टद्धिकरी पष्टे | 3.5 | чo | २७८ | कि भय तस्य देवस्य | داع | ૧૫ | 3 23 |
| कार्यसिद्धिः समायत्ता | 908 | ٧٥ | ३०८ | कीर्तिदा नवमे जेवा | 38 | , . १२२ | २८५ |
| कार्यस्य।वयवाः कार्याः | ४२ | ५६ | 949 | कं तिर्रिश्मी पृति में धा | 99 | 9 | રૂપ |
| कार्याणि प्रतिशीपीणि | २७ | 4 | 64 | कीर्तिश्र पश्चमे होया | 36 | | ₹ ८ ¥ |
| कार्या भद्रश्माणेन | ४२ | 3 | १४६ | कीर्ति निभुवने शुम्रा | 3.5 | 998 | २८४ |
| कार्या थेगेन चान्येऽपि | Vo | ¥ | 385 | कीनाशथ स्मृतो देशदः | 90 | 3 | 44 |
| कार्या लिलिसचारा | ۶ <u>:</u> | ع لع | ८३ | इह्नुस्थ तथा घण्टा | 09 | 4 | 950 |
| वार्यो ईसप्रमाणेन | ३८ | É | 255 | बुड्ये शुक्ते तियी रस्ते | Yo | 99 | 982 |
| कार्याः सुरूपा द्विभुमाध | UU | 90 | २०८ | वु इरिण तथा भग्नान् | 45 | ¥ | २५१ |
| वायोंऽनुरक्तकरणे | २४ | ५८ | | पुधितास्थित। दृष्टिः | રષ | 20 | 60 |
| कार्योऽयं परिवारेष | २६ | १२ | 99 | कुवेरध महातेजाः | CX | 92 | १२१ |
| काल एव सहपेण | 49 | 14 | 902 | कुमारः घण्मुखः कार्यः | 9 | ¥ | 150 |
| कालमायाइ गिष्यामि | 903 | 48 | हेटर | कुमुदी च विती कार्यी | €c | ર | 158 |
| कालमावाह मिप्याम | 964 | ₹ o | 396 | प्टम्भस्य च शिलानां च | 58 | २३ | 286 |
| कालराश्री द्व विहेया | 49 | 93 | 903 | इम्माकारां शिलं क्यांत् | 54 | 91 | १६७ |

ŧ

विष्णुघर्मी तर

| | अप्या. | খৌক | 됫. | | अध्या. | <i>र</i> होक | ą. |
|----------------------------|------------|------------|---------------------|---|------------|-----------------|-------------|
| खातेऽधिकं च मृदात्र | ९३ | *3 | २६४ | गुणाधारं जगद्योगि | १०२ | Ę | २ ९७ |
| पेदालसं तथा चक्षः | २२ | ۷ | ५४ | गुणाचु गौणं पश्यामी | ч | 15 | 99 |
| गद्रायाथ कृता तन | 3.5 | 73 | २७६ | गुन्द्रनामानि कर्णध | 17 | u | २७ |
| गण्डसंश्रयमेतेन | २६ | ٧ć | ওৎ | ग्रधोक्जानुचरणः | 48 | 3 | 900 |
| गणशस्त्रह्दयोर्मध्ये | ٤٥ | 130 | २३२ | गृद्धावलीनकं लीनं | २० | 49 | 49 |
| ग(? गौ)णो निमित्तिक | 4 | 96 | 99 | ग्रहस्तम्भद्रमशुञ्जं | 46 | ą | २४८ |
| गतौ र(? न)मेत चेटान | i 95 | 34 | 900 | गृहाख्यथैव निर्दिधः | ८६ | 94 | 239 |
| गदामुद्रा भवत्येषा | 33 | 300 | 329 | गृहीत्वा तच ह्दोऽपि | 38 | ३० | 924 |
| गदामुद्रा समाख्याता | ३३ | 994 | ६२२ | गृहे प्रतिष्ठा तप्रापि | 53 | ą | 369 |
| गदावेग निरस्तोऽप्र | 905 | 90 | ३ २२ | गोप [? पुरं] पत्तनं से [न | यी १३ | 90 | 35 |
| गर्थ पर्यं च धर्मज्ञ | > | 93 | ¥ | गौरखु कार्यो वाल्मीकि | द्ध | £8 | २२७ |
| गद्यपद्यादुभी तेन | 3 | 93 | ¥ | मौरी शर्नेति विख्याता | પુષ | tr _i | 946 |
| गःधमाल्यनमस्कार | 63 | 80 | 3,810 | गोरी शुकाम्बरा देवी | ८२ | 3 | २१६ |
| गन्ध (१ न्धे) स्पर्शे | ₹ % | ३८ | 90 | गोस्था द्यागलोऽनध | 9 0 | 4 | २ २ |
| गमनैच्छा शिवा भार्या | 46 | २ | 963 | ग्लानिः राद्वाभ्यस्या च | 39 | YY | 906 |
| गम्भीरनादश्रवणात् | ₹८ | 3 € | 43 | प्रन्यिमग्तस्तु कर्तव्या | २७ | ३७ | 66 |
| गय गोगे यकारोऽन | ¥ | 8 | 94 | मसमानः स कतेव्यः | 63 | v | २१८ |
| गर्डथ तथा वार्यो | 64 | ¥.G | २२६ | प्रद्वान(व(द्यिष्यामि | 903 | 44 | \$03 |
| गर्डेह समभ्येहि | 905 | 34 | ३२५ | प्रहाणां देवताः प्रोका | ષ્ઠ | 3 | 950 |
| गर्वधैव वितर्कथ | 39 | 43 | 900 | प्रहाणां रूपनिर्माणम् | 45 | 7 | 954 |
| गर्वे (१५)ण खेराद्रोगेण | 39 | 96 | 904 | प्रहानावाह्यिप्या मि | 903 | 84 | ३०२ |
| गादप्रहारिते कार्यो | 35 | 96 | 96 | प्रहाप्टकं वा क्तेंब्वं | 60 | 39 | 384 |
| गानप्रहादनैनेद | २८ | Ę | 90 | प्रहाशस्तारमन्द्रे च | 96 | 9 | YY |
| गानस्य कम्पनात्तज्ज्ञेः | २८ | ₹ } | \$ 2 } | मामे वा यदि घे वे | 4.5 | र६ | 563 |
| शास्त्रीर्यमत्त्वशौण्डीर्य | ₹६ | 2,4 | vo | माह्यामास स तदा | 44 | ц | 350 |
| गायच्युध्णिगतुषुष् च | ĘĠ | ९२ | 993 | ग्रीभो तेजस्विनी कान्ता | 3 8 | 90 | 504 |
| गायत्री चतुरी वैदान् | ৫৩ | ₹८ | २४६ | चतुर्भुखं चतुर्वाहुं | 406 | 40 | ३२७ |
| गायनी देवजननी | 306 | \$ 6 | ३२८ | चतुर्मृतेः समारस्य | 9 | ₹• | 910 |
| गढरी तु स्मृता माया | Ę p | ₹ | 368 | चतुर्युगे चतुरकेतुं | 905 | 4 | ३२२ |
| गीदवायसमायुक्ता | ¥₹ | 94 | 940 | चतुर्ववनश्चनुष्पादः | U U | ર | ₹•₹ |
| गीतशास्त्रं समाचक्र | 4 | 3 | 3 66 | चतुर्वकनस्य कर्तव्यं | د لم م | * € | 33 |
| गुहवर्षे तु पायाणं | 4.0 CY | 9 3 | २ <i>५</i> ५ २३० | चतुर्वेक्त्रं महाबाहुं चतुर्वेदं चतुर्वेक्त्रं | 908 | Y 3 | ३२२ |
| गुणाधानमिति प्रोकं | 9 4 | 5 | 322 | चतुषप्रकारोऽभिनयः | 50 608 | 94 | ४०४ ४८ |
| गुणाधारं गुणैहीनं | 1 4 | _ | 4101 | च् त्रा शास्त्रमध्यम् | 70 | 1.2 | |

| | अध्या. | श्लोक | ų. | | अध्या | . स्त्रेक | Ţ. |
|---|------------|------------|-----------|--------------------------------------|------------------|-----------|--------------|
| चोदना परिहारथ | ų | 4 | 90 | जयं जानीहि वहणं | ८५ | وچ | , ३२५ |
| चौर्यादिमिर्गृहीतस्य | ₹ 9 | 93 | م در در | जया च विजया चैत्र | ξĘ | 4 | 965 |
| चौर्यादि जात्र मुम्दवं | 33 | 34 | 903 | जया पुरपगा कार्यो | ६६ | 90 | 965 |
| छंदें चिति (१ दिथिति) | | | | जया खेता तु कर्तव्या | ĘĘ | 93 | 990 |
| तयैवा | ग्नि ७३ | ¥4 | ₹०¥ | जरायुजस्य जगतः | 906 | E | ३२२ |
| द्यन्दोविएदितं गद्यं | 94 | 4 | ३३ | जलमध्यगतः कार्यः | 69 | 3 | २९५ |
| छुत्रध्यजपत्।का ध | २८ | 3 6 | 33 | जलनामानि सर्वाणि | 7 2 | 3, | ₹ 5 |
| छत्रं च पूर्वेकुम्भं च | ધ્ય | ¥ | १७७ | जलःशयदिहीनेषु | 4.3 | २९ | २६३ |
| द्यवाकारः स्मृत×छश्रो | 4 | 996 | २४० | जानुगतं विमुक्तं च | २ २ | ર | 4* |
| द्यायागतमिति शेक | ३२ | 90 | १३७ | जाम्यूनदं तदेवानां | 90 | v | २ २ |
| द्वातोदरी न कर्तव्या | ٩c | 9 ६ | 934 | जायानाशस्तु जायास्थे | 38 | १२८ | 364 |
| छाया तु यमुना हैया | ५२ | 98 | 908 | जालापादकराः वार्याः | 30 | ч | 131 |
| छायामावाइ चिच्यामि | 904 | 96 | ३१७ | जालवातायनादीनां | २६ | 65 | 41 |
| क्षित्रं झोधे परं हास्ये | २५ | 63 | υĘ | जात्यागवाधक्येपेतैः | 44 | 94 | RYY |
| दिनं निकृतमेव स्यात् | २५ | Ęc | ७३ | जितिन्द्रयत्तया युक्तं | 3,6 | \$ 0 | 53 |
| छेत्तव्यं तु इमं गत्वा | 45 | 93 | २५२ | जिह्नाधरीष्टमदं ये | રુ ખ્ | ĘU | ξv |
| छेदवस्य ततः कृत्वा | 50 | 25 | વષ્€ | जीवस्थेण कर्तस्या | ७२ | ¢ | 585" |
| जगतो यदभावस्तु | ¥C | 95 | 950 | जीवे धनाद्या लग्न(ये | 36 | 930 | 36 ¥ |
| जगतोऽस्य समुप्ति | 808 | v | 308 | जबरक्षिपादः वर्तव्यः | υį | *• | २०३ |
| जब्वानुल्यी तथा चोस | | 73 | 300 | ज्वरमावाह्यिध्यामि | 300 | 4 | ३ 9६- |
| जङ्घामच्यगती(१ वे) | कृत्या | | | चया च ग्लातिस्तया हा | नः ११ | 6 | 44 |
| | ₹ ₹ | 133 | 922 | जवालाकारं पर धाम | 44 | U | 909 |
| जटाज्हपुतं सार्ये | ३७ | *3 | 26 | जवालानिश्ली मर्तन्यी | 46 | ¥ | 905 |
| जराधरं चतुर्गहुः | AA | é | 946 | जबालामालाङ्गलवपुः | ७८/२ | 40 | २ १ ० |
| अदापरोऽधमाली च | 40 | 3 | 4.4 | उयेष्टे देनि स्वमभ्येहि | | ८३ | 339 |
| जहता मरणं चैष | ₹ 3 | 80 | | ज्योतस्तामात्राहयिष्यामि | | ¥5 | 33. |
| जनमध्येन संमाधम् | | 9 = Y | | इापमायाद्यिष्यामि | 304 | - | ३३५ |
| जनस्तपश्च सत्यं च | | 17 | | शातश्यं भूमिपधेष्ठ | ? * | 44 | فونع |
| जनमलमोदये घेष्टा | 48 | 5.5 | २८२ | शानं वृतिही जगतामधी | _ | | 200 |
| जम्यूद्भीपश्य वर्षेषु | | \$0 | 33 | | 46/5 | 3.5 | २ ९१ |
| जयमाचाद्यिक्यामि | | 140 | | शाने विशोधा च सपा हैया चपलवा राजव | 3 4 | २५ | 44 9•4 |
| जयस्मीध कर्तव्या | | 74 742 | 1 | हेवा चयोदशे होम्या | 41 3 6 | 47 | १७८ |
| जय शीध्रे स्वमभ्येहि जये च विजये चैव | 7•3 40 | 184 | | होगाः प्रशस्ताः वावाणाः | | 44 | २५६ |
| ज्य था विशय या | | ٠, | 177 (| A. see and the military | • - | * * | 1 |

| | अध्या. | ৠী ক | ā, | 1 | अध्या | . শ্বীক | g. |
|--------------------------|------------|-------------|-----|-------------------------------|------------|------------|------------|
| चोदना परिहारध | ų, | 4 | 90 | जयं जानीहि बहणे | ሬԿ | 30 | , १३५ |
| चौर्योदिमिर्गृहीतस्य | 39 | 93 | 904 | जया च विजया चैव | ĘĘ | 4 | 963 |
| चौर्यादिजातमुग्रत्वं | 19 | 34 | 903 | जया पुरुषगा कार्या | ĘĘ | 90 | 965 |
| छंदें चिति (? दक्षिति) | | · | | जया खेता तु कर्तव्या | | 93 | 950 |
| तथैवा | रेन ७३ | 84 | २०४ | जरायुजस्य जगनः | 908 | ٤ | ३२२ |
| छन्दोविरहितं गर्ध | 94 | 5 | 33 | जलमध्यगतः कार्यः | 49 | 2 | 294 |
| छुत्रध्य जपत्व।य | २८ | २६ | 53 | जलनामानि सर्वाणि | 13 | ą | 25 |
| छत्रं च पूर्णेष्ठम्भं च | 48 | ¥ | 900 | जलश्य मधिहीने पु | 4,8 | २९ | २६३ |
| छ्यासरः स्मृत×छ्त्रो | 6 | 996 | 280 | जानुगतं विमुक्तं च | 43 | 3 | ų. |
| छ।यागतमिति प्रोक्तं | ३२ | 90 | 930 | जाम्यूनद तद्देवानां | 90 | v | २२ |
| द्यातोदरी न वर्तव्या | ₹⊄ | 9 Ę | 934 | जायानाहास्तु जायास्ये | 38 | 926 | ३८५ |
| छाया तु यमुना होवा | ५२ | 93 | 942 | जालापादकराः कार्याः | ३७ | فإ | 333 |
| छायामावाइयिष्यामि | 904 | 96 | ३१७ | जालवातायनादीना | २६ | 68 | 69 |
| दिनं क्रोधे परं हास्ये | ३५ | ξ \$ | υξ | जालागपाक्षकोपेतैः | cv | 94 | 288 |
| दिवं निकृतमेव स्यात् | ३५ | ĘC | ७३ | जिनेन्द्रियतया युक्तं | २८ | 30 | 53 |
| छेत्तव्यं तु दूर्मं गरवा | ۷5 | 93 | २५२ | जिहाधरीष्टमई व | રુષ | Ęv | υ३ |
| छेदयस्य ततः कृत्वा | 50 | २६ | २५६ | जीवस्पेण कर्तव्या | ų२ | Ę | 955 |
| जगतो यदभावस्तु | *6 | 95 | 950 | नीवे धनाद्या लग्नस्घे | 38 | 930 | २८४ |
| जगतोऽस्य समुप्तति | 908 | ٠ | 308 | ज्वरस्त्रिपादः क्तैव्यः | vą | 80 | ₹•₹ |
| जङ्घातुल्यी तथा चोह | 34 | 9 \$ | 936 | ज्वरमावाहयिध्यामि | 904 | Ę | 348- |
| जङ्घामध्यगता(१ ते) | कृत्वा | | | ज्या च ग्लानिस्तमा हा | नः ११ | C | 34 |
| | ₹ ₹ | 199 | 922 | ज्वालाकारं पर धाम | ५६ | y | 905 |
| जटान्ट्युत कार्य | 3.0 | 83 | cc | जवालातिमू टी पर्त व्यी | ५६ | ¥ | 945 |
| जराधां चतुर्षाहुः | RR | É | 946 | पवासामाला रूचपुः | ७८/२ | 90 | २१० |
| जटापरोऽक्षमाही च | Yo | 3 | 4.6 | ज्येष्ठे देनि त्वमभ्येहि | Jok | 63 | 399 |
| जहता भरणं चैव | ₹ 9 | 80 | 906 | ज्योत्स्नामाबाह्यिय्यामि - | 304 | 84 | 340 |
| जनमध्येन संप्राह्मम् | | 308 | 939 | सपमावाहिय <u>िष्यामि</u> | 906 | \$ 00 | ३२५ |
| जनस्तप्थ सत्ये च | *ŧ | 93 | 963 | ज्ञातस्य भूमिपश्रेष्ठ | ₹ ₹ | 98 | فإلغ |
| जनमलमोदये श्रेष्ठा | ₹ | 4.5 | २८२ | ज्ञानं समिद्दो जगतामधी | | | |
| जम्बूद्वीपस्य वर्षेषु | २७ | २० | ٥٤ | | ७८/२ | 35 | 211 |
| जयमावाह्यिष्यामि | 908 | | 338 | ज्ञाने त्रिशोकाच तथा | २५ | ३० | 68 |
| जयलक्ष्मीध कर्तव्या | ८२ | 94 | 290 | होया चपलता राजन् | 39 | २५ | 906 |
| जय शीघ्रं त्वमभ्येहि | 905 | | 358 | होवा प्रयोदशे क्षेम्या | | ५२ | 346 346 |
| ज्यं च विजयं चैव | 64 | ३५ | 326 | होयाः प्रशस्ताः पायाणाः | 50 | २ २ | २५६ |

| | अग्या, | स्रोक | g. | | अध्या. | ধ্রক | â. |
|-------------------------|--------------------|-------------|---------|---------------------------|---------------|-------------|--------------|
| चोदना परिहारध | ų | Ç | 90 | जयं जानीहि बहणं | 24 | 30 | , २३५ |
| चौयदिनिगृहीतस्य | 39 | 93 | 904 | जया च विजया चैत | 55 | ч | 965 |
| चौर्योदिजातमुग्रत्वं | 19 | 34 | 900 | जया पुरुषमा कार्या | € € | 90 | 965 |
| छंदे जिति (१ दियति) | | | | लया श्वेता तु कर्तव्या | 5.5 | 93 | 950 |
| तथैवा | वेत ७३ | ሄ ዛ | २०४ | जरायुजस्य जगतः | 908 | ٤ | ३२२ |
| छुन्दोविरहितं गर्ध | 94 | 4 | 33 | जलमध्यगतः कार्यः | 69 | २ | २९५ |
| छुत्रच्चजपतासाध | २८ | 3 \$ | 53 | जलनामानि सर्वाणि | 13 | ર્ | 25 |
| छत्रं च पूर्णकुम्भं च | 48 | ¥ | 900 | जलाशय दिहीने पु | 4.3 | 25 | 111 |
| द्याभरः स्पत्रद्यो | 25 | 996 | 280 j | जातुगतं विमुक्तं य | ঽঽ৾ | ર | 44 |
| छायागतमिति प्रीकं | ३२ | 90 | १३७ | जाम्बूनदं तद्वानां | 90 | v | र्र |
| छातोदरी न कर्तव्या | ? 6 | 9 6 | 936 | जायानाद्यस्तु जायास्ये | 4.5 | 926 | 224 |
| छाया तु यमुना हैया | ५२ | 95 | 907 | जलापादकराः कार्याः | 30 | ч | 939 |
| छायामावा इयिष्यामि | 904 | 96 | ३१७ | जाहवातायनादीनां | २६ | ĘŚ | 69 |
| दिनं क्षेथे परं हास्ये | રૂષ | ξ \$ | ∨३ ं | जालागपाक्षरोपेतैः | وري | 94 | 244 |
| दिशं निष्टतमेव स्यात् | २५ | 44 | હર્ | जितेन्द्रियतया युक्तं | २८ | 30 | 53 |
| छेत्रव्यं तु दुमं गत्वा | 65 | 93 | २५२ | जिद्राधरौष्टमदं व | ગ્યુ | ĘU | 4 |
| छेदनस्य ततः कृत्वा | 50 | 35 | २५६ | जीवरूपेण वर्तेव्या | ७२ | É | 5557 |
| जगतो यदभावस्य | *6 | 95 | १६७ | जीवे धनाद्या समस्ये | 58 | 920 | * 36¥° |
| जगतोऽस्य समुप्रति | 908 | v | 308 | जबरिक्षपादः कर्तव्यः | ৬ ই | Yo . | ₹•₹ |
| जह्यातुस्यी तया चोह | ३५ | 93 | 936 | उचरमावाह्यिप्यामि | 904 | • | ३ १६- |
| जङ्घामध्यगतौ(रे ते) | बृ त्वा | | | ज्या च ग्लानिस्तथा हो। | नेः १९ | C | 3,4 |
| | ₹ ₹ | 177 | 922 | ज्वालाकारं वरं धाम | 46 | v | 905 |
| जटाज्ट्युतं कार्यं | ર્હ | *3 | 26 | ज्वासात्रिशूली पर्तेन्यी | પ ્રદ્ | ¥ | 905 |
| जदाधरं चतुर्वाहुः | ጲጷ | ٤ | 946 | ज्यानामाला इलयपुः | ७८/३ | 90 | २१० |
| जटाधरोऽशमाली च | y o | ş | 946 | ज्येष्ठे देति लमभ्येहि | 308 | د ۶ | 311 |
| जडता भरणं चैव | ₹ १ | 80 | 906 | ज्योत्स्नामाबाइयिष्यामि | 304 | ¥ \$ | 340 |
| जनमधोन संप्राह्मम् | ₹ ₹ | 9 . 8 | 929 | सपमा या हिया था थि | 306 | ३७ | ३१५ |
| जनस्तपध सत्यं च | * é | 35 | 953 | शातस्यं भूमिपश्रेष्ठ | ۶ ٤ | 14 | ष्प |
| जन्मलमोदये श्रेष्ठा | \$ € | 53 | २८२ | शानं राखिंहो अगतामधी | श | | |
| जम्बूद्वीपस्य वर्षेषु | ३ ७ | २० | 6 | | ७८/२ | 93 | 233 |
| जयमाबाह्यियामि | | | \$ \$ & | ज्ञाने विशोश च तथा | 36 | ₹० | 62 |
| जयलक्ष्मीध कर्तव्या | ८२ | 34 | 290 | हैया चपलता राजन् | ३ 9 | २५ | 304 |
| जय शीप्रै त्वमभ्येहि | | 982 | ३३४ | हेवा श्रयोदशे होम्या | 3.5 | ५२ | ₹ <i>७८</i> |
| जयं च विजयं चैव | 64 | ३५ | २४६ | ज्ञेयाः प्रशस्ताः पापाणाः | 30 | २२ | २५६ |

| | अध्या. | खों क | y. | _ | अच्या. | श्लोक | ą. |
|----------------------------|------------------------|--------------|--------------|---------------------------|------------|------------|-----|
| द्मेया बीजसमुत्पत्तिः | 90 | 40 | 89 | ततोऽनुलेपनं कुर्यात् | 98 | 38 | २६८ |
| इया मर णदा कर्तुः | 96 | 83 | २७७ | ततोऽल्पचतुरसं च | 40 | ş | २०६ |
| डिमाख्यथ तथा प्रोक्तो | 90 | २७ | ३९ | तरकरस्थाइप्रियुगलो | دلا | v | २२२ |
| डिमे समवकारे च | ঀৢ৽ | ५३ | 89 | तत्कालमेव दुर्वीत | 98 | ९३२ | २८५ |
| त एव चित्रे विज्ञया | ३५ | v | 920 | तत्प्रभावाः स्मृताः सर्वे | ४२ | २२ | 986 |
| त एव ज्ञेया दिक्पालाः | 20 | र ह | २४६ | तस्पूर्वे नाशमाप्नोति | 98 | 93 | २७५ |
| तर्जन्यङ्गुष्टसंदंश | २६ | 85 | ७९ | तत्र जातः स्वयं ब्रह्मा | 38 | ٧ | 928 |
| तर्जन्यन्ता कनिष्टाचा | 33 | ७२ | 996 | तत्र त्वौत्पत्तिक सर्वे | لع | 90 | 99 |
| तर्जन्या तर्जनी यत्र | 33 | ४६ | 996 | तन देशं शुभं विद्वान् | 18 | ą | २६६ |
| तर्जनीकन्यका चैव | 33 | 83 | 994 | तत्र प्रतिष्ठा कर्तव्या | ४४ | 4 | 959 |
| तर्जनीद्वयं सङ्ख्य | 33 | 36 | 994 | तन यकान्तिकावण्य | ४३ | २ | 948 |
| तर्जनी प्रस्ता कृत्वा | 33 | ž | 992 | तत्र यत् संहिलं तिष्टेत् | 20 | 44 | २४७ |
| तर्जनीश्रातसंलग्न <u>े</u> | 33 | 998 | 922 | तत्र वा (ध्चा) विदितं स | र्व १७ | ч | ३७ |
| तर्अनी मध्यमा चैव | 33 | 904 | 929 | तत्र संपूजयेत्स्य | 84 | v | 959 |
| तर्जनीमूलगाङ्गुष्ठे | 33 | 34 | 930 | तत्र हिंसा न क्तीव्या | 20 | ६० | 386 |
| तर्जनी कुधिता करवा | ३३ | ८२ | \$98 | तत्रापि ठेपा कर्तव्या | ४२ | 30 | 940 |
| तर्जन्यौ ष्टिघिते कृत्वा | ३३ | 80 | 994 | तत्रामिमुखमेवादौ | 49 | ч | 936 |
| तर्जन्यो दुधिते कृत्वा | 13 | ६३ | 990 | तथाहरवना चैव | २७ | ą | 64 |
| तर्जन्यौ कुहितौ कृत्वा | ₹ ३ | 90 | 993 | तथा चर्म च क्रतिम्य | 8X | २० | 945 |
| ततथ हरितरयामा | २७ | 98 | 68 | तथा च स्टोमविजयी | 94 | v | 33 |
| ततवान्ये मुखाः कार्याः | 63 | ٧ | २१८ | त्तथा च विश्वनर्माण | 5¥ | ₹ | २६६ |
| ततस्तन क्षिपेद द्रव्यं | \$3 | ¥ | २५९ | तथा च स्तम्भनायुका | 89 | U | 988 |
| ततः कर्तृ यया शक्त्या | 908 | 929 | ३१४ | तथा चापाहसधारात् | २५ | 8.K | 60 |
| ततः पार्श्वगतं नाम | 35 | 3 | 938 | तथा चोद्वाहितं कार्यम् | 3.8 | 44 | ६५ |
| ततः प्रतिष्ठा कर्तव्या | 56 | 939 | २८६ | • • | 3 | Ę | Ę |
| ततः प्रभृति देवेशः | 38 | २२ | 920 | तथा दर्शितदन्तस्यु | ३ ० | 14 | 305 |
| ततः शक्रतोयेन | አዕ | ¥ | 389 | तयान।सिक्रमा सार्व | २ ६ | 95 | ७६ |
| ततः स्वप्नं शुभं रात्रौ | ٤5 | 95 | ६५२ | तथा निगमनं चैव | ч | 4 | 90 |
| ततो चजस्य दिन्यासः | 4.8 | 84 | २७० | तथानेन विधानेन | ΥŽ | ₹ ₹ | 949 |
| ततो जगृहतुर्वेदान् | źĸ | 5 | 154 | तथापरध कर्नेस्य | 4 9 | ¥ | २१५ |
| ततो जवनिमाधेषः | २० | 5 | 80 | तथा प्रमारितभुजी | ₹ € | 45 | ८२ |
| ततो द्वितीये धनदा | 16 | | 344 | तयानिद्रवर्ण चैत | 33 | 34 | مړد |
| ततो नीलैत्यलस्यामा | 30 | 34 | 25 | तपा मरस्ताकाराः | ¥3 | ₹ ₹ | 186 |
| ततो (? उसे) मण्डलमारि ९ | उ प्त २० | ¥¢ | ५ ९ ह | तय विधा तया मून | • ६ | 30 | १७७ |

| | क्षध्या | श्चेक | ਰੋ• | | अध्या. | श्रोक | Į. |
|-------------------------|------------|-------|-------|-------------------------------------|------------|------------|-------------|
| तथाविधी तु कर्तव्यो | 64 | २५ | २२४ : | तमोमूर्त हुराधर्ष | 908 | ५२ | ३०८ |
| तथाविधा तथाग्नेये | 6.3 | 4 | २७४ | [तय] योगे [त] का | (स्य ७ | Ę | 94 |
| तया विष्णुपर्द श्रोक्तं | \$ | 6 | ₹● | तया समृतिभेवित | 906 | 99 | ξ¥Φ |
| तथा वीररसश्रया | ₹० | دري | ५२ | तयोर्भध्ये च बद्री | ७६ | 3 | २०७ |
| तथा व्ययस्ये विज्ञेया | \$ | 926 | १८५ | तयोरन्ते तु कर्तव्या | 90 | 949 | ₹८ |
| तथा सङ्गर्पण देवं | 994 | 3 | इं ५७ | तरक्षभिक्तिः सूक्ष्मा | υĘ | * | 131 |
| सथा सुरगृहं कार्य | 53 | ३० | 263 | तरङ्गमण्डित।भ्येहि | PoY | 994 | \$98 |
| तथाधशिरस देवं | 994 | 4 | 340 | तरहामिशिखाधूमें | ४३ | ₹6 | 145 |
| तथैव विमुखी शुष्ता | υĘ | २९ | २०२ | तस्ये (१ तुल्ये) संहारकर | ,वे५१ | 96 | 142 |
| त्तर्यव दर्शयेदाजस्ता | ४२ | 40 | 949 | तथ[]च]स्याद्गरहोन | - | ₹ ₹ | २३५ |
| त्याँव देवी कर्तव्या | 46 | Ę | 969 | तस्माच्छुद्धेन मूले(१ हमे | | 5 | द्युष |
| तथैवान्या करी कार्यी | ८२ | v | 395 | तस्मात् कली प्रतिष्टानं | 4.3 | 38 | ₹ ₹ |
| तथैवारोग्यकामस्तु | 196 | • | 340 | तस्मात् कडौ प्रयत्नेन | 4.3 | २२ | २६३ |
| सधैयोपधयो राजन् | *4 | 90 | 163 | तस्मात् सर्वभयत्नेन | 63 | २८ | 343 |
| तद् ऋजवापद (? यत |) | | | तस्मात् सर्वेशयरनेन | ३८ | २४ | 934 |
| भूयि | | 84 | 980 | सस्मारसर्वेषयरनेन | 9 | 92 | ર |
| तद्यकारी यत्रायों | 96 | 99 | 3.5 | तस्मात्सुविहितो क्याँव | 4.3 | 93 | 242 |
| तदन्ते सर्वपात्राणां | 90 | 99 | ३७ | तस्मादहं स्वां पृच्छामि | 90 | ٤ | ३७ |
| तदहं ते प्रवक्ष्यामि | ٤ ۾ | 3 | २३० | तस्मार्ह् देयवाक्यार्थम् | 94 | 9 • | 33 |
| तदा कर्तुविनाशाय | 54 | 63 | 305 | तस्माद्वलस्ये जीवे तु | 5.6 | 65 | ₹:0 |
| तदाप्तवचनामासं | 4 | 94 | 19 | तस्यानर्था विवर्धनते | 9 | 5 | 3 |
| तदा सशोधयेडिद्धान् | 5 Y | Ę | २६६ | त्तस्य त्वभिनयः कार्यो | २८ | \$2 | 99 |
| तदेव दण्डसंस्थानी | < | 13 | २० | तस्य दक्षिणतः कार्यं | 44 | ¥ | 145 |
| तदेव दण्डसंस्थानो | \$ | 13 | 37 | तस्य दक्षिणहरतेषु | YY | 35 | 949 |
| तदेव वसनं सस्य | 46 | 4 | 169 | तस्य देवस्य धर्मज्ञ | 40 | U | २०८ |
| तदेवेह फल प्रोक्त | 36 | € to | २८० | तस्य मध्ये घुवा यष्टि | 47 | ч | ३२० |
| तद्वर्णया तु या शस्ता | 44 | ч | २६६ | तस्याचीकरण विद्धि | 906 | 50 | 180 |
| तनुर्भूलि. शलाका च | 9 9 | ¥ | 44 | तस्यानुप्रहतो धत्त | 48 | • | १७५ |
| तपरिवनमनाधुप्य | 1 × | &a | ३०६ | तस्या मध्याश्रितोह्गुष्ट्र' | २६ | 83 | 46 |
| तप्तशाम्यूनदाकारो | ξ 5 | ¥ | 364 | तस्यासुपरि चाहुद्यी | ₹ ₹ | 60 | 994 |
| तमनी दर्शनं वार्यम् | *3 | 9 | 948 | तस्या यदेतस्प्रयतं तु | 29 | i u | 48 |
| तत्राज्ञायुक्तमदैध | ¥ . | 9 | ے . | तस्याधैवानुसारेण | 20 | 15 | 488 |
| तमेव प्रयेत्र | ¥W | 4 | 149 | त्तरयाष्ट्रभागाः क्त्रया | YY, | 3 | 767 |
| तमेव राजशाईलं | 114 | 93 | 346 | तस्या करेषु कार्याणि | υį | ર દ | 4.5 |

| | अध्या. | श्चेक | ā . | 1 | अच्या, | . श्रीक | y. |
|-------------------------------|------------|------------|-------------|---------------------------|--------|------------|------------|
| तस्यैव यज्ञहृद्यस्तु | 90 | 39 | २३ | तिर्यक्रं तु कृत्वा वै | 33 | ३५ | 994 |
| तस्योपरिष्टात्कर्तव्यं | (8 | x | २२० | तिर्यक्त्रसारितावेव | २६ | 62 | ૮૨ |
| तस्योपरिष्टारकर्तव्यं | ८४ | Ę | २२० | तियग्गतागता क्षिप्रं | २४ | 35 | ६३ |
| तस्योपरिष्टादपरं | 28 | 3 | ६ २० | तिष्ठन्ति सुमहाराज | 42 | 93 | २६० |
| तस्योपरिष्टाद्वदनं | ጸ ጸ | 90 | 949 | तीर्थपझरचेलानि | 93 | \$ | 35 |
| तार्श्यमावाह्यिष्यामि | 908 | 38 | ३३५ | तुरगामिह(? हि)तानां | च ८६ | 89 | २३३ |
| ताक्ष्यस्था सा च कर्तव्या | دلع | uy | २२८ | तुष्टधर्य त्रिदशोन्द्राणा | 990 | Ę | 345 |
| तार्श्यस्सतालो मकरस्त- | | | | तेजोमृति दुराधर्य | 908 | २ ३ | ३०६ |
| थाच | वों ५४ | \$ | 9193 | तेनैव तस्य क्यितं | 40 | U | 965 |
| तार्स्यसमुपणीं गरडो | 4 | • | ગ૭ | तेषा धारणशक्तिया | 64 | 29 | 223 |
| ताक्यें शब्खं तथा पदां | ८७ | ₹६ | २४५ | तेषां च वर्णसंख्या च | ĘC | 99 | १९४ |
| ताक्यों मारकतप्रख्यः | 48 | ź | 900 | तेपां तु पूर्वमेवोक्तं | ર | २१ | 4 |
| तानि सर्वाणि कार्याणि | ८३ | 5 | २१८ | तेपां तु पूर्वमेवोक्तं | ¥Z | 99 | 960 |
| तान्येकसमपादानि | ĘS | ¥Ę | 980 | तेषां पुरतेन कर्तव्या | २७ | 84 | 65 |
| ताभ्यां सहर्पणी रदः | ४७ | 94 | 984 | तेषांमप्यन्यसहितः | ८६ | 936 | २४२ |
| तामेव तु यदा तिर्यक् | 33 | ર્પ | 998 | तेषां जिङ्गप्रतिष्ठेका | CE | 95 | 239 |
| तालमात्रान्तरन्यस्तः | २३ | 78 | 40 | तेषां सम्पूजनं नित्यं | 43 | ¥ | 263 |
| तालमावाह्यिच्यामि | 906 | 36 | ३२५ | तेषां स्वलेंकगमन | 900 | 90 | \$30 |
| तालगृक्षं जगत्सर्वम् | 44 | 4 | 366 | तैः पूर्णे बीजपूरत्वं | ¥ | 93 | 560 |
| तालैर्नियतैरेष | २३ | २४ | ५ ९ | तोयनमधनैर्युक्तं | ४२ | 94 | 943 |
| तावेव तु परावृत्ती | 35 | ८५ | ८२ | तोयमम्बु जहं चाऽऽपः | 4 | 94 | 90 |
| तायेव पार्श्वविम्यस्ती | २६ | 20 | د ۶ | तोयं सन्तिष्ठते साति | 25 | ¥ξ | २६४ |
| सावेय मणिधन्य | | | • | वृतीयं देवदेवस्य | JOK | 90 | 304 |
| (१ सम्धा)न | ता २६ | ሪ ሄ | 49 | तृवीये धनलाभाय | 55 | 120 | २८५ |
| तायेष मणिदन्धान्ते | २६ | 66 | 63 | त्यज विद्युधगणारि | 9.0 | 14 | १३८ |
| ताथ धारयते प्रद्या | 86 | 90 | 953 | व्ययि देव समायतं | 9.8 | A£ | \$ • ¢ |
| तासामस्यर्थपद्मानां | 53 | v | ६५७ | ध्वयि सर्वे समायत्तं | Jox | 86 | 306 |
| त्तासासुपरि चाडुष्ठं | 13 | 45 | 776 | हविव सर्वे समायतं | 908 | ३० | 306 |
| तां भूमि वर्जवेयसमाद् | 53 | *3 | 368 | ध्यिन सर्वेश सर्वेथां | 4.5 | 4.8 | 306 |
| तियिहानी क्षयं शेयं | 3.5 | 45 | २८१ | [स] फास्य | | | |
| तिष्यं प्राप्य न पश्यन्ति | • | ς | 1 | द्यधार (स्स्या | _ | • | 94 |
| निर्वेष्ठ् कृत्वा हु सं इस्तं | 11 | • | 392 | त्रयः सङ्कृत्येता यत्र | 11 | 14 | 113 |
| तिर्देग्देशी संहतमुः | دلإ | çc | २२८ | अस्वस्य स्दत्वभय | ξv | 14 | 113 |
| विभेश्त्या मास्यवाद्व १ठे | cţ | 46 | स्रूप | त्रवेदसाधरं हेदम् | į | 1 | • |

| | क्षच्या. | श्लोक | વૃ. | | खच्या. | श्लोक | y. |
|---------------------------|----------|------------|------|----------------------------|------------|------------|------------|
| देवानां सप्तशिखराः | २७ | 38. | 66 | दीर्मत्येन मनस्सापात् | 3 4 | 35 | 904 |
| देवारिसेनामथनं | 808 | 39 | 308 | दौर्वस्यश्विति कार्षी | ₹\$ | ` & & | 63 |
| देवासुरे ततो वृत्ते | ६८ | 90 | 153 | द्रव्यानुहत्येवीर्वहतु | રહ | 95 | EĘ |
| देवीत्रासनकथास्य | 45 | Ę | 963 | द्रध्यमेतिश्वरशैरावेशम | ٧٥ ' | £3 | 388 |
| देवीप्रियार्थं भुवनस्य गो | ता | | | द्यची नानतास्तथा ये च | 93 | 3 | 33 |
| | 44 | 93 | 950 | द्वयोष्ठज्वस्योस्तन | ₹ 0 | 29 | 907 |
| देवीमावाहिषयामि | 904 | , 6 | 315 | द्वयोः सदशयोरेकं | `4 | 36 | 17 |
| ** | 904 | ,6 | 495 | द्वादशांशेषु विह्नेयः | 38 | 900 | २८३ |
| | 904 | 94 | 390 | द्वादशे नवमे चन्द्रे | 55 | 40 | 205 |
| 25 | 904 | २९ | ३१८ | द्वादशे पड्डितीये वा | 35 | ξ 7 | २७९ |
| 29 | 900 | * 5 | 320 | द्वापरे नु तथा भ्रेयं | ١3 | • | 253 |
| 19 | 308 | 198 | 333 | द्राभ्यां त्रिभिवां यदि व | - | • | |
| > | 908 | | 444 | चतुर्भिः | 38 | £4 | ξų |
|)) | | 179 | 333 | द्वारपालाधतसस्तु | 5.0 | 89 | 246 |
| देवी (१ वा) वी (१ घी) |) | | | द्वारमानाष्ट्रभागानां (१.4 | भागोनां) | - | |
| रोदता शेया | 3 | 9 9 2 | *2 | | ~ | 4 | 285 |
| देवी सरस्वती कार्या | 8 4 | ٩ | 920 | दार (१ रे) शोमावती का | यो ८६ | 90 | 230 |
| देबीरत्वावाह विष्यामि | 908 | 122 | 111 | द्वारं च मध्यमं तस्य | ૮૮ | २ | 284 |
| देवेन मूरिन विन्यस्ताः | 60 | ч | 298 | इ।रैधतुर्भिर्भानेस्तु | ૮૬ | 91 | २३१ |
| देवेन्द्रहृद्य शास | 906 | ĘU | ३२८ | द्वारैधतुभिः चंयुक्तः | ८६ | Jox | २३९ |
| देश्याध मस्तक पद्मे | ८२ | ي | २१६ | क्षारीरछायध कर्तव्यो | ٤ ۾ | \$ | ₹₹• |
| देशकाली तथा शाँचं | " | Ę | 308 | द्वाचेव पद्मकीशाभी | २६ | 25 | 23 |
| देशस्वामिपुरस्थामि | 38 | ₹ ₹ | 266 | द्विफलधाधमानां स्यात् | २∙ | 99 | ¥4 |
| देशं कालं प्रयोगं च | ₹ \$ | 55 | 43 | दिवलं दिवलं ज्ञात्वा | ₹ 5 | १२ | 136 |
| देशे नियोगं स्थानं च | ४२ | 40 | 140 | दितीया कर्मां वा भता | २ | 93 | Y |
| देशे देशे महाराज | Yo | 20 | 185 | दितीयायां धनोपेता | 5 € | 96 | 767 |
| देशीय देशीय पृथितिमिशं | v | 93 | 35 | द्वितीये धननासाय | 44 | 50 | २८२ |
| दैत्यदानवयक्षाध | २७ | ३८ | 22 | द्वितीये मध्यफलदा | 5 € | २४ | २७६ |
| देश्यादियोषितां कार्याः | 83 | 39 | 346. | द्वितीवेऽर्थस्य हानिः | 46 5 | > रे | ₹6₹ |
| देखानावाहियभ्यामि | 305 | 93 | 344 | द्विनेत्रक्ष महाभाग | 44 | Y | Jac |
| देवशं पुरतः कृत्वा | 45 | 3 | 243 | द्विप्रकारा छविर्यसमात् | २७ | 73 | 45 |
| दोतः पुष्पपुरधैव | 3 \$ | · · | ad | द्विमेखलस्य सस्येव | • | ७९ | 3 \$ 6 |
| दोपावहाथिमाधे स्यात् | 55 | २२ | 304 | द्विपादकमणं सत्र | २४ | é. | ĘŊ |
| दोषा विभावरी रात्रिः | \$ | 3 | २४ | दीपानाबाह्यक्यामि | 901. | 11 | \$ * * |

| | अध्या. | श्लोक | 펗. | | अध्या, | श्लोक | ā • |
|---------------------------------|--------|----------|------------|---------------------------|--------|------------|--------------|
| दुमच्छायोपगूढां च | 40 | ч | २५४ | ध्यानादनिमिषा शान्ता | २५ | 90 | ६७ |
| हुमानावाह्यिप्यामि | 903 | 39 | ३०० | ध्यानादिदाने कर्तव्यो | २६ | ६३ | ٠. |
| हुमे भवति वन्दाकं | 34 | Ę | २७३ | ध्रुवमावाहियन्यामि | 908 | | ₹ 9 ₹ |
| द्वे च दंब्ट्रे मुखे तस्य | ५३ | 3 | <i>૧૫૫</i> | ध्रवः स्थानुस्तथा प्रोक्त | : 6 | २ ६ | 38 |
| हौ च मीलिकरी मुस्ति | ८२ | 93 | 290 | ध्रुवो हि विष्णुर्भग | ξo | Ę | 963 |
| ही ही भुजी तु विज्ञेयी | ४७ | 99 | 9 & 44 | नकारस्य णकारः स्यात | • | હ | 94 |
| धनदस्य तु रूपेण | ५३ | 93 | 309 | न कृष्णा न तथा शुक्ल | ग ४७ | Ę | 9 { 8 |
| धनुर्वेजप्रहरणं | २३ | 90 | ધ્યુહ | न क्षमेण कृतं हपं | ६८ | ٩ | 953 |
| धन्यं यशस्यमायुष्यं | 990 | ર | ३५५ | नगरं दर्शयेद्विद्वान् | ४२ | ६ २ | 949 |
| भन्यं यशस्यमायुष्यं | 38 | 30 | 926 | नगरं शून्यती दृष्टं | 9 | 94 | 29 |
| धन्वन्तरिध्व कर्तव्यः | ७३ | 89 | २०३ | न गीतेन विना शक्यं | ર | 6 | 3 |
| धन्दन्तो मिथुनान्तद्य | \$ | v | २० | न चेद्भवन्तस्त्यक्ष्यन्ति | 69 | 90 | ૨ ५૨ |
| धर्मार्थकाममोक्षाणां | 94 | 9 | 33 | नणालमजिरं सर्ज | 93 | 98 | ₹0 |
| धर्मप्रकृतेर्दे (१ चें)सध | २७ | 39 | ૮૭ | न प्रत्र सौष्टवं कार्यं | 35 | 90 | \$6 |
| धर्ममर्थे तथा वामं | ٩ | 93 | २ | मतं चापि हि फर्तव्यं | २४ | 48 | Ę¥ |
| धर्ममावाहयिष्यामि | 904 | 43 | ३२० | नता तु रुचिते कार्या | ર્ષ | Ęų | ષ્ટ્ર |
| धर्मेख धर्मशास्त्राणि | ७३ | 84 | २०४ | न तु भाण्डकरे कार्ये | 85 | v | 986 |
| धर्मस्य रूपनिर्माणम् | UU | 9 | २०८ | नदीतीरेषु कर्तव्या | 43 | २७ | २६३ |
| धर्म वस्त्रं सितं तस्याः | ६१ | ¥ | 968 | नन्दिस्त्वावाह्यिष्यामि | 903 | ३८ | 209 |
| धर्मार्थकामशुभदं | ¥₹ | २७ | 946 | नद्यः फुटिलगामिन्यो | \$ | २१ | 29 |
| धारयन्तं शरीरेण | 906 | 68 | ३१० | नम्दनं स्यन्दनं सातं | 65 | 5 | 249 |
| धार्थ्यजैद्यादिसम्भूतो | 39 | ξ¥ | 900 | नन्दिवक्त्रं तथा वायुः | ¥¢ | 4 | 9 ६ ६ |
| धिष्यमावाहियय्यामि | १०४ | 45 | 399 | नन्दे नन्दय वासिष्ठे | 48 | २७ | २६८ |
| धिष्यशल्यमुधेन्द्वा ख्या | ٤٤ | 65 | २३७ | नपुंसके च वर्तन्ते | 93 | ¥ | 35 |
| थीरोद्धतानां वेशः स्वात् | २० | 98 | 86 | न मुण्डं न च श्लाप | " | 92 | 3,00 |
| धूपं दीपं सुनैवेषं | 58 | २५ | २६८ | नरको नुपुरक्षेत | 93 | 92 | २८ |
| धूमवेतो इहाभ्येहि | 308 | 48 | 308 | नरनारायणी कार्यी | ⊍Ę. | 9 | १०७ |
| धूमशब्यां जनयती | 4 | 14 | 39 | नरमावाइयिष्य।मि | 40,4 | A.3 | 315 |
| धूमोर्णापृष्टगं यामं | 49 | ¥ | 909 | " | 908 | 58 | 3 3 0 |
| धैर्ये शीलाङ्गसम्पन्नं | २८ | ३८ | 43 | नरसिंहोऽय या कार्यः | 02/2 | | 293 |
| धैयौविषका गतिरसमाना | | 3 G | 900 | • | ५३ | 11 | 906 |
| ष्य श्रमागाद विष्यामि | 904 | 4¥ | 390 | नरातिज्ञनतथैव | २८ | YY | 44 |
| ध्यज्ञेन सक्तं पापं | 44 | ¥€ | २०• | नयनिर्भूनिकानिश्व | ۲۹ | ९५ | २३८ |
| ध्यको वंशस्तया येशुः | 43 | 14 | २८ | नषमे विश्वदा धैर | 55 | ५६ | ३७९ |

| अध्या. | श्रोक | g. | | अध्या, | श्लोक | ā• |
|--------|------------|-------|---|---|--|---|
| ą | 3 | Ę | नासत्यावश्चिनां प्रोकौ | c | 96 | 90 |
| 95 | 93 | ३६ | मासापुटाधरोष्टाना | 35 | ۷ | 938 |
| 24 | 40 | २४७ | नासाविद्यणनासस्य | ş o | २७ | 903 |
| 908 | २६ | ३०६ | निकुधिर्भ च तद्भवें | २४ | 90 | Ęo |
| 908 | 39 | - 3.4 | निकृधित रेचितं च | ३५ | 48 | ৩৭ |
| ₹ ० | ५० | 4,9 | = | २४ | ६० | Ęų |
| 904 | 5 | ३१६ | | ५३ | 93 | 908 |
| 903 | 95 | 255 | | 903 | ६२ | ३०३ |
| ८६ | 80 | २३३ | | *3 | પુષ્ | 949 |
| 903 | Ęg | ३०३ | | *3 | 94 | 944 |
| 46 | 60 | २८२ | · | ४३ | २५ | 94६ |
| ३० | 25 | 903 | | 906 | 96 | 380 |
| ४२ | ₹ € | 985 | _ | 900 | २८ | ₹¥9 |
| ४२ | રૂ પ્ | 986 | | • • | 936 | ₹6€ |
| न ४२ | ૪ ٩ | 988 | | नो १ | 9 4 | २ |
| ४२ | 95 | 980 | नित्यं प्रसारयेश्वस्तं | ₹ ₹ | ३७ | 994 |
| २ ६ | \$3 | ٤٤ | | 908 | ĘĘ | ३२८ |
| 8 | • | c | | ς ξ | 3 | २७४ |
| २४ | £ 2 | ६५ | | 908 | ¥ξ | १०७ |
| 906 | 59 | ३३० | नित्याधर्ययुता लोके | 58 | \$12 | ঽ৬৬ |
| २७ | Ę | c4 | निदामेद धतुथ्याँ तु | ३० | 95 | १०२ |
| ४२ | 96 | ያሄው | निद्रामाबाह् यि ध्यामि | 904 | ५७ | ३२१ |
| 900 | 99 | ३३८ | विद्रासमुखं सुप्तत्वं | ₹9 | ३२ | 900 |
| 94 | ۷ | 33 | निन्द।स्तुतिस्त्येवीका | 98 | 98 | 3 2 |
| 90 | ₹9 | \$4 | निपातनाधोग विभागदर्श | ना ५ | ३० | 93 |
| 90 | 96 | ३८ | निबद्ध भ्राम्यते येन | 908 | 94 . | 3.20 |
| dog | ₹ € | 4 | निमीलितं तथा चधुः | 5 5 | | 48 |
| 9 | 9 | | | | | 908 |
| 900 | 8 | 1 | _ | • | | ३२६ |
| | | | | | € € | 320 |
| | | | | | | () |
| | | | | | | ६३ ३३४ |
| | | | | | | 44. |
| 84 | 4 | 194 | ्रवीद क्षास्त्रकाराक्ष्यसः | • • | 14 | , . , |
| | | 2 | २ १६ १३ १८० १०० | त १६ १३ ६६ नासत्याविश्वनां प्रोक्ती नासाविद्याधरिष्टाना नासाविद्याधरिष्टाना नासाविद्याधरिष्टाना नासाविद्याधरिष्टाना नासाविद्याधरिष्टाना नासाविद्याधरिष्टा ना नासाविद्याधरिष्टा ना नासाविद्याधरिष्टा ना नासाविद्याधरिष्टा ने निष्टा हिस्से चे निष्टा हिस्से चे निष्टा हिस्से चे निष्टा हिस्से चे निष्टा हिस्से चे निष्टा हिस्से हिस्से निष्टा हिस्से हिस्से निष्टा हिस्से हिस्से निष्टा हिस्से हिस्से निष्टा हिस्से हिस्से निष्टा हिस्से हिस्से निष्टा हिस्से हिस्से निष्टा हिस्से हिस्से निष्टा हिस्से हिस्से निष्टा हिस्से हिस्से निष्टा हिस्से हिस्से निष्टा हिस्से हिस्से निष्टा हिस्से हिस्से निष्टा हिस्से हिस्से निष्टा हिस्से हिस्से निष्टा हिस्से हिस्से हिस्से निष्टा हिस्से हिस्से निष्टा हिस्से हिस् | ३ २ ६ नासायाविधनां प्रोक्ती ८ नासायुद्धाधरीष्टाना ३९ नासाविद्धणनासस्य ३० नासाविद्धणनासस्य ३० नासाविद्धणनासस्य ३० निष्ठि सिर्म च तद्भवं २४ निष्ठि सिर्म च तद्भवं २४ निष्ठि सिर्म च तद्भवं २४ निष्ठि सिर्म च तद्भवं २४ निष्ठि सिर्म च तद्भवं २४ निष्ठि सिर्म च त्र्भवं २४ निष्ठि सिर्म च त्र्भवं २४ निष्ठि सिर्म च दिष्टे ५ ५३ निष्ठि सिर्म च दिष्टे ५ ५३ निष्ठि सिर्म च दिष्टे ५ ५३ निष्ठि सात्राच्यायायाय १०३ निष्ठि सिर्म च दिष्टे ५ ५३ निष्ठि सात्राच्यायायाय १०३ निष्ठि सिर्म च दिष्टे १०३ निष्ठि सिर्म च दिष्टे १०३ निष्ठि सिर्म च दिष्टे १०३ निष्ठि सिर्म च दिष्टे १०३ निष्ठि सिर्म मार्थि सिर्म १०८ निष्ठे प्रसार्थे स्तर्य १०८ निष्ठे प्रसार्थे स्तर्य १०८ निष्ठे प्रसार्थे स्तर्य १०४ निष्ठे प्रसार्थे स्तर्य १०४ निष्ठे प्रसार्थे स्तर्य विद्यायायायायायायायायायायायायायायायायायाया | ३ २ ६ नासत्याविश्वनां प्रोक्ती ८ ३० नासाय्याविश्वनां प्रोक्ती ८ ३० नासायुद्राधरोष्टाना ३९ ८ नासायुद्राधरोष्टाना ३९ ८ नासायुद्राधरोष्टाना ३९ ८ नासायुद्राधरोष्टाना ३९ ८ नासायुद्राधरोष्टाना ३९ ८ नासायुद्राधरोष्टाना ३९ ८ नासायुद्राधरोष्टाना ३९ ० १० १३ नेष्ट्राधित रेचितं च १५ ५४ १० १०४ ९ १९ १९ निर्म्वाचाहिय्यामि १०३ ६२ निर्मानावाहिय्यामि १०२ ६२ निर्मानावाहिय्यामि १०८ ६२ निर्मानावाहिय्यामि १०८ १८ निर्मानावाहिय्यामि १०८ १८ निर्मानावाहिय्यामि १०८ १८ निर्मानावाहिय्यामि १०८ १८ निर्मानावाहिय्यामि १०८ १८ निर्मानावाहिय्यामि १०८ १८ निर्मानावाहिय्यामि १०४ १३ निर्मानावाहिय्यामि १०४ १३ निर्मानावाहिय्यामि १०४ १३ निर्मानावाहिय्यामि १०४ ५० १० ११ १८ विद्रामावाहिय्यामि १०४ ५० निर्मानावाहिय्यामि ४ ५० निर्मा |

| | अध्या. | श्लोक | y. | | अध्याः | , श्लोक | ছ. |
|------------------------------|--------------|-------|------------|--------------------------|------------|---------|--------------|
| नीरवर्गी महाभागी | ८५ | ३१ | २२४ | पञ्चालमध्यमा चेति | २० | 49 | ५२ |
| नीलवस्त्र: सुवर्णाम: | ५० | 3 | १६९ | पश्चावराङ्कं तत्त्रोक्तं | 90 | 90 | ३७ |
| नीलामिः श्वेतपक्ष्माभिः | 94 | રે | २७३ | पटकृ हगुडच्छेग्रो | ч | * * * | 93 |
| नीहोत्पलाभं गगनं | ६२ | ٩ | 964 | पण्ययुक्तास्तु कर्तव्याः | ४२ | ξ× | 949 |
| नीलोत्पलाभा धूमोर्णा | ५१ | ર | 909 | पताकक्षिपताकथ | ₹६ | ٩ | ७५ |
| नेत्रप्रदर्शिता ज्ञेया | 33 | 66 | 995 | पताकाभ्या तु हस्ताभ्यां | २६ | 48 | ७९ |
| नेतमुत्यलपत्राभं | 36 | ٩ | 933 | पतितोध्वंपुटा साहा | ૨૫ | | ६७ |
| नेत्रस्यानुक्रमेणैव | ર્ષ | ષર | ও ৭ | पत्राकृतिमी रेखामिः | ¥9 | Ę | 988 |
| नेपध्यभवनद्वार | 98 | 9 | ४६ | पत्रेषु कल्पयेत्तस्य | હધ | Ę | २८६ |
| नैकवेरमगती कार्या | ८६ | 938 | २४१ | पद्मनाभस्य मे रूपं | ۷9 | 9 | 294 |
| नैकासनं स्याद् गुरुणा | | | | पद्मपत्रतिभं नेत्रं | ३७ | 92 | 933 |
| तु राजन् | २२ | २३ | ५६ | पद्मपत्रसवर्णाभी | ४९ | ર | 986 |
| नैगमेविविधैश्राब्दैः | 8 | Ę | ۷ | पद्मपत्राभवपुषो | cy | २६ | २२४ - |
| नैतान्यायुधजातानि | ૮૫ | 9 4 | २२३ | पद्मपत्राभगीरा तु | دي | وق | २२८ |
| नैहक्तं द्विविधं विद्वि | ષ | 9 Ę | 99 | यद्मपत्रासनस्थस्तु | ६३ | 9 | 928 |
| नृदेहास्ते न कर्तव्याः | 44 | 40 | २२७ | पद्मस्य हपं कथित तवैतत | (४५ | 9, | 989 |
| वृत्तमुत्पादितं ह्येतन् | ३४ | 9 ६ | १२५ | पद्मपाशी करे कार्यी | ५२ | ч | 903 |
| नृतं गीतं तथा वादं | 38 | २७ | १२६ | पदां लक्ष्मीगृहे चिहं | 38 | 80 | 255 |
| नृत्तमुत्पादितं केन | 38 | 9 | 928 | पद्मं समुसलं कार्यं | ६५ | 8 | 966 |
| नृत्तरासंसमाच क्ष्व | ર | 4 | 3 | पद्मानारी भवेद्धस्तः | ३ ३ | 93 | 993 |
| नृत्तं तु द्विविधं प्रोक्तं | २० | ર | ¥ ७ | पद्मादिप्रहणे कार्ये | २६ | ४५ | 45 |
| नृत्तेन वृत्ति यः कुर्यात् | 38 | २८ | १२६ | पद्माक्षेत्र महाराज | *4 | ६१ | 949 |
| नृत्तेनाराधयि प्यन्ति | 3.8 | 90 | १२५ | पद्मोदयिन्दुसंभृती | ३४ | ų | 128 |
| नृतेक्षरस्वं चावाप | 38 | २३ | १२६ | पहिशं नन्दकं चैव | 60 | २८ | २४५ |
| चृत्यमाना महाभागा | ५३ | ₹ € | २०३ | परचेष्टाचु ऋरणात् | 39 | 3 | 808 |
| नृहत्पधारीणि भुजज्ञमस्य | 62 | 4 | २१५ | परस्पराञ्चाभिमुराौ | ८६ | १३२ | २४१ |
| चृ वराहोऽय वा कार्यः | 4 | ٦ | २१२ | परमाञ्चन मेध्यैध | 38 | ¥ | २६६ |
| चृवराहोऽथ वा कार्यो | ७९ | \$ | २६२ | परम्य पुरुषस्येषा | ** | 7 | 168 |
| पद्मस्तु शीतलीभूताः | 59 | 9• | २५७ | - | २० | 3 | YU |
| पमेष्टकगृहादैव | 43 | 45 | २६० | पराष्युसस्यामियुखी | 38 | 80 | ६३ |
| पक्षेष्टकानां रचना मयोर | ภ ร า | 94 | २५८ | परार्थवर्णनं यच | २८ | ٩. | 5. |
| पद्म ने समले प्रदी | 90 | \$ | २२ | परापराधर्वभूता | 3 4 | 34 | 9.4 |
| पग पिन्याक्त्रात्वि | 92 | 93 | २८ | पराष्ट्रतेन शिरसा | ર્૮ | U | %• |
| पगमे सुतदा घोषा | 5 € | 121 | २८५ | परिकमन्मया तीय | źx | 1'5 | 434 |
| 30 | | | | | | | |

| | क्षध्या. | श्लोक | 7. | | अध्या. | ধীক | ą. |
|---------------------------------|----------|----------------|-------------|----------------------------|------------|------------|------------|
| परिवृत्तं निवृत्तं च | २० | 75 | 49 | पार्श्वप्रासादयोस्तस्य शंह | | | |
| परिवेशस्तथा कार्यः | 20 | 84 | २४६ | पर | ग्रै ८६ | 40 | २३६ |
| परिवेष्टे तथा चन्द्रे | ९६ | Ęų | २८० | पार्श्वयोर्वलभीपृष्ठे | ٤ ۾ | २२ | २३२ |
| पर्वतं तु शिलाजालैः | ४२ | 45 | 949 | पार्थस्ययलमीहीनो | 6 | ३६ | २३३ |
| पर्वताथ तथा राजन् | *3 | 43 | 940 | पार्श्वस्यवलमीहीनं | 6 | ३७ | 228 |
| परयन्ती देवदेवेशं | 64 | 93 | २२३ | पार्थागतं च विज्ञेयं | 34 | ¥٦ | 125 |
| पक्ष्मो(? क्षो)क्षेपे रेचित | तक २६ | 90 | હદ્ | पार्श्वागतमिति प्रोक्त | 35 | २० | 930 |
| पक्षात्रहारैद्विनिधेः | २८ | YĘ | 58 | पिण्डिताभ्युद्गतश्चेव | ३५ | υą | ษรุ |
| प (१व) सोपदेशपदावि | द्वी २८ | 48 | 5 ¥ | पिता तातस्तथा वाच्यो | 90 | ¥¥ | ¥+ |
| पश्चिमाशामुखी वापि | ۷۷ | 96 | 3 ¥¥ | पिशाचा जलमंकाशाः | 20 | 35 | 25 |
| पश्चिमाशा मुखः कार्यः | دن | २० | 388 | विशाचानां तु पत्नयोऽपि | - | ₹.¢ | 986 |
| पश्चिमेन सुतध्नी स्यात् | ર્ | ₹ 9 | 938 | पिशाचा वामनाः कुटजाः | 83 | 92 | 970 |
| पाछजन्यः स्मृतदशंखी | 2 | 9 | 9.0 | पीडनैः शलसम्पतिः | 30 | २५ | 903 |
| पातालं विवरं रभं | 93 | 93 | ₹ 0 | पीतके मण्डले गोघा | 50 | 93 | २५५ |
| पात्रं मोदकपूर्ण तु | 69 | 98 | 950 | पीनस्कन्धकटिप्रीवः | ७८/२ | ₹ . | 290 |
| पाने परिजने तन | 90 | 98 | ३८ | पीनस्कन्धभुजश्रीवः | دع | ३ २ | 146 |
| पादपीठकृतः पाद | 9 | 94 | 956 | पुत्रपर्यायशब्दाध | 93 | ` | २७ |
| पादपीठगतं पादं | ۶۶ | 5 | 965 | पुनर्वसी विनाशय | 4.6 | 39 | १७६ |
| पादयोरनुगी चापि | २९ | 5 | ९७ | पुनः संपूरयदिद्वान् | 38 | 90 | 288 |
| पादेन चैकेन रथस्थितेन | र ७६ | eq. | 200 | पुरे मधु खरुं गाउं | 93 | v | 35 |
| पादो विरचितस्त्र्यथः | २३ | 39 | بري | पुरावमि (१ पि/हिती यत्र | 34 | ₹७ | U = |
| पारुष्यविकृतिकोध | *3 | щ | 944 | पुटी प्रस्फुरितौ यस्या | २५ | 94 | ٠ ६८ |
| पापाणं सेपितं तेन | 50 | 96 | 344 | पुरुषप्रमदायुग्मं | 30 | २२ | 902 |
| पार्लिएभ्यन्तरं गरुहेद् | २४ | አ ብ | ६४ | पुरुषस्य समीपस्था | 30 | 4 | 9 3 9 |
| पार्श्व नतं तथा कार्य | . 33 | ¥ | 48 | पुलिन्दा दाक्षिणाव्याश्व | २७ | २१ | c 🤅 |
| पार्श्वप्राप्तादयोस्तस्य कर्ते | | ξ \ | २३५ | पुस्तकं चाझमाटा(१सा) = | र ६४ | 3 | 960 |
| पार्श्वप्रासादयोस्तस्य कर्त | | ኒ ዕ | २३५ | पुष्कर्थ नथा कार्यः | ७३ | 90 | 300 |
| पार्श्वप्रासादयोस्तस्य करी | | ৬৭ | २३६ | पुष्पाञ्चलिः प्रदातस्यो | ₹ • | 90 | YU |
| पार्श्वत्रासादयोः कार्यी | ٤ ۾ | 28 | २३६ | पूजनं जर्जरस्य।पि | २० | E | ያ ሀ |
| पार्श्वप्रास'दयोः कार्या | 25 | { \$ | २३६ | पूजनं मण्डलं कार्यं | 38 | 94 | २६७ |
| पार्श्वप्रासादयोस्तस्य का | | ७२ | २३६ | पूज्यते परमाचार्यः | 48 | ३१ | २६८ |
| पार्श्वप्रासादयोस्तस्य का | | to pl | २३६ | पूर्ण तुष्टे तु कर्तव्यं | २५ | ę٩ | ٧₹ |
| पार्श्ववासादयोस्तस्य मृत् —— | | | | पूर्वे दिहरसदायादे | 5 8 | २८ | 366 |
| काशै | 68 | ĘC | २३६ | पुरयेदक्षरेश्तावन् | 3 | 36 | • |

| | अध्या. | श्लोक | y. | | अध्या. | श्लोक | ঘূ. |
|-----------------------------|------------|-------|-----------|---------------------------------|--------|----------|------|
| पूर्वोक्तविधिना गत्वा | 5 0 | 9 | २५४ | प्रहृप्टनर्नारीकं | ४२ | ७४ | 942 |
| पूर्वमेव च ते प्रोक्तं | 84 | 98 | १६७ | प्राकाम्यं च तथैशित्वं | ८५ | ४१ | २२५ |
| पूर्वमेव मया प्रोक्त | وق | २ | १९७ | प्राकारे जानुद्दनाढ्या | ८६ | 906 | २३९ |
| पूर्व (१ पूर्व) रह्मविभागेन | ४० | 90 | १४२ | प्रोक्तं त्वया द्विजशेष्ठ | ٤٤ | ٩ | २३० |
| पूर्वाप्रमुत्तराधं वा | 69 | २२ | २५३ | प्राकृतं तु स्वभावस्थं | २५ | ξo | ७२ |
| पूर्वाणि चाभिनेयानि | २६ | ६४ | 60 | प्रागुक्तं देवतान्यासात् | ८७ | ३६ | २४६ |
| पूर्वापराशामिमुखः | ٤٤ | 49 | २३५ | प्रागुक्तं रूपनिर्माणम् | દહ | 9 | 989 |
| प्वापराशामिमुखौ | ८६ | 933 | २४१ | प्राग्भागवलभीही नं | ۷ ۾ | 40 | २३५ |
| पेला चैव समजिष्ठा | 99 | 93 | २६ | प्राप्राने दर्शयेत्व | ४२ | ६९ | 147 |
| पारजानपदाः श्रेष्टाः | ४२ | 88 | 940 | प्राङ्मुखो देवताध्यायी | ४० | १३ | १४२ |
| पौरुपे मियते तच्च | ४ | 93 | 5 | प्राजापत्येन रूपेण | ७२ | 3 | 988 |
| पौष्णान्तपादगे चैव | 98 | ६६ | २८० | ,, ,, | ७३ | २ | २०० |
| प्रशृत्तिरिति विख्याता | २० | Ęo | ,५२ | प्राणिना झेशतप्तानाम् | ४२ | ७३ | १५२ |
| प्रशान्तधीरा ऋषयः | २० | 93 | 86 | प्रातिपदिकमिहं स्वं | २ | २२ | q |
| प्रश्नोऽनुज्ञा तथाख्यानम् | 8 | 99 | 9 | प्रादुभविगते नार्ये | ረ६ | १३७ | २४२ |
| प्रसन्ने पद्मनेत्रान्ते | 36 | 3 | १३३ | प्रकम्पिता च विच्छिन्ना | 3,8 | ३८ | ६३ |
| त्रसन्नवदना नित्यं | ३८ | ٤ | १३३ | प्रकाशकानि छोकस्य | 86 | 96 | १६३ |
| प्रसन्नादिः प्रसन्नान्तः | 96 | 3 | 88 | प्रकाशितैकपार्श्वे न | ₹ % | २५ | १३८ |
| असर्पिततलं चैव | २० | ५३ | ५१ | प्रकृति विकृतिस्त <u>स</u> ्य | 86 | २ | १६२ |
| प्रसाधनं मण्डनं स्यात् | 90 | 90 | २३ | त्रकृती याति धर्मज्ञ | 49 | 96 | १७२ |
| प्रसादजननारम्भैः | २८ | ३४ | ९३ | प्रख्यातनायक्वधं | 90 | 90 | ३८ |
| प्रसारणादुभयत <u>ः</u> | २४ | ३३ | 43 | प्रजाप तसुते देवि | ९४ | ३० | २६८ |
| प्रगारितं तथा स्तब्धं | २४ | 94 | ६१ | प्रति ज्ञागर्भज्ञौयदि पु | ४३ | Ę | १५४ |
| प्रसारितं प्रहपीदौ | २४ | 30 | ६३ | प्रतिनायकवेशस्तु | २० | 90 | 86 |
| प्रसारितामाः सहिता | २६ | 98 | ७६ | व्रतिषेधकृते थोज्यो | २६ | Ro | 30 |
| प्रसारिती पुरी यत्र | २५ | 300 | ৩০ | प्रतिष्ठा तेन कर्तव्या | 43 | 98 | २६२ |
| प्रसारिती भुजी कृतवा | ३१ | | 998 | प्रतिष्ठा सक्ला स्यित् | ९३ | 9 0 | २६१ |
| प्रस्पन्दमानपद्माप्रा | 34 | २१ | ६८ | प्रतीपनयनं यत्र | २४ | 43 | ६४ |
| प्रस्फूरिताक्षिरोमार्थः | ३० | २८ | 903 | प्रत्यक्षमनुमानं च | 4 | 93 | 99 |
| प्रसृताङ्गुष्टमुत्तानं | ३ ३ | २५ | 998 | प्रत्यक्षाभासमप्युक्तं | Ч | 93 | 19 |
| प्रस्ता तर्जनी चात्र | ₹ € | 33 | 96 | प्रत्यक्षेणापि पश्यन्तः | \$3 | ર | २६९ |
| प्रस्ते तर्जनी कृत्वा | 33 | ٧ų | 998 | प्रत्यक्षोऽभिनयः कार्यो | २८ | 40 | 94 |
| अहारतः प्र(१ रे तत्प्र) | | | | प्रत्युदाहरणं चैन | 4 | 3 | 90 |
| यो कव्यम् | २२ | 90 | 44 | प्रशुम्ने विद्धि वैराग्यं | 46/9 | 1 7 | ₹0\$ |

| | सध्या. | श्लोक | ই | | भःया | श्लैक | ā |
|--------------------------------|---------------|-------|--------------|--------------------------|------------|-------|-------------|
| प्रधुमन कामदेवध | ć | 3 | 90 | त्रासादो मध्यमाधात्र | وع | \$ | २४३ |
| प्रशुम्न कामदेवस्त | 43 | 93 | 908 | प्रासादो राजराजाख्यो | ٤ 4 | 705 | २ ३९ |
| प्रपातवाते यदूपम् | 43 | 93 | 908 | शसादो लोकपालस्यो | 65 | 930 | २४० |
| प्रयाह् ताबदेवी तो | 34 | 9 6 | 976 | प्रासादो वर्तुलक्टि | 4 | 929 | 5.50 |
| प्रभा सुवर्चेटा प्रोक्ता | ६७ | 94 | 953 | श्रीकस्समवता(१का) र | द्य∙७ | 28 | 35 |
| त्रभाच तेपावर्तव्या | 36 | 93 | 938 | पृषु कार्यस्तथा राजा | د لا | 69 | २२७ |
| प्रमाणहीनस्तु जनोऽस्ति | भूयाद | • | | पृथिवी तेन वर्तव्या | ६५ | v | 966 |
| | 35 | 49 | 920 | पृथ्वी देवे हडा सौम्या | 35 | មន្ | 269 |
| त्रमाण नृप इसस्य | ३० | 90 | १२७ | पृष्ठे पृष्ठ तु सयोज्य | 33 | 12 | 993 |
| प्रमोदमथ जानीहि | 24 | 83 | २२५ | पृष्ठ पृष्ठे तु सयोज्य | 33 | *4 | 995 |
| प्रयाणीयतसप्रेपयुद | 94 | 8 | ३३ | फणावलितस्य तु या प्रति | ष्टा ६५ | c | 966 |
| प्रयोजन सरायनिर्णया र | 7 6 | 9 | 98 | फणाक्ष बहव कार्या | ξų | ₹ | 166 |
| प्रतृतक्षा सा साहा | १५ | २३ | £ \$ | फ्ट जैलोक्यदानस्य | 20 | *4 | २३७ |
| प्रविश्य सम्यक् त विद्रार | (63 | ३० | र५३ | फ रुगुनश्च तपस्याख्यो | 5 | Ę | २० |
| प्रवेशकेन कतन्यम् | 90 | 93 | ३८ | बन्धस्यास्य प्रकुर्वात | 33 | ¥ | 445 |
| प्रवृत्ता (१ पर्वता) नप्राशुयो | गेन२८ | 49 | 48 | बन्धे स्वनामिका त्वरिमन् | ३ ३ | 40 | 996 |
| प्रादुर्भावा देवदेवस्य विध | | 60 | २२ \$ | बला च मघुक चैव | ९ २ | U | २५९ |
| प्राप्त्यप्राप्तियुतो गर्भ | 90 | 49 | ¥9 | बहुदैवसिकं पृत | 74 | 14 | 36 |
| प्रायेण गौरा कर्तव्या | २७ | २२ | 23 | बहुदोपकरी सा दु | 50 | ₹४ | 348 |
| प्रार्धप्रासादयोस्तस्य वर्त | भौ <i>८</i> ६ | ६६ | રૂપ | बहुरूपस्य देवस्य | ۶ ک | 53 | २१९ |
| प्रासादकरण पुण्य | 9 | 99 | ર | य हुवातायनोपेतो | 6 | 993 | २४० |
| प्रासादका महाराज | 20 | ¥ | २४३ | बहुनर्था चतुथ स्यात् | 5.5 | 999 | २८४ |
| प्रासादकेषु वर्तव्या | 44 | २५ | २४५ | बह्व युधधरी रौद्रो | 3 | 93 | 90 |
| प्रासादमय वक्यामि | 20 | 9 | २४३ | वधो रसानुग साये | 90 | 23 | * 3 |
| प्रसादलक्षणमिद कथित | ر ۾ | 989 | २४२ | बाणचापधर श्रीमान् | ٤4 | ६९ | २२८ |
| प्रासादस्वेमशिखर | 23 | 923 | ₹४० | शास्य द्रोऽभिनेय स्यात् | | २३ | 20 |
| प्रासादस्याष्ट्रसो भाग | ۷ ۾ | | २३२ | शरकी नी चश्रण्डानां • | 90 | १२ | ३९ |
| प्रासाद शहुसम स्यात् | e Ę | 920 | २४१ | ब रू ज्ञान तथैस्वर्य | ¥υ | * | 164 |
| प्रासादार्धं कटि कार्यो | ८६ | Ę | 430 | बाले-दुनुलयद्यूम | 3 6 | 13 | ३२६ |
| प्रासादानां शत चैतत् | | 925 | २४१ | बाहुगण्डसलाटेषु | 38 | 39 | *\$¢ |
| श्रासादास्तु भया श्रोका | ٠, | 303 | २३९ | बाहु सिर्वेहु मिटयीत | 44 | ¥ | 963 |
| प्रासादे स्वरणे लगना | 64 | | 246 | शश्चतो रक्षण नास्ति | 55 | 94 | २५५ |
| प्रासादे गारहे वापि | ٤٤ | | २३६ | विभिति वक्षसा ज्ञान | YU | ₹ | 164 |
| प्राप्तादेऽस्मिस्तु वर्तव्या | 4 | २६ | २३२ | बिस्वज घरामिश्र तत् | 7.0 | ŧ | 141 |

| | अध्या. | श्लीक | ੜ• | } | अध्या. | <i>स्</i> ग्रेक | 펻. |
|-------------------------------|--------|-------|------------|--------------------------|------------|-----------------|--------------|
| बिल्वं च सक्लं लोकम् | ८२ | 5 | २१६ | भरतो लक्ष्मणधैव | ८५ | ĘĘ | २२७ |
| गीमत्सदर्शनाचैस्तु | 39 | 90 | 908 | महातकानि विल्वानि | 39 | ų | 249 |
| बुद्घ्वा रूपं यथावेशं | 83 | 85 | 940 | भवता हि प्रसादेन | 10¥ | 998 | 33Y |
| बुधो लग्ने धनयुता | 98 | 990 | 3,48 | भवद्भिश्वाभ्यनुज्ञातः | 45 | 95 | રૂપવ |
| युद्धिलेजा वपुः शान्तिः | פט | 5 | २०८ | भवन्ति मेखलापृष्ठे | 60 | Ę | 283 |
| बुद्धया शरीरभूतात्मा | 4 | २६ | १२ | भागस्तु मेखला तत्र | د ټ | २३ | २३२ |
| महाचारी हविष्याशी | 90 | २ | २८७ | भागस्तेषा तु जगती | ८६ | २० | 239 |
| ब्रह्मणस्त्वनिरुद्धस्य | 83 | 90 | 964 | भागं तु जगती कार्या | ८६ | ¥ | २३० |
| बह्मणा तस्य निर्दिष्टं | 49 | 9 0 | 909 | भागे तु दक्षिण गङ्गा | цэ | Ę | १७३ |
| ब्रह्मणा क्यितं तस्य | 43 | 4 | 904 | भाण्डागार. स्पृतः कोर | ो १० | 93 | 2 ફ |
| ब्रह्मशुक्षेण सूत्रेण | 55 | ٦, | २९२ | भाण्डाना च महाराज | 6.8 | 90 | 250 |
| ब्रह्माणं पुरतः कृत्वा | 38 | 95 | २६७ | भारती सात्त्वती चैव | २० | 44 | ५२ |
| ब्रह्माणं बारथेडिद्वान् | ጳጳ | 4 | 946 | भार्या च तस्य कर्तव्या | ५७ | 3 | 960 |
| ब्रह्मा पितामहरशंभु' | 4 | 90 | 90 | भावाध्यायमतो वन्मि | 39 | 9 | 908 |
| बृसी देया महाराज | १२ | २० | ५५ | भावो भवतु यो यस्मिन् | 104 | २५ | źxg |
| बृहद्रण्डीष्टनेत्रत्वं | 23 | ۷ | 948 | भित्तिर्गर्भाष्टभागीना | 66 | ۷ | 245 |
| बृहद्गण्डौष्ठने त्रत्वं | ΥĄ | 96 | १५५ | भित्तिहीनास्तयैवैते | 35 | 50 | २३७ |
| बृहद्रधा च कर्तव्या | પ રૂ | २८ | २०२ | भुग्नं तु रुजिजते योज्यं | २४ | 38 | ६२ |
| षृह्रपतिं वृहद्वाक्यं | 908 | 35 | २०७ | भुजङ्गाधितमन्यरस्यात् | ₹• | ¥Ę | 41 |
| व्राह्मणान्पूजियत्वा तु | Χo | 93 | १४२ | भुजासक्षराधिस्त | २६ | υų | 63 |
| बाह्यणो नायकस्तन | 90 | २० | રૂ૮ | मुबनास्ते स्वया होयाः | CY | 6 | ₹ ₹ ◆ |
| मकानुकम्पिन् सततं | 908 | २८ | ३०६ | भुवः परीधण इयति | \$₹ | YY | २६५ |
| भक्तानुकस्पिनं देवं | 408 | *4 | ₹ € | भुवः सशोधनं सुर्यात् | 4.8 | ч | २६६ |
| भक्त्या[भा]क्तं वृसिद्दः | | | | भुजलायासवहीन्दु | 6 | 48 | २३४ |
| स्यात् | ч | २० | 99 | भूतभव्यभवतार्थ | 408 | 4 | 408 |
| भगवन् सर्वदेषानाः | 906 | 1 | ३३९ | भूतानि परय प्रयक्षं | ረዓ | २० | २११ |
| मगविति यक्ष्या | 30 | 83 | X. | | 114 | \$ | १५० |
| भगमावाद्विष्याम | 308 | 63 | 330 | भूमिकाद्वादशायेतः | 4 | 43 | २३८ |
| भन्नो स्टारमात्रध | 18 | 98 | | भूमिवंशुंधरा वृथ्वी | ۷ | 4 | 70 |
| मद्रपीठं ततो मागे | 44 | ч | 306 | भूषितास्तेऽय वर्तस्याः | 36 | \$ | 25.5 |
| गद्रपीठं सुधः सुयदि | 4 | 3 | 44 € | भौगिभोगामनागीन | 114 | Ę | 300 |
| मद्रमृतिमनिर्देश्य | 908 | 35 | ₹•€ | | | د ز | रेरड |
| भयानके निष्यम् | રૂપ | VV. | 49 | भीमस्य च तया कार्य | (3 | 3. | 354 |
| भयान्ये विमर्गध | ६५ | UY | પર્! | भीमेऽभिना प्रस्तेत | 55 | ₹ { | २७६ |

| | अध्या, | ≉ेक | पृ, | 1 | क्षध्या. | . श्लोक | ષ્ટ- |
|-------------------------------|--------|------------|------------|------------------------------|----------|------------|------|
| भौभोऽभितुल्यः कर्तव्यः | ६९ | ? | 954 | मतियैव तथोप्रत्वम् | 39 | 49 | 906 |
| भ्रमरास्किन्दिते स्यातां | ₹ 0 | २ ६ | 85 | मत्तरी त्वर्धमृत्तही | २० | XX | 49 |
| भ्रमरेण प्रदेशिन्या | • २८ | 95 | 49 | मरस्यदेव स्वमभ्येहि | 908 | \$2 | 330 |
| भ्रामयेद्रर्तुलाङ्गुष्टा (१४) | 1 23 | LS. | 995 | मरस्योदराकृति कार्यम् | ३७ | 38 | 132 |
| भुकुटीकुटिला कुदा | २५ | 93 | Ęc | मत्स्योदराख्य विवेतं | 3 0 | 99 | 93,3 |
| सगुणामय साध्यानाम् | હર | २ | 955 | मदविलसितश्रैव | २० | 39 | ¥5 |
| मकरे क्षिप्रनाशा स्यात् | 3.8 | 90 | २८२ | मद्योपयोगेन मदो | 39 | 94 | 964 |
| मकारहीना च (१४) | न्धा ७ | २ | 94 | मधुरा च क्याया च | 43 | 33 | २६४ |
| म[ध्व]क्षश्चन्दगौरस्तु | ३६ | ? | 930 | मनसथ तथा सङ्गी | ३० | 94 | 903 |
| मधुपर्वविधिः सौम्य | 993 | 9 | 326 | मनस्तु गरहो होय: | 80 | v | 154 |
| मध्कपुष्पसंकाशा | ४९ | Ę | 980 | मनुद्रयस्य मे ह्रपं | Va | 9 | 954 |
| भध्यप्रासादकोणेपु | ८७ | 90 | ₹ ¥ ₹ | मनुष्यो मनुजक्षेव | 90 | 9 | २२ |
| मध्यमाङ्गुष्ठसन्दंशो | ₹ € | AR | US | मन्नावाहयिष्यांम | 903 | २७ | 30e |
| मध्यमा तर्जती चैव | ३३ | CO | 995 | सनोरथानां लामेन | 39 | २६ | 906 |
| मध्यमी चोन्नती कृत्व। | 33 | 995 | 923 | मनोरथाप्तिजो हर्पो | 39 | *9 | 900 |
| मध्यसस्यौ करौ दृरवा | ३३ | ٧¥ | 994 | मन्त्रास्तु विविधाः प्रोक्ता | T ¥ | 30 | c |
| मध्यस्थेनेव भावेन | २८ | i | % 0 | भन्ताः सनाह्मणाः प्रोकाः | 90 | 9 | ३७ |
| मध्यार्घार्ध तयार्घार्धम् | ₹\$ | 89 | ባኒጜ | मन्त्रिणश्च महाराज | ¥₹ | • | 484 |
| यध्या दितीये भवति | 3.5 | २३ | २७६ | मन्त्रेषु देवता युक्ता | \$ \$ | १२५ | 943 |
| मध्येन निवक्तिमङ्ग | 44 | 4 | २२२ | मयदापालनायीय | 49 | c | 909 |
| मध्ये प्रमारिताः तिस्रो | ३३ | २४ | 338 | मरणं राज्यविश्रंशो | 90 | 35 | ३८ |
| मध्ये मेढूं तु विह्नेयम् | ३५ | 34 | 926 | मस्तो मातरिश्वानी | • | 95 | 90 |
| मध्वाज्याकेन राजेन्द्र | 63 | 24 | २५२ | मलिना विरहे कार्यो | २५ | 36 | Ęĸ |
| म् जाने युटिलानां | | | } | मलिनाऽऽकेकरा शान्ता | 34 | 3 | 60 |
| (१ मार्जने स्हिमानां) | २२ | 44 | 4,4 | मध्रकं तु दातव्यं | २२ | 7 7 | 46 |
| भणियन्धननिर्मुक्ती | 3.8 | 60 | ८२ | मद्द्रपेयो भूतकृतः | E | २५ | 95 |
| मणिवन्धनदिन्यस्ती | २६ | 40 | دء : | महाकालगृसिंही च | < F | • | २४२ |
| मणियनधी निपीडयैव | 33 | 4 % | 996 | महाजनं संयोवग | २८ | yo | 4.4 |
| मण्डपादिशखरोपेतो | 64 | 993 | यह ५ | महादेवमुखं शेयं | ¥¢ | ¥ | 355 |
| मण्डपस्य च ये द्वाराः | ८७ | ٩Z | २४४ | महादेवसमीपस्यौ | 4 | 935 | २४२ |
| अण्डले स्वस्तिक चेव | २० | *9 | 40 | | 904 | 190 | \$4x |
| मण्डलेन भवेत्पीतं | ₹ | ¥3 | પ લ | | 908 | ₹४ | lov |
| मण्डपैः शिखरोपेतैः | 45 | 994 | २३९ | महावंशेषु वंशेषु | 68 | २७ | २५१ |
| प्रवहासने तु दानव्यं | र२ | 15 | فلإنع | महिषेः पश्सलीनैः | ४२ | vy . | 143 |

| | अध्या. | श्लोक | 된. | 1 | अध्या, | श्लीक | पृ. |
|---------------------------|-----------|-------|-------|---------------------------|------------|-------|-------|
| महीलाभस्तु लाभस्ये | ९६ | 925 | २८५ | मृष्मये चेष्टकान्यासं | 98 | 92 | २६७ |
| मार्गवृक्षान् महाराज | 68 | v | २५ १ | मृदुना नृप पाकेन | 59 | 5 | २५७ |
| म।घेकर्तुर्विनाशाय | 38 | 95 | २७५ | मेपोदये कृता क्षिप्रं | 38 | 38 | २८२ |
| माल्यं च म्लायते खावे | ९३ | 80 | २६४ | य एव भगवान्विष्णुः | 46/2 | 9 | २१० |
| मातह्रदूर्वारसपट्टबद्धैः | 80 | ३० | 983 | यक्षाधिषस्यैतदनन्तदंघू | ५३ | 98 | 906 |
| माता जनित्री जननी | 90 | 92 | २३ | यक्षानावाहयिष्यामि | १०३ | 94 | २\$\$ |
| मात्रकस्तु [एकमात्रो] | | | , | यक्षाः पुण्यजनाः प्रोक्ता | ۷. | २३ | 95 |
| - संघुर्वेणे: | 3 | 90 | Ę | यजुर्नेद त्वमभ्येहि | १०६ | 49 | ३२९ |
| मान्यमानस्तया भागो | 90 | 84 | ¥0 | यज्ञतात स्वमभ्येहि | 908 | १३९ | 338 |
| मात्रार्धं कण्ठरेखाया | ३९ | 34 | १३७ | यज्ञदण्डधराध्वान्ये | ८३ | 90 | 396 |
| मारणं तस्करे दण्डं | ५७ | ц | 960 | यज्ञ यज्ञोपयज्ञाङ | 908 | 93 | ३२३ |
| मार्द्वं मासमानेण | 80 | ч | 389 | यज्ञेशे यज्ञमूर्ति | 908 | x | ३०४ |
| मालाकारं ततः कृरवा | 33 | 98 | 393 | यज्ञेषु देवयजनमन्तर्वेदि | ٩ | 3 | ٩ |
| माहेश्वरं पिनाकाख्यं | c | ц | 9 ს | यज्ञोपत्रीतदेशस्यम् | २८ | 96 | 59 |
| मित्राणां तद्भवेद्वाक्यं | ¥ | Ly, | c | यज्ञोपवीतयःतथ | ३८ | 90 | 933 |
| मित्रमाबाह्यिष्यामि | 908 | 60 | 399 | यज्ञोपवीती पार्धस्यः | २ ६ | ५२ | u s |
| मुकुला हु समाख्याता | 33 | ७५ | 996 | यतो यतो (? अतोये तो |) | | |
| सुद्रैषा वञ्जसज्ञस्य | ३३ | ६१ | 110 | यवद् दृष्टि | : 5 | 98 | 29 |
| मुण्डमण्डसंयुक्तः | ۷ ۾ | 998 | ₹¥o | यत्वि घिह्नोवस। दृश्यं | 89 | ź | 114 |
| मण्डपै. सुसमाकारैः | ٠,٩ | 990 | २४० | यतिविनिमश्रसंयुक्तं | ¥ | 3 | C |
| मुष्टि कृत्वा तु वामेन | ३३ | źХ | 994 | यत्तिर्यग्भाससम | 34 | 90 | 336 |
| मुष्टिः प्रमार्जिता होया | 33 | 60 | 995 | यत्र त्वं तत्र सक्लं | 904 | ३३ | ३२५ |
| मुर्ष्टि वद्ध्या तु वामेन | 3,3, | ६५ | 990 | यया चित्रं तथे वोक्तं | A 3 | 3,4 | 946 |
| मुष्टिवंधोच्छिता कृरवा | 33 | 12 | 195 | यभादेय(१ हं) यभाकाल | ४२ | 43 | 943 |
| मुखकं करवीर च | 50 | 95 | २५५ | यया देवास्तया चित्रे | * 3 | 9 | 326 |
| मूर्निद्यते व्ययिते चैव | २४ | \$ | Ę0 | यया भूमिनिवेशास्ते | ٨٦ | 80 | 940 |
| म्डानामुपदेशं तत् | ÍA | ३१ | 356 | यथा वश्याम्यई राजन् | 58 | \$ | २६६ |
| मृतिमत्पृचिवीपाल | 60 | २ | २१४ | यथा शक्तया च फर्तव्याः | | 6 | 3,96 |
| मृतिमन्तमनैश्वर्य | 4 | c | २१२ | मभासंस्यगिति शेषम् | 34 | 35 | ३२ |
| मृतिसाइपिणी विष्णीः | 49 | 10 | १७२ | यथा सुमेद- प्रवरी नगान | | 12 | 440 |
| मूलरङ्गाः स्मृताः प्रा | ٧٠ | 15 | 982 | यथास्यिते स्वभावस्ये | વપ | 4,0 | ७२ |
| मुलकमायया चीर्पम् | 44 | 11 | વપ• | यथास्त्ररूपश्चनं | 98 | 11 | 33 |
| मृषिकायास बहुला | 53 | ३५ | २६४ | यधेष्टमानं द्वारं तद | ٤٢ | A3 | 311 |
| गृत्पीता वैश्यजातीनां | 51 | * | ३५७] | यचेष्टमंख्यागर्भे द्व | ٤4 | ४२ | २३३ |

| | सध्या | स्येक | ā • | 1 | अध्या, | , श्लेक | ₹. |
|--------------------------|------------|-------|------------|----------------------------|---------------|----------------|------------|
| यदा तदा नि(चृ)संज्ञम् | [] | 96 | v | । येपामावाहनं प्रोक्तं | १०५ | Ęg | 329 |
| यदत्र ने। जं तन्नृताद् | 83 | ३७ | 940 | यो न राजा हतो युदे | 53 | | 259 |
| यदा विनीतरे।मास | 83 | 5 | 948 | योऽसावर्चयते देशे | 900 | 95 | ₹¥o |
| यदा शुष्कं भन्नेत्कुहयं | Yo | હ | 989 | रक्तस्यामस्तु शशकः | 3 € | Ę | १३० |
| यदास्य भगवानपृष्ठे | 48 | ષ | 939 | रक्तरयामा भवेत्पूर्व | २७ | 93 | ٤٤ |
| यद्यस्माम्याष्ट्रतिष्यान | *\$ | 90 | 948 | रक्तमारा नरेन्द्राणाम् | 65 | 93 | २५२ |
| यममावाहियध्यामि | 908 | 36 | ३१२ | रक्तं जटाधरं वहि | ५६ | 9 | 909 |
| यमध निर्ऋतिधैव | cu | 3 a | २४५ | रक्ता रस्रोत्पल्इयामा | ¥o | 28 | 943 |
| यया सर्वभिदं बद्धं | *0 | * | 968 | रङ्गद्रव्याणि कनके | 80 | ર્ષ | 943 |
| यवो मापस्तया शब्दः | 92 | 99 | २७ | रक्ते विकृता तु वृषप्रधान | 39 | 36 | 900 |
| यशध सुसितं छत्रं | ५२ | 9 & | 908 | रत्नपातं करं(?रे) कार्य | ५३ | ų | 904 |
| यस्य पक्षस्य मृध्धिः | 38 | त्र् | २७६ | रत्नपानं सरयपानं | 69 | 4 | 768 |
| यस्मात्तेषु कृतामची | £ 3 | 93 | २६२ | रितः श्रीतिस्तया शक्तिः | υş | २१ | 209 |
| यस्यो मात्रावशादयों | 9 € | R | 34 | रतिमावाइयिध्यामि | 904 | 44 | 221 |
| यरिमन्मुजे घरा देवी | ওৎ | Ę | २१२ | रम्या॰यायुधहपाणि | 24 | २८ | २२४ |
| या क्रिया चान्यफलद्(| 34 | 33 | ३२ | रविः कार्यः ग्रुभरमथुः | Ęu | ٦ | 959 |
| याजकं यजमानं च | 906 | 2 | ३२२ | रशनारथं जगसार्वे | Ęu | 94 | 152 |
| याद्यावेरहस्त्याम | ¥₹ | ¥ | ا لايما و | रसम्यस्तस्य कर्त्रथ्या | ६७ | ¥ | 151 |
| यात्रा भन्ना चुतिमात्रा | 99 | ૨ | 34 | रिम्मिः करसंस्थैस्तु | € U | 93 | 345 |
| यादसा निलयाभ्येहि | 308 | 993 | 398 | रसबिम्बाक्पित्यास्तु | 53 | 5 | 546 |
| याम्ये मरणदा कर्तुः | ₹ Ę | RO | 200 | रसमावाध वर्तव्या | ¥ ₹ | 69 | 948 |
| या लोहविमलैर्जुष्टा | 50 | 5 | २५४ | रसप्येतेषु ते सर्वे | ₹1 | ५३ | 904 |
| यावरसंख्याक्षरं च्छंदः | 3 | 7¥ | 9 | रसेन भाषेत समन्वितं च | २० | ६ २ | ५ २ |
| यासा त्वं गहरी प्रोक्ता | 306 | 45 | ३२८ | राजन्देवगृहाः भार्या | ८६ | 96 | र≹१ |
| या रुद्धा वीडिताः | 34 | ¥ | 3२७ | राजराजी धनाष्यक्षः | 4 | 38 | 14 |
| गुगानावाहयिष्यामि | FOF | معج | ३०२ | राजपीणा नु विजयं | * | 5 | (|
| युनिहिरोऽपि कर्नव्यो | ૮૫ | ६७ | २२८ | राजस्याश्वमेधानां | • | 96 | र६२ |
| युद्धचारीप्रचारेषु | 35 | 3 | 30 | राजस्त्रीणा परीवारे | | २९ | 346 |
| युद्धस्मशानकरणा | Υ₹ | 98 | 944 | राजाक्षतादामूर्घातमा | 92 | ₹ | २७ |
| युयुधानस्तथा प्रायुः | 64 | 45 | २२९ | राजा नरेन्द्रो चपतिस्तर्थय | | २ २ | 4¥ |
| युष्माकं प्जनं कर्तु | Sex | 920 | 398 | राजानः पद्मवर्णामा | | २५ | 64 |
| ये तत्र भक्ता मनुजाः | د ب | 43 | 286 | राजेर्त विप्रवेश्वरयो . | | X∙o | Yo |
| ये मुखाः सत्त्वजाताना | ८३ | 4 | 296 | राह्य प्रजानां कर्तुक्ष | \$ 6 3 | | २८९ |
| ये वेदारते मुखा हिया: | AÉ | 3 | १६२ । | राज्ञा विक्मसंयुक्तम् | 30 | ₹ X | \$2 |

| | अध्या. | श्लोक | g. | | अध्या | ा. श्लोक | y. |
|------------------------------|------------|-------------|-----------|------------------------------|------------|----------|-------------|
| राहां विचित्रो वेशः | २७ | इन | ८৩ | रेखा च वर्तना चैव | 89 | 90 | ዓ ሄሄ |
| राज्ञा निज्ञापने कार्य | २२ | 98 | ધ, ફ | रेखामण्डलसंकीणां | 30 | 6 | २५४ |
| राज्ञी च रिक्षुमा छ।या | ĘU | 90 | 989 | रेखाश्व करयोः कार्याः | રૂપ | Ę | 939 |
| राज्ञीमाचाहयिष्यामि | 904 | 9 Ę | ইণ্ড | रेखा प्रशंसन्त्याचार्या | ४१ | | 984 |
| रातिज्ञागरणालस्य | ३१ | ३० | 908 | रेवन्तथ यमधैव | ६७ | 5 | 989 |
| रातिः प्रभा क्षमा दीप्तिः | 99 | ` | રષ | रेचितं भ्रमणान्मुक्तं | २४ | 9 & | Ęg |
| रात्रिमावाहियच्यामि | 9.4 | 5 \$ | ३१८ | रेचिता रेचिते कार्या | २४ | ४३ | ६३ |
| रतिमावाहयिष्यामि | goy | ५६ | ३२१ | रेचिता यापि विज्ञेयौ | २६ | vv | 63 |
| राममावाह्यिष्यासि | 905 | 904 | 339 | रोयतर्जनतर्केषु | २४ | ર્ | ६० |
| ,, | 905 | १२३ | 333 | रामरुद्धकपोलस्तु | ३६ | 3 | १३० |
| रासी परिजनह्वीणा | 90 | 34 | ४० | रौदी रदाधिदेवश्व | ३० | v | 309 |
| राष्ट्रं तलं क्टिकफे तथायु | : 93 | 9'4 | ३० | रीप्ये रये तथाष्टार्थ | ६९ | c | 954 |
| रीतिभागं च विधतो | 53 | 90 | २६० | लक्षितैर्लक्षितव्यानि | ३९ | 33 | 938 |
| रुक्मगौरी दन्तगौरी | २७ | 42 | ८६ | लक्ष्मीनिलय विस्तीर्ण | 905 | É& | ३२७ |
| रक्माभवर्णता तस्य | 40 | 4 | १६९ | स्क्मीमावाह्यिष्यामि | १०६ | ३० | ३२४ |
| रुच रस्य प्रमाणेन | ४२ | 99 | १४७ | रुक्षी सहायं वरदं | १०६ | 68 | ३२९ |
| रु(१ भ)द्रप्रमाणाः कर्तव | याः | | | टक्सीसंवाह्यमाना ङ्घि | 900 | 6 | ३३७ |
| | ४२ | 9 | १४६ | लक्ष्मीं च (१ थ) कालर | ।त्रिं च | | |
| रद्रानावाहयिष्यामि | १०३ | 6 | २९८ | | ८६ | ७६ | २३६ |
| रद्रमावाहियच्यामि | 806 | Ęo | ३०९ | लक्षाः करोषिणी श्रीध | C | ¥ | 90 |
| रूपकाभ्यधिकं नाम | 98 | ч | ₹9 | लक्ष्मीः कार्या तथा तस्य | cy | ५१ | २२६ |
| रूपकैविं विधेर्युक्तं | ८७ | 98 | २४४ | लक्ष्मीः रिथता सा कमले | | | |
| रूपगन्धरसैहींनः | ४६ | 9 | १६२ | तु यस्मिन् | | 94 | ₹ 9 ¢ |
| रूपनिर्वर्तनायुक्त | २५ | 40 | હુ | लानस्थे निश्चला शुके | 38 | १२३ | २८५ |
| हपदीजेथ (१ च) परस् | १३ | 6 | २९ | लाने शुभतरे हेयः | - | १०२ | २८३ |
| रूपम न्यत्प्रकर्तव्यं | ८३ | 99 | २१९ | लघुद्यान्त्यश्च यो वर्णः | _ | 99 | v |
| रूपमिदं कथितं तव याम्य | ५१ | २१ | °७२ | | ३० | २० | १०२ |
| रूपवत्यस्तथा कार्याः | 85 | • | 386 | लिजता लिजताएया | | | |
| रूपं जलेशस्य तवैतदुक्त | | 5,9 | 908 | ्रस्या[तः] | २५ | २७ | ६९ |
| रूपं तथैतहिवसस्य भर्तुः | | 90 | १९२ | लताख्यी करिहरती च | २३ | 90 | ७५ |
| रूपं तु कालावयवस्य का | र्यं ७३ | 43 | २८४ | | • | 3 | 9 44 |
| रूपं नरस्य वधितं | ८५ | 46 | २२७ | | ७३ | 9 ६ | 984 |
| रूपेण केन क्त्रव्यो | ८३ | 9 | २१८ | रुम्बोदरी तु क्रिक्या | υ ξ | २७ | २०२ |
| हप्यासनं तु दातव्यं | २ २ | 92 | وروي | ललितं दण्डपसं च | २० | *4 | 49 |
| 99 | | | | | | | |

| | | | * | | | | |
|--------------------------|------------|-----|------------|-----------------------------|------|------------------|-------------|
| | अध्या | खेक | ā. | | अध्य | i. <i>শ্ভ</i> ীক | £ |
| यदा तदा नि(चृ)संज्ञम् | [] | 9¢ | v | । येषामावाहनं प्रोक्तं | 904 | 1 | ३२१ |
| यदत्र ने किं तनृताद् | ४३ | ३७ | ዓ ሤ | यो न राजा इतो युद्धे | 5 | 1 6 | २६१ |
| यदा विनीतरामाच | 83 | \$ | 948 | योऽसावर्चयते देवो | 900 | _ | ₹¥o |
| यदा शुष्कं भवेत्कृष्यं | ¥٥ | v | 189 | रक्तस्यामस्तु शशकः | ₹ € | Ę | 930 |
| यदास्य भगवान्ष्रेष्ठे | 48 | 14 | 935 | रक्तश्यामा भवेतपूर्व | 31 | 93 | 29 |
| यससीम्याङ्गतिष्यान | *} | 90 | 948 | रक्तमारा नरेन्द्राणाम् | 69 | 93 | २५२ |
| यममावाइयिध्यामि | 908 | 54 | ३१२ | रक्तं जटाधरं वहिं | ५६ | 3 | 945 |
| यमथ निर्ऋतिधैव | 40 | ३० | २४५ | रक्ता रक्तोत्पल्श्यामा | ¥o | २४ | 943 |
| यया सर्वभिदं वद्धं | ያህ | * | १६४ | रह्नदृष्याणि कनकं | ¥0 | ३५ | 983 |
| यवी माधस्तथा शब्दः | 93 | 99 | २७ | रहे विकृता तु नृपप्रधान | 25 | 36 | 300 |
| यशय सुसितं छत्रं | ५२ | 98 | 408 | रत्नपात्रं करं(१रे) कार्य | ં ५३ | 4 | 904 |
| यस्य पक्षस्य वृध्धिः | ९६ | २५ | २७६ | रहनपानं संस्थपानं | Ęg | 3 | 968 |
| यस्मासपु कृतामचाँ | 5 3 | 33 | २६२ | रतिः श्रीतिस्तथा शक्तिः | હ ક્ | 28 | 209 |
| यस्यां मात्रावशादर्थी | 9 € | 3 | ३५ | रतिमाव।हयिग्यामि | 904 | 4 € | 339 |
| यस्मिन्भुजे धरा देवी | ७९ | Ę | २१२ | रम्याण्यायुधरूपाणि | والع | २८ | 33¥ |
| या क्रिया चान्यफलदा | 98 | 93 | ३२ | रविः कार्यः शुभस्मधुः | Ęu | ર | 959 |
| याजकं यजमानं च | 9-6 | 3 | ३२२ | रशनास्थे जगसर्वे | ęω | 94 | 953 |
| याञ्चावेरद्दसंत्याग | ¥ŧ | ¥ | 40,8 | रइमयस्तस्य कर्तव्या | ₹ U | ¥ | 959 |
| यात्रा भद्रा दुतिमात्रा | 99 | ર | રૂ પ | रितामिः करसंस्थेस्तु . | 50 | 44 | 145 |
| यादसां निलयाभ्येहि | 908 | 993 | 398 | रसविम्बाव पित्थास्तु | \$3 | 5 | २५९ |
| याम्ये मरणदा कर्तुः | 3.5 | AD | २०७ | रसभावाध क्तेया | *3 | 41 | 943 |
| या सोहविमसैर्जुषा | 50 | 5 | २५४ | रसच्चेतेषु ते सर्वे | 39 | ५३ | 906 |
| यावरसंख्याक्षरे च्छंदः | £ | 9* | v | रसेन भावेन समन्वितं च | २० | £ 3. | 47 |
| यासां त्वं गहरी प्रोक्ता | 90€ | 54 | ३२८ | राजन्देवगृदाः पार्या | 64 | 96 | २३१ |
| यां रुष्ट्रा बीडिताः | ३५ | ¥ | १२७ | राजराजो धनाध्यक्षः | ٤ | 9 ६ | 14 |
| युगानावाह यिष्यामि | 903 | فإع | ३०२ | राजवींणा तु विज्ञेयं | ¥ | ¢ | 4 |
| युभिष्टिरोऽपि कर्तव्यो | ck | ६७ | २२८ | राजस्याधमेधाना | ₹.3 | 96 | २६२ |
| युद्धचारीप्रवारेषु | 35 | य | 50 | राजझीणां परीवारे | ४२ | 35 | 986 |
| युद्धश्मशानकरणा | ל | 44 | 944 | राजाधनाधमूर्धारमा | 33 | ર | 3 /3 |
| युपानस्तया प्राद्यः | ሪሤ | 45 | २२९ (| राजा भरेन्द्रो चृपतिस्तर्थव | | २३ | 48 |
| युष्माकं पूजनं वर्तुं | Jek | 920 | ३१४ | राजानः पद्मदर्णामा | २७ | રબ | 24 |
| ये तम्र भक्ता मनुजाः | ८७ | 43 | २४८ | राजेति विप्रैर्वेक्सस्यो , | 93 | X0 | 80 |
| ये मुखाः सत्त्वज्ञातानी | 4 | 4 | 296 | राज्ञां प्रजानां कर्तुध | _ | 380 | २८६ |
| ये चेदास्ते मुखा हेया: | *4 | \$ | १६२ | राज्ञं विक्मसंयुक्तम् . | 90 | ₹. | ₹ \$ |

| | अध्या. | श्लोक | ā * | | अध्या, | স্থী | ह पृ. |
|-----------------------------------|------------|----------------|------------|--|--------|------------|-------------------|
| राज्ञां विचित्रो वैदाः | ঽ৬ | ३२ | دن | रेखा च वर्तना चैव | 89 | 90 | 988 |
| राज्ञां विज्ञापने कार्यं | २२ | 9 € | 44 | रेखामण्डलसंकीणां | 80 | ۷ | र५४ |
| राज्ञी च रिक्षमा छ।य। | ६७ | 90 | 989 | रेखाध करयोः कार्याः | ३७ | Ę | 939 |
| राज्ञीमाचाह्यिप्यामि | १०५ | 9 Ę | ३१७ | रेखां प्रशंसन्त्याचार्या | ४१ | 99 | 984 |
| रानिजागरणालस्य | ३१ | 3 0 | 908 | रेवन्तश्च यमश्चेव | Ęڻ | \$ | 989 |
| रातिः प्रभा क्षपा दीप्तिः | 93 | २ | २५ | रेचितं अमणान्सुक्तं | २४ | 9 Ę | Ęg |
| रात्रिमा वाह्यिष्यामि | १०५ | २३ | ३१४ | रेचिता रेचिते कार्या | २४ | ४३ | \$ 3 |
| रतिमावाहयिष्यामि | 904 | ५६ | ३२१ | रेचिता यापि विज्ञेयौ | २६ | ئان | , ` 4 2 |
| राममावाह्यिष्यासि | 908 | 904 | ३३१ | रोपतर्जनतर्केषु | 28 | ર | Ęo |
| 91 | 905 | 923 | 333 | रामस्द्रकपोलस्तु | ३६ | ર | 930 |
| रासी परिजनस्रोणां | 90 | 34 | 80 | रौद्रौ रुद्राधिदेवश्व | ₹0 | , v | 909 |
| राष्ट्रं तलं किट्टक्फे तथायु | : 93 | 9'4 | ३० | रौप्ये रथे तथाष्टाश्वे | ٤S | c | ૧૬૫ |
| रीतिभागं च कथितो | ९२ | 90 | २६० | छिस्तैर्हिस्ति व्यानि | 39 | 33 | 938 |
| रक्मगौरी दन्तगौरी | २७ | 42 | ٤ ا | लक्ष्मीनिखय विस्तीर्ण | 908 | ६४ | 320 |
| रुक्माभवर्णता तस्य | 40 | 4 | 988 | लक्ष्मीमावाहयिष्यामि | १०६ | ₹0 | ३२४ |
| रुचकस्य प्रमाणेन | ४२ | 99 | १४७ | टक्ष्मी सहायं वरदं | 908 | 68 | ३२९ |
| रु(१ भ)द्रप्रमाणाः कर्तव | याः | | À | रक्ष्मीसं याह्यमानाङ्मि | 900 | ۷ | ३३७ |
| | ४२ | 9 | १४६ | लक्ष्मीं च (१ श्व) कालर | विं च | | / |
| रुद्रानाबाह्यि ^{ह्} यामि | १०३ | ۷ | २९८ | | ८६ | ७६ | २३६ |
| रद्रमावाह्यिष्यामि | 806 | Ęo | ३०९ | लक्ष्मीः करीपिणी श्रीध | ۵ | ¥ | 90 |
| रूपकाभ्यधिकं नाम | 98 | ч | ३१ | लक्ष्मीः कार्या तथा तस्य | ८५ | ५९ | २२६ |
| हपकैविंविधेर्युक्तं | ८७ | 9४ | २४४ | लक्ष्मी: स्थिता सा कमले | | | 1 4 1 |
| रूपगन्धरसैहींन: | ४६ | 9 | 982 | तु यस्मिन् | ८२ | 34 | وود |
| रूपनिर्वर्तनायुक्त | २५ | 40 | ৩ ৭ | लग्न₹ये निश्वला शुके | 98 9 | २३ | २८५ |
| रूपबीजेथ (🕯 च) परुसं | 93 | 6 | 35 | रुग्ने ग्रुभतरे हैयः | 54 3 | - | २८३ |
| रूपमन्यत्प्रकर्तव्यं | ८३ | 93 | २१९ | लघुश्चान्त्यथ यो वर्णः | 3 | 99 | ט |
| रूपमिदं कथितं तव याम्यं | | २१ | ६७२ | लजाप्रणासः सप्तभ्यां | ३० : | २० | 902 |
| रूपवत्यस्तथा कार्याः | ४२ | २६ | 385 | लिजता लिजताख्या | | | |
| रूपं जलेशस्य तवेतदुक्त | | . 9 | १७४ | ू स्या[त] | २५ : | ₹ ७ | ĘŞ |
| रूपं तथैतहिवसस्य भर्तुः | | 90 | | लताख्या करिहस्ती च | ₹ 9 | 0 | ४५ ७५ |
| रूपं तु कालाययवस्य कार | | 49 | २८४ | सम्बोदरश्चतुर्वाहुः | ५३ | 3 | 304 |
| हमं नरस्य विधतं | دي | 46 | २२७ | सम्बोदरस्तथा कार्यः | 4 60 | Ę | 952 |
| ह्रपेण केन क्तंब्यो | ८३ | 9 | 296 | सम्बोदरी तु कर्तव्या स्रितं दण्डपक्षं च | ७३ २, | | ाऽट रे॰२ |
| रूप्यासने तु दातव्यै ११ | ३ २ | 94 | 4.2 | लालत दण्डपक्ष च | 30 80 | | 49 |
| () | | | | | | | 37 |

विष्णुधर्मीत्तर

| स्टिती यस्ति नैय २६ १३ ७६ स्था स्वस्तिक मुन्य -० ४२ ५, स्वण्डी स्थाप्त स्थाप्त स्थाप स्था | ર |
|---|----------|
| ल्बनहीरआउयीर ५२ १७ १७४ घगुमीऽप्राष्ट्रपूर्धी तु १६ ७१ ८१ व्यसित च भूत्रमी ४३ १९ १५५ वश्यामि एकचिवाना २७ १७ ८१ वसमध्या तु सप्राचा ६३ १०३ १२९ वसमध्या तु सप्राचा ६३ १०३ १२९ वसमध्या स्वासित १०८ ३० ३४१ | ર |
| रस्रतीय च भूरम्भो ४३ ३९ १५५ यथ्यामि एणि चेदाना २७ १७ ८९ रसमध्या त सप्राचा ३३ ९०३ १२९ यग्न प्राथा म्यति १०४ ३७ ३०५ स्राक्षां च प्राप्तुरं चेव ९२ ६ २५९ यग्न बाधाय भवति १०८ ३० ३४९ | • |
| रसमध्या तु सप्राचा ६३ ९०३ १२९ वज्रपणि महायाहुँ १०४ ३७ ३०० स्राक्षां च प्राद्धकं चेव ९२ ६ २५९ यम बाधाय भवति १०८ ३० ३४९ | • |
| लाशां च प्रादुर्व चेव ९२ ६ २५६ वज्र बाधाय भवति १०८ ३० ३४९ | |
| | |
| लाइमिनितिकर १०६ २७ ३२४ वज्रमध्यनत् रेव ८८ ४ २४९ | |
| हा(विषा) हुए को रपद्मध्य २६ ३ ७५ वजना विशासा १/६ ६५ ३२७ | |
| शस्य स्वच्छादत कार्य २० ४ ४७ वज्राज्यविधान तु ९० १५ २६० | |
| लिप्रसस्यापनं कार्यं ८६ ८२ २३७ वक्त शायस्य सुर्वात ९४ ४२ २६९ | |
| तिक्रस्थानां प्रतस्थानां २३ ६ ५७ वनो दण्ट पुरोग्न पु १२ ५ २७ | . |
| लिह्नस्य रूपिरमिर्गणम् ७४ १ २०५ मिणिचश तथा मुर्गा २० २९ ५५ | 5 |
| लिक्काशारं तुकर्तव्य ८६ ७८ २३६ वनप्रवाधर्मक ८९ १ २५१ | ı |
| रिक्राख्य यरभीयुक्त ८६ ८९ २३७ यनमाराच वर्तव्या ८५ ५ २२२ | |
| लिक्ने हि प्जित पूजा ७४ २ २०५ यनमारा च विरयाता ६५ ६ १८८ | : |
| तिक्रोपरिष्टा ष ु गता पुरस्तात् वनमारे त्यमभ्यदि १०६ ५२८ | |
| ७४ ५ २०५ वन नानाविधेई रे ४२ ६० १५१ | |
| रीराकमलपाणिस्तु ७२ ९५ २०९ वर्षुविह्याधिमद ५७ ६ ९८० | |
| लीलाविलाप्तविद्यात्तं ३९ ५० ९४० वयोतुम्प प्रथमस्तु २९ ४० ९०० | |
| लुप्तं जड्दीकतो होय ३९ ३२ ९३९ वर्णनीयो तथैवान १५ ६ ३३ | |
| लेख (रेखि)नीपत्रस्कर ६७ ७ १९९ विणयच महाराव्ये १५ ५ ३३ | |
| लेखा जरा तथा पक्ति १९ १० २६ वर्णावरत्वा दिलेय ३१ ४३ १०८ | |
| हेल्येषु पुस्तदेशेषु ३९ २६ १३८ वणन रक्तृष्णाङ ५० २ १८० | |
| लोककाताच मिधुने ९६ ९५ २८२ वर्तमानो मनु कार्यो ७० २ १९६ | |
| लोकगम्या भवेद्भाग्ये ९६ ३३ २७७ बर्तुलक्षास्तमा कार्या ४२ ८ १४६ | |
| लोकपालाध मर्तव्या ८४ ११ २२१ वर्धमान राराव स्थात् १० १४ २३ | |
| होकयात्रा प्र १० १०५ विषानावाद्यिष्यामि १०३ ३६ ३०१ | |
| होक (१ क) शता तिविशानाद् वरारोहा पुरिष्य १० २ २२ | |
| ३१ २२ १०६ वरन गमन तियक २५ ४३ ७० | |
| लोशानाबाह्यिष्यापि १०३ ३४ ३०१ वरन चैन वर्ते॰य २४४- ६४ ,, १०५ १ ३१६ वरन ध्रमण चैन २५४९ ७० | |
| | |
| लोक्कासिगम्या भाग्ये स्यात् ९६ ९ २७४ च ७२भी सेस्थित रम्ये ८६ २५ २३९ लोहेरनुकृतिविधि २७ ४ ८५ वल्यन पश्चिमा चैव २३ ५ ५७ | |
| वक्षमुकुटिसवैज्ञ ३९ २४ १३८ वहरी मंदुरा यक्षा १३ १४ २६ | |
| वक्र क्षितिस्तो भौगी ८ २९ २२ वसन तस्य विष्यात ५१ ९ १७१ | |

| | अध्या. | श्चोक | y. | | अध्य | . श्लोक | 9 - |
|-------------------------|--------------|-------|------------|--------------------------|------------|-------------|-------------|
| वसतां दृष्टिदोषा च | 93 | ફ હ ે | २द४ | वामे शोभा तथा काय | ि ६८ | : ३ | 983 |
| वस्त्रावगुण्ठनात्सूर्य | २८ | १४ | ९ १ | वामोत्सङ्गगता कार्या | 43 | | १७३ |
| वसन्ति यत्र भूतानि | د ٩ | 94 | २५२ | वामोन्सन्नगता कार्या | ५३ | 8 | 904 |
| वसुधास चरो राजन् | 66 | 3 | 288 | चामोत्सङ्गगता स्वाहा | ५६ | - | 909 |
| वस्नाबाह्यिप्यामि | 903 | ч | 256 | वायब्येन तु भावेन | १०२ | ર | २९७ |
| यस्ना देव मे रूपं | ७२ | ٩ | 955 | वायुपुत्रस्तु मर्तेव्यो | ७३ | 98 | २०१ |
| वागदण्डमथ धिगदण्डं | ५६ | 4 | 909 | वायुमावाह्यिप्यामि | 908 | હફ | 390 |
| वाद्यनःकार्यसम्भूतं | ७८ १२ | Ę | २९० | चायुरम्बरवर्णस्तु | 40 | 9 | 969 |
| वाचिकश्च तथाहार्यः | २७ | ٩ | دى | वायुराध्रयतो धत्ते | 40 | 8 | 969 |
| वाचिको वचसा प्रोक्तः | २७ | २ | ૮૫ | वायोरम्बरभङ्ग तु | 98 | ** | २६९ |
| वाचिको वाचया प्रोक्ती | २० | २० | 86 | वारुणेन च भावेन | 903 | 3 | २९७ |
| वातप्रभग्नं न प्राह्यं | دع | २३ | ३५३ | चारणे रोगदा प्रोक्ता | 38 | ৬४ | 260 |
| वातसारथिता तस्य | ५६ | فع | 968 | बालन्यजनमप्युक्तं | 3 | 0 98 | 23 |
| वात्या वातसमुखा | 8 | 98 | ২৭ | वाल्मीकिह्यं सक्लं | 64 | Ęų | २२७ |
| वाणी तथोक्ता च | 3 | २३ | ঽ٩ | वामुदेवगणाः शीघ्रम् | 908 | 988 | ३३५ |
| वादित्र शब्दैर्जयशब्द | 900 | ₹ | २९४ | चासुदेव प्रतीहारी | 64 | 48 | २२५ |
| वान्ते विरक्ते श्रान्ते | ३ १ | १२ | 904 | यासुदेवप्रतीहारौ | 908 | 338 | 33¥ |
| वामतस्तस्य विज्ञेयौ | ૧ ९ | २ | ४६ | चासुदेवध भगवान् | ४७ | 90 | 368 |
| वामतो गैरिकस्तस्य | 98 | 3 | ४६ | वासुदेवस्तथा वामे | इंश | २४ | २०२ |
| वामवदं सललितं | २० | २५ | 84 | वासुदेवः स्मृतः शकः | ५० | 99 | 900 |
| वासभागगतः कार्यः | vv | 8 | २०८ | वासुदेवस्य देवस्य | ८५ | 9 | २ २२ |
| वामभागगतश्रकः | ८५ | 93 | २२३ | वासुदेवस्य सुदैपा | 33 | 920 | २२२ |
| वामभागगतं केतुं | ५२ | Ę | १७१ | वासे भवति वस्नाद्या | 5.€ | ৬৭ | 260 |
| वाममुष्टी तथा हुई | 3 3 | ६६ | 994 | विकचोत्फुद्धनयन | 905 | ८७ | ३२९ |
| वामयोः पुस्तको कार्यो | 88 | X | १६८ | विक्लाना गतिः कार्या | २९ | ३ ३ | 55 |
| यामहस्तेन शिखराः | रे रे | ९६ | १२० | विक्षेपाचैव जङ्घायाः | २४ | ५२ | Ex |
| वामं शचीपृष्ठगतं | 40 | 4 | 98% | विकारे योजयध्येव | 49 | २० | १७२ |
| वामार्धे पार्वती कार्या | ५५ | 3 | 900 | विरूणिता जुगुप्साया | २५ | ६६ | ७३ |
| यामारितगता तस्य | ७९ | 4 | २१२ | विकृते चायहित्ये च | 35 | 3 | 50 |
| वामासकस्य वामा तु | 33 | 38 | 338 | विकृष्टा दुधिता चोर्घ | | ६४ | पर् |
| यामे तस्याः करे कार्यम् | 49 | ч | 909 | विकान्तगोविता या तु | 36 | ¥ | ३ ५ |
| यामे तु यमुना वार्या | ५२ | v | 80.6 | विद्रराजस्य मुद्रैपा | ₹ ₹ | २३ | 398 |
| वामे पाशघरः वार्यः | 49 | v | | विष्नशं विष्नहत्तरि | 908 | ¥ \$ | ३०८ |
| षामे मनुजदाार्न्छ | 3 6 | 99 | 338 | विन्द्रिके चन्द्रशालाभिः | 4 | ९२ | २३१ |

्विष्णुध माँ तर

| | अप्या, | *ীক | â. | | क्षध्या, | , ধ্টাক | ą. |
|-----------------------------|--------|------------|-------------|---|-----------------|------------|------------|
| विजय स्वगिद्दाभ्येदि | 904 | 3.83 | ३३५ | विमानः सप्तंभीमः स्थ | ग्रन <i>ट</i> ६ | 3.5 | 236 |
| विदर्गापि तु वर्तद्या | २९ | 35 | 55 | विमेरालोऽयं प्रासादः | ٠. | 93¥ | 289 |
| विदानी भूषणप्रायं | 90 | રૂહ | Yo | विग्होरवं ठिता सेव | 9 0 | دې رو | *9 |
| वित्तर्तीशो जयत्यरिमम् | 43 | 92 | 908 | विस्पाधस्य मुद्रपा | 13 | ५ ५६ | 998 |
| विद्यकस्य वर्तव्या | 35 | 14 | 900 | विस्पार्ध विज्ञानीहि | 68 | 37 | 229 |
| निद्धकस्य गटनिस्स्याव | ् २७ | ¥₹ | 22 | विस्टकं विज्ञानीहि | 68 | 93 | 229 |
| विद्युकोऽपि यक्तस्यो | 90 | ¥9 | ٧o | विष्पाधी निर्मातिध | c | 92 | 92 |
| विद्युक्ते ब्राह्मणः स्यात् | 90 | ¥\$ | *9 | विष्णाक्षी विष्णाक्षः | 40 | ٩. | 960 |
| विद्धि सङ्घर्षणाज्ञं वै | 60 | 3 | 398 | विवर्तमं च पर्मव | ર્ | Y Y | ÉA |
| विद्यासामोऽय वालगीकि | 996 | C | 340 | विदिधस्यापि रोद्रस्य | 25 | 98 | 36 |
| विचा छुद्धा विनिदिंछ। | ** | ખ | 988 | नियुत्तं च तथैयर्जु | 38 | २० | ξ 9 |
| विद्यारायिधनैध्यर्थः | 39 | ₹ } | 904 | तिपृतेन च चननेग | 36 | २ ० | 93.8 |
| विशुदुल्या धनर्यो | २८ | 3,9 | 5 2 | विशेषण बळी काले | 9 | ц | 9 |
| विद्युत्तिहित्तथा सोसा | \$ | २० | २ १ | विश्वं करोति व ्यरमात् | 49 | 96 | 956 |
| विग्रुद्धान्तः पराष्ट्रतः | ₹ 0 | ₹ ₹ | به | विश्वप्रमां तु कर्नय्यः | . ug | 90 | 94.6 |
| विधानं भूमिदानायं | \$3 | 9 & | २६२ | विरवरूपं हयप्रीरं | 64 | 4,2 | २२६ |
| विधियच तथाकारः | 906 | २४ | 3×3 | विश्वानाबाह विष्यामि | 303 | Ę | 356 |
| विन्ध्यनामा भवत्येप | 6 | 90 | २३१ | विश्वे दैवास्तया वार्याः | ७२ | 4 | 955 |
| विना नथा स्यादुपमा | 98 | ዓሤ | ३२ | विद्याणानि गर्वा राजन् | ९२ | 4 | २५९ |
| विना तु नृत्तशाक्षेण | ર | ¥ | ₹ | विपादस्य समुत्पत्तिः | ३ १ | २८ | 9 6 8 |
| विनायक्यदःसीना | ८२ | ч, | २१६ | विपादे विस्मय चैव | 5.8 | ¥ | Ęø |
| विनायवस्तु वर्तस्यो | ৬٩ | 93 | 956 | निपादेषु सदादेयं | २ २ | ٠, | 18 |
| विनायकस्य तत्कार्य | ८६ | 35 | २३३ | विष्टमभगतिष्राणा | २९ | ३० | 35 |
| विनायवस्य देवस्य | ₹. | 45 | २८१. | विष्टी मरणदाक्तुः | 4 ६ | 69 | 343 |
| विनायका विधारराः | 108 | | . ३१५ | विष्यिन्द्रवरुणाः कार्या | ७२ | ٤ | 356 |
| विनिरुत्तमसूयायाम् | २४ | २३ | ६२ | दिष्णुनार्भा समुखर्च | 84 | 18 | 943 |
| विषिनं निर्जनं प्रोक्तं | 90 | 95 | २३ | विष्णुभूम्यमदराणां त्वं | ₹ o | 9 | 963 |
| विप्रत्या तु सा हेया | 9 4 | ५९ | ४२ | विष्णो(१ष्ण)भौगशयः | | | |
| विप्रलम्मे तु निर्दिष्यः | ३० | 9 9 | १८२ | क्रियः | - | २९ | २३१र |
| विप्छतास्या तु दैग्ये | २५ | २७ | ĘS | विष्णोरमितवीर्यस्य | A.A. | ર્ | 946 |
| विष्हुता विष्हुना प्रोक्ता | 300 | 90 | \$ 2 | विस्तरोक्तं मित हन्ति | 4 | v | 90 |
| विद्युद्धः पुण्डरीकाक्षः | 900 | 4 | ३३७ | विस्तारतिगुणीच्छ्रावैः किन्नीर्वे सर्वेतेत्व | | ₹ ₹ | २३३ |
| विद्योधयति देव स्वौ | 300 | 98 | ३३८ | विस्तीर्णं सर्वमेतेन | · · | 3.6 | 20 |
| विश्रान्ता युचिता श्र्या | 34 | Y | ६७ | विसमये चाभ्यस्यायां | 30 | 3 9 | ₹¥ |

| | अध्या, | , श्लोक | y. | | अध्या, | श्टोक | ā• |
|----------------------------|--------|-------------|-------------|-------------------------------|--------|------------|-----|
| विस्मये चैच हर्षे च | २९ | 94 | 36 | वैष्णवे पुष्टिदा प्रोक्ता | ९६ | ७३ | २८० |
| विज्ञेयं दधतः कार्यं | ३९ | २९ | १३८ | वैश्वे छोकहिता कर्तुः | 98 | v | २७४ |
| विंशतिरःवेरसंयुक्ता | 3 | v | Ę | व्यक्तिर्ने वो पपद्येत | २० | y | ४७ |
| विंशते नेवितर्यावत् | 99 | \$ | રૂષ | व्यये व्ययवती नित्यं | ९६ | 993 | २८४ |
| वीथ्यस्त्वावाह्यिष्यामि | 903 | ४८ | ३०२ | व्यये व्ययवती राजन | ९६ | 908 | २८४ |
| वीरभद्रथ नन्दी च | ८६ | હ રૂ | २३६ | व्यसनेनाभिघातेन | ३१ | २ १ | 904 |
| वीराचैवाद्भूतोत्पत्तिः | ३० | 3 | 909 | व्याजनासापराधैश्र | ३१ | ५७ | 908 |
| वीरा वीरे च क्तव्या | २५ | २५ | ६९ | व्याधिप्रस्ते जरातें च | २ ६ | ९३ | ८३ |
| वीरे रसे स्याचलनं | २५ | ४६ | ७१ | व्याधिते तपसि श्रान्ते | २४ | ३७ | ६३ |
| वीरो महेन्द्रदेवस स्यात् | ३० | c | 909 | व्याधिदेषिसमुत्थस्य | ३१ | ३६ | 900 |
| नृक्षाणा पुष्पक्रतः | ४२ | 60 | १५३ | व्याधिथैवापमृत्युश्च | ८७ | ४९ | २४७ |
| वृत्त प्रोक्तः समुद्राख्यः | 6 | 96 | २ ३८ | व्यायामे ताण्डवे चैव | २४ | ४९ | ६४ |
| रृत्त प्रकीर्णकेशैक्ष | ४३ | २३ | १५६ | व्यायामे त्वथ सप्राप्ते | २४ | ४२ | ६३ |
| रृतः पुत्रस्तथा मन्त्रः | 90 | 3 | २७ | व्यालेन नासयन्तं च | 49 | 3 | १८२ |
| वृत्त च मुकुट पण्य | 93 | 92 | ३० | व्यासमावाह्यिष्याम् | १०६ | १०९ | ३३२ |
| रुक्षिकापस्तर्श्वेव | २० | ३० | ४९ | ब्योमरूपं समान्वक्व | ७५ | 9 | २०६ |
| रृक्षिकं व्यंसितं चैव | 5,0 | ४७ | ካ ዓ | व्योमनः स्वरूप क्थितं | wy | 3 | २०६ |
| रृषयावगमारद्धा | 4 | 96 | 96 | शक्टेन महाराज | 68 | 35 | ६५३ |
| वेदविद्याऽविरुद्धं यत् | ч | २्७ | १२ | श चि तोमरपापाण | ३९ | 86 | 980 |
| वेदान'वाहयिष्यामि | १०३ | 44 | ३०२ | शककीन।शबरण | 40 | 9 | 988 |
| वेदानावग्हयिष्यामि | 904 | २६ | ३१८ | शक्कीनाशवरुणैः | ٤٥ | 3 o | २३२ |
| वेदा मे परमं चक्षुः | ३४ | ৬ | १२४ | श[रा]कृति महाराज | ३७ | 30 | १३१ |
| वेदाहरणदु:खार्त | १०६ | ७९ | ३२९ | शकस्यावाहन प्रोक्तं | 308 | ८२ | ३११ |
| वेदा हता दानव- | 60 | Ę | २१४ | शकथतुर्भुज, कार्यो | ५० | Å | १६९ |
| वेपनं चापि विह्यस् | २५ | ওপ | ७३ | शकं देवगणैर्युक्तं | ८६ | ८४ | २३७ |
| वेशानामुद्धतं वेश | ४२ | २४ | 986 | ** | ७८/२ | 39 | 266 |
| वेष्टनापद्दब्धानि | २७ | ४० | ۷, | ,, | 60 | ጸ | २१४ |
| वेष्ट्याङ्गुष्टावधः कार्या | | | १२३ | _ | 906 | ४९ | ३२६ |
| वैकारित्व च नृप | | 93 | १३७ | 9 - 4-5 | ५३ | v | 304 |
| वैह्यभिमपा वर्णम् | | 99 | १७३ | | ५२ | 94 | १७४ |
| वैराग्यभावेन महानुभावो | · · | | २०९ | ** | 904 | 8.8 | ३२० |
| वैराग्यं नन्दकं खक्तं | ४७ | 96 | 984 | शत च रचक्रयोक्तं | રૂપ | 99 | १२८ |
| वैष्णवं समपादं च | | | ५७ | शनैथरशशाही च | | ₹ ₹ | २४५ |
| वैष्णवी तु गदा प्रोक्ता | C | ٤, | ₹७ | शब्दमात्रहताशेष | 908 | ६२ | ३२७ |

| | ग्रंप्या. | श्लेफ | 4. | 4 | अग्या, | श्लेह | Z. |
|----------------------------|------------------|-----------------|-------------|---------------------------|--------------|-------|-------------|
| राम्दयोनि निराएम्य | 908 | 53 | 120 | शीतपातीव्यवपुर | 34 | Ye | Vo. |
| शम्यः स्पर्शेष रूप च | 3,6 | 3 | 50 | शीतांगुरदिमजाला | leu | 5 | 1 30 |
| शस्त्रीरस्तु रुपयः | 3 5 | te _s | 930 | शुपनुष्टी करी द्वा | २६ | Ęu | 49 |
| शरलारे पृता नाश | 3.6 | 14 | રહળ | शुषः श्वेनवपुः सार्यः | 65 | 4 | 954 |
| शरीरमस्यि द्धि च | 93 | 4 | 33 | शुवनणी मही कार्या | E 9 | 9 | - 968 |
| शशकरय तु गानेन | ¥₹ | 10 | 146 | शुक्ध शामिका चैव | 36 | 44 | 58 |
| दासा द लेगादंषुाव | 906 | y. | ३२६ | शुक्क बग्न परीवानाः | ¥ ₹ | १८ | 986 |
| शशाद्धशतसङ्खारा | 906 | 96 | 325 | शुक्लः प्रोक्तस्यधाऽऽया | हो ९ | Y | ₹• |
| शशाद्वशिप्रतीकाशी | 906 | 989 | 338 | शुक्ला न यायां न तथा | | v | 963 |
| शहस्ते विषावे च | 28 | २७ | ६२ | शुक्ता रास्ता द्विजावीनां | | 4 | 348 |
| शंसनारोद्धयत्रात | 906 | 99 | 333 | गुक्टागुक्टमती हेयं | ¥Ę | 13 | 353 |
| शंसमुद्रंयमुद्रिश | 3.3 | | 929 | शुक्तिमात्तामतः सर्वः | cs | 5¥ | २३८ |
| शायावसम्बे स्तब्से | ٠. ٩ ३ | રૂપ | ly e | शुद्धं तु लिक्षिनां कार्य | ২ ৬ | 25 | 24 |
| शाहेको मेथुनं यत्र | 54 | E | २७३ | शुभागारविहाराणि | 25 | 1 | 986 |
| शान्तस्य तु समुन्यतिः | 30. | 5 | 109 | शुभा मही यत्र भवेनृवी | ₹ 5 3 | ¥0 | २६५ |
| शान्तः स्वभाववर्णस्तु | ३० | ¥ | 909 | शुभा परीश्य वसुमा | ŞΥ | 3 | ₹६€ |
| शान्ती रसः स्वतन्त्रोऽत्र | | ર્ | 909 | शुमेऽहि प्रं यन्त्रस्यं | \$ 8 | 939 | २८५ |
| शानमहीना तथा छुप्यं | \$ 3 | વ | 245 | शुष्कं वर्तनया दस्त | *3 | ८२ | 943 |
| शास्त्रीः स्ट्रितेर्धेः | ¥₹ | ₹ ¥ | - ૧૫૬ | शहेरीकेन संयुक्तः | 44 | 904 | 235 |
| शास्त्रानावाद्यिष्यामि | 903 | 40 | 3.3 | शुलमानाइयिष्यामि | 904 | ₹ | 294 |
| शिक्षा प्रजापतिश्वेषा | ţv | પ્રદ | 708 | शेपदार्थितया युक्तं | 5.€ | ٧ć | 306 |
| शिखरः ष्टहरोपेतो | 65 | 900 | २३ ९ | दोषभोगोपविष्टस्य | 44 | ce, o | २२६ |
| शिरसः ध्रयमं कर्म | २४ | 4 | \$ 0 | शेषभोगे,पविष्ये वा | 24 | *5 | २२६ |
| शिरः पद्मस्तर्थेवास्य | 64 | ч | २ २२ | शेपाणा पाधिवेन्द्राणाम् | ₹ € | 9 | 350 |
| शिरोगतं तृतीयं तु | ७३ | 40 | 2-9 | शेषाः प्रसारिताःश्चिष्य | | 939 | 113 |
| शिरोदन्तौ ष्टकम्पेन | २८ | ३ २ | ्र १ | शेपाः त्रसारिताहुल्या | ₹ ₹ | 998 | 455 |
| शिलदाध्य छो्हेषु | 83 | ३२ | 948 | शेपाहिभीगपर्भन्तं | 900 | Ŀ | ३३७ |
| शिलाना गर्भविज्ञानं | 50 | 30 | २५६ | होक्स्याने न कर्तव्यं | 30 | 31 | ¥¢ |
| शिलान्यासं तु पुनीत | 5 ¥ | 99 | २६६ | शोकारानस्य च तथा | 33 | v | 48 |
| शिवस्य रूपनिमणिम् | ५५ | 9 | 906 | शोभाकान्ती विनिर्दिष्टे | ĘC | 98 | 958 |
| शिवामाबाइयिष्यामि | 904 | AA | ३२० | शं भागावाह विष्यामि | 904 | 33 | ३१७ |
| शिक्षिरे छीनपानता | 38 | 5 & | २७५ | शीर्यं च धेर्यं दर्पं च | २८ | ५३ | 38 |
| शाप्रमभ्येहि निलय | 908 | _ | 303 | रीनानावाद्यप्यामि | 303 | 30 | 300 |
| शीतप्रस्ते जराते च | २४ | 4 | €0 | शैलाना शिवरं मूर्पि | ४२ | ५२ | 440 |

| | अध्या. | श्टोक | ब्र. | | अध्या. | श्लोक | पृ. |
|-----------------------------|---------------|-------|---------------|-----------------------------|--------|-----------|------|
| रमशान गहिंताघात | ४३ | 2 | 948 | पड्विंशतिश्रोत्कृतिश्र | ३ | 3 | Ę |
| रमशानचैत्यवल्मीक | 69 | Ę | २५१ | पष्ट्यां सक्षमीयुता नित्यं | ९६ | 40 | २८१ |
| रमशाने मिथुने तस्वं | 93 | 99 | οĘ | पष्टे लक्ष्मीकरी ज्ञेया | ९६ | لعالع | २७९ |
| रमश्रु तस्य विनिर्दिएं | ५६ | 9 | 909 | पष्टे शत्रुविघातं तु | ९६ | 908 | २८३ |
| श्यामस्तु चासुकिः कार्यो | २७ | 94 | ८६ | पष्ठे शत्रुविनाशाय | ९६ | 59 | २८२ |
| रयामा गौरी तथा तस्य | χo | 94 | १४२ | पोडशांशेन कर्तव्यं | ४५ | 8 | १६१ |
| रवापदानां पश्नां च | २९ | ३६ | 900 | स एकस्तम्भनायुक्तो | ४० | - 20 | 983 |
| लिष्टाहुन्छो निम्नमध्य: | २६ | ३५ | 96 | स एव कार्यो देवानां | ٤٤ | 93 | २३८ |
| शृहारहास्यकरुण | ४३ | ٩ | 948 | स एव नीलो भवति | 25 | 98 | २३१ |
| 2; | 9 ७ | ६१ | ४२ | सकोटरान् लताबद्धान् | 68 | ₹ | २५१ |
| श्चनारहास्यकरुणा | 94 | 98 | ३४ | सक्षता मरणायोक्ता | ३८ | 98 | १३४ |
| ग्रह्मारहास्यबहुला | २० | 46 | ५२ | सगर्भी तां विजानीयाद् | ९० | 99 | २५५ |
| शुद्रारहास्यशान्ताख्या | 83 | 99 | १५५ | सगर्भां तां विजानीयात् | 90 | १७ | २५५ |
| ग्रहारे तु समं कार्य | २५ | ३९ | ৩০ | सद्धर्पणस्य करयोः | γo | 93 | १६५ |
| ग्रज्ञारो द्विविधः प्रोक्तः | ३० | 9 € | 902 | सङ्कर्पणः पाद्यरात्रं | ७३ | 86 | २०४ |
| शुगु कालं प्रवक्ष्यामि | 9 Ę | २ | २७४ | सङ्घर्षणेन सहशाः | ४२ | २१ | 980 |
| श्वेतो रक्तस्तथा पीतः | २ ७ | 6 | ८५ | सङ्कोचयेत्पडेतानि | ३३ | ३० | 438 |
| श्वकृणं समं स्ववष्टब्धं | ४० | Ę | 989 | सचकः सपताकोऽयं | ८७ | 86 | २४७ |
| श्हक्षीकुर्योदप्रयत्नेन | Ao | 6 | 989 | सचकाः सपताकाश्व | ८७ | 9 8 | २४४ |
| श्वेतवणीं महाभाग | 64 | ३२ | ६२४ | सचन्द्रप्रहनक्षत्रां | ४२ | ६८ | 943 |
| श्वेतथ पद्मवर्णथ | 90 | २९ | 2,44 | स चापि शकलोकस्थः | ८७ | ५३ | २४७ |
| श्वेतारकातथा पीता | ९३ | ३२ | २६३ | सजलाम्बुदसच्छाय: | 49 | 9 | 909 |
| श्रीकामस्तु महाराज | 396 | 93 | 346 | सञ्जीव इति यत्रोक्तं | २७ | ४४ | 63 |
| श्रवणं वा तथैव स्यात् | , 8 \$ | 84 | ર ક્ષ્ | स तु दूर्वाङ्करस्यामः | 24 | ZY | २३४ |
| श्रवणं धनधान्याद्या | 98 | 36 | २०७ | स तु वर्षवरो हेयः | 90 | 86 | * *9 |
| थ्रव्यं थ्रवणयोगेन | २८ | २० | 59 | स तु शुक्लवपुः कार्यो | ८५ | २२ | २२४ |
| श्रीगर्भी विजयश्चैव | 90 | Ę | २२ | सत्यं च वैणिकं चैब | 83 | 9 | 388 |
| श्रेणीगताध प्राकारे | ८७ | ४२ | २४६ | सत्त्वमुद्गिरतीवेष्टा | र५ | 93 | ६८ |
| श्रोत्रसंवरणं चैव | २६ | २० | હદ્ | सत्वं रजस्तमधैव | 28 | 94 | 350 |
| श्होकेनैकेन वा द्वाभ्यां | 98 | 3 | 38 | सस्वानामाश्रया ये च | 63 | 14 | 3,48 |
| पट् त्रिशद्दष्टयो ह्येता | २५ | ч | ६७ | सत्त्वे तु विकृते र्ष्टे | 35 | 95 | 36 |
| पदशीतिमुखं नाम | 3 | \$ | २० | सदसच महाभाग | 206 | ч | ३३९ |
| पहक्षरेण पादेन | ₹ | 9 | 6 | सदाशिवमुखे शेयौ | ¥c | 90 | 956 |
| पड्भिर्वा सप्तमिर्वापि | २० | 35 | ५० (| स दैत्यान् दृष्टवान् येदान् | ₹४ | 99 | 134 |

| | क्षाया, | भगेषः | Į. | | क्षण्या | . अटेश्य, | 5 . |
|-------------------------|------------|-------|--------|-------------------------|------------|-------------|------------------|
| गचः शोपगुपायातः | 80 | 5 | 988 | समुद्राः सम विस्त्याता | ५३ | 90 | 108 |
| सधोजातं मही शोखा | *4 | 3 | 986 | समुवतं नतं नैव | ર્ | | (? |
| सञीजातं पापदेवम् | YE | 3 | 9 4 6 | सगुप्रकी तताइमाः | રૂ દ | • | ر. دع |
| सन्तानमणरीमारी | 63 | Ę | 294 | सग्दं गुगदरखेना | ₹6 | υą | 58 |
| सप्तदशे भूतिकरी | 4 € | 42 | २७८ | समेगाउँ सनिर्दिष्टं | ٤٥ | ٤ ٤ | २३७ |
| सप्तरंगे रथे वायी | ખર | ٩ | 903 | सम्बन्धसस्य साम्बन्धः | ų | 33 | 93 |
| सप्तानियं सप्तभुनि | 908 | 90 | 308 | सम्यम् विचार्य तृपतिः | - | 9 0 | 933 |
| सपण्डमस्युची | ४२ | vv | 903 | ग यानि नरक घोर | ٠. | Ęg | 286 |
| संबाद्यगिटिएस्यानं | 43 | UC | 943 | संगंध प्रतिसर्गंध | 90 | * | ३७ |
| सगावेशमस्तु वर्नव्या | ४२ | 9 ફ | 944 | सर्पभूषध वर्तव्य | υţ | ¥ | ૨૧૨ [:] |
| सभौगे यहिगयदा | 5 Ę | ¥₹ | २७७ | सर्वशीर्षी यदा इस्ती | २६ | હ€ | ८२ |
| समप्रवीहरूपी था | US | ٥٩ | २९२ | रापीनावाद्यययाम | 908 | Ęų | ३०९ |
| समतारं च तौम्यं च | 3'4 | ** | 40 | सर्दितं दोलपाई च | ₹• | ५२ | 49 |
| रामन्ताषु जलं सस्त | €3 | 39 | २६३ | सर्वशमप्रदे देवं | 996 | 4 | 3140 |
| समपादप्रतिष्टा च | ER | ş | 960 | सर्वेकामसमृद्धा स्याद् | 5.5 | ĘC | 300 |
| सगपादं बुधः स्थानं | 35 | २१ | 3,6 | सर्वेग घरदं नित्यं | 905 | y | ३२२ |
| स मन्तव्यो रसः स्थाया | 39 | 44 | 905 | सर्वमं वरदं भानुं | 908 | 5 | ३०४ |
| समः सर्वेषु भूतेषु | ₹ • | 99 | 9-3 | सर्वेषद्गणीष्यक्ष | 908 | 96 | ३०५ |
| समस्ट्यं तु वर्तस्य | 25 | u | 230 | सर्वतो सोसनाचैव | 38 | 93 | 89 |
| समसम्बय तु कतंब्य | 66 | 90 | 286 | सर्वत पार्थिव स्थैर्यम् | ΥĘ | 94 | 983 |
| समस्तपाद्यमकं | 94 | ¥ | 39 | सर्वदेवगणा यद्दर् | 306 | v | ३३९ |
| समस्तपापरामन | 908 | 4¥ | ३२६ | सर्वदेवमयं व्योग | ७५ | 4 | २०६ |
| समस्तभुपनातीत | 908 | 25 | ३२९ | सर्वपृथ्वीमये देव्याः | ८९ | y | २१५ |
| समस्तभुवनाध्यक्ष | 306 | 48 | ३२७ | सर्वनी तसमा ३ के | 38 | 38 | २६८ |
| समं साचीऋत च स्याद | २५ | 46 | - હવ [| सर्वभूतदयःध्यान | 30 | 90 | 909 |
| समानुधितकं चैन | २१ | ٠ ٩ | ٠,٤ | सर्वभूतप्रतिष्ठा च | १०६ | 45 | ३२७ |
| समागमः पुटाना यः | २५ | र्दे | 90 | सर्वत्थणयुःच स्य | ጸ ጸ | C | 946 |
| समार्ध चन्द्रमध्यस्य | 68 | v | २२० | सर्वेटोकस्य धर्मश | ĘC | 93 | 342 |
| समा विक्रिता चैव | 30 | ć | 40 | सर्वशास्त्रागृत्रस्तो ् | ÉA | * | 920 |
| समा सीम्या विनिर्दिष्टा | 54 | ግሄ | 80 | सर्रयायाहनस्यान्ते | 903 | 3 | २६८ |
| समाधार्दसमाः पादाः | 35 | ** | 380 | सर्वस्यावाहनस्यान्ते | 308 | 3 3 | 304 |
| समुध्यिता महाभाग | ८२ | 9 1 | २१७ | सर्व ष्टरवा पदच्छेद | ٠, | 90 | 90 |
| समुद्रमञुकम्पायां | २५ | 98 | as | सर्वाणि सौम्यहपाणि | 8.R | <i>۽</i> لا | 945 |
| समुद्राणाः प्रमास्याने | 83 | de | 340 1 | सर्वाधारपरं देव | 306 | 4 (| ₹ ₹° |

| | अध्या | . श्लोक | ਸ਼- | 1 | अध्य | ा. श्लोक | ā• |
|--------------------------|-------|-------------|-------|----------------------------|--------------------|--------------|-------|
|) | १०४ | 908. | 393 | सहाङ्गुष्ठेन निर्दिष्टा | 33 | 90% | 121 |
| सर्वानावाहयिष्यामि 🗦 | 905 | 980 | ३१५ | संक्टं लोहविन्यस्तम् | Yo | ₹ ८ | 343 |
| , | १०६ | १५० | ३३५ | संक्षिप्ताङ्गप्रकम्पाद्यैः | ३१ | 35 | 900 |
| सर्वाभरणयुक्तश्र | Ęg | ጸ | 954 | संक्षिप्त चैव निक्षिप्त | ٦ ६ | | ८० |
| सर्वाभरणसपन्नी | 88 | 3 | 965 | संक्षेपेण मया प्रोक्तं | 96 | | XX |
| सर्वामिनयनं चैव | २२ | Ę | 48 | संदंशप्रद्णे कार्यः | રફ | - | 45 |
| सर्वारुद्वारभूपाङ्ग | 906 | 30 | ३३० | संदेशिखविधो ज्ञेयः | ٠ ٦ ६ | | us |
| सर्वाथ द्विभुजाः कार्याः | ६६ | Ę | १८९ | सदेशालापसंज्ञासु | ે. ૨૪ | ٠ | Ęø |
| मर्वाश्रये महाभागे | 908 | ६० | ३२७ | संदृष्टथ समुद्गथ | ३ ५ | | ७३ |
| सर्वासा देवतानी तु | 908 | ५३ | ३०८ | तंष्यामावाहयिष्यामि | م د لا | | ३१८ |
| सर्वासां वास्तुविद्योक्त | 98 | 94 | २६७ | संम्पत्करी द्वितीये स्यात् | | 88 | 3.02 |
| सर्वास्तु वृत्तयस्तत्र | 90 | 9 | ३७ | संपूर्ण पूर्णमित्युक्तं | , 7\ ? \ | | ७३ |
| सर्वेच्छंदो विकल्पाश्च | ş | 93 | v | संवाद्यमानचरणे | ₹४ | ₹ ₹ | 928 |
| सर्वे ते स्वर्गमायान्ति | 60 | ५२ | २४७ | संम्भ्रमाजायते राजन | 39 | २७ | 90Ę. |
| सर्वे देवगणाः कार्या | ८६ | 920 | २४१ | संश्रमावेगचेष्यामिः | ۹. عد | ¥ξ | 5¥ |
| सर्वे शिखरहीनाः स्यु | ٤ ٤ | 990 | २३९ | संम्युखी तौ तु जगति | ر ۾ | ξ9 . | २३५ |
| सर्वेषा देवताना तु | ৫৩ | 88 | २४६ | संयोगाणीः परो यस्मात् | 3 | 93 | 9 |
| सर्वेषां भद्रपीठानाम् | ७५ | ¥ . | ं २०६ | संवत्सरश्च दिवसो | 93 | 4 | २७ |
| सर्वेपामङ्गहारागां | २० | 3 % | 40 | संवत्सरं तु कर्तव्यं | | १३६ | २८६ |
| सर्वेषामथ दुर्गाणाम् | ४२ | ६३ | 949 | संवत्सराख्ये वर्षे तु | 96 | 99 | ર કહ |
| सर्वेषामेव वर्णानां | 30 | 24 | २५६ | संवत्सरोऽब्दो वर्षं च | • | 9 | २० |
| 'सर्वेराकु चितेरहै: | २१ | ₹ | 43 | सवेष्टितशिरस्काथ | ४२ | ¥2 | 985 |
| सरितां सशरीराणां | ४२ | ५९ | 940 | संसारश्रमणं चकं | Ęø | ų | 163 |
| सलक्षण चित्रमुशन्ति | . ३८ | २७ | १३५ | संस्कृतं नायकवचो , | २ ५७ | ફુ૦ | 38. |
| सब्योत्थितेन हरतेन | २८ | ¥ \$ | 44 | संस्कृतं प्राकृतं चैव | ع | 90 | 3 |
| सशरीराः समायानित | 20 | 49 | २४८ | संहारहेतुकी मूर्तिः | 49 | 94 | १७२ |
| सशुदं मधुरं स्पष्टं | ३९ | ٩ | 936 | संज्ञापदेशपुच्छासु | 28 | ٠ ٦ | Ęo |
| सश्वास इव यिचत्रं | 8.5 | २ २ | १५६ | साकारा विकृतिर्ज्ञेया | ४६ | 3 | 9६२ |
| स सर्वकामानाप्नोति | 9 | 90 | २ | सांख्यं तद्विद्धि धर्मज्ञ | Yu | 98 | 9 6 4 |
| ससंशयं न वक्तव्यं | 94 | 93 | ३४ | साह्न्यं योगं पद्यरानं | ८७ | 35 | २४६ |
| ससौरे मृत्युदा होया | ٩६ | ६४ | १७९ | साचीकृत्मिदं रूपं | 45 | 4 | १८२ |
| सस्यरृद्धिस्तवायत्ता | 9-8 | R. | 200 | सा तिर्यगुच्छिताहुन्छा | ₹ ₹ | २ | 193 |
| सहकाररसं गृह्य | રૂષ | 3 | 920 | | 115 | ч | ३५३ |
| सहस्रयमसकोर्ध | 908 | ¥o | ३२५ | सारिवकी वैष्णवी होया | Y | Υ. | 946 |
| 92 | | | | | | | - |

विष्युधर्मोत्तर

| | अध्या. | श्रोक | ā. | 1 | अध्या | . श्लोक | ¥. |
|--------------------------------|--------------|-------------|-------------|----------------------------|-------------|-------------|--------------|
| साधने विस्मये हवें | 38 | Ę | Ęo | सुपर्णस्य च तालस्य | 48 | 9 | 300 |
| साम्योऽर्थक्षेदनुकोऽर्थो | ч | २५ | 92 | सप्तं च चेतनायुक्तं | 83 | · | 946 |
| साध्योऽधॉ न प्रसिद्धक्षेत् | 4 | 3.8 | 92 | सुभद्रवसुभद्राख्यी | cy | ₹• | 2 3 ¥ |
| स्वापराघसमुद्भतं | ₹9 | • | 308 | सुभद्र शीव्रमागच्छ | 908 | 134 | ३३४ |
| सामवेदस्तु कर्तन्यः | υş | ४२ | २०३ | सुभद्रार्यस्स निर्दिष्टः | 45 | 88 | २३४ |
| सामान्यतस्त नृपवर्य | 34 | 96 | 926 | सुभद्रवसुभद्राख्यी | 60 | \$¥ | २४५ |
| सामान्यमथ वश्यामि | 66 | 9 | 285 | सुमन्दुं जैमिनिः पैलो | حام | 44 | २२८ |
| साम्बानिरुद्धी कर्तव्यौ | 24, | 92 | 225 | सुराणा प्रमयाः कार्याः | 85 | 90 | 980 |
| सारणः पश्चमः प्रोक्ती | 4 | २२ | 96 | मुरानावाह थिच्यामि | 903 | 33 | 355 |
| सारस्वतं ते विधितं | Ex | v | 160 | सुरूपरूप: वर्तव्यो | , 05 | ** | २०१ |
| साप्पें वर्तुर्विनाशः | 44 | ३२ | २७६ | हरूपरूपः स्वाकारी | ξv | ч | 959 |
| सा शिला श्रीवरी हैया | 30 | २३ | ર પ્ | मुरूपवणः मुसितास्ता | ५२ | \$ | 943 |
| सास्ना रास्ना तथा वीधी | 99 | 92 | 3 \$ | मुहपा प्जयेदिद्वान् | ٩ | 6 | ३ |
| सावरसराणा माह्नस्यं | 90 | 35 | 80 | सुलक्षणालक्षण संयुता च | 3.6 | 989 | 308 |
| सितजीवेग्दुदुनाणा | 48 | 909 | २८३ | सुस्निग्धविश्वष्ट | ¥9 | 94 | ዓ ¥ሤ |
| सितो हास्यध विशेय: | 30 | . '4 | 909 | मुक्ष्मेभ्यथातिस्क्रम्य | 906 | ¥ | 115 |
| तिदिमूर्तिमधी हेया | Ę¥ | 4 | 920 | सूचिते छेदिते कार्य | ₹ € | ₹७ | 46 |
| सिदिध दिविधा मार्थे | 20 | 69 | ५२ | सूची विद्धोऽपविद्ध | 30 | ₹¥ | 40 |
| सिन्द्राहणसङ्काशो [`] | ξv | 35 | २०१ | मृतधास्य भवदेव | 35 | १२ | 55 |
| चिन्द्रादणसङ्ख्या | 906 | 944 | ३३५ | स्प्रधारस्य वाक्येन | 90 | 35 | 34 |
| सिरादर्शितकण्ठाय | 83 | 34 | 944 | स्प्रन्यासं च कुर्वति | \$ ¥ | २१ | 360 |
| सिंडर्भवानरारीनां | २८ | २३ | 92 | स्प्रार्थेय पदार्थेय | 4 | 99 | 90 |
| सिंदाकारस्तथा सिंदी | 28 | 9 • ২ | २३९ | स्थः शुकः इजी राहुः | 28 | ५३ | २३ ४ |
| सिंहाइ, लक्षणं चेतुं 💍 🖰 | 48 | Ę | 904 | स्योदयास्तमधयोः | \$ | 9 • | 20 |
| सिंहायमिनयं वैव | ₹₹. | 93 | , 40 | धैनाध्यक्षस्य वर्तव्यः | २७ | ₹ 4 | 66 |
| सिंहाराने सुखासीनः 💉 | 130 | 5 | २१० | | 904 | ٤ | 335 |
| | ं ८ २ | ¥ | -२१६ | तेव लक्ष्मीर्थृतिः कीर्तिः | Ęo | ¥ | 963 |
| सिंही च्वजक्ष वर्तव्यः | ₹ v | c | 955 | सोपानस्त्र्यंशविस्तारो | 20 | ч | 4× § |
| | 9.8 9 | 98 | 332 | सोमसुदा मध्यम्या | | 4.5 | 950 |
| सीरपाणिर्यलः वायो | د لع | 4 \$ | २२८ | सोमधान्द्रेण हपेण | ७२ | ¥ | 355 |
| घुन्युवी च तथा कार्यी | | 90 | 950 | सीख्यदा नवमे राजन | 35 9 | | २८४ |
| मुधावर्णेन सर्वेषा | 43 | 38 | २६• | सीभाग्यमुहपल सस्याः | | ì¥ | 908 |
| सुधारिते समाप्ते | | ३७ | २६९ | सीम्यमहस्य सुगुभा | | ! \$ | २८१ |
| सुधासुसितधृतं च | 66 | 45 | 340 | सीम्यगूर्तिः परा हेया | E . | 11 | 157 |

| | अध्या. | श्लोक | पृ. | | अध्या. | श्लोक | ā • |
|--|------------|------------|-------|---|-----------|--------------|------------|
| साँग्ये तु वरदा प्रोका | ९६ | ३० | २७६ | स्निग्धा हुष्टा च जिह्म | ाच २५ | २ | ६७ |
| सौरे भवति सुरफीता | 9 6 | ७२ | २०० | स्मरणात्पूर्वरत्तानां | 39 | २२ | 904 |
| सौरोदयो भवेद्यन | 9 € | 88 | २७८ | घस्तगात्रत्वनिःश्वास | 30 | २३ | 903 |
| सौवर्णं राजतं ताम्रं | 84 | ٩ | 989 | रवकर्मोपस्करव्यप्रः | ४२ | ४५ | 940 |
| स्कन्दस्य तु समृता मुदा | ३३ | 39 | 998 | स्वतस्तु देवः साकारः | ४६ | 8 | 9 |
| स्कन्दस्य शक्तिः कर्त्रच्या | 98 | 83 | २६९ | स्वपताकायुता राजन् | دلع | २९ | 228 |
| स्कन्देा विशासथ गुहः | ও৭ | Ę | १९७ | स्वप्नं वाप्यशुभं पश्येत् | 69 | २० | २५२ |
| स्तनितं गर्जितं विद्यात् | 9 | 90 | 33 | स्वय्नायिते चामिनयं | २८ | ६१ | 54 |
| स्तम्भः पशुर्घमनिदाध | ૧૨ | 94 | २८ | स्वप्नार्थं च स्वपेतन्न | 90 | े २ ७ | २५६ |
| स्तम्भनं चापि विज्ञयं | . २४ | 84 | É& | स्वभावपुटसंस्थानं | २५ | - ३६ | Vo |
| स्तंममे सविस्मये माने | २४ | २८ | ६२ | स्वभावसंश्रितः पादः | , २३ | 2 | ५७ |
| स्तम्भोच्छ्रायं तथा | 38 | ३५ | * २६९ | स्वभावसंस्थया चैव | २२ | 99 | ५५ |
| स्तब्धं शीते तथा व्याधी | २४ | 15 | 89 | स्वभावसौष्ठवीपैतं | २३ | ¥ | 40 |
| स्तब्धं स्तब्धं तथा प्रोक्तं | २४ | 90 | ६१ | स्बभावाभिनये स्थानं | २८ | ३७ | 53 |
| म्त्रीणां गतिः स्यात | 25 | ३ ९ | 900 | स्वमान। हुँ लमानस्य | ३७ | 93 | 932 |
| स्रीणां हेलासु रक्तिता | २५ | ३२ | ६९ | स्वयमुत्पादिताना मे | 90 | 33 | 35 |
| स्रीह्पय तया कार्यः | 64 | 60 | २२७ | स्वयं नृतेन यः कुर्यात् | ₹¥ | २६ | 925 |
| स्रीवृत्तयस्ते कथिना | '99 | 9.4 | २६ | स्वर्गलोकप्रदा स्वर्ग्ये | 58 | 40 | 260 |
| स्थानप्रमाणभूलम्बो | 89 | \$ | 988 | स्वर्गगङ्गाकरे पद्म | ५२ | ર્• | guy ' |
| स्थानं प्रमाणं भूलम्भो | κź | 95 | 944 | स्वरमेदो भयाद्रीक्ष्यात् | 39 | ¥₹ | 900 |
| स्थानमेतन्प्रयोक्तव्यं | २३ | २३ | 48 | स्वरपैर्विदिक्ष संयुक्तः | 6 | 906 | २३९ |
| स्थानहीनं गतरसं | ХŚ | २० | १५५ | स्वस्थं यदालस भागतं | 44 | 9 | 44 |
| स्यानानां यहुसंस्थत्यात् | ₹ 5 | X.o | 935 | स्वातिमावाद्दिष्ट्यामि | 308 | UU | 390 |
| स्थानानि नाधिकमतः | ३९ | ₹ € | 352 | स्वानुस्प्रमाणाय | ४२ | 13 | 980 |
| स्थानानीमानि मानावैः | ३९ | ३५ | १३९ | स्य नुलिप्तायकाशा च | ¥٩ | 48 | 984 |
| स्यानेनानेन फर्तव्यः | 33 | 3 | 40 | स्वाभाषिकी च कर्तव्या | 34 | {3 | ७ २ |
| स्थानेनानेन वर्तव्यं | २३ | ۷ | ५७ | स्वाहामायाद्दिय्यामि | 904 | २५ | ३१८ |
| स्यितेऽप्यमिमुखेऽधनि | 34 | २७ | 136 | स्यां स्यां दिसमधिष्टाय | | 3,5 | 348 |
| रियरां प्रतिष्ठां गृद्यायां | 4.5 | 94 | २६२ | स्पेदापमार्जनाचापि | २८ | \$ e. | 53 |
| रियत्वा पादतलाप्रेण | २४ २४ | '૪૫ ૫૭ | ξ¥ | स्वेदधेषावहित्यं च | | *4 | 146 |
| रिनम्पवैह् यं सङ्गाराः | 45 | ۲. | 903 | देशस्यामन्त्रवेतारी (१ री) दृश्या वेश्महायस्तु | | * (| ¥• |
| | 1•¥ | ३५ | 306 | | _ | 32 | 456 |
| स्थित्वपद्भ सङ्गास स्थूलको विकृतः प्रांतः | 35 | 13 | 3.6 | हन्मांध गुमप्रन्या हनानाषाहित्यानि | - | 15 | 944 |
| रन्तामा विश्वतः भागुः | 11 | 14 | •• | च मध्या मार्डा <i>च</i> ज्यात | 3=4 | 11 | 110 |

विष्णुधर्मोत्तर

| | क्षध्य | ग श्लोब | fi g | | क्षध | ग श्ले | · - |
|---|------------------|-----------------|---------------------|--|------------------|------------|--------------|
| हरिताल सुधा लाक्षा | ጀ ወ | २६ | 983 | हसानावाहयिष्यामि | | * * | क पृ |
| हरस्य दयिता भार्या | 908 | 68 | 300 | A CLASSICAL MINE | 300 | | ₹95 |
| इरिगाव ह्यिप्यामि | 908 | 50 | ર ર ૧ | And the second second | • | | १२७ |
| इरि. सद्धर्पण।श्वेन | 46/2 | v | * 390 | A 150 1371 A | | - • | रे २ ७ |
| हरे समीपे वर्त-या | ८२ | ₹ | २१६ | हास्यशृहार्य रुण | vc/2 | | २१० |
| इसिते रदिते सार्थम् | २४ | 35 | ६३ | हास्या हास्ये च विहेर | ३० स २५ | • | 909 |
| इस्तदीर्घेण यन्नेण | 59 | ¥ | ३५७ | हितस्या सर्वेलोवस्य | ग २५ १०६ | | ξ \$ |
| इस्तपादसमायोगो | ₹ 0 | ३७ | ų, o | हिमवत्सज्ञिती कार्यों | 20 | ₹ 9 | ३२४ |
| हरतप्रमाणत प्रोक्त | ८६ | 3 | २३० | हिमवान् बहुभिस्स्तम्भै | | ७ १२५ | २४३ |
| इस्तमन्तरित ष्टत्वा | २८ | ξo | \$4 | हिमाम्भतानि भ्रियन्ते | 54 | • | 53.d |
| हस्तमावाह्यिप्यामि | Jos | ν ξ | ३ १० | हिरण्यवि श्चर्यु र्द त्य | UZ/2 | ٠, | २७३ |
| हस्तमोच्य स एवोसो | 90 | 94 | २३ | हिरण्यक शिपोर्वक्ष | VC/2 | ۸, | ₹9• |
| हस्तसस्पर्शनान्मादा | 35 | ₹• | 30 | हिरण्यवर्णेत्यार <i>भ्य</i> | 5 5 | 9 | 29 o |
| हस्ताना भद्रकाल्यास्तु हस्ता मयते कथिता नृवी | 49 | 19 | 956 | हिर ण्याक्षशिरच्छेद | 45 | , • | २९३ |
| इस्तावधोमुखौ यन | 33 | 50 50 | C.K. | हीनाधिकप्रमाणा च | 32 | 90 | २ १ २ |
| हस्तिद्वय विजानीहि | ५ २ ८२ | 90 | 9२० २ १ ६ | हीनाधिक न कर्तव्य | ٠ <u>٠</u> ٩٥ | Ę | १३४ |
| इस्ती यलभ इत्युक्ती | 90 | 96 | 23 | हैतिप्रमोक्षी न तु रहमध | 7.0 | ፣ ያው | 80 68 |
| हस्ती द्विप इभो दन्ती | 90 | ¥ | 99 | हेतुथ शेषो विदिठो शुभाना | मू६५ | eş. | 968 |
| इस्तेऽस्य परशु कार्य | | ६२ | २२७ | हेतु विना विततता | _ | , to | 39 |
| हस्तौ कटधूरुविन्यस्तौ | २२ | ₹ | 44 | हैमेन युक्त दुर्मिक्ष | | | रा २५४ |
| हस्त्यारोहास्तु वर्तव्या | ४२ | ३७ | 9 = 9 | होने छत्रप्रहे चैव | | ર | ' 1 • |
| इसपक्षी रमती इस्ती | ₹ . | ७२ | 69 6 | एवायसमान इ | ¥2 6 | | १५३ |
| इसगाने न कर्तव्यो | 9 | \$ 3 | 900 \$ | ए। इप्टे तु र्क्तन्या | २५ २ | | 55 |
| | | | | | | | |

